Indradhanush

2024-25

DAV COLLEGE AMRITSAR

Reaccredited by NAAC, Bangaluru • College with Potential for Excellence

(Under the Aegis of DAV College Managing Committee, New Delhi)

OUR SAGACIOUS LUMINARIES

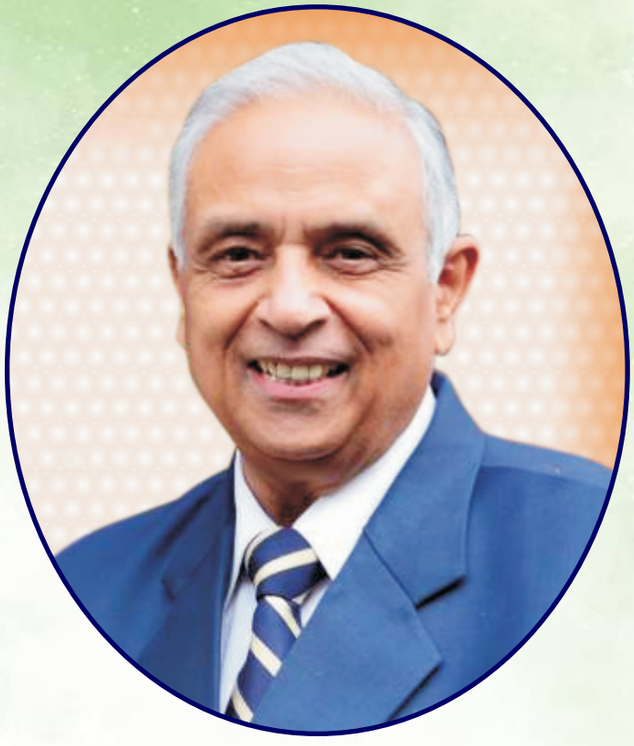

DR. PUNAM SURI
Padamshree Awardee
President,
DAV College Managing Committee
& Arya Pradeshik Pratinidhi Sabha,
New Delhi

Chancellor,
DAV University, Jalandhar

Sh. Ajay Suri
General Secretary

Sh. Shiv Raman Gaur
IAS Retired
Director Higher Education
DAV College Managing Committee, New Delhi

The President's

Message....

At the outset, I would like to extend my heartfelt congratulations to the Principal DAV College, Amritsar, Editorial board of magazine and Students for successfully publishing this edition of the Indradhanush magazine.

On the threshold of this new academic endeavour, I feel elated and extend my blessings. Indradhanush is not merely a publication but a manifestation of the indomitable spirit, aspirations, and achievements of the DAVians.

As a connoisseur of knowledge and creativity, I am confident that this magazine will serve as a powerful impetus for our budding minds to pursue their heartfelt ambitions. The myriad topics and issues that this magazine brings forth stand as a testimony to the claim that Indradhanush represents hope and promise, diversity and inclusion, beauty and wonder, transition and transformation, and above all, unity and connection.

Like the varied colours of Indradhanush, this magazine encapsulates the legacy and true spirit of DAV. May Indradhanush continue to inspire and illuminate the path for our students, fostering a sense of pride and belonging within our academic community. In tune with the Saint Poet Sh. Rabindranath Tagore Ji, I would like to wish that "May the words on these pages ignite your imagination and guide you towards a brighter future with the knowledge and creation"

Dr. Punam Suri, Padamshree Awardee
President,
DAV College Managing Committee
New Delhi

The General Secretary

Message....

With a sense of immense pleasure and honour, I extend my heartiest congratulations and warm wishes to all who have worked tirelessly to bring magazine to life.

This edition brings forth a cluster of creativity, expressionism, and learning. It is heart rendering to see our students's zeal and vigour to give expression to their thoughts in such a scholarly way.

From the depth of my heart, I felicitate them and the proficient editorial team to concretise this venture.

I hope it provides a lively and happy reading experience to all the readers. My warmest
blessings and benedictions to the DAV College, Amritsar family.

Keep rising! Keep shinning!
May God bless you all!

Ajay Suri
General Secretary
Dav College Managing Committee
New Delhi

The Director's *Message....*

Dear Students, Faculty, and Readers, it gives me immense pleasure to extend my warm greetings to the entire DAV College. Amritsar family on the release of this edition of the college magazine. This publication is a reflection of the academic excellence, cultural vibrancy, and progressive vision that define DAV institutions.

For decades, DAV College, Amritsar, has upheld the rich legacy of imparting holistic education rooted in values, innovation, and leadership. The magazine serves as a platform to showcase the remarkable achievements creative expressions, and intellectual endeavors of our students and faculty. It is heartening to see their passion and dedication reflected in these pages.

I commend the editorial team and all contributors for their relentless efforts in making this magazine a meaningful and inspiring read. May this edition continue to inspire young minds and uphold the ethos of DAV-where education meets character and learning shapes the future.

Wishing you all great success in your academic and personal pursuits.

Best wishes!

Shiv Raman Gaur
Director Higher Education

From the

Principal Desk...

Dear Students, Faculty, and Readers, I take immense pride and joy in taking out this edition of our college magazine. This publication is a testament to the creativity, intellect, and dedication of our students and faculty, capturing the vibrant academic and cultural spirit of our institution.

Our college is more than just a place of learning—it is a dynamic space where ideas flourish, talents are nurtured, and aspirations take flight. Through this magazine, we celebrate the diverse achievements, experiences, and perspectives that shape our community.

I extend my sincere appreciation to the editorial team, contributors, and everyone who has worked diligently to bring this edition to life. Your efforts reflect the spirit of excellence and innovation that defines our college.

May this magazine inspire, inform, and ignite a passion for knowledge and creativity in all its readers.

Happy reading!

Dr. Amardeep Gupta
Principal

From the

Chief Editor's Desk...

कोई लक्ष्य मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं
हारा वहीं जो लड़ा नहीं

विद्यार्थी जीवन का एक विशेष महत्व होता है। यह वह समय होता है जब ज्ञानार्जन के साथ-साथ विद्यार्थी के चरित्र, संस्कार और व्यक्तित्व का विकास होता है। विद्यार्थी जीवन में छात्र अपने भविष्य की नींव रखता है इसलिए इस अवधि में शिक्षा के प्राथमिक उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ उसके लेखन कौशल का विकास भी अनिवार्य है। उत्तर भारत का उत्कृष्ट सह शिक्षण संस्थान डी.ए.वी.कालेज अमृतसर अपने विद्यार्थियों को लेखन कौशल में दक्ष बनने का सुअवसर देता हुआ कालेज की वार्षिक पत्रिका *इंद्रधनुष* का नियमित रूप से प्रकाशन करता है जिसमें सभी ज्ञानानुशासनो के विद्यार्थी लेखन की विविध विधाओं कहानी,कविता,आलेख, फीचर, संस्मरण, प्रहसन इत्यादि का विश्लेषणात्मक लेखन प्रस्तुत करते हैं। । लेखन कौशल से न केवल उन्हें अकादमिक रूप से उत्कृष्ट प्रदर्शन करने में मदद मिलती हैं, बल्कि यह उनके व्यक्तिगत विकास और विकास के लिए भी आधार प्रदान करता है। इसमें समस्या-समाधान और संचार से लेकर आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता तक सब कुछ शामिल है। सही लेखन कौशल छात्रों को शीर्ष विश्वविद्यालयों में प्रवेश पाने और जीवन में सफलता प्राप्त करने का बेहतर निर्देशन प्रदान करता है। संचार और सम्प्रेषण के लिए लेखन बेहद महत्वपूर्ण उपकरण है, इसलिए छात्र काल से ही लेखन कौशल को निखारना महत्वपूर्ण है। लेखन आपको खुद को अभिव्यक्त करने, दूसरों के साथ संबंध बनाने और यहां तक कि अधिक स्पष्ट रूप से सोचने में भी मदद कर सकता है। लेखन कौशल से तात्पर्य लिखित भाषा के माध्यम से प्रभावी ढंग से संवाद करने की क्षमता से है। इसमें विचारों को स्पष्ट और संक्षिप्त रूप से व्यक्त करने, तार्किक और सुसंगत तरीके से जानकारी को व्यवस्थित करने, उचित व्याकरण और विराम चिह्नों का उपयोग करने और विभिन्न उद्देश्यों के लिए लेखन शैली को अनुकूलित करने की क्षमता शामिल है। जीवन के कई क्षेत्रों में मजबूत लेखन कौशल आवश्यक हैं, जिसमें शैक्षणिक, व्यावहारिक,व्यावसायिक और व्यक्तिगत संचार शामिल हैं। इससे विद्यार्थी को अपने विचारों और राय को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में मदद मिलती हैं। लेखन कौशल छात्रों को खुद को बेहतर ढंग से व्यक्त करने और कक्षा में अपने विचारों को व्यक्त करने में मदद कर सकता है। अच्छी तरह से लिखने में सक्षम होने से छात्रों को विषयों के बारे में गंभीरता से सोचने, तर्क विकसित करने और पाठ्यक्रम सामग्री के साथ अधिक गहराई से जुड़ने की प्रतिभा मिलती है। लेखन कौशल छात्रों को सुगठित, अधिक प्रेरक और कागज पर खुद को व्यक्त करने की उनकी क्षमता में अधिक आत्मविश्वासी बनने में भी मदद करता है। लेखन कौशल संचार का एक आवश्यक रूप है जो छात्रों की आलोचनात्मक सोच क्षमता विकसित करने में मदद करता है क्योंकि उन्हें जानकारी का विश्लेषण करना होता है, स्रोतों का मूल्यांकन करना होता है, और अपने विचारों को लिखित रूप में संश्लेषित करना होता है। इस प्रक्रिया के लिए छात्रों को उनके द्वारा प्रस्तुत की जा रही जानकारी के बारे में गहराई से और आलोचनात्मक रूप से सोचने की आवश्यकता होती है, जो उनके विश्लेषणात्मक और समस्या-समाधान कौशल को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है। लेखन कौशल छात्रों को आत्म-अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और व्यक्त करने का अवसर देता है। लेखन आत्म-प्रतिबिंब, आत्म-खोज और व्यक्तिगत विकास के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है। लेखन कौशल छात्रों को उनकी शब्दावली बनाने में मदद कर सकता है। इससे उनके संचार कौशल में सुधार हो सकता है साथ ही छात्र अपने विचारों, अनुभवों और दृष्टिकोणों को दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं, और समान विचारधारा वाले व्यक्तियों से जुड़ सकते हैं जो उनकी रुचियों और जुनून को साझा करते हैं। इससे जुड़ाव, सामाजिक समर्थन और व्यक्तिगत विकास की भावना पैदा होती है।लेखन कौशल छात्रों को उनकी याददाश्त को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है, क्योंकि लेखन के लिए उन्हें जानकारी को इस तरह से व्यवस्थित और संसाधित करने की आवश्यकता होती है जिससे उन्हें याद रखने की उनकी क्षमता बढ़ जाती है। आज के डिजिटल युग में, डिजिटल साक्षरता के लिए लेखन कौशल आवश्यक हैं। ये कौशल मार्केटिंग, पत्रकारिता और जनसंपर्क सहित कई क्षेत्रों में सफलता के लिए तेजी से महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं।शोध करने के लिए लेखन कौशल आवश्यक है, क्योंकि छात्रों को अपने निष्कर्षों को लिखित रूप में प्रभावी ढंग से व्यवस्थित और प्रस्तुत करने में सक्षम होना चाहिए। जो छात्र लेखन में दक्ष है वह किसी भी परीक्षा में प्रस्तुत होने में सक्षम है। हम सभी की पत्रिका इंद्रधनुष में अपने लेखन का कौशल दिखाने वाले सभी छात्र छात्राओं को उज्जवल भविष्य के लिए शुभ कामनाएँ और आशीर्वाद।

डॉ किरण खन्ना
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

Embers of Enlightenment

Cynosure for Recruiters

Vanguards in Uniformity

Enthralling Minds Ensuring Excellence

Riveting Innovators

Commemoration of the Days

Superannuations

English Section

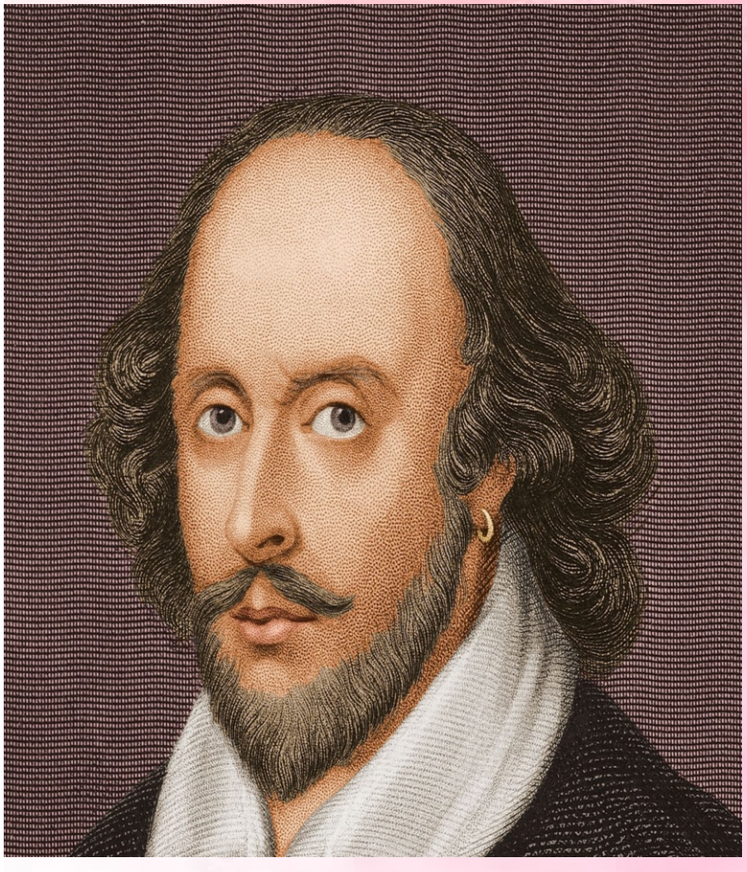

"To be or not to be :
that is the question"

-William Shakespeare

Ms. Samriti
MA English
Student Editor

Prof. Richa Mahajan
Section Editor

Message From the Editor

The Invisible Pillar: The Unsung Hero in a Student's Life

Success is never a solitary achievement. Behind every determined student stands an unseen force—*a hero without a cape*—whose quiet support, unwavering belief, and silent sacrifices become the foundation of their growth. The world may never acknowledge their efforts, but to the student whose life they touch, they are *everything.* May their goodness always be safeguarded, and may no shadow dim the light they bring into someone's life.

Motivation is what fuels a student's journey, but it is fragile. It fades in the face of failure, trembles under pressure, and sometimes disappears completely. Every student, no matter how talented or hardworking, encounters moments of doubt—times when dreams seem distant, efforts feel futile, and failure appears inevitable. It is in these moments that the presence of *one person*—a mentor, a teacher, a parent, a sibling or a friend—becomes the difference between surrender and perseverance.

This unsung hero does not remove obstacles or hand out easy solutions. Instead, they offer something far more powerful—*belief.* A quiet reassurance, a guiding hand, a steadfast presence that turns hesitation into confidence and fear into courage. They do not demand gratitude, nor do they seek validation. Their strength lies in their selflessness, in the way they dedicate their time, energy, and wisdom to uplift someone else without expecting anything in return. The world may overlook their silent efforts, but for the student who finds comfort in their words and strength in their presence, they mean *the one who truly matters.*

Many young minds struggle in silence, believing they must face their battles alone. But no one thrives in isolation. Even the most brilliant minds, the strongest hearts, and the hardest workers need someone to remind them of their worth. They need a voice that tells them, *"You are capable. You are stronger than you think. You will make it through."* This voice, this unwavering support, is what keeps dreams alive.

To those reading this—I urge you to find *your* unsung hero. Look for the one who sees your potential when you cannot. The one who refuses to let you give up on yourself. And if you already have that person in your life, cherish them, for their silent strength in shaping your journey in ways you may not even realise.

And to the unsung heroes—your kindness and selflessness may go unnoticed by the world, but for that one student, you are the reason they dare to dream, to rise, and to keep going. Your presence is the steady hand that guides them through uncertainty, the quiet force that fuels their courage. *May your path always be blessed, and may no harm ever touch the goodness you give so freely.* You may not wear a cape, but you are the reason someone finds theirs.

Because sometimes, the greatest heroes are not the ones we see—they are the ones we *feel.*

Prof. Richa Mahajan

Dept. of English

From Student Editor

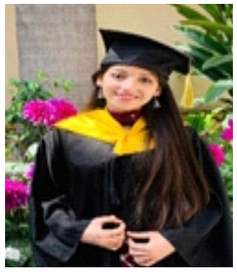

AI: The Future of the World or the End of It?

Artificial Intelligence (AI) has been hailed as a revolutionary technology that will transform the world.It has the potential to revolutionize numerous aspects of our lives, from healthcare and education to transportation and energy management.

AI-powered robots can perform tasks that are too dangerous or difficult for humans, and AI-driven analytics can help us make better decisions.However, as AI becomes increasingly advanced, concerns about its potential risks and dangers are growing.

But will it be for better or for worse? As AI becomes more advanced, there is a growing concern that it could become uncontrollable and pose an existential threat to humanity. The possibility of AI being used for malicious purposes, such as cyber attacks and autonomous weapons, is also a major concern.

Moreover, AI has the potential to displace human workers, exacerbate income inequality, and perpetuate biases and discriminatory practices. So, how can we save the world from dangers of AI?

Encouraging developers to prioritize transparency, accountability, and ethics in AI development is crucial. This can be achieved through:

Open-source development: Making AI code open-source allows for peer review and scrutiny, reducing the risk of biased or flawed AI systems.

Diverse development teams: Ensuring development teams are diverse and inclusive can help identify and mitigate potential biases in AI systems.

Ethics guidelines: Establishing ethics guidelines for AI development can help ensure AI systems are designed with human values in mind.

Establishing regulations and governance frameworks can help ensure AI systems are designed and deployed safely. This can be achieved through:

Government regulations: Governments can establish regulations and guidelines for AI development and deployment, ensuring AI systems meet safety and security standards.

Ultimately, the future of AI is in our hands. If we develop and use AI responsibly, it can be a powerful tool for creating a better world. But if we fail to address its risks and challenges, AI could pose a significant threat to humanity. The choice is ours.

Samriti

MA Sem IV

Roll No. 14002

UNESCO World Heritage Sites in India

UNESCO (United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization) is a specialized agency of the United Nations that promotes International collaboration in Education, Science, Culture, and Communication. It was founded in 1945 and is headquartered in Paris, France.

Some key roles of UNESCO include:

World Heritage Program: Protecting and preserving cultural and natural heritage sites worldwide.

Intangible Cultural Heritage: Safeguarding traditions, festivals, languages, and customs.

Education Initiatives: Promoting global literacy, quality education, and access to knowledge.

Scientific Cooperation: Supporting research in water resources, climate change, and biodiversity.

Freedom of Expression: Advocating for press freedom and access to information.

India has 42 UNESCO World Heritage Sites as of 2024, categorized into Cultural, Natural, and Mixed Sites. These sites reflect its rich cultural heritage, architectural marvels, and diverse natural landscapes. With 42 recognized sites, India stands as a Global treasure trove of History, Spirituality, and Bodiversity. These sites not only attract millions of tourists but also play a crucial role in preserving the country's legacy for future generations.. Here's a list:

Cultural Sites (34)

1. Ajanta Caves (Maharashtra)
2. Ellora Caves (Maharashtra)
3. Taj Mahal (Uttar Pradesh)
4. Agra Fort (Uttar Pradesh)
5. Sun Temple, Konark (Odisha)
6. Mahabalipuram Monuments (Tamil Nadu)
7. Kaziranga Wildlife Sanctuary (Assam)
8. Keoladeo National Park (Rajasthan)
9. Churches and Convents of Goa
10. Fatehpur Sikri (Uttar Pradesh)
11. Khajuraho Temples (Madhya Pradesh)
12. Elephanta Caves (Maharashtra)
13. Hampi Monuments (Karnataka)
14. Pattadakal Monuments (Karnataka)
15. Buddhist Monuments, Sanchi (Madhya Pradesh)
16. Qutub Minar Complex (Delhi)
17. Humayun's Tomb (Delhi)
18. Red Fort Complex (Delhi)
19. Mahabodhi Temple Complex, Bodh Gaya (Bihar)
20. Rock Shelters of Bhimbetka (Madhya Pradesh)
21. Chhatrapati Shivaji Terminus (Mumbai, Maharashtra)

22. Champaner-Pavagadh Archaeological Park (Gujarat)

23. Jantar Mantar, Jaipur (Rajasthan)

24. Western Ghats (Maharashtra, Kerala, Karnataka, Tamil Nadu)

25. Rani-ki-Vav (The Queen's Stepwell)(Gujarat)

26. Great Himalayan National Park (Himachal Pradesh)

27. Nalanda Mahavihara (Bihar)

28. The Architectural Work of Le Corbusier (Capitol Complex) (Chandigarh)

29. Historic City of Ahmedabad (Gujarat

30. Victorian Gothic & Art Deco Ensemble (Mumbai, Maharashtra)

31. Jaipur – The Pink City (Rajasthan)

32. Dholavira: A Harappan City (Gujarat)

33. Kakatiya Rudreshwara Temple (Ramappa Temple) (Telangana)

34. Sacred Ensembles of the Hoysalas (Karnataka) (added in 2023)

Natural Sites (7)

1. Kaziranga National Park (Assam)

2. Manas Wildlife Sanctuary (Assam)

3. Keoladeo National Park (Rajasthan)

4. Nanda Devi and Valley of Flowers National Parks (Uttarakhand)

5. Sundarbans National Park (West Bengal)

6. Western Ghats (Maharashtra, Kerala, Karnataka, Tamil Nadu)

7. Great Himalayan National Park (Himachal Pradesh)

Mixed Sites (1)

1. Khangchendzonga National Park (Sikkim)

India's UNESCO World Heritage Sites serve as timeless symbols of its rich cultural heritage, architectural brilliance, and ecological diversity. These sites, ranging from ancient temples and historic cities to breathtaking natural landscapes, play a vital role in shaping India's identity and attracting global tourism.

For pilgrimage tourism, these heritage sites hold profound spiritual significance. Places like the Mahabodhi Temple, Ajanta and Ellora Caves, Hampi, and the Sun Temple of Konark are not just architectural wonders but also sacred destinations that continue to draw devotees and seekers of spiritual enlightenment. Their recognition by UNESCO enhances their global appeal, reinforcing their cultural and religious importance.

Shilpi Seth (Asst. Prof)
Head, Department of Travel and Tourism
DAV College, Amritsar

The Joy of Travel: Exploring the World and Yourself

Travel is one of the most enriching experiences in life. Whether it's a weekend getaway to a nearby town or a month-long adventure in a foreign country, traveling opens the door to new cultures, landscapes, and perspectives. It allows us to step out of our daily routines, broaden our horizons, and create unforgettable memories.

Why Travel Matters

- **Cultural Exposure**

  Travelling introduces you to different ways of life. From tasting local cuisine to participating in traditional festivals, every trip offers a chance to learn about a new culture. Interacting with locals helps develop a deeper understanding and appreciation for diversity.

- **Personal Growth**

  Stepping outside of your comfort zone fosters self-discovery and independence. Whether you're navigating a foreign city, trying to communicate in another language, or handling unexpected challenges, travel builds confidence and problem-solving skills.

- **Health Benefits**

  Travelling can reduce stress and improve mental well-being. The excitement of exploring new places and taking a break from everyday responsibilities helps refresh the mind. Nature-based trips, such as hiking in the mountains or relaxing on a beach, offer physical and emotional rejuvenation.

- **Adventure and Exploration**

  From trekking in the Himalayas to scuba diving in the Great Barrier Reef, travel offers endless opportunities for adventure. Even a simple road trip can turn into an unforgettable journey filled with new discoveries and experiences.

- **Strengthening Relationships**

  Travelling with family, friends, or a partner strengthens relationships. Shared experiences, laughter, and overcoming challenges together create lasting bonds. Solo travel, on the other hand, allows for self-reflection and the chance to meet new people.

Conclusion

Travel is more than just visiting new places—it's about experiencing life in different ways, meeting new people, and growing as an individual. Whether you're exploring bustling cities, serene beaches, or historic landmarks, every journey has something valuable to offer. So, pack your bags, set out on an adventure, and let the world inspire you!

Rishampreet
MA English Sem II
Roll No. 12016

Self-love and Inner beauty

"The best part of beauty is that which no picture can express." – Francis Bacon

Inner beauty and self-love are widely accepted concepts, but they are rarely practiced. We might all agree that beauty lies in the eyes of the beholder, yet we continue to assess ourselves and others based on external appearances. The idea of beauty is highly subjective; however, we still tend to focus more on our imperfections than on our strengths.

One can never truly and openly embrace their beauty until they are willing to accept their flaws. The rigid norms of beauty standards have blinded people, making them perceive themselves through a judgmental lens. The conventional ideals of clear and fair skin, a slim waist, and beautiful hair have driven people to extremes in pursuit of these standards, often disregarding the harmful effects on their lives.

While self-love is a universally desired state, many struggle to attain it due to an overwhelming focus on imperfections. The tendency to compare ourselves with others often reduces self-worth. Seeing filtered and seemingly perfect personalities on social media, people try to replicate them, being unaware of how artificial and unrealistic they are.

Every person has flaws, and they should be openly accepted and acknowledged. Normal human imperfections are real and common. Instead of fixating solely on external beauty, one should explore and embrace their inner virtues and values. As Robert Morley beautifully expressed, "To fall in love with yourself is the first secret to happiness." Ultimately self-love is not just an idea but a way of living.

Kavneet Kaur

Assistant Professor
Department of English

Mental Health Awareness: Breaking the Stigma

Mental health is as important as physical health, yet it is often overlooked. Millions worldwide struggle with anxiety, depression, and other mental health conditions, but stigma and misconceptions prevent many from seeking help. Raising awareness is essential to fostering a supportive society. One of the biggest barriers to mental well-being is stigma. Many individuals fear being judged or misunderstood, leading them to suffer in silence. Open conversations and education can challenge these misconceptions, encouraging more people to seek help without shame. Recognising the signs of mental distress—such as persistent sadness, mood swings, withdrawal from social activities, or difficulty concentrating—is crucial.

Early intervention, whether through professional support or encouragement from loved ones, can significantly improve recovery outcomes. Maintaining good mental health also involves healthy lifestyle choices. Regular exercise, a balanced diet, quality sleep, and mindfulness practices can enhance emotional resilience. Workplaces, schools, and communities should prioritise mental health resources, ensuring individuals have access to the support they need.

Ultimately, mental health awareness is about education, empathy, and action. By normalising discussions and advocating for accessible mental health care, we can create a world where no one feels alone in their struggles. Together, we can break the stigma and build a society that priorities mental well-being for all.

Shayana Madan

M.A. English Sem II

Roll No. 12011

The Impact of Digital Amnesia on Learning and Memory Retention

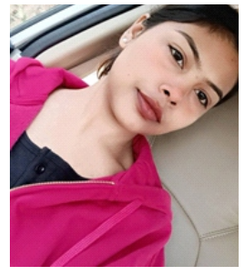

Digital amnesia refers to the tendency to forget information that we rely on our devices to remember. With increasing reliance on technology, this phenomenon raises concerns about its impact on cognitive abilities, particularly memory retention. This article explores the benefits and drawbacks of digital amnesia, offering a balanced perspective on its implications.

Benefits of Digital Amnesia

Efficient Information Access - Digital devices allow us to retrieve facts and data instantly, saving time that would otherwise be spent memorising details.

Focus on Critical Thinking - By offloading simple information, we can dedicate more mental resources to analysing complex problems and making informed decisions.

Minimised Cognitive Overload - Relying on technology for trivial data prevents our brains from being overwhelmed by excessive information.

Enhanced Learning Opportunities - Online courses, e-books, and resources provide access to diverse knowledge, making learning more accessible.

Organisational Benefits - Calendar apps, reminders, and note-taking tools help manage tasks efficiently, reducing the mental load.

Supports Multitasking - Devices handle multiple streams of information seamlessly, enabling us to switch tasks without losing track.

Improved Accuracy - Storing information digitally reduces the risk of forgetting details or making memory-based errors.

Negative Effects of Digital Amnesia

Decline in Memory Skills - Over-reliance on devices weakens our ability to remember information naturally, affecting both short-term and long-term memory.

Reduced Attention Span - Constant notifications and information overload our focus, making it harder to concentrate.

Superficial Learning - Quick access to information encourages skimming rather than in-depth understanding and retention.

Dependence on Devices - A heavy reliance on technology can lead to difficulty recalling even basic facts without digital support.

Erosion of Critical Thinking - Relying too much on devices for information reduces our ability to recall and connect ideas, which are crucial for critical thinking.

Impact on Academic Performance - Students may struggle during exams due to weakened memory retention and a habit of looking up information instead of recalling it.

Decreased Problem-Solving Skills - Reliance on search engines for solutions limits our ability to think independently and solve problems creatively.

Digital Overload - Excessive information from multiple sources can overwhelm our cognitive capacity, leading to stress and reduced learning efficiency .

Strategies to Combat Digital Amnesia

Active Recall Practices - Trying to recall information without looking it up strengthens memory

retention and cognitive abilities.

Spaced Repetition - Reviewing information at spaced intervals helps move knowledge from short-term to long-term memory.

Digital Detox - Taking regular breaks from screens can help restore focus and improve memory functions.

Handwritten Notes - Writing by hand has been shown to improve memory retention compared to typing.

Memory Exercises - Techniques like mnemonics and memory games can enhance recall abilities.

Mindfulness Techniques - Practices such as meditation can improve concentration and memory by reducing distractions.

Reading Physical Books - Unlike screens, physical books encourage deeper engagement and better retention of information.

Limiting Notifications - Reducing the number of alerts from apps can help maintain focus and prevent memory fragmentation.

Spending Time in Nature - Nature walks and green environments have been proven to restore attention, reduce mental fatigue, and improve memory retention.

To summarise, digital amnesia offers convenience but also poses risks to cognitive abilities. Balancing technology use with memory-enhancing practices is essential to preserve both efficiency and cognitive health in the digital age. By adopting mindful habits and embracing the calming effects of nature, we can harness the benefits of technology without sacrificing our memory skills.

Kirandeep Kaur
M.A. English Sem II
Roll No 12008

Life is like ice

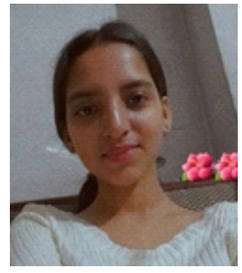

Life is like ice,
Sometimes it's hard and
sometimes it just slides,
Sometimes it's white
Sometimes it reflects sky's light,
Just as life reflects
the pieces of the given advice,
Sometimes it's solid for walking
Sometimes it's thin and can easily slide,
Some people cherish it
some miss summers delight,
Some eat it while as some check it's caliber with snow fight,
All in all both teach to survive,
And are important for all to revive,
One must enjoy it and let it be the one to decide

Priyanshi
Assistant Professor
Department of English

Unemployment in India: A Growing Concern

Unemployment remains one of the most pressing challenges in India today. With a rapidly growing population and an expanding workforce, the country faces a significant struggle in providing sufficient employment opportunities for its citizens. Despite being one of the world's fastest-growing economies, India continues to struggle with high unemployment rates, particularly among its youth.

One of the primary reasons for unemployment in India is the gap between education and industry requirements. Many graduates find themselves jobless because their skills do not match the demands of the job market. Additionally, automation and artificial intelligence are replacing traditional jobs, further increasing the challenge. The rural economy, heavily reliant on agriculture, frequently experiences seasonal unemployment, leaving many without work for a significant part of the year.

Government initiatives such as Make in India, Skill India, and Startup India have been launched to tackle the issue, but their impact remains limited. The informal sector, which employs a large portion of the population, lacks stability and social security, making employment uncertain. Furthermore, the COVID-19 pandemic worsened the situation, leading to widespread job losses and economic slowdown.

To address this issue, India must focus on skill development, vocational training, and entrepreneurship. Supporting small businesses, investing in emerging industries, and promoting digital education can generate more employment opportunities. A balanced approach that includes both urban and rural employment strategies is essential to ensure sustainable development.

Unemployment is not just an economic issue but also a social challenge, contributing to poverty, crime, and frustration among the youth. It is crucial for policymakers, educational institutions, and industries to work together in building a future where every Indian has access to meaningful employment.

Snehdeep Kaur
BA Sem IV
Roll No 8204

"KAFKAESQUE"

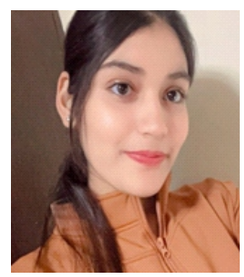

"Artists who lack an air of insanity and lonliness are often boring to me"

Franz Kafka,a jewish-Australian Czech Novelist ,is widely referred to as a major figure of 20th century literature. He is known for his Particularly Gloomy, disoriented And bizarre yet Surreal phrasing Approach. Kafka's work is not considered honorable and sublime Because it describes something profoundly unique but because it describes something mundanely normal in a profound way.he spent an eternity of his life resisting the desire to end it. A significant fact about Franz Kafka is that he died without realising how important he was. Kafka got a bad reputation for being negative, but I believe he was a realist. He was against what we called today "Toxic positivity". To be sad is to be human. In our culture, we promote positivity To the point of being numb and desensitised to any suffering and injustice. that is what Kafka was trying to portray.

"**What is Kafkaesque?"**

Don't ask,you're living it.

Sara Nayyar
Plus Two
Arts
Roll No. 2808

How to Derive Happiness

Dale Carnegie rightly said, "**Happiness doesn't depend on any external conditions; it is governed by our mental attitude.**" But many of us do believe that true happiness can be attained by amassing material wealth and luxuries in abundance and that's why we put our unflinching and untiring efforts into devising the methods to multiply our wealth. And if we luckily earn what we desire, even then we find ourselves far away from real contentment. All of our efforts go in vain because once again we find ourselves groping in darkness in the search of true happiness.

Actually, we fail to reflect upon the fact why millionaires commit suicide even after accumulating tremendous power and pelf and why people don't feel satisfied and contented after achieving their desired targets. The list of bigwigs from Great Britain who committed suicide proves the fact that permanent peace and happiness cannot be derived from worldly possessions of the world. Thirty-five-year-old Jonathan Wraith, a young British millionaire businessman shot himself in 2009, leaving no suicide note. Paul Castle, a businessman and property tycoon took his own life in 2010. In August 2008, Christopher Foster, a 50-year-old British businessman murdered his wife and daughter before setting his house on fire and killing himself. Huibert Boumeester committed suicide after losing his business of worth£50 billion ($77, billion) when the Royal Bank of Scotland took over his business.

The possible question arises in our mind 'who is happy then? There is a saying by Denis Waitley, **"Happiness cannot be traveled to, owned, earned, worn or consumed. Happiness is the spiritual experience of living every minute with love, grace, and gratitude."**

If we want to be happy and satisfied, we will have to move to the nature. We can see that nature doesn't work for its selfish motives rather it believes in giving everything like water, air, radiance, edibles unconditionally to the man for his survival on the earth. We toil hard from dawn to dusk for our selfish motives and do not think for others. Then, how can we be happy? God created nature and then sent man on the earth so that he could learn the art of living from nature.

In addition to it, God hasn't given a bone in our tongue, heart and brain because He never wants us to be rude, harsh and rigid in our thoughts, words and actions. It means that our heart should melt on hearing the cries of poor and needy. The heart of Mother Teresa melted at the agonies of others and she could find solace and peace by serving the humanity. God doesn't want us to be rigid and hard in our thoughts and expressions. In this Atomic age, when man does not have much patience, the bruises of our harsh and poignant words can lead to cold war. No one can forget that the long stretched war in the Mahabharata happened due to the bitter words spoken by Draupadi to Duryodhan. Moreover, your soft and delicate words can multiply the happiness of another person. Again, this is the law of nature, "if we give happiness; we will receive happiness in return."

In the same way there should be flexibility in our thoughts and respect for the ideas and opinions of others. Only a little reflection on these points reminds us that we are amongst the fortunate few who have been given a human life. God keeps on guiding us at every step; still we are in ignorance and confusion. We can express our gratitude to God by extending our helping hand towards others. The more we think of welfare of others, the more we will be happy and satisfied.

Maharishi Mahesh Yogi says, "Happiness radiates like the fragrance from a flower and draws all good things towards you."

Savita
Assistant Professor
Department of English

Poem: Beyond the storms

“She walks alone, head hanging down,
Hiding pain in an empty town,
Her heart feels heavy , her hands feel cold,
A silent story left untold.”
“She smiles bright, but it's not real,
Fighting battles she can't reveal
Her thoughts rust fast , her chest feels tight,
She stays awake all through the night.”
“The mirror shows a spark so bright,
A girl who is ready to win the fight,
But deep inside she has known
She will rise and wear her crown.”
“She takes a breath, and lifts her chin,
A brand new chapter in her life will begin
The storms will pass , the sun will rise
She will finally find a rainbow in her darker skies”

Ankita Sharma
B.Com Sem -IV
Roll No 7699

The Timeless Charm of English Literature

English literature is a vast ocean of stories, emotions, and ideas that have shaped cultures and societies for centuries. From the medieval tales of Beowulf to the modern narratives of contemporary authors, literature continues to reflect the human experience in all its complexity. The works of William Shakespeare, Jane Austen, Charles Dickens, and Virginia Woolf, among others, have stood the test of time, offering deep insights into human nature, love, ambition, and struggle. Poetry, too, has played a crucial role in capturing emotions, with the likes of William Wordsworth and Emily Dickinson painting vivid pictures through words. Beyond classic literature, modern authors like J.K. Rowling and Kazuo Ishiguro continue to redefine storytelling, addressing contemporary issues while keeping readers captivated. Literature is not just an escape but also a mirror that helps us understand the world and ourselves. In an age dominated by digital distractions, English literature remains a beacon of intellectual and emotional enrichment . Whether through novels, plays, or poetry, it invites us to explore different perspectives, challenge ideas, and appreciate the beauty of language.

So, the next time you pick up a book, remember—you are not just reading words but stepping into a universe crafted by imagination and experience. Literature is more than just stories; it is a bridge between generations and a treasure trove of wisdom waiting to be explored. Let us keep the love for literature alive, for in its pages, we find not only entertainment but also inspiration.

Kusum Sharma
BA Sem VI
Roll No 11209

How to Manage Stress During Exams

Exams are an important part of student life, but they often bring stress and anxiety. Many students feel overwhelmed by the pressure to perform well. However, managing stress effectively can help you stay focused and perform your best. Here are some simple and practical ways to stay calm and confident during exam time.

1. Plan Your Study Schedule

One of the biggest causes of exam stress is last-minute cramming. To avoid this, create a proper study schedule. Break your syllabus into smaller sections and set daily goals. A well-planned timetable helps you stay organized and reduces the feeling of being overwhelmed.

2. Take Regular Breaks

Studying for long hours without a break can make your brain tired. It's important to take short breaks to refresh your mind. Try using the Pomodoro technique—study for 25-30 minutes and then take a 5-minute break. This method improves concentration and prevents burnout.

3. Get Enough Sleep

Many students sacrifice sleep to study longer, but this actually reduces productivity. Your brain needs rest to process and remember information. Aim for at least 6-8 hours of sleep every night, especially before an exam. A well-rested mind is more alert and performs better.

4. Eat Healthy & Stay Hydrated

What you eat affects your concentration and energy levels. Avoid junk food and too much caffeine. Instead, eat nutritious foods like nuts, fruits, and vegetables, which help improve brain function. Drink plenty of water to stay hydrated, as dehydration can make you feel tired and unfocused.

5. Exercise & Meditate

Physical activity is a great stress reliever. Simple exercises like walking, stretching, or yoga can help reduce anxiety and improve focus. Meditation and deep breathing exercises also help calm your mind. Just a few minutes of relaxation can make a big difference.

6. Stay Positive & Avoid Comparisons

It's easy to feel stressed when comparing yourself to others, but this only increases anxiety. Everyone has their own way of studying, so focus on your own progress. Believe in yourself and your efforts. Positive thinking can boost your confidence and help you perform better.

7. Talk to Someone

If you're feeling overwhelmed, don't hesitate to talk to a friend, teacher, or family member. Sharing your worries can help you feel lighter and more relaxed. Sometimes, just expressing your feelings can reduce stress.

8. Use Relaxation Techniques

Listening to calming music, writing in a journal, or doing something you enjoy can help relieve stress. You can also try deep breathing exercises—inhale for 4 seconds, hold for 4 seconds, and exhale for 4 seconds. This simple technique helps you feel calm and focused.

Final Words: Believe in Yourself!

Exams are just a part of your academic journey, not the end of the world. Stay calm, prepare well, and do your best. Remember, stress won't help you, but a positive mindset and good preparation will!

By following these tips, you can reduce stress and approach exams with confidence. Good luck

Sargun
B.Sc Economics Sem II

DEFENCE STUDIES

Defence Studies is an interdisciplinary academic field that explores military strategy, national security and international relations. It focuses on understanding the principles of warfare, defence policies and conflict resolution. This field is crucial for shaping a nation's security policies and ensuring preparedness against potential threats. The study of defence encompasses various aspects including military, history, geopolitics, intelligence analysis and arms control. It also examines modern warfare strategies, cyber security and counterterrorism measures. With the advancement of technology, defence studies now integrate artificial intelligence, space security and unmanned combat systems into military operations.

A degree in Defence Studies is beneficial for individuals aspiring to work in the armed forces, intelligence agencies, government sectors and think tanks. It enhances strategic thinking, leadership skills and policymaking abilities. Many universities and defence academics worldwide offer specialised programs in this field to equip students with theoretical and practical knowledge. In the contemporary world where security threats are evolving, the role of defence studies is increasingly significant. Nations invest heavily in defence research to safeguard their sovereignty and maintain global peace. Through diplomacy and strategic alliances, defence policies also contribute to conflict prevention and international stability.

In conclusion, Defence Studies plays a vital role in national security and global peacekeeping. It is an ever-evolving discipline that adapts to modern challenges, ensuring that nations remain prepared to tackle emerging threats in a dynamic geopolitical landscape.

Vivek Kumar
B.Sc (Computer Science) Sem VI
Roll No 9605

Superstitious: Are We ?

The child said, “Mom, the crow is cawing near our roof.”

Mother said, “It means the guests will arrive at our home soon.”

Another person was going somewhere in a hurry and one of the family members sneezed. Now, the person going outside started waiting for the second sneeze so that the ill omen related to one sneeze could be converted into a good one.

Oh My God! Omens, ill omens, superstitions!

Till when will we live in this world full of ignorance?

Our lives are revolving around these superstitions. Some people believe a dog wailing or an owl hooting to be unlucky. It's so funny to learn that itching on one hand is a sign of getting financial benefits while the same on another is sign of upcoming financial loss.

Really! Are we really living in the world of science and technology? We have AI, new technologies. We have reached space, but we still believe in omens and ill omens.

Superstition is nothing but a blind belief without any scientific logic. In past people used to believe in them because of lack of education and knowledge but in the 21st century, why do we, the so called educated people, believe in such irrational thing? We need to understand and make others aware that superstitions are nothing but a hindrance to progress.

If one is going somewhere and a black cat crosses his path, why don't we understand that the cat is simply going its own way? But no, people take it as a bad sign.

Superstition is the religion of a feeble mind. It is the result of our own ignorance or fear of mind. Sometimes these superstitions give rise to heinous crimes and human sacrifices. Originally some of the superstitions have some psychology related to various repeated occurrences. Education is the only way to make people aware and prevent our future generations from this curse.

Rather than believing in omens and ill omens, if we start believing in being human, a true human who helps others, works hard, stays optimistic and rational and makes others smile too, superstitions may no longer exist because then there will be only happiness and no ill omens.

Navjot Kaur
Assistant Professor
Department of English

Itinerary of Hope

Life is Fair believe it and you live it. In the era of manifestations and affirmations, we need to marvel ahead in the life's journey as if it is an itinerary of hope. Definitely, the itinerary of hope is a journey through life's challenges, offering comfort, inspiration, and the promise of better days. It isn't about physical travel; it's a path for our souls, with stops that remind us of the power of positivity and the human spirit's ability to endure and succeed Hope is a quiet strength that helps people keep going, even when things are tough.

Acceptance: This first step is often the hardest because when things look dark, we might doubt ourselves. But hope tells us that each new day is a fresh start. It encourages us to take chances, step out of our comfort zones, and trust in things we can't see yet. While transversing through the ordeals of life, we must recognize our struggles, fears, and doubts and build up a momentum to create a foundation for change. Hope doesn't mean there's no darkness; it grows when we face it. Accepting our vulnerabilities guided by hope we create the value of life It teaches us that even when things are uncertain, there is beauty. It reminds us that every step, no matter how small, brings us closer to our dreams. In the end, a journey of hope shows the strength of the human spirit. It reminds us that no matter how hard life gets, we have the strength to keep going and the courage to believe in better days

Resilience: Resilience is about bending without breaking, finding strength in tough times. Here, we learn to see obstacles as opportunities and failures as lessons. This stop teaches us that hope isn't passive; it's an active choice to keep going, even when the road seems tough. Hope acts a guiding light in the darkness, looking towards a better future. It is not just about dreaming; it's about being strong, believing in ourselves, and having courage. It teaches us to keep trying, have faith, and look forward to tomorrow. Our faith acts as a prop and let us hold through the tough and dwindling times. Faith that "This too shall pass" can help us go across the gargantuan of follies, foibles; tears and jeers, ups and downs.

Compassion and Connection: A kind word, a helpful gesture, or even a simple smile can bring hope to someone. When we feel down, having supportive people around us can make a big difference. Through these connections, hope embarks a journey of positivity. Our positive connections like parents, teachers and well-wishers we attain the power to stand up after we fall. They show us that failing is not the end but a step toward success. Hope spreads and grows stronger when we share experiences and support each other . Through acts of kindness, meaningful conversations, or simply being there for someone, we find that hope becomes more powerful when nurtured together. This part reminds us that we're all on this journey together, lighting the way for one another.

Embracing Possibility: The Itinerary of Hope is a timeless journey that each of us take in our own way. It's a reminder that hope isn't just a passing feeling but a steady companion, guiding us through life's twists and turns. Living with hope means keeping its light inside us, even when things are uncertain. It's about finding meaning in the journey itself, knowing that every step, no matter how small, adds to a bigger picture of purpose .

Fulfilment: The final goal of this journey is fulfilment. This doesn't mean having a perfect life, but finding peace and purpose along the way. Hope is not just a destination; it's a way of travelling—with faith, resilience, and compassion leading us every step of the way. So. let us strive hard to live a life of fulfilment and be hopeful for ourselves and be a hope for others.

Dr. Loveleen Kaur
Associate Professor
Department of English

हिन्दी अनुभाग

हरिवंश राय बच्चन

अलग अलग पथ बतलाते सब
पर मै यह बतलाता हूँ-

'राह पकड़ तू एक चला चल
पा जाएगा मधुशाला'

राजविंदर कौर
एम.ए. हिन्दी
छात्र सम्पादक

डॉ. सीमा शर्मा
प्रभाग सम्पादक

सम्पादकीय

साहित्य समाज की चेतना में सांस लेता है। यह समाज का वह परिधान है जो जनता के जीवन के सुख-दुख हर्ष विषाद आकर्षक विकर्षण के ताने-बाने से बना जाता है। उसमें विशाल मानव जाति की आत्मा का स्पंदन ध्वनि मत होता है। यह जीवन की व्याख्या करता है इसी से उसमें जीवन देने की शक्ति आती है। वह मानव को उसके जीवन को लेकर ही जीवित है। इसलिए वह पूर्णता मानव केंद्रित है। साहित्य इस मानव की अनुभूतियों भावनाओं और कलाओं का साकार रूप है और मानव सामाजिक प्राणी है। सामाजिक समस्याओं विचारों तथा भावनाओं का जहां श्रेष्ठ होता है वहीं उनसे स्वयं भी प्रभावित होता है। इसी प्रभाव का मुख्य रूप साहित्य है। इसी से विद्वानों ने साहित्य को समाज का दर्पण कहा है।

साहित्य का अर्थ है जो भाषा का माध्यम से ही साहित्य हितकारी रूप में प्रकट होता है। भाषा मनुष्य की सामाजिकता को विशेष रूप से पोस्ट करती है। उसी के द्वारा मानव समाज में एक दूसरे का भाव उत्पन्न होता है। साहित्य मानव को परस्परिक सामाजिक संबंधों को और भी अधिक दृढ़ बनाता है क्योंकि उसमें संपूर्ण मानव जाति का हित सम्मिलित रहता है। साहित्य साहित्यकार के भागों को समझ में प्रसारित है जिससे सामाजिक जीवन स्वयं मुख्य मुखरित हो उठता है क्योंकि साहित्यकार सामाजिक प्राणी होता है। समाज की उन्नति तभी संभव है जब हमारा हृदय संवेदनशील तथा बुद्धि विकसित और परिष्कृत हो। इन दोनो कार्यों के लिए साहित्य सबसे प्रभावशाली साधन है। वह हमारे हृदय को संवेदनशील बनाता है। हमारी अनुभूतियों का परिष्कार करता है। साहित्य सेवन से हमारा मन परिष्कृत और हृदय उदार हो जाता है। साहित्य का आनंद लेने के लिए हमें सातों गुणात्मक वृत्तियां में रमने का अभ्यास हो जाता है। साहित्य सेवन से मनुष्य की भावनाएं कोमल बनती है। उसके भीतर मनुष्यता का विकास होता है। शिष्ट और सभ्यता आती है जिससे दूसरों के साथ व्यवहार करने की कुशलता प्राप्त होती है। इससे समाज में शांति की स्थापना होकर विकास का मार्ग प्रशांत होता है। अंत सामाजिक जीवन में साहित्य का महत्व निर्विवाद है।

साहित्य में मानव का जीवन ही नहीं जीवन की यह कामनाएं भी जो अनंत जीवन में पूर्ण नहीं हो सकती निहित रहती है साहित्य और मार्गदर्शक दृष्टा भी।

डॉ सीमा शर्मा

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

हिंदी के बढ़ते कदम

सृष्टि के निर्माण कल से ही भाषा का संबंध मानव समाज से हो रहा है मानव जीवन में भाषा एक अभिन्न अंग है जिसके बिना मानव गंगा है इस विश्व में कई महाद्वीप राष्ट्र प्रांत है भारतेंदु हरिश्चंद्र का कथन चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर बनी 20 कोस पर पगड़ी बदले 30 कोस पर ढाणी आज भी चरितार्थ हो रहा है विदेश से व्यापार करने के लिए संप्रेषण के लिए आवश्यकता अनुसार भाषा अपनानी पड़ती है उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री और उनके प्रकार प्रचार के लिए अपनाए जाने वाले साधनों में स्थानीय भाषा का प्रयोग होता है भारत में कार्य के लिए अधिकतर हिंदी का प्रयोग हो रहा है बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपना माल बेचने के लिए हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएं अपना रही हैं आज संचार साधनों की बदौलत स्थान के बीच की दूरियां बेमानी हो गई है या यह भी कह सकते हैं कि एक तरह से मिट गई है संपूर्ण विश्व एक गांव बन गया है जिसमें कभी भी कहीं से भी किसी से भी तत्काल सिर्फ संपर्क स्थापित हो सकता है यदि आपके पास उसके लिए अपेक्षित साधन हो यहभी भविष्यवाणी की जा रही है कि वैश्वीकरण के इस दौर में विश्व की 10 भाषाएं ही जीवित रहेगी जिस में हिंदी भी एक होगी वैश्वीकरण एवं बाजार वार्ड के संदर्भ में हिंदी का महत्व इसलिए बढ़ेगा क्योंकि भविष्य में भारत व्यावसायिक व्यापारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से एक विकसित देश होगा विश्व भाषण तो विश्व की उसे प्रत्येक भाषा को कहा जा सकता है जिसमें प्रतियोगिता एक अधिक देशों में बसे हुए हो किंतु विश्व भाषा पर की वास्तविक अधिकारी वह भाषाएं हैं जो विश्व के अधिकतर देशों में पढ़ी लिखी बोली सुनी और समझी जाती है वस्तुतः प्रत्येक विश्व भाषा में प्रमुख कार्य होते हैं बोलचाल एवं जन संपर्क साहित्य सृजन शिक्षा एवं जनसंचार माध्यम प्रशासनिक कामकाज व्यावसायिक और तकनीकी अनुप्रिया अनुप्रयोग और विश्वसनीय या वैश्विक चेतना विश्व भाषा से अपेक्षाएं होती हैं कि उसे बोलते समझने वालों का विस्तृत भौगोलिक विस्तार हो भारत के बाहर नेपाल सूरीनाम फिजी सिंगापुर त्रिनिदाद हांगकांग मलेशिया थाईलैंड श्री नाम इंग्लैंड कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में हिंदी भाषा प्रचुर संख्या में दूसरी अपेक्षा है कि वहां वह भाषा लचीली हो उसमें भिन्न संदर्भों की अभिव्यक्ति की क्षमता हो उसका एक सर्वे स्वीकृत मानक रूप हो उसमें अपनापन को की कुछ दूर तक स्वीकृत होते हुए भी परस्पर संप्रेषण किसी न किसी संस्कृत मानक के माध्यम से बनी हुई हो और हिंदी में यह गुण भी है हिंदी में वह अवधी भोजपुरी राजस्थानी पहाड़ी बुंदेली मगही छत्तीसगढ़ी और जाने कितनी अजान भाषाओं के शब्द भंडार मुहावरे और उसकी लोकोक्तियां रच बस गई है इसके अलावा हिंदी भाषा का भारत को अन्य भाषाओं के साथ शताब्दियों से घनिष्ठ संपर्क रहा है हिंदी भाषी अपने देश में भी अनेक राज्यों में निवास करने के करण प्रांतीयता से ऊपर उठा हुआ है और उनके पास साहित्य की विशाल परंपरा है जो विश्व के पाठकों को अपनी

और आकर्षित करता है संयुक्त राष्ट्र की प्रक्रिया नियम गोविंद से 57 में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा तथा इसकी विभिन्न समितियां एवं उपस्थितियों के लिए आधिकारिक तथा कार्य संचालन की भाषाओं की व्यवस्था की गई है संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रथम अधिवेशन में अंतरराष्ट्रीय न्यायालय को छोड़कर इसके सभी संगठनों के लिए अंग्रेजी फ्रेंच रूस ए चीनी और स्पेनिश को आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया गया था वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ की छ आधिकारिक भाषाएं हैं अरबी को उन की ऑफीशियली लैंग्वेज का दर्जा वर्ष 1973 को मिला भारत संयुक्त राष्ट्र संघ में एक महत्वपूर्ण देश है हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाए जाने की मुहिम की शुरुआत भारत के नागपुर में 10 जनवरी 1975 को आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में हुई थी श्री अटल बिहारी वाजपेई ने संयुक्त राष्ट्र संघ में वर्ष 1977 में विदेश मंत्री के तौर पर और वर्ष 2002 में प्रधानमंत्री के तौर पर हिंदी में भाषण दिया था वर्ष 2003 में सूर्य नाम में सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन विश्व भाषा सम्मेलन में विश्व भाषा का दर्जा मिलना चाहिए हिंदी एक विश्व भाषा क्योंकि वह एक देश की राष्ट्रभाषा होने के साथ-साथ अन्य देशों में भी पर्याप्त संख्या में लोगों द्वारा लिखी बोली और समझी जाती हैवैश्वीकरण के परिपेक्ष में हिंदी के प्रतिष्कारात्मक प्रवृत्तियां दिखाई देती हैं 10 जनवरी को विश्व के लगभग 80 देश में हिंदी दिवस मनाया जाता है वैश्वीकरण के परिपेक्ष में जब हम विदेश में हिंदी की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य विदेश में हिंदी भाषा के अधिक से अधिक प्रसार के साथ ही वह विधि क्षेत्र में हिंदी के उपयोग से हैं हिंदी भारत वासियों की संपर्क भाषा तो बनी चुकी है और अब विश्व भाषा बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है अब हिंदी भर ही संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा नहीं है परंतु व्यावहारिक स्तर पर उसकी सभी एजेंसियां को मान्य भाषा है संयुक्त राष्ट्र संघ हिंदी में नियमित रूप से एक साप्ताहिक कार्यक्रम प्रस्तुत करता है जो उसकी वेबसाइट पर उपलब्ध है हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ के आधिकारिक भाषा बनाने के लिए ठोस प्रयास किया जा रहा है जिन देशों में हिंदी बोली और पढ़ी लिखी जाती है पूर्ण देश का एक संगठन बनाने का प्रयास भी भारत सरकार कर रही है हिंदी के प्रचार प्रसार को गति देने के लिए विदेश मंत्रालय में हिंदी एवं संयुक्त प्रभाव का गठन किया गया है यह विदेश में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए विभिन्न गतिविधियों को संयोजित करता है साथ ही यह विदेशियों में अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों को आयोजन भी करता है अंतरराष्ट्रीय स्तर परहिंदी को प्रतिष्ठित करने के लिए भारतीय संस्कृति संबंध परिषद महत्वपूर्ण है भूमिका निभा रहे हैं इसने दुनिया भर में अनेक विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा पीठ की स्थापना की है इन विश्वविद्यालय में यह भारत से ही शिक्षक प्रति नियुक्ति पर भेजती है जो देश में हिंदी के प्रचार प्रसार अध्यापन शोध कार्य इत्यादि से सहयोग करते हैं यह प्रतिवर्ष योग्य हिंदी पर अध्यापकों का पैनल भी तैयार करती है आज हिंदी 12 से अधिक देशों में बहुसंख्यक समाज की मुख्य भाषण आज 7 समुद्र पाठक चौथाई दुनिया में उसका परिचय में लहरा रहा है अमेरिका इंग्लैंड जर्मनी दक्षिण अफ्रीका नेपाल सिंगापुर न्यू जीलैंड मॉरीशस यमन इन 10 देश में हिंदी भाषा भारतीयों की जनसंख्या 2 करोड़ है फिजी गुणा श्री नाम तंबाकू थ्री दर तथा अरब

अमीरात इन अच्छे देश में भी हिंदी को अल्पसंख्यक भाषा के रूप में संवैधानिक दर्जा प्राप्त है भारत से बाहर जिन देशों में हिंदी बोलने लिखने पढ़ने तथा अध्ययन और अध्यापन की दृष्टि से प्रयोग होता है उन्हें हम इन वर्गों में बांट सकते हैं जहां भारतीय मूल के लोग अधिक संख्या में रहते हैं जैसे पाकिस्तान नेपालभूटान बांग्लादेश श्रीलंका महादेवाड़ी भारतीय संस्कृति से प्रभावित दक्षिण पूर्वी दक्षिणी एशियाई देश जैसे इंडोनेशिया मलेशिया थाईलैंड सीन मंगोलिया कोरिया हिंदी को विश्व की आदमी भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है अमेरिका ऑस्ट्रेलिया कनाडा और यूरोप के देश अब और अन्य इस्लामी देश जैसे संयुक्त अरब अमीरात दुबई अफगानिस्तान कतर कज़ाख़िस्तान इस बात की है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने के साथ-साथ इस संयुक्त राष्ट्र संघ के सातवीं का आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकृति दिलाने के लिए कुछ ठोस पहल की जाए हिंदी में यह शक्ति कब आएगी वह विश्व के लिए एक ऐसी महत्वपूर्ण भाषा बन जाए जिसकी अपेक्षा ना हो सके यह तभी होगा जब हमारी मानसिकता बदलेगी हमें अपनी भाषा बोलते हुए गौरव का अनुभव होगा जापान जर्मनी इंग्लैंड रूस चीन आदि सभी शक्तिशाली देश अपनी भाषा में वक्तव्य देते हैं और अनुवादक के माध्यम से उनकी बात विदेशी श्रोताओं तक पहुंची है हिंदी के सामने कई चुनौतियां हैं इन चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक है कि हम वास्तविक स्थिति और अपनी कमियां समझे हमें लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान हो लक्ष्य प्राप्ति की सार्थक योजनाएं बन ईमानदारी तथा दृढ़ता से योजनाओं को कार्य में किया जाए तथा समय-समय पर प्रगति का मूल्यांकन किया जाना चाहिए हिंदी को विश्व में अपना स्थान बनाए रखने के लिए मिलकर प्रयास करने की जरूरत है

नाम – राजविंदर कौर
कक्षा - एम ए हिन्दी
समस्तर 2
रोल नंबर-12203
विद्यार्थी सम्पादक
विद्यार्थी अध्यक्ष
राष्ट्रकवि दिनकर, हिंदी साहित्य परिषद

साहित्य का उद्देश्य

(कुछ विचार-लेखक मुंशी प्रेमचंद)

हमारे साहित्य रुचि बड़ी तेजी से बदल रही है। अब साहित्य केवल धन बहलाव की चीज नही है, मनोरंजन के सिवा उसका और भी कुछ उद्देश्य है ।अब वह केवल नायक नायिका के सहयोग वियोग की कहानी नहीं सुनाता, किंतु जीवन की समस्याओं पर विचार भी करता है और उन्हें हल भी करता है जिनसे समाज या व्यक्ति प्रभावित होते हैं। उसकी उत्कृष्टता की वर्तमान कसौटी अनुभूति की वह तीव्रता है जिससे वह हमारे भावों और विचारों में गति पैदा करता है।

हम जीवन में जो कुछ देखते हैं या जो कुछ हम पर गुजरती है, वही अनुभव और चोटे कल्पना में पहुंचकर साहित्य सीजन की प्रेरणा बनती है। कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है उसकी रचना उतनी ही आकर्षक और ऊंचे दर्जे की होती है । जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक व मानसिक तृप्ति ना मिले ,हम में शक्ति और गति न पैदा हो ,हमारा सौंदर्य प्रेम न जागृत हो _जो हम में सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता ना उत्पन करें, वह आज हमारे लिए बेकार है ,वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं ।

इस प्रकार प्रेमचंद जी ने प्राचीन साहित्य को देखते हुए ,अपने समय में जो साहित्य की नई परिभाषा दी है ,वह प्रशंसनीय है। उन्होंने अपनी साहित्यिक रचनाओं में जो समाज और देश का रूप चित्रित किया है ,वह आम व्यक्ति के जीवन को इतना छूता है कि हर व्यक्ति की कहानी लगती है ,हर व्यक्ति की समस्या का चित्रण लगता है ।प्रेमचंद जी साहित्य को समाज का दर्पण मात्र नहीं मानते ।वह इसको दीपक मानते हैं, जिसका काम प्रकाश फैलाना है।

नाम – रेशमा

कक्षा - बी ए हिन्दी

समस्तर 2

रोल नंबर-5314

सदस्य राष्ट्रकवि दिनकर, हिंदी साहित्य परिषद

मानवीय जिंदगी का उद्देश्य

प्रत्येक मनुष्य अनंत संभावनाओं का पुंज है, स्वयं में एक पूरा ब्रम्हांड है, अपने अंदर उसकी खोज करना और अपनी समस्त छुपी हुई शक्तियों को जागृत करना और उनका श्रेष्ठतम उपयोग कर अपना और अपने से जुड़े समस्त प्राणियों, प्रकृति और वातावरण को ज्यादा जीवंत, गुणकारी, सहयोगी एवम् प्रेममय बनाने में लगाना और सबके लिए बृहद कल्याण की सृष्टि करना, यही मनुष्य होने का परम लक्ष्य है।हर व्यक्ति अपनी सीमित समझ, संस्कार और दायरे में जीकर समाप्त हो जाता है, बिना अपने जीवन के मूल उद्देश्य को जानने की जिज्ञासा, प्रयास और इस महत्तम लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर जीवन जिए बिना।हम यहां अधिक से अधिक विकसित होने के लिए आए है, अपने महत्तम विस्तार को उपलब्ध होने, अपनी असीमित संभावनाओं को यथार्थ में परिणित करने के लिए।हम सभी अपने अज्ञान और मूढ़ धारणाओं और व्यर्थ बातों और कामों में उलझकर इसे हर बार नष्टकर देते है, यही मानव जीवन की सबसे बड़ी विडंबना है। जिंदगी की वास्तविक परिभाषा क्या है? क्या आप जानते हैं? आप क्या जानेंगे? इसके बारे में तो कोई नहीं जानता ।वास्तव में जिंदगी सुख-दुख के उतार चढ़ाव का नाम है। अगर आप रईस हैं, तो कहेंगे जिंदगी धन है निर्धन कहेगा रोटी है। यदि कोई पढ़ाकू होगा ,तो उसकी जिंदगी सिर्फ पुस्तके ही है। संगीतकार की जिंदगी वाद्य यंत्रों में निहित है। वह विभिन्न साज बजाने व राग गाने को ही अपनी जिंदगी मानता है। मूर्तिकार पत्थरों के माध्यम अपनी जिंदगी ढूंढता है और उसको तराशकर विभिन्न मूर्तियां बनाकर उनमें ही असीम आनंद का अनुभव करता है। इसी प्रकार सबके जिंदगी के बारे में विभिन्न विचार हैं; परंतु क्या सही मायने में यही जिंदगी है? नहीं। जिंदगी की थाह पाना एक कठिन ही नहीं, बल्कि असंभव कार्य है। जिंदगी की वास्तविक मंजिल अधिकाधिक धन या कोई ऊंचा पद कोई अन्य वस्तु को प्राप्त करना नहीं है। इसकी वास्तविक मंजिल तो मृत्यु है। परंतु मौत तो हर कोई पता है, जिंदगी तो हर कोई जीता है। पर वास्तविक जिंदगी तो वही जीता है ,जो अच्छे कर्म करता है। ताकि लोग मृत्यु प्रांत सदा आपको अपनी यादों में बसा कर रखें। कहां भी गया है कि जिंदगी हमारे पास मौत की अमानत है। प्रत्येक मनुष्य अनंत संभावनाओं का पुंज है, स्वयं में एक पूरा ब्रम्हांड है, अपने अंदर उसकी खोज करना और अपनी समस्त छुपी हुई शक्तियों को जागृत करना और उनका श्रेष्ठतम उपयोग कर अपना और अपने से जुड़े समस्त प्राणियों, प्रकृति और वातावरण को ज्यादा जीवंत, गुणकारी, सहयोगी एवम् प्रेममय बनाने में लगाना और सबके लिए बृहद कल्याण की सृष्टि करना, यही मनुष्य होने का

परम लक्ष्य है।हर व्यक्ति अपनी सीमित समझ,संस्कार और दायरे में जीकर समाप्त हो जाता है, बिना अपने जीवन के मूल उद्देश्य को जानने की जिज्ञासा,प्रयास और इस महत्तम लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर जीवन जिए बिना।

हम यहां अधिक से अधिक विकसित होने के लिए आए है,अपने महत्तम विस्तार को उपलब्ध होने, अपनी असीमित संभावनाओं को यथार्थ में परिणित करने के लिए,लेकिन हम सभी अपने अज्ञान और मूढ़ धारणाओं और व्यर्थ बातों और कामों में उलझकर इसे हर बार नष्ट कर देते है,यही मानव जीवन की सबसे बड़ी विडंबना है।जो व्यक्ति दुष्कर्म कर्म करते हैं,वह अमानत में ख़यानत करते हैं। परंतु हम सत्कर्म करके इस अमानत में ख़यानत ना करके जिंदगी के वास्तविक अर्थ का मर्म जान पाएंगे।

नाम डॉली
कक्षा -बी ए हिन्दी
समस्तर 2, रोल नंबर-5237
सदस्य राष्ट्रकवि दिनकर,हिंदी साहित्य परिषद

भारतीय भाषाओं का उज्वल भविष्य

भारतीय भाषाओं का भविष्य उज्ज्वल है,क्योंकि वे न केवल भारत की संस्कृति और विरासत का प्रतिनिधित्व करती हैं,बल्कि देश के विकास और एकता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं.

यहाँ कुछ मुख्य बिंदु दिए गए हैं:

राष्ट्रसंस्कृति और विरासत:

भारतीय भाषाएँ भारत की समृद्ध राष्ट्रसांस्कृतिक विरासत की वाहक हैं, जो सदियों से चली आ रही है.

राष्ट्रएकता और विकास:

भाषाएँ विभिन्न समुदायों को आपस में जोड़ती हैं और देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं.

भारतीय वैश्विक स्तर पर पहचान:

कई भारतीय भाषाएँ दुनिया भर में बोली जाती हैं और उन्हें वैश्विक स्तर पर भी पहचान मिल रही है.

राष्ट्रशिक्षा और ज्ञान:

राष्ट्र भाषाओं में शिक्षा और ज्ञान तक पहुंच को बढ़ावा देने से देश के विकास में मदद मिलती है.

डिजिटल माध्यमों में उपयोग:

भारतीय भाषाओं को डिजिटल माध्यमों में बढ़ावा देने से वे अधिक लोगों तक पहुंच सकती हैं और उनका उपयोग बढ़ सकता है.

भाषाओं के संरक्षण और विकास के लिए प्रयास:

सरकार और विभिन्न संगठन भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए निरन्तर कार्य कर रहे हैं.

उदाहरण के लिए, हिंदी:

हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और यह भारत की राजभाषा भी है.

संविधान में मान्यता: भारत के संविधान में 22 भाषाओं को अनुसूचित भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है.

शास्त्रीय भाषाएं: कुछ भारतीय भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा भी प्राप्त है, जिससे उनकी प्राचीन साहित्यिक धरोहर का संरक्षण होता है.

निष्कर्ष: कुल मिलाकर, भारतीय भाषाओं का भविष्य उज्ज्वल है और वे देश के विकास और एकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेंगी.

राजभाषा - भारतीय भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। ... हिंदी भाषा अपनी बहुतरे निहित खूबियों के कारण व्यापक स्तर पर आपसी सरोकार की एक सशक्त कड़ी के रूप में विकसित हो रही है । ... इसी में राष्ट्र भाषा हिंदी का उज्ज्वल भविष्य है ।

नाम दिव्या कपूर
कक्षा - बी ए हिन्दी
समस्तर 2
रोल नंबर-5266

सूचना प्रौद्योगिकी:- आधुनिक युग की रीढ़

सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) आज के युग में विकास और प्रगति का एक महत्वपूर्ण आधार बन चुकीहै। यह वह तकनीक है जो कंप्यूटर, इंटरनेट, सॉफ्टवेयर और नेटवर्किंग के माध्यम से सूचनाओं के निर्माण, भंडारण, प्रसंस्करण और संचार को संभव बनाती है।

आज सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव हर क्षेत्र में देखा जा सकता है। शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, संचार, बैंकिंग और मनोरंजन जैसे क्षेत्रों में इसका व्यापक उपयोग हो रहा

है।ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली, डिजिटल बैंकिंग, टेलीमेडिसिनऔरई-कॉमर्स जैसी सुविधाएं सूचना प्रौद्योगिकी की ही देन हैं। इससे न केवल कार्यक्षमता बढ़ी है, बल्कि समय और संसाधनों की भी बचत हुई है।

इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के विकास ने सूचना प्रौद्योगिकी को और अधिक शक्तिशाली बना दिया है। अब मशीन लर्निंग, डेटा एनालिटिक्स और साइबर सुरक्षा जैसी तकनीकों का तेजी से विकास हो रहा है। हालांकि, साइबर अपराध और डेटा चोरी जैसी चुनौतियां भी सामने आई हैं, जिन्हें प्रभावी साइबर सुरक्षा उपायों से रोका जा सकता है।

भारत में डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया जैसी योजनाओं ने सूचना प्रौद्योगिकी को और बढ़ावा दिया है। इससे न केवल देश की अर्थव्यवस्था को गति मिली है, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न हुए हैं।

संक्षेपमें, सूचना प्रौद्योगिकी आधुनिक समाज की रीढ़ बन चुकी है। इसका सही और सुरक्षित उपयोग भविष्य में तकनीकी प्रगति के नए द्वार खोलेगा और मानव जीवन को और अधिक सरल एवं उन्नत बनाएगा।

नाम दिव्या कपूर
कक्षा -बी ए हिन्दी
समस्तर 4
रोल नंबर-58284

जलियांवाला बाग हत्याकांड

जलियांवाला बाग हत्याकांड भारतीय इतिहास की सबसे दुखद घटनाओं में से एक है। यह नरसंहार 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी के दिन पंजाब के अमृतसर में हुआ था। उस समय भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था, और रॉलेट एक्ट के विरोध में हजारों निहत्थे भारतीय जलियांवालाबाग में शांतिपूर्ण सभा कर रहे थे।

ब्रिटिश जनरल रेजिनाल्ड डायर को इस सभा की जानकारी मिली, और उसने बिना किसी चेतावनी के अपने सैनिकों को निहत्थे लोगों पर गोलियां चलाने का आदेश दिया। बाग चारों ओर से दीवारों से घिरा हुआ था और वहां से बाहर निकलने के लिए केवल एक संकरा रास्ता था। सैनिकों ने इस रास्ते को भी बंद कर दिया और लगातार गोलियां बरसाईं, जब तक कि उनकी गोलियां समाप्त नहीं हो गईं। इस निर्मम गोलीकांड में हजारों निर्दोष लोग मारे गए और घायल हुए।

इस हत्याकांड ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया और स्वतंत्रता संग्राम को और तेज कर दिया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सहित कई नेताओं ने ब्रिटिश सरकार के इस कृत्य की कड़ी निंदा की। यह घटना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई।

आज भी जलियांवाला बाग में एक स्मारक बना हुआ है, जो उन शहीदों की याद दिलाता है जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। यह स्थान भारत के संघर्ष और बलिदान की गाथा को अमर बनाए रखता है।

नाम रोबिन
कक्षा -बी ए हिन्दी
समस्तर 4
रोल नंबर-8246

फैशन और युवा

परिचय फैशन एक ऐसा शब्द है जो आजकल हर जुबान पर है यह सिर्फ कपड़े पहनने का तरीका नहीं है बल्कि एक जीवन शैली एक सोच और एक सामाजिक पहचान का हिस्सा बन चुका है खासकर युवाओं के बीच फैशन का बहुत महत्व है यह केवल एक बाहरी दिखावा नहीं होता बल्कि यह आपके व्यकितत्व सोच और समाज में आपकी जगह को भी दर्शाता है इस निबंध में हम फैशन और युवा के बीच के संबंध इसके प्रभाव इतिहास और वर्तमान समय में फैशन के महत्व को समझने की कोशिश करेंगे

फैशन का अर्थ:

फैशन का अर्थ केवल कपड़े पहनने तक सीमित नहीं है फैशन हमारे जीवन के उस ढंग को दर्शाता है जिसमें हम अपनी पहचान बनाते हैं इसमें हमारे कपड़े पहनावा मेकअप जूते बालो का स्टाईल और अन्य बहुत सारी चीजे शामिल होती है फैशन हमे यह व्यक्त करने का मौका देता है कि हम कौन है और हमारी सामाजिक स्थिति क्या है यह हमारी पसंद रूचियो और कभी कभी हमारे आस्थाओं का भी प्रतीक बन सकता है

क्लासिक फैशन

यह फैशन जो समय के साथ बदलता नहीं बल्कि हर समय सही रहता है जैसे सूट और साड़ी

ट्रेंड फैशन

यह वह फैशन होता है जो एक समय में बहुत प्रसिद्ध होता है और फिर कुछ समय बाद खत्म होता है जैसे 90s के बेल बाटम पेटं

इफार्मल फैशन

यह आरामदायक और रोजमर्रा के जीवन में पहने जाने वाले कपड़े होते हैं जैसे जीसं और टी शर्ट

फार्मल फैशन

यह एक उच्च श्रेणी का फैशन होता है जो आफिस और पार्टियों में पहना जाता है जैसे टाई और सूट

फैशन और युवा

युवाओं के लिए फैशन केवल एक दिखावा नहीं है बल्कि यह उनकी व्यक्तिगत सोच और उनके व्यकितत्व का प्रतीक होता है जब युवा किसी नये फैशन को अपनाते है तो वे अपने आप को एक नई पहचान देते हैं वे अपने अंदर की सोच अपनी सामाजिक स्थिति और कभी कभी अपने अपने परिवार की सस्कृति को फैशन के माध्यम से प्रदर्शित करते हैं युवाओं के बीच फैशन को अपनाने के बहुत से कारण हो सकते हैं जो सबसे पहले यह आत्मविश्वास को बढाता है जब कोई व्यक्ति अच्छा और सही कपड़े पहनता है इसके अलावा फैशन युवा को समाज में अधिक लोकप्रिय बनाने का एक तरीका भी बन सकता है यह उन्हें अपने दोस्तों और परिवार के बीच अधिक आकर्षक बना सकता है युवाओं में फैशन के प्रति रुचि का एक और कारण यह हो सकता है कि वे नये डिजाइन को अपनाने के लिए तैयार रहते हैं इसके माध्यम से वे खुद को व्यक्त करते है और दूसरो से अलग दिखने की कोशिश करते है फैशन में खुद को ढालने के कारण उन्हें समाज में अपनी जगह बनाने का अहसास होता है

फैशन के प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव

आत्मविश्वास में वृद्धि

फैशन युवाओं को यह महसूस कराता है कि वे अपने व्यक्तिव को अच्छे तरीके प्रदर्शित कर रहे हैं जब वे अच्छे और टेंडी कपड़े पहनने है तो उनका आत्मविश्वास बढता है

समाज में लोकप्रिय

फैशन के साथ जुड़ने से युवा किसी विशेष सामाजिक समूह का हिस्सा बन सकते हैं और समाज में लोकप्रिय हो सकते हैं

रचनात्मकता और आत्म अभिव्यक्ति

फैशन के माध्यम से युवा अपनी रचनात्मकता और व्यक्तिगत विचारों को व्यक्त करते है यह उन्हें अपनी पहचान बनाने का मौका देता है

स्वस्थ प्रतिस्पर्धा

फैशन के माध्यम से युवा एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते है जो उन्हें अच्छा दिखने के लिए प्रेरित करता है और एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है

नकारात्मक प्रभाव

सामाजिक दबाव

फैशन की दुनिया में हमेशा एक प्रतिस्पर्धा होती है और कभी कभी युवा इस प्रतिस्पर्धा का हिस्सा बनने के लिए अपनी आर्थिक स्थिति से अधिक खर्च करते है इससे वे आर्थिक संकट का सामना कर सकते हैं

मानसिक दबाव

यदि युवा हमेशा फैशन के पीछे दौडते है तो यह उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है वे अपने असली पहचान खो सकते हैं और केवल फैशन के नाम पर जीवन जीने की कोशिश कर सकते हैं

नाम लक्की
कक्षा -बी ए हिन्दी
समस्तर 4
रोल नंबर-8240

बढ़ता विज्ञान घटते मानवीय मूल्य

भौतिक प्रगति और धन में वृद्धि मानवीय मूल्य और नैतिकता के पतन की ओर बढ़ते कदम। भौतिकवाद स्वार्थ ,लालच और भ्रष्टाचार की ओर ले जाता है। भौतिकवाद उन्नति के पागलपन में मानव प्रगति के लिए आवश्यक मूल्य की अपेक्षा की गई है। भौतिकवादी उन्नति मानवीय मूल्यों के पतन के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार नहीं है ।यह आमतौर पर माना जाता है कि भौतिक प्रगति और धन में वृद्धि मानव मूल्यों के अंतिम पाटन की दिशा में कम है एक समाज का समग्र पतन।इसमें विकास और परिवर्तनों के साथ प्राचीन भारतीय ,चीनी ,रोमन और यूनानी सभ्यताओं में लोकप्रियता हासिल की जिसने संस्कृतियों के विनाश के साथ-साथ विचारों और समाज के नए तरीकों का उदय किया। भारत में भगवान बुद्ध और भगवान महावीर भौतिकवाद से अवगत थे और उन्होंने मानवीय मूल्यों के समग्र पाटन को रोकने के लिए ईमानदारी से काम करना शुरू कर दिया । दरअसल,इतिहास भौतिक प्रगति का प्रमाण है और इसके परिणाम स्वरुप धन का संचय मानव मूल्य और नैतिकता और साथी मनुष्यों के बीच प्रेम के फलने फूलने में एक बड़ी बाधा है ।यह मान्यता की एक तेजी से भौतिकवादी समाज में केवल योग्यतम की जीवित रह

सकता है लोगों को प्रेम ,विचार और सहयोग के मानवीय मूल्य सहित अन्य सभी चीजों पर स्वार्थ को स्थान देता है

नाम- दृष्टि
कक्षा - बी. काम. हिन्दी
समस्तर 2
रोल नंबर- 4654

सुबह की सैर

सुबह की सैर हमारे जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। यह न केवल हमारे शरीर को स्वस्थ रखती है बल्कि हमारे मन को भी शांति और ताजगी देती है। सुबह की ठंडी और ताजा हमारे फेफड़ों की शुद्ध आक्सीजन प्रदान करती हैं, जिससे हमारी सेहत बेहतर होती है।

सुबह के सैर करने से हमारा शरीर सक्रिय और मजबूत बनता है। यह हड्डियों को स्वस्थ रखती है। रक्त संचार को बेहतर बनाती है और शरीर को फिट बनाए रखने में मदद करती है। इसके अलावा सुबह की हल्की धूप से हमें विटामिन डी मिलता है जो हड्डियों के लिए बहुत जरूरी होता है।

सुबह के शहर से मन को शांति और तक की मिलती है हरियाली और पक्षियों की चहचहाट हमें सुकून देती है। इससे हमारा तनाव दूर होता है और दिन भर काम करने की ऊर्जा मिलती है।

नियमित रूप से सुबह टहलने से मोटापा ,डायबिटीज, ब्लड प्रेशर और दिल की बीमारियों का खतरा कम हो जाता है। यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ता है, जिससे हम बीमारियों से बच सकते हैं।

(1) मोटापा कम करने में सहायक सुबह की सैर करने से शरीर में कैलोरी बर्न होती है जिससे वजन नियंत्रित रहता है।

(2) मधुमेह और उच्च रक्त चाप पर नियंत्रण यह ब्लड शुगर और ब्लड प्रेशर को नियंत्रण रखने में मदद करता है।

(3) हड्डियों को मजबूत बनाना सुबह की हल्की धूप से शरीर को विटामिन डी मिलता है जो हड्डियों को मजबूत करता है।

(4) पाचन तंत्र में सुधार सुबह टहलने से पाचन क्रिया सुचारू रहती है और कब्ज जैसी समस्याएं नहीं होती।

(5) शांत संबंधी समस्याओं मैं लाभकारी ताजी हवा में सांस लेने से फेफड़े मजबूत होते हैं और अस्थमा जैसी समस्याओं में राहत मिलती है।

(क) **मानसिक स्वास्थ्य में सुधार**:- सुबह के शहर केवल शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि मानसिक रूप से भी हमें लाभ पहुंच जाती है। यह हमारे मस्तिष्क को सक्रिय बनती है और तनाव को काम करती है। जब हम प्रकृति के करीब होते हैं तो हमारा मन शांत रहता है और नकारात्मक विचार दूर हो जाते हैं।

(1) तनाव और चिंता को कम करना सुबह की ताजी हवा में टहलने से दिमाग को शांति मिलती है और मानसिक तनाव का होता है।

(2) एकाग्रता और याददाश्त में सुधार यह मस्तिष्क की कार्य क्षमता को बढ़ाती है जिससे पढ़ाई और काम में ध्यान केंद्रित करने में मदद करती है।

(3) मूड बेहतर बनाना टहलने से शरीर में हैप्पी हार्मोन का स्राव होता है जिससे मूड अच्छा रहता है।

(4) रचनात्मक और नए विचारों को बढ़ावा देना सुबह के समय हमारा दिमाग सबसे अधिक सक्रिय होता है जिससे नए विचारों और रचनात्मकता में विधि होती है।

(ख) **सुबह की सैर को अधिक प्रभावी बनाने के उपाय***: अगर आप सुबह के शहर को अधिक लाभकारी बनाना चाहते हैं तो कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

(1) जल्दी उठने की आदत डालें सुबह जल्दी उठकर टहलने जाना अधिक लाभदायक होता है।

(2) सही जगह का चुनाव करें पार्क बगीचा या शांत सड़के सबसे अच्छी जगह होती है।

(3) धीरे-धीरे शुरुआत करें पहले धीमी चाल से पहले और फिर गति बढ़ाएं।

(4) संगीत सुन सकते हैं हल्का संगीत सुनने से टहलने का अनुभव और अधिक आनंददायक बन सकता है।

(5) आरामदायक कपड़े पहने हल्के ताकि शरीर को आसानी से हिलने डुलने में सुविधा हो।

(ग) सामाजिक और पारिवारिक जीवन पर प्रभाव* : सुबह के शहर से न केवल व्यक्तिगत लाभ होता है बल्कि यह हमारे सामाजिक और पारिवारिक जीवन पर भी सकारात्मक प्रभाव डालती है। जब हम पार्क में टहलते हैं तो अन्य लोगों से मुलाकात होती है जिससे सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं इसके अलावा यदि हम परिवार के सदस्यों या दोस्तों के साथ चलते हैं तो इससे आप से संबंध भी बेहतर होते हैं।

(1) सामाजिक जुड़ाव बढ़ता है पार्क में लोगों से मिलने और बातचीत करने का मौका मिलता है।

(2) परिवार के साथ समय बिताने का अवसर सुबह की सैर के दौरान परिवार के साथ समय बताने से रिश्ते मजबूत होते हैं।

(3) समुदाय में सक्रियता बढ़ती है जब हमने मित्र रूप से टहलने जाते हैं तो हम अपने आसपास के लोगों से अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं।

*(**घ**)* ***सुबह की सैर और अनुशासन*** : सुबह की सैर करने से हमारे जीवन शैली अनुशासित बनती है। यदि हम नियमित रूप से सुबह जल्दी उठकर टहलते हैं तो हमारा दिनचर्या व्यवस्थित हो जाता है। यह हमें समय के महत्व समझने में मदद करता है और हमें अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

(1) समय पर सोने और उठने की आदत बनती है।

(2) एक स्वस्थ दिनचर्या विकसित होती है।

(3) कार्य उत्पादकता में विधि होती है।

सुबह के शहर हमारे जीवन को स्वस्थ सुखद और ऊर्जावान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को सुधरता है बल्कि हमें अनुशासन और सकारात्मक भी सिखाती है। जो लोग नियमित रूप से सुबह की सैर करते हैं वह अधिक ऊर्जावान खुश और स्वस्थ जीवन जीते हैं।

नाम कार्तिक
कक्षा - बी ए हिन्दी
समस्तर 4
रोल नंबर-8241

अनुशासन और विद्यार्थी

विद्यार्थी जीवन व्यक्ति के संपूर्ण जीवन का सबसे महत्वपूर्ण चरण होता है। यह केवल शिक्षा प्राप्त करने का समय नहीं होता, बल्कि यह वह अवधि होती है जब व्यक्ति के चरित्र, आदतें और नैतिक मूल्य विकसित होते हैं। इस विकास में अनुशासन (अनुशासन) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

अनुशासन का अर्थ है नियमों का पालन करना, समय का सदुपयोग करना और अपने कार्यों में नियमितता बनाए रखना। एक अनुशासित विद्यार्थी ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। यदि विद्यार्थी अनुशासनहीन होगा, तो वह अपने

अध्ययन में एकाग्रता नहीं रख पाएगा और उसका भविष्य प्रभावित हो सकता है। अनुशासन न केवल शिक्षा में बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की कुंजी है।

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व कई रूपों में देखा जा सकता है। समय पर पढ़ाई करना, होमवर्क पूरा करना, शिक्षकों और माता-पिता का आदर करना, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना और अच्छे संस्कार अपनाना अनुशासन के महत्वपूर्ण अंग हैं। खेल-कूद और अन्य सह-पाठयक्रम गतिविधियों में भी अनुशासन आवश्यक होता है, क्योंकि यह टीम वर्क, नेतृत्व और आत्मनियंत्रण की भावना विकसित करता है।

संक्षेप में, अनुशासन एक विद्यार्थी को सफल, आत्मनिर्भर और जिम्मेदार नागरिक बनाता है। यदि विद्यार्थी अनुशासन का पालन करेगा, तो वह अपने लक्ष्य तक अवश्य पहुंचेगा और समाज में एक प्रेरणादायक उदाहरण बनेगा।

नाम सक्षम
कक्षा -बी ए हिन्दी
समस्तर ५
रोल नंबर-8260

एहसास (कविता)

प्रेम की परिभाषा पूछो तो सीता सी नहीं मैं राधा सी कहाती हूं।
मर्यादा जानो मेरी तो मैं सीता सी सुहाती हूं ।
रिश्ता निभाऊ रुकमणी सा बावली बनू मीरा सी दर दर तेरी दीवानी बन तुझमें समाती हूं।
देखू तुझे सब में मैं फ़िर शिव सी वैराग में मुस्काती हूं।
तुझसे जुड़ी हर चीज को अब मैं अपना कहती हूं
कुछ बातें बाकी थी कुछ यादें बाकी थी बाकी थे कई दर्द बांटने बाकी थे कई गम बाटने बस अब वक्त ना बाकी था ना बाकी था हम।
वक्त की गहराइयों में ऐसा डूब गए खुद ही खुद को भूल गए
बाकी न था अब कुछ मुझमें मुझसा एह वक्त दिया तूने यह धोखा मुझे दगाबाज सा।
ना जानू की किस्मत अब किधर जाएगी बस उम्मीद है मुझसे मुझे यूं जुदा कर वक्त किस्मत की ऐसी मात खिलाएगी
एह मुकदर बस यही उम्मीद है यह किस्मत अब यूं न रुलाएगी

नाम समृद्धि
कक्षा -बी बी ए
समस्तर ५, रोल नंबर-7009

जिंदगी की ट्रेन"

जिंदगी की ट्रेन में,
सब कुछ छूट रहा है,
कोशिश करता हूँ मनाने की,
पर हर कोई रूठ रहा है!
बिताए बचपन के हर पल जिसके साथ,
नहीं कर सकते उससे आज कोई आस!
आस विश्वास की, अपनेपन की,

बांह पकड़ने की हर पल,
कोशिश रही है मेरी,
रिश्तो को पटरी पर,
लाने की ख्वाहिश रही है मेरी !
पर जैसे ही गाड़ी चलती है ,
हाथ छूट जाता है,
एक पल में सब अपना,
बेगाना हो जाता है!

सोचता हूं शायद मेरे में ही,
कोई खोट है,
जिससे स्नेह किया,
वही दिल पर करता चोट है!
बड़े छोटे और कई रिश्ते नाते,
क्यों नहीं कोई दिल से अपनाते!

शायद दुनिया का यही दस्तूर है,
जिसे अपना समझा,
हकीकत में वही दिल से दूर है!
जो दिल में है वह प्यार है,
दिमाग तो सिर्फ एक व्यापार है!

मैं लगा रहा रिश्तो के थैलों की गांठ
लगाने को,
जो दूर खड़े थे उन्हें पास लाने को,
पर उन्होंने भी देर न की,
दूसरी ट्रेन की प्रथम श्रेणी में जाने को!

अगले स्टेशन पर फिर मैं आस लगाए
बैठा था,
शायद वह हाथ दूर से हिल जाए,
जो पिछले स्टेशन पर छूटा था!
जो पिछले स्टेशन पर छूटा था!

स्वरचित,
अजय शर्मा

ਡਾ. ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਜੀ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ

ਪੰਜਾਬੀ ਸੈਕਸ਼ਨ

ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ : ਪੰਜਾਬੀ ਅਦਬ ਦਾ ਧਰੂ ਤਾਰਾ

ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਮੈਦਾਨ ਵਿੱਚ ਜਿਸਨੇ ਹੈ ਇਕ ਜੋਤ ਜਗਾਈ,
ਓ ਹੈ ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਜਿਸਨੇ ਹਰ ਪਾਸੇ ਰੋਸ਼ਨੀ ਫੈਲਾਈ।
ਪਿਆਰ, ਦਰਦ, ਮਾਂ-ਬੋਲੀ, ਵਿਰਾਸਤ ਤੇ ਇਨਸਾਫ ਦੇ ਰੰਗ,
ਕਲਮ ਉਸ ਦੀ ਨੇ ਚਮਕਾਏ ਹਰੇਕ ਅੰਗ।

ਅੱਖਰ-ਅੱਖਰ ਵਿੱਚ ਉਸਦੇ ਹੈ ਰੂਹ ਬੋਲਦੀ,
ਜਿੰਦਗੀ ਦੀ ਸੱਚਾਈ ਨੂੰ ਜੋ ਹੈ ਖੋਲ੍ਹਦੀ।
ਮਾਂ-ਬੋਲੀ ਨੂੰ ਦਿੱਤਾ ਉਸਨੇ ਇੱਕ ਨਵਾਂ ਪੈਗਾਮ,
ਸ਼ਬਦ ਉਸਦੇ ਹਨ ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ ਦੇ ਪੁਲ ਸਮਾਨ।

ਦਿਲਾਂ ਦੀ ਧੜਕਣ, ਜ਼ਖ਼ਮਾਂ ਦੀ ਆਵਾਜ਼,
ਉਸ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਛੇੜਦੀ ਇਕ ਅਲੌਕਿਕ ਸਾਜ਼।
ਸਲਾਮ ਉਸ ਪੰਜਾਬੀ ਸ਼ਾਇਰ ਨੂੰ, ਜਿਸ ਨੇ ਲਿਖੇ,
ਪੰਜਾਬ, ਪੰਜਾਬੀ, ਪੰਜਾਬੀਅਤ ਦੇ ਸੁਨਹਿਰੇ ਅਲਫ਼ਾਜ਼।

ਕਰਨਦੀਪ ਕੌਰ
ਐਮ.ਏ. ਸਮੈਸਟਰ 2
ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਸੰਪਾਦਕ

ਡਾ. ਗੁਰਦਾਸ ਸਿੰਘ ਸੇਖੋਂ
ਸੈਕਸ਼ਨ ਸੰਪਾਦਕ

ਸੰਪਾਦਕੀ ਨੋਟ

ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਸਾਡੇ ਸੰਸਕਾਰ, ਇਤਿਹਾਸ ਅਤੇ ਵਿਰਾਸਤ ਦੀ ਇੱਕ ਅਹਿਮ ਪਛਾਣ ਹੈ। ਇਹ ਸਿਰਫ਼ ਇੱਕ ਭਾਸ਼ਾ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਇੱਕ ਜਿਉਂਦੀ-ਜਾਗਦੀ ਧਾਰਾ ਹੈ, ਜੋ ਸਾਡੀ ਸੋਚ, ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਅਤੇ ਆਪਣੇਪਣ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਅੱਜ ਦੇ ਗਲੋਬਲਾਈਜ਼ੇਸ਼ਨ ਦੇ ਦੌਰ ਵਿੱਚ ਜਿੱਥੇ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਅਤੇ ਹੋਰ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਦਾ ਵਾਧੂ ਪ੍ਰਭਾਵ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਉਥੇ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ ਬਚਾਉਣ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ, ਜੋ ਇਸ ਤੋਂ ਦੂਰੀ ਬਣਾਉਂਦੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣ ਵਾਲੇ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਲਈ ਵੀ ਇਹ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਨਾਲ ਜੋੜਨ।

ਸਾਡੀ ਭਾਸ਼ਾ ਸਾਡੀ ਸ਼ਾਨ ਹੈ। ਇਸਦੀ ਰੱਖਿਆ ਸਾਡੀ ਨੈਤਿਕ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਹੈ। ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਪ੍ਰਤੀ ਵਧਦੀ ਹੋਈ ਉਪਰਾਮਤਾ ਇੱਕ ਗੰਭੀਰ ਚਿੰਤਾ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਾਡੇ ਵਿਦਿਆਲਿਆਂ, ਮੀਡਿਆ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਦੀ ਜਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਆਪਣਾ ਸਥਾਨ ਬਣਾਈ ਰੱਖੇ, ਇਹ ਯਕੀਨੀ ਬਣਾਉਣਾ ਸਾਡੀ ਸਭ ਦੀ ਸੰਯੁਕਤ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲਣ, ਲਿਖਣ ਅਤੇ ਪੜ੍ਹਣ ਵਿੱਚ ਜਿੰਨਾ ਮਾਣ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਾਂਗੇ, ਇਸਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਹੀ ਅਗਲੀਆਂ ਪੀੜ੍ਹੀਆਂ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਵਿੱਚ ਸਫਲ ਹੋਵਾਂਗੇ। ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਹੱਕ ਲਈ ਆਵਾਜ਼ ਚੁੱਕਣ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਦਫਤਰੀ, ਪ੍ਰਸ਼ਾਸਨਿਕ ਅਤੇ ਤਕਨੀਕੀ ਭਾਸ਼ਾ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਯਤਨ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

“ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਮਾਂ-ਬੋਲੀ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਸੰਭਾਲਿਆਂ, ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਪਛਾਣ ਖੋਹ ਬੈਠਾਂਗੇ।”

ਡਾ. ਗੁਰਦਾਸ ਸਿੰਘ ਸੇਖੋਂ
ਕੋਆਰਡੀਨੇਟਰ- ਪੋਸਟ ਗ੍ਰੈਜੂਏਟ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ

ਸੰਪਾਦਕੀ ਨੋਟ

ਅੱਜ ਦਾ ਸੱਚ

ਨਸ਼ਿਆਂ ਨੇ ਖਾਧਾ ਪੁੱਤਾਂ ਨੂੰ
ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਖਾ ਗਿਆ ਰੁੱਤਾਂ ਨੂੰ
ਜੱਟ ਨੂੰ ਖਾ ਲਿਆ ਕਰਜ਼ੇ ਨੇ
ਗੀਤਾਂ ਨੇ ਚੱਕ ਲਿਆ ਮੁੱਛਾਂ ਨੂੰ
ਲੋੜਾਂ ਨੂੰ ਤਰੱਕੀ ਖਾ ਗਈ ਏ
ਕੁੜੀ ਮਾਰ ਖਾ ਗਏ ਕੁੱਖਾਂ ਨੂੰ
ਹੁਣ ਝੜੀ ਸੌਣ ਦੀ ਲੱਗੇ ਨਾ
ਅਸੀਂ ਵੱਢ ਕੇ ਬਹਿ ਗਏ ਰੁੱਖਾਂ ਨੂੰ
ਕਦੇ ਰਾਜ ਖਾਲਸਾ ਕਰਦਾ ਸੀ
ਹੁਣ ਅੱਡ ਦੇ ਫਿਰਦੇ ਬੁੱਕਾਂ ਨੂੰ
ਜੀਐਸਟੀ ਲਾ ਤੀ ਲੰਗਰ ਤੇ
ਸਰਕਾਰ ਨਾ ਵੇਖੇ ਭੁੱਖਾਂ ਨੂੰ
ਮੱਤ ਮਾਰੀ ਕੌਮ ਦੀ ਵਹਿਮਾਂ ਨੇ
ਔਰਤ ਫਿਰੇ ਬਚਾਉਂਦੀ ਗੁੱਤਾਂ ਨੂੰ

ਕਰਨਦੀਪ ਕੌਰ ਐੱਮ.ਏ.(ਪੰਜਾਬੀ) ਦੂਜਾ ਸਮੈਸਟਰ
ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਸੰਪਾਦਕ, ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ

ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਵੱਲ ਨਾ ਵੇਖ ਇਨਸਾਨ, ਕਿਸਮਤ ਬਣਾਇਆ ਬਣਦੀ ਹੈ!!

ਸਿਰਲੇਖ ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਥੋੜਾ ਸੋਚਣਾ ਬਣਦਾ ਕਿ ਕਿਸਮਤ ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਕਰਦੀ ਜਾਂ ਮਿਹਨਤ ਉਪਰ 21ਵੀਂ ਸਦੀ ਚੱਲ ਰਹੀ ਹੈ ਤੇ ਅਸੀਂ ਤੁਰੇ ਫਿਰਦੇ ਹਾਂ ਦਕਿਆਨੂਸੀ ਵਿਚਾਰਾਂ ਪਿੱਛੇ ਲਕੀਰਾਂ ਵਾਲੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਅਖੌਤੀ ਬਾਬੇ /ਸਿਆਣਿਆਂ ਲਈ ਤਾਂ ਠੀਕ ਨੇ, ਜਿਹੜੇ ਭੋਲੇ ਭਾਲੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਮੱਕੜ ਜਾਲ ਚ ਫਸਾ ਕੇ ਲੁੱਟਦੇ ਨੇ ਪਰ ਜੇ ਪੜਿਆ ਲਿਖਿਆ ਸਾਇੰਸ ਦੇ ਜ਼ਮਾਨੇ 'ਚ ਵਿਚਰਦਾ ਬੰਦਾ ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰੋੜਤਾ ਕਰੇ ਤਾਂ ਗੱਲ ਬਣਦੀ ਨਹੀਂ ਕੁਝ ਹਾਸਲ ਕਰਨਾ ਤਾਂ ਮਿਹਨਤ ਤਾਂ ਕਰਨੀ ਪੈਣੀ, ਸਫ਼ਲਤਾ ਦਾ ਸ਼ਾਰਟ ਕੱਟ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਉੱਗਣ ਵਾਲੇ ਤਾਂ ਪੱਥਰਾਂ ਦਾ ਸੀਨਾ ਪਾੜ ਕੇ ਵੀ ਉੱਗ ਪੈਂਦੇ ਨੇ ਤੇ ਨਾਲੇ ਕਹਿੰਦੇ ਕਿਸਮਤ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਵੀ ਹੁੰਦੀ ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹੱਥ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ ਕਿਸਮਤ ਜਾਂ ਤਕਦੀਰ, ਇਹਨਾਂ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਕਈ ਵਾਰ ਇਨਸਾਨ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਮੁੱਖ ਫੈਸਲੇ, ਸੰਘਰਸ਼ਾਂ ਅਤੇ ਚੁਣੌਤੀਆਂ ਦਾ ਜਵਾਬ ਸਮਝਦਾ ਹੈ। ਕੁਝ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਮੰਨਣਾ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੀ ਕਿਸਮਤ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਸਮੇਂ ਹੀ ਤਿਆਰ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਨੂੰ ਬਦਲਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ, ਜਦਕਿ ਕੁਝ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਇਹ ਵੀ ਮੰਨਣਾ ਹੈ ਕਿ ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਆਪਣੀਆਂ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਨੂੰ ਸਹੀ ਰਸਤੇ 'ਤੇ ਲੈ ਕੇ ਚੱਲੇ, ਤਾਂ ਸਾਡੀ ਕਿਸਮਤ ਨੂੰ ਅਪਣੇ ਅਨੁਸਾਰ ਤਬਦੀਲ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ , ਕਿਸੇ ਸ਼ਾਇਰ ਨੇ ਖੂਬ ਕਿਹਾ ਕਿ "ਹੋ ਸਕਤਾ ਹੈ ਆਸਮਾਨੋਂ ਮੇ ਬੀ ਸੁਰਾਖ ,ਏਕ ਪੱਥਰ ਰੂਹ ਸੇ ਫੇਂਕ ਕਰ ਤੋ ਦੇਖੋ" ਮੈਂ ਦੂਜੀ ਧਾਰਨਾ ਵਾਲੇ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਖੜਨਾ ਪਸੰਦ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿਸੇ ਦਾਰਸ਼ਨਿਕ ਨੇ ਠੀਕ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜੇ ਅਸੀਂ ਜੰਮਦੇ ਗਰੀਬ ਹਾਂ ਤਾਂ ਇਹ ਸਾਡਾ ਦੋਸ਼ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ,ਪਰ ਜੇ ਅਸੀਂ ਮਰਦੇ ਵੀ ਗਰੀਬ ਹਾਂ ਤਾਂ ਪੱਕਾ ਉਹ ਦੋਸ਼ ਸਾਡਾ ਹੀ ਹੋਵੇਗਾ| ਕਿਸਮਤ ਅਤੇ ਤਕਦੀਰ ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਦੂਜੀ ਧਾਰਣਾ ਹੈ ਜਿਸਦੇ ਅਧੀਨ ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਜੀਵਨ ਰੇਖਾ ਜਾਣਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਾਂ। ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਕੁਝ ਲੋਕ ਮੰਨਦੇ ਹਨ ਕਿ ਇਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਭਵਿੱਖ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ, ਪਰ ਇਹ ਧਾਰਣਾ ਸਿਰਫ਼ ਇੱਕ ਪੁਰਾਣੀ ਕ੍ਰਿਤੀ ਹੈ। ਅਸਲ ਵਿੱਚ, ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਸਾਡੀ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨਿਕ ਅਤੇ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਤਜ਼ੁਰਬਿਆਂ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਹਨ, ਜੋ ਕਿ ਸਮੇਂ ਨਾਲ ਤਬਦੀਲ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ, ਨਾ ਕਿ ਕੋਈ ਢੋਂਗੀ ਧਾਰਣਾ।

ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਲੋਕ ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ ਇਹ ਮੰਨਦੇ ਹਨ ਕਿ ਇਹ ਜੀਵਨ ਦੇ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਅੰਗਾਂ ਜਿਵੇਂ ਪਿਆਰ, ਸਿਹਤ, ਦੌਲਤ ਅਤੇ ਭਵਿੱਖ ਦੇ ਘਟਨਾਵਾਂ ਦਾ ਇਸ਼ਾਰਾ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਪਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਲਕੀਰਾਂ ਨੂੰ ਸਿਰਫ ਇੱਕ ਮੂਲ ਅਤੇ ਜ਼ਰੂਰੀ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਦੇਖਣਾ ਉਚਿਤ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਮਨੋਵਿਗਿਆਨਕ ਰੂਪ ਵਿੱਚ, ਇਹ ਸਾਡੀਆਂ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਅਤੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਅਨੁਭਵਾਂ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਜੀਵਨ ਦੇ ਸੰਘਰਸ਼, ਖੁਸ਼ੀਆਂ, ਦੁਖ ਅਤੇ ਪ੍ਰੇਰਣਾਵਾਂ, ਇਹ ਸਾਰੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਵਿੱਚ

ਝਲਕਦੀਆਂ ਹਨ।ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਸਿਰਫ ਕਿਸਮਤ ਦਾ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦੀਆਂ। ਇਹ ਸਾਡੀਆਂ ਆਤਮਿਕ ਅਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਸਥਿਤੀਆਂ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਸਾਡੇ ਭਵਿੱਖ ਬਾਰੇ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅੰਦਾਜ਼ਾ ਲਗਾਉਣ ਦੀਆਂ ਸਮਰਥਾਵਾਂ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀਆਂ। ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਨੂੰ ਦੇਖਣਾ ਇਕ ਖਿਆਲੀ ਗੱਲ ਹੈ ਜੋ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨਕ ਤੌਰ 'ਤੇ ਉਪਯੋਗੀ ਨਹੀਂ ਹੈ।

ਅਸਲ ਵਿੱਚ, ਕਿਸਮਤ ਇੱਕ ਰੂਹਾਨੀ ਧਾਰਣਾ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ ਪਰ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਸਵੈ-ਤਿਆਰ ਕੀਤੀ ਗਈ ਮਿਹਨਤ ਅਤੇ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਨਾਲ ਆਪਣੀ ਜੀਵਨ ਰੇਖਾ ਬਣਾਉਂਦੇ ਹਾਂ। ਕਿਸੇ ਵੀ ਇਨਸਾਨ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਕਿਸਮਤ ਨੂੰ ਬਦਲਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਉਸ ਦੇ ਜੀਵਨ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਸਿਰਫ ਹੱਥਾਂ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਉਸ ਦੀਆਂ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਅਤੇ ਉਸ ਦੇ ਫੈਸਲਿਆਂ ਵਿੱਚ ਲੁਕੀਆਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ।ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਪ੍ਰੇਰਕ ਵਿਅਕਤੀਆਂ, ਅਖੀਰਕਾਰ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਆਪਣੀਆਂ ਜ਼ਿੰਦਾ ਅਦਾਵਾਂ ਅਤੇ ਕੰਮ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਭਵਿੱਖ ਨੂੰ ਬਦਲਦੇ ਹਨ, ਉਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ, ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਨੂੰ ਸਿਰਫ ਇੱਕ ਅਲੰਕਾਰਕ ਪ੍ਰਤੀਕ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਦੇਖਣਾ ਹੀ ਬਿਹਤਰ ਹੈ। ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਇਨਸਾਨ ਦੀ ਮਿਹਨਤ, ਸਮਰੱਥਾ ਅਤੇ ਜੋਸ਼ ਨਾਲ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਕਿਸਮਤ ਸਿਰਫ ਇਕ ਹੱਲਾ-ਗੁੱਲਾ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਆਪਣੀਆਂ ਕਾਰਵਾਈਆਂ ਅਤੇ ਸੰਘਰਸ਼ਾਂ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਹੈ।ਸਾਰਥਕ ਤੌਰ 'ਤੇ, ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਕਿਸੇ ਵੀ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਕਿਸਮਤ ਦਾ ਅੰਦਾਜ਼ਾ ਲਗਾਉਣਾ ਅਸਲ ਵਿੱਚ ਭਰਮ ਹੈ। ਅਸਲ ਜ਼ਰੂਰਤ ਤਾਂ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀਖਿਆਨ ਅਤੇ ਮਿਹਨਤ 'ਤੇ ਫੋਕਸ ਕਰਨ ਦੀ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਕਿਸਮਤ ਬਣਾਉਂਦੇ ਹਾਂ ਅਤੇ ਇਸ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਮਿਹਨਤ ਅਤੇ ਦ੍ਰਿੜਤਾ ਨਾਲ ਬਦਲ ਸਕਦੇ ਹਾਂ।

"ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਵੱਲ ਨਾ ਵੇਖ ਇਨਸਾਨ, ਕਿਸਮਤ ਬਣਾਇਆ ਬਣਦੀ ਹੈ" ਇਹ ਸਿੱਧਾ ਸੰਦੇਸ਼ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸਮਤ ਕਿਸੇ ਹੱਥ ਦੀ ਲਕੀਰ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਸੋਚ, ਮਿਹਨਤ ਅਤੇ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਦ੍ਰਿੜਤਾ ਵਿੱਚ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਵੀ ਆਪਣੇ ਭਵਿੱਖ ਨੂੰ ਸਿਰਫ ਕਿਸੇ ਉਲਝੀ ਹੋਈ ਲਕੀਰ ਦੇ ਨਾਲ ਨਿਰਧਾਰਤ ਨਹੀਂ ਕਰਨ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ, ਸਗੋਂ ਆਪਣੀਆਂ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਤੇ ਯਕੀਨ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਕਿਸਮਤ ਤਕਦੀਰ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ, ਆਪਣੀ ਦ੍ਰਿੜਤਾ ਅਤੇ ਨਿਸ਼ਚਿਤਤਾ 'ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਜਿਹੜੀ ਵੀ ਸਫਲਤਾ ਅਸੀਂ ਪਾਉਂਦੇ ਹਾਂ, ਉਹ ਸਿਰਫ ਕਿਸੇ ਚਮਤਕਾਰ ਜਾਂ ਨਸੀਬ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਨਾਲ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਸਾਡੇ ਦਿਨ-ਰਾਤ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਅਤੇ ਨਾਲ ਲਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਸਿਰਫ ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ 'ਤੇ ਭਰੋਸਾ ਕਰ ਕੇ ਬੈਠੇ ਰਹੇ, ਤਾਂ ਸਾਡੀ ਕਦੇ ਵੀ ਸਫਲਤਾ ਨਾਲ ਮੁਲਾਕਾਤ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀ। ਸਾਨੂੰ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਹੌਂਸਲਾ, ਮਿਹਨਤ ਅਤੇ ਟੀਚਾ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਲਈ ਸਿੱਖਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ।

ਅੰਤ ਵਿੱਚ, ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਕਦੇ ਵੀ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀਆਂ। ਸੱਚੀ ਸਫਲਤਾ ਕਿਵੇਂ ਹਾਸਲ ਕਰਨੀ ਹੈ, ਇਹ ਸਾਡੀ ਸੋਚ, ਅਤੇ ਮਿਹਨਤ ਉੱਤੇ ਨਿਰਭਰ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਡਾ. ਗੁਰਦਾਸ ਸਿੰਘ ਸੇਖੋਂ

ਕੋਆਰਡੀਨੇਟਰ - ਪੋਸਟ ਗ੍ਰੈਜੂਏਟ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ

ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਮੀਡੀਆ

ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਬਾਹਰੀ ਸਭਿਆਚਾਰਾਂ ਦੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਅੰਸ਼ਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਵਿੱਚ ਸਮੋਈ ਬੈਠਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬੀ ਆਪਣੀ ਭੂਗੋਲਿਕਤਾ ਕਾਰਨ ਬਾਹਰੀ ਧਾੜਵੀਆਂ ਦੀ ਮਾਰ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਹਿੰਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਇੱਕ ਗਤੀਸ਼ਲ ਵਰਤਾਰਾ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਸਮੇਂ ਦੀ ਚਾਲ ਇਸ ਵਿੱਚ ਬਦਲਾਅ ਲਿਆਉਂਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਬਦਲਾਅ ਬਹੁਤ ਧੀਮੀ ਗਤੀ ਵਿੱਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਪਰ ਅਜੋਕੇ ਦੌਰ ਵਿੱਚ ਤਕਨੀਕਾਂ ਤੇ ਵਿਗਿਆਨ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਨਾਲ ਵਿਸ਼ਵ ਇਕ ਗਲੋਬਲੀ ਪਿੰਡ ਵਿੱਚ ਬਦਲ ਗਿਆ ਹੈ। ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਪਰਿਵਰਤਨ ਦੀ ਗਤੀ ਪਹਿਲਾਂ ਨਾਲੋਂ ਤੇਜ਼ ਹੋ ਗਈ ਹੈ। ਇਸ ਬਦਲਾਅ ਨੇ ਸਾਡੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦੀਆਂ ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਰਹਿਣ-ਸਹਿਣ ਰਿਸ਼ਤੇਦਾਰੀ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਨੂੰ ਬਦਲ ਕੇ ਰੱਖ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਸਾਡਾ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਰਵਾਇਤੀ ਪਛਾਣ ਗਵਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਤੇ ਪੱਛਮੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦੀ ਦੇਖਾ ਦੇਖੀ ਖ਼ਪਤੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਵਿੱਚ ਬਦਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਆਰਥਿਕ ਲੋੜਾਂ ਹੀ ਇਸ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦਾ ਆਧਾਰ ਬਣ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਵੱਖ ਵੱਖ ਸਾਧਨਾਂ ਨੂੰ ਆਰਥਿਕ ਗਰਜਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਵਾਸਤੇ ਵਰਤਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਨਿੱਜੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨਾਂ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਰਹਿ ਗਈ ਹੈ। ਉਹ ਆਪਣੇ ਨਿੱਜੀ ਕਾਰ-ਵਿਹਾਰ ਨੂੰ ਵੀ ਸਰਵਜਨਿਕ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਥੋਂ ਤੱਕ ਕਿ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਦੇ ਨਿੱਜੀ ਸਬੰਧਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਪਰਦੇ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ ਰਹਿਣ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਮੀਡੀਆ ਦੀਆਂ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਭਰਮਾਊ ਤੇ ਵਣਜੀਕਰਨ ਦੀਆਂ ਨੀਤੀਆਂ ਨੇ ਸਾਡੀ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜੀ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦੀ ਰਵਾਇਤੀ ਰਹਿਤਲ, ਖਾਣ-ਪੀਣ ਤੇ ਪਹਿਰਾਵੇ ਤੋਂ ਵੀ ਦੂਰ

ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਦੀ ਪਹਿਲੀ ਪਸੰਦ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਧਰਤੀ ਦੇ ਪੱਕੇ ਵਸਨੀਕ ਹੋਣ, ਫਾਸਟ ਫੂਡ ਖਾਣ ਤੇ ਪੱਛਮੀ ਬਾਣਾ ਪਹਿਨਣ ਦੀ ਹੈ। ਇਥੋਂ ਦੇ ਰਵਾਇਤੀ ਖਾਣੇ ਜਿਵੇਂ- ਗੰਨਾ, ਗੁੜ, ਸਰੋਂ ਦਾ ਸਾਗ ਤੇ ਮੱਕੀ ਦੀ ਰੋਟੀ ਤਾਂ ਹੁਣ ਸਿਰਫ ਨੁਮਾਇਸ਼ਾਂ ਦੇ ਸਾਧਨ ਹੀ ਰਹਿ ਗਏ ਹਨ।

ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਮੀਡੀਆ ਨੇ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਮੀਡੀਆ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਸ਼ੁਰੂਆਤੀ ਰੂਪ ਪ੍ਰਿੰਟਿੰਗ ਪ੍ਰੈਸ ਵਾਲਾ ਸੀ। ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਦੋ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹਨ। ਇਲੈਕਟਰੋਨਿਕ ਮੀਡੀਆ ਅਤੇ ਪ੍ਰਿੰਟ ਮੀਡੀਆ। ਮੀਡੀਆ ਆਮ ਲੁਕਾਈ ਨੂੰ ਪਰਚਾਅ ਕੇ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਵਾਸਤਵਿਕਤਾ ਤੋਂ ਲਾਂਭੇ ਲੈ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਅਜੋਕੇ ਦੌਰ ਵਿੱਚ ਮਨੁੱਖ ਇਸ ਦਾ ਗੁਲਾਮ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ। ਮੀਡੀਆ ਵਾਸਤਵਿਕਤਾ ਤੋਂ ਪਾਸੇ ਦੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਭਰਮਾਊ ਰੂਪ ਵਿਖਾ ਕੇ ਸਾਨੂੰ ਕਾਬੂ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਸਭਿਆਚਾਰ ਉੱਪਰ ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਪ੍ਰਭਾਵ ਵੀ ਪਏ ਹਨ। ਇਸ ਰਾਹੀਂ ਦੂਰ ਦੁਰੇਡੇ ਦੀ ਖਬਰ ਸਾਰ ਵੀ ਘਰ ਬੈਠੇ ਬੰਦੇ ਤੱਕ ਮਿਲ ਰਹੀ ਹੈ। ਸਮਾਜਿਕ ਆਰਥਿਕ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਆਦਿ ਮੁੱਦਿਆਂ ਤੇ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਬਾਰੇ ਜਨਤਾ ਵਿੱਚ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਆ ਰਹੀ ਹੈ। ਪੜ੍ਹੇ-ਲਿਖੇ ਮਨੁੱਖ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਆਮ ਲੋਕ ਜਿਵੇਂ ਕਿਸਾਨ ਤੇ ਮਜ਼ਦੂਰ ਵੀ ਆਪਣੀਆਂ ਸਥਿਤੀਆਂ ਤੇ ਸਰਕਾਰੀ ਨੀਤੀਆਂ ਪ੍ਰਤੀ ਜਾਗਰੂਕ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ। ਪਰ ਜਿਵੇਂ ਹਰੇਕ ਸਿੱਕੇ ਦੇ ਦੋ ਪਹਿਲੂ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਦਾ ਹਨੇਰੇ ਵਾਲਾ ਪਾਸਾ ਵੀ ਹੈ। ਮੀਡੀਆ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦੇ ਖਾਣ-ਪੀਣ, ਰਹੁ-ਰੀਤਾਂ ਅਤੇ ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਹੱਦ ਤੱਕ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਮਨੁੱਖ ਵਿੱਚ ਆਰਥਿਕ ਬਿਹਤਰੀ ਲਈ ਅਨੈਤਿਕਤਾ ਵੱਧ ਗਈ ਹੈ। ਇਸ਼ਤਿਹਾਰਬਾਜ਼ੀ ਨਾਲ ਮੁਕਾਬਲੇਬਾਜ਼ੀ ਵਧੀ ਹੈ ਤੇ ਇਸ ਨਾਲ ਸਧਾਰਨ ਜਨਤਾ ਗੁੰਮਰਾਹ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਆਕਰਸ਼ਿਤ ਆਫਰਾਂ ਨਾਲ ਪੱਛਮੀ ਸੱਭਿਅਤਾ ਦੇ ਖਾਣੇ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬੀ ਖਾਣੇ ਨਾਲੋਂ ਤਰਜੀਹ ਦਿੱਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਅਜੋਕੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਸੰਗ, ਹਯਾ, ਸਤਿਕਾਰ ਅਤੇ ਸ਼ਾਂਤੀ ਦੀ ਥਾਂ ਨੰਗੇਜ਼, ਬੇਸ਼ਰਮੀ ਤੇ ਸ਼ੋਰ-ਸ਼ਰਾਬੇ ਨੇ ਲੈ ਲਈ ਹੈ। ਪੰਜਾਬੀ ਲੋਕ ਸਾਂਝੇ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਤੋਂ ਟੁੱਟ ਕੇ ਇਕਹਿਰੇ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਵਿਚ ਰਹਿਣ ਲਗ ਪਏ ਹਨ।ਮਨੁੱਖ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨੂੰ ਤਰਜ਼ੀਹ ਦੇ ਰਿਹਾ ਹੈ।ਸੋਸ਼ਲ ਸਾਈਟਸ ਰਾਹੀਂ ਪੈਸਾ ਕਮਾਉਣ ਦੀ ਰੁਚੀ ਨੇ ਖ਼ਪਤੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਪੈਦਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਕਾਮ ਭਾਰੂ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ ਅਤੇ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ ਭਟਕ ਰਹੀ ਹੈ। ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਗਲਤ ਪ੍ਰਚਾਰ ਦੰਗੇ-ਫਸਾਦ ਅਤੇ ਮਨੁੱਖਤਾ ਦੇ ਨਾਸ਼ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਣ ਰਹੇ ਹਨ।ਮੀਡੀਆ ਸਾਨੂੰ ਜੋ ਸਿਖਾਉਂਦਾ ਹੈ, ਅਸੀਂ ਉਸ ਨੂੰ ਸੱਚ ਮੰਨ ਬੈਠਦੇ ਹਾਂ। ਸੋ ਵਸਤੂ ਨੂੰ ਕੇਂਦਰ ਵਿਚ ਰੱਖ ਕੇ ਵਿਆਕਤੀ ਨੂੰ ਉਸਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਲਈ ਉਤਸ਼ਾਹਿਤ ਕਰਨਾ ਹੀ ਮੀਡੀਆ ਦਾ ਇਕੋ-ਇਕ ਏਜੰਡਾ ਰਹਿ ਗਿਆ ਹੈ।

ਸੋ ਆਧੁਨਿਕ ਯੁੱਗ ਵਿਚ ਮੀਡੀਆ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਕੋਈ ਵੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਵਿਸ਼ਵੀ ਵਿਕਾਸ ਦੀ ਦੌੜ ਵਿਚ ਅੱਗੇ ਨਹੀਂ ਵੱਧ ਸਕਦਾ।ਮੀਡੀਆ ਇਕ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਮਾਧਿਅਮ ਹੈ। ਸਾਨੂੰ ਲੋੜ ਹੈ ਕਿ ਇਸਦੀ ਵਰਤੋਂ ਸਾਡੇ ਸਾਕਾਰਾਤਮਕ ਪ੍ਰਭਾਵ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਬਣੇ। ਇਹ ਉਦੋਂ ਹੀ ਸੰਭਵ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਇਲੈਕਟ੍ਰੋਨਿਕ ਮੀਡੀਆ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਕੇਵਲ ਮਨੁੱਖੀ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਹਿੱਤ ਲਈ ਹੋਵੇਗੀ।

ਡਾ.ਸੰਦੀਪ ਕੌਰ
ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ - ਪੋਸਟ ਗ੍ਰੈਜੂਏਟ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ,

ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਦਾ ਸ਼ਬਦ-ਚਿੱਤਰ

ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਅਤੇ ਅਧਿਆਪਕ ਇੱਕ ਦੂਜੇ ਨੂੰ ਸੰਪੂਰਨਤਾ ਬਖ਼ਸ਼ਦੇ ਹਨ। ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਅਧਿਆਪਕ ਦੀ ਅਤੇ ਅਧਿਆਪਕ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਦੀ ਹੋਂਦ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ ।ਸੱਚ-ਮੁੱਚ ਦਾ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਅਧਿਆਪਕ ਦੀ ਪਰਖ-ਕਸਵੱਟੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਏਕਲਵਯ ਆਪਣੇ ਗੁਰੂ ਦੀ ਪਰਖ-ਕਸਵੱਟੀ ਹੈ। ਭਾਰਤੀ ਪਰੰਪਰਾ ਵਿੱਚ ਅਧਿਆਪਕ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਵੀ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਕੁੱਲ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿੱਚ ਭਾਰਤ ਹੀ ਹੈ, ਜਿੱਥੇ ਅਧਿਆਪਕ ਲਈ ਗੁਰੂ ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਹੋਈ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਅਧਿਆਪਕ ਦੀ ਸਰਵੋਤਮ ਅਵਸਥਾ ਦਾ ਨਾਂ ਹੈ। ਅਧਿਆਪਕ ਕਿਸੇ ਕਿਤਾਬ ਰਾਹੀਂ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਆਪਣੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਰਾਹੀਂ ਜੀਵਿਤ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਕਿਤਾਬ ਰਾਹੀਂ ਵਿਦਵਾਨ ਤਾਂ ਜ਼ਿੰਦਾ ਰਹਿ ਸਕਦਾ ਹੈ ਪਰੰਤੂ ਅਧਿਆਪਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਵਿੱਚ ਜ਼ਿੰਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।

ਅਧਿਆਪਕ ਅੱਗੇ ਸੰਪੂਰਨ ਸਮਰਪਣ ਅਤੇ ਇਤਬਾਰ ਹੀ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਦਾ ਸੁਨਹਿਰੀ ਨੇਮ ਹੈ। ਅਧਿਆਪਕ ਪਾਸੋਂ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਏਕਲਵਯ ਜਿਹੇ ਸਮਰਪਣ ਦੀ ਮੰਗ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਏਕਲਵਯ ਨੇ ਗੁਰੂ ਦਰੋਣਾਚਾਰੀਆ ਦੇ ਬੁੱਤ ਪਾਸੋਂ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੀ, ਪਰੰਤੂ ਗੁਰੂ ਦਰੋਣਾਚਾਰੀਆ ਨੇ ਗੁਰੂ ਦਕਸ਼ਣਾ ਵਜੋਂ ਉਸਦਾ ਸੱਜੇ ਹੱਥ ਦਾ ਅੰਗੂਠਾ ਮੰਗਣ 'ਤੇ ਉਸਨੇ ਬਿਨਾਂ ਦੂਜੀ ਵਾਰ ਸੋਚੇ ਆਪਣਾ ਅੰਗੂਠਾ ਉਸ ਨੂੰ

ਦੇ ਦਿੱਤਾ। ਜਦੋਂ ਵੀ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਅਧਿਆਪਕ ਦੀ ਅਕਲ ਉੱਪਰ ਸ਼ੱਕ ਪੈਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਜਾਏ ਤਾਂ ਅਧਿਆਪਕ ਤੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਵਾਲਾ ਨਾਤਾ ਡੋਲਣ ਲੱਗ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਰਾਜਾ ਜਨਕ ਨੇ ਆਪਣੇ ਰਾਜ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਢੰਡੋਰਾ ਪਿਟਵਾਇਆ ਕਿ ਮੈਨੂੰ ਇੱਕ ਅਜਿਹੇ ਗੁਰੂ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ ਜੋ ਮੈਨੂੰ ਇੰਨੀ ਦੇਰ ਵਿੱਚ ਗਿਆਨ ਦੇ ਦੇਵੇ ਜਿੰਨੀ ਦੇਰ ਵਿੱਚ ਕਿ ਘੋੜੇ ਦੀ ਰਕਾਬ ਵਿੱਚ ਪੈਰ ਰੱਖ ਕੇ ਪਲਾਕੀ ਮਾਰ ਕੇ ਘੋੜੇ ਉੱਪਰ ਸਵਾਰ ਹੋਇਆ ਜਾ ਸਕੇ। ਇਹ ਢੰਡੋਰਾ ਸੁਣ ਕੇ ਰਿਸ਼ੀ ਅਸ਼ਟਾਵੱਕਰ ਰਾਜੇ ਜਨਕ ਪਾਸ ਆਇਆ। ਰਾਜੇ ਨੇ ਘੋੜੇ ਦੀ ਰਕਾਬ ਵਿੱਚ ਪੈਰ ਧਰਿਆ ਪਲਾਕੀ ਮਾਰਨ ਹੀ ਲੱਗਾ ਸੀ ਕਿ ਰਿਸ਼ੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ,''ਰਾਜਨ! ਮਨ ਮੇਰੇ ਹਵਾਲੇ ਕਰ ਦੇ।" ਅਧਿਆਪਕ ਪਾਸੋਂ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਲਈ ਆਪਣਾ ਮਨ ਉਸ ਦੇ ਹਵਾਲੇ ਕਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ।

ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਤਜ਼ਰਬੇ ਵੀ ਅਧਿਆਪਕ ਪਾਸੋਂ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇੱਕ ਵਾਰ ਇੱਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਗੁਰੂ ਪਾਸ ਗਿਆ ਅਤੇ ਕਹਿਣ ਲੱਗਾ ਕਿ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਸੁਖੀ ਹੋਣ ਦਾ ਮੰਤਰ ਦੇਵੋ ।ਗੁਰੂ ਨੇ ਕਿਹਾ ,"ਤੂੰ ਇੱਕ ਸੁਖੀ ਆਦਮੀ ਦੀ ਪਾਈ ਹੋਈ ਜੁੱਤੀ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਲੈ ਕੇ ਆ।" ਉਹ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਉਹ ਜੁੱਤੀ ਦੀ ਭਾਲ ਵਿੱਚ ਤੁਰ ਪਿਆ। ਉਸ ਨੂੰ ਇੱਕ ਵਿਅਕਤੀ ਬਹੁਤ ਸੁਖੀ ਲੱਗਾ ਉਹ ਉਸ ਦੇ ਘਰ ਗਿਆ ਤੇ ਜੁੱਤੀ ਦੀ ਮੰਗ ਕੀਤੀ। ਉਸ ਨੇ ਕਿਹਾ," ਮੈਂ ਤਾਂ ਬਹੁਤ ਦੁਖੀ ਹਾਂ ਕਿਉਂਕਿ ਮੇਰਾ ਗੁਆਂਢੀ ਬਹੁਤ ਸੁਖੀ ਹੈ।" ਉਹ ਉਸ ਗੁਆਂਢੀ ਦੇ ਘਰ ਗਿਆ। ਉਹ ਗੁਆਂਢੀ ਆਪਣੀ ਪਤਨੀ ਤੋਂ ਤੰਗ ਸੀ, ਇਸ ਕਰਕੇ ਦੁਖੀ ਸੀ। ਕੋਈ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਤੋਂ ਤੰਗ ਸੀ। ਕੋਈ ਹੋਰ ਆਪਣੇ ਪੁੱਤਰ ਤੋਂ ਤੰਗ ਸੀ ਅੰਤ ਥੱਕ ਕੇ ਉਹ ਵਿਅਕਤੀ ਵਾਪਸ ਆਪਣੇ ਗੁਰੂ ਕੋਲ ਆਇਆ ਅਤੇ ਸਾਰੀ ਵਿਥਿਆ ਦੱਸੀ। ਗੁਰੂ ਨੇ ਕਿਹਾ, "ਇਹ ਸਾਰੇ ਵਿਅਕਤੀ ਦੂਸਰੇ ਕਰਕੇ ਦੁਖੀ ਹਨ, ਕੋਈ ਗੁਆਂਢੀ ਕਰਕੇ, ਕੋਈ ਪਤੀ ਕਰਕੇ, ਕੋਈ ਪਤਨੀ ਕਰਕੇ ਜਾਂ ਕੋਈ ਬੱਚੇ ਕਰਕੇ ਇਸ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਦੁਖ ਸੁਖ ਨੂੰ ਦੂਸਰੇ ਨਾਲ ਨਾ ਜੋੜੋ , ਸਿਰਫ਼ ਆਪਣੇ ਕਰਮ ਉੱਪਰ ਧਿਆਨ ਦਵੋ।" ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਨੇ ਕਿਹਾ, "ਇਹ ਗੱਲ ਤਾਂ ਤੁਸੀਂ ਮੈਨੂੰ ਸਵੇਰੇ ਹੀ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਸੀ।" ਅਧਿਆਪਕ ਨੇ ਕਿਹਾ," ਉਸ ਸਮੇਂ ਤੈਨੂੰ ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਤਜ਼ਰਬਾ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਹੁਣ ਇਹ ਗੱਲ ਤੇਰੇ ਤਜ਼ਰਬੇ ਵਿੱਚੋਂ ਲੰਘ ਗਈ ਹੈ। ਇਹ ਤੈਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾ ਯਾਦ ਰਹੇਗੀ।"

ਕਈ ਵਾਰੀ ਨਵੀਂ ਸਿੱਖਿਆ ਲੈਣ ਲਈ ਪੁਰਾਣੀ ਸਿੱਖਿਆ ਭੁੱਲਣੀ ਪੈਂਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਹਰਮਨ ਹੈਸ ਦੇ ਨਾਵਲ 'ਸਿਧਾਰਥ' ਦਾ ਮੁੱਖ ਪਾਤਰ ਸਿਧਾਰਥ ਓਨੀ ਦੇਰ ਤਕ ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਗੁਲਤਾਨ ਰਿਹਾ ਜਦੋਂ ਤਕ ਉਹ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰੋਂ ਸੰਨਿਆਸੀ ਹੋਣੇ ਨਹੀਂ ਹਟ ਗਿਆ। ਉਸ ਨੂੰ ਇਹ ਅਹਿਸਾਸ ਹੋਇਆ ਕਿ ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਗਿਆਨ ,ਜੱਗ ਬਲੀਆਂ ਤੇ ਮੰਤਰਾਂ ਨੇ ਉਸਨੂੰ ਘੁਮੰਡੀ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ ਸੀ। ਬੜਾ ਲੰਮਾ ਸਮਾਂ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਰਹਿ ਕੇ ਉਹ ਇਸ ਗਿਆਨ ਦੇ ਘੁਮੰਡ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਹੋ ਸਕਿਆ ਸੀ।

ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਲਈ ਇਹ ਜਾਣ ਲੈਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ ਕਿ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਦਾ ਮਕਸਦ ਕੀ ਹੈ? ਅਜੋਕੇ ਦੌਰ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹਾਈ ਨੂੰ ਨੌਕਰੀ ਜਾਂ ਆਰਥਿਕਤਾ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਵੇਖਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਕਿ ਗਿਆਨ ਦਾ ਮਕਸਦ ਜਾਗਰੂਕ ਹੋਣਾ ਹੈ ਨਾ ਕਿ ਨੌਕਰੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨਾ। ਹਰਮਨ ਹੈਸ ਦੇ ਨਾਵਲ 'ਸਿਧਾਰਥ' ਵਿੱਚ ਮੁੱਖ ਪਾਤਰ ਸਿਧਾਰਥ ਆਰਥਿਕ ਤੌਰ 'ਤੇ ਸਮਰੱਥ ਸੀ ਪਰੰਤੂ ਉਹ ਸਭ ਕੁਝ ਤਿਆਗ ਕੇ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਲਈ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਤਜ਼ਰਬੇ ਹਾਸਲ ਕਰਦਾ ਹੋਇਆ, ਭੁੱਖਾਂ ਕੱਟਦਾ ਹੋਇਆ ਜੰਗਲਾਂ ਵਿੱਚ ਫਿਰਦਾ ਰਿਹਾ। ਮਹਾਤਮਾ ਬੁੱਧ ਨੇ ਵੀ ਅਜਿਹਾ ਹੀ ਕੀਤਾ ਸੀ।

ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਦੀ ਚੇਤਨਾ ਵਿੱਚ ਜਦ ਗਿਆਨ ਰੂਪੀ ਕੰਵਲ ਦਾ ਫੁੱਲ ਖਿੜਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਇਹ ਅਧਿਆਪਕ ਲਈ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਖ਼ੂਬਸੂਰਤ ਤੋਹਫ਼ਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਆਪਣੇ ਅਧਿਆਪਕ ਨੂੰ ਕੀ ਤੋਹਫ਼ਾ ਦੇ ਸਕਦਾ ਹੈ? ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਇੱਕ ਬਗ਼ੀਚਾ ਮਾਲੀ ਨੂੰ ਕੀ ਤੋਹਫ਼ਾ ਦੇ ਸਕਦਾ ਹੈ? ਉਹ ਤੋਹਫ਼ਾ ਇਹੀ ਹੈ ਕਿ ਬਾਗ਼ ਮਾਲੀ ਨੂੰ ਖਿੜ ਕੇ ਦਿਖਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਮੇਦਭ ਮੈਕਗੁਕੀਅਨ ਦਾ ਕਥਨ ਹੈ, Once a student, always a student.' ਭਾਵ ਕਿ ਜੋ ਇੱਕ ਵਾਰ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਬਣ ਗਿਆ ਉਹ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਇੱਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਰਹੇਗਾ। ਕਿਉਂਕਿ ਕਦੇ ਵੀ ਕੋਈ ਵਿਅਕਤੀ ਮੁਕੰਮਲ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ। ਗਿਆਨ ਵਿੱਚ ਹੋਰ ਵਾਧੇ ਦੀ ਗੁੰਜਾਇਸ਼ ਹਮੇਸ਼ਾ ਬਣੀ ਰਹੇਗੀ। ਇਸੇ ਲਈ ਸੁਕਰਾਤ ਨੇ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ "I only know one thing is I know nothing."ਇਹ ਗੱਲ ਕੋਈ ਮਹਾਨ ਵਿਅਕਤੀ ਹੀ ਕਹਿ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਗਿਆਨ ਦੀ ਅਪਾਰਤਾਂ ਨੂੰ ਜਾਣਦਾ ਹੈ , ਪਰੰਤੂ ਇੱਕ ਕੱਚਾ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਹਮੇਸ਼ਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਜ਼ਿਆਦਾ ਗਿਆਨਵਾਨ ਸਮਝੇਗਾ। ਇੱਕ ਵਾਰ ਇੱਕ ਰਾਜੇ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਧਨੁਸ਼ਧਾਰੀ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਕਿ ਤੂੰ ਜੇਕਰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਸਭ ਤੋਂ ਸ੍ਰੇਸ਼ਠ ਧਨੁਸ਼ਧਾਰੀ ਕਰਾਰ ਦੇ ਦੇਵੇ ,ਤੇ ਜੇਕਰ ਕੋਈ ਵੀ ਇਹ ਗੱਲ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਨਾ ਕਰੇ, ਤਾਂ ਮੈਂ ਤੈਨੂੰ ਸਰਵ ਸ੍ਰੇਸ਼ਠ ਧਨੁਸ਼ਧਾਰੀ ਹੋਣ ਦਾ ਖਿਤਾਬ ਦੇ ਦੇਵਾਂਗਾ ।ਧਨੁਸ਼ਧਾਰੀ ਇਹ ਗੱਲ ਸੁਣ ਕੇ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ ਹੋਇਆ, ਪਰੰਤੂ ਨਜ਼ਦੀਕ ਖੜਾ ਇੱਕ ਪਹਿਰੇਦਾਰ ਮੁਸਕਰਾਇਆ। ਰਾਜੇ ਦੇ ਜਾਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਸਨੇ ਉਸ ਪਹਿਰੇਦਾਰ ਤੋਂ ਹੱਸਣ ਦਾ ਕਾਰਨ ਪੁੱਛਿਆ ਤਾਂ ਉਸਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਹ ਇਸ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਸ੍ਰੇਸ਼ਠ ਧਨੁਸ਼ਧਾਰੀ ਨੂੰ ਜਾਣਦਾ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਜੰਗਲ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਤੂੰ ਤਾਂ ਉਸਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਕੁਝ ਵੀ ਨਹੀਂ ।ਇਹ ਗੱਲ ਸੁਣ ਕੇ ਉਹ ਉਸ ਜੰਗਲ ਵਿੱਚ ਗਿਆ ਅਤੇ ਉਹ ਸ੍ਰੇਸ਼ਠ ਧਰੁਸ਼ਧਾਰੀ ਨੂੰ ਮਿਲਿਆ ਜੋ ਕਿ ਇੱਕ ਲੱਕੜਹਾਰੇ ਵਜੋਂ ਕੰਮ ਕਰ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਉਸ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਅਧੂਰੇਪਣ ਦਾ ਪਤਾ ਲੱਗਾ ਉਸ ਨੇ ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਗੁਰੂ ਧਾਰਨ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਤਿੰਨ ਸਾਲਾਂ ਤੱਕ ਉਸ ਤੋਂ ਧਨੁਸ਼ ਵਿਦਿਆ ਦਾ ਗਿਆਨ ਹਾਸਲ ਕਰਦਾ ਰਿਹਾ। ਹੁਣ ਉਸ ਨੂੰ ਲੱਗਣ ਲੱਗਾ ਕਿ ਹੁਣ ਉਹ ਸਰਬ ਸ੍ਰੇਸ਼ਠ ਧਨੁਸ਼ਧਾਰੀ ਬਣ ਚੁੱਕਾ ਹੈ। ਬਸ ਇੱਕ ਉਸਦਾ ਗੁਰੂ ਹੀ ਹੈ ਜੋ ਉਸ ਤੋਂ ਬਿਹਤਰ ਹੈ ।ਉਸ ਨੇ ਸੋਚਿਆ ਕਿ ਹੁਣ ਉਹ ਆਪਣੇ ਗੁਰੂ ਨੂੰ ਹੀ ਰਸਤੇ ਤੋਂ ਹਟਾ ਦੇਵੇ। ਇੱਕ ਦਿਨ ਉਹ ਆਪਣਾ ਧਨੁਸ਼ ਲੈ ਕੇ ਇੱਕ ਦਰਖ਼ਤ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਲੁਕ ਗਿਆ। ਜਦੋਂ ਗੁਰੂ ਇਕਦਮ ਨਿਹੱਥਾ ਲੱਕੜਾਂ ਲੈ

ਕੇ ਆ ਰਿਹਾ ਸੀ ਤਾਂ ਉਸਨੇ ਉਸਦੇ ਨਿਸ਼ਾਨਾ ਸਾਧ ਕੇ ਵਾਰ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਜਦੋਂ ਗੁਰੂ ਨੇ ਤੀਰ ਆਉਂਦਾ ਵੇਖਿਆ ਉਸਨੇ ਹੱਥ ਵਿੱਚ ਫੜੀ ਹੋਈ ਲੱਕੜ ਦਾ ਟੁਕੜਾ ਹੀ ਉਸ ਤੀਰ ਉੱਤੇ ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਮਾਰਿਆ ਕਿ ਉਹ ਤੀਰ ਘੁੰਮ ਕੇ ਉਸ ਧਨੁਸ਼ਧਾਰੀ ਦੀ ਛਾਤੀ ਵਿੱਚ ਜਾ ਲੱਗਾ। ਗੁਰੂ ਇਹ ਦੇਖ ਕੇ ਹੈਰਾਨ ਹੋਇਆ ਕਿ ਇਹ ਉਸ ਦਾ ਆਪਣਾ ਹੀ ਚੇਲਾ ਸੀ ਅਤੇ ਉਸਨੇ ਉਸਨੂੰ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਆਖ਼ਰੀ ਦਾਅ ਸੀ ਜਿਹੜਾ ਕਿ ਤੈਨੂੰ ਸਿਖਾਉਣਾ ਬਾਕੀ ਰਹਿ ਗਿਆ ਸੀ ,ਸੋ ਮੈਂ ਤੈਨੂੰ ਉਹ ਵੀ ਸਿਖਾ ਦਿੱਤਾ।

ਅਸਲ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਦੇ ਅੰਦਰ ਇੱਕ ਸਹਿਜ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਉਹ ਕਦੇ ਵੀ ਕਾਹਲਾ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦਾ, ਕਿਉਂਕਿ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਕਰਨਾ ਦੀਰਘ ਸਾਧਨਾ ਦਾ ਕੰਮ ਹੈ ।ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਅਧਿਆਪਕ ਤੋਂ ਉਸ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਜਾਂ ਉਸਦਾ ਗਿਆਨ ਨਹੀਂ ਸਿੱਖਦਾ ਬਲਕਿ ਉਸ ਨੇ ਤਾਂ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਤੀ ਆਪਣੇ ਅਧਿਆਪਕ ਦੇ ਸਮਰਪਣ ਅਤੇ ਪ੍ਰਤੀਬੱਧਤਾ ਨੂੰ ਸਿੱਖਣਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ

ਡਾ. ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ
ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫ਼ੈਸਰ - ਪੋਸਟ ਗ੍ਰੈਜੂਏਟ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ

ਮਾਂ ਬੋਲੀ

ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਜਿਸ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਮਾਂ ਦਾ ਦਰਜਾ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਨੂੰ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲੇਖ ਵਿੱਚ ਮੈਂ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ ਭੁੱਲਦੇ ਜਾ ਰਹੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸੰਦੇਸ਼ ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਅਸੀਂ ਸਭ ਨੇ ਮਿਲ ਕੇ ਆਪਣੀ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਨੂੰ ਮਾਂ ਦਾ ਦਰਜਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਪਰ ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਨੂੰ ਭੁੱਲ ਕੇ ਹੋਰ ਬੋਲੀਆਂ ਨੂੰ ਅਪਣਾਉਣ ਲੱਗ ਪਏ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਇਹ ਨਹੀਂ ਕਹਿੰਦਾ ਕਿ ਦੂਸਰੀਆਂ ਬੋਲੀਆਂ ਨੂੰ ਬੋਲਣਾ ਗਲਤ ਹੈ ਪਰ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ ਭੁੱਲ ਜਾਣਾ ਵੀ ਸਹੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਕਈ ਮਹਾਨ ਕਵੀਆਂ ਨੇ ਵੀ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਜਾਗਰੂਕ ਹੋਣ ਬਾਰੇ ਕਿਹਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ ਧਨੀ ਰਾਮ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਜੀ ਦੀ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਕਵਿਤਾ 'ਸਿੱਦਕਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਬੇੜੇ ਪਾਰ ਨੇ' ਅਤੇ ਫਿਰੋਜ਼ਦੀਨ ਸ਼ਰਫ ਜੀ ਦੀ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਕਵਿਤਾ 'ਖ਼ੈਰ ਪੰਜਾਬੀ ਦੀ' ਵਿੱਚ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਬਾਰੇ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਸੋ ਸਾਨੂੰ ਸਭ ਨੂੰ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜਿੱਥੇ-ਜਿੱਥੇ ਵੀ ਅਸੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲ ਸਕਦੇ ਹਾਂ, ਉਥੇ ਬੋਲਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿੱਚ ਗੱਲ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਜੋ ਨਵੀਂ ਪੀੜ੍ਹੀ ਨੂੰ ਵੀ ਪੰਜਾਬੀ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਬਾਰੇ ਪਤਾ ਲੱਗੇ। ਸਾਨੂੰ ਸਭ ਨੂੰ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲ ਕੇ ਅਸੀਂ ਮਾਣ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰੀਏ ਨਾ ਕਿ ਸ਼ਰਮ। ਕਈ ਲੋਕ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿੱਚ ਗੱਲ ਕਰਨ ਲੱਗੇ ਸ਼ਰਮ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਹਿੰਦੀ ਜਾਂ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਹਿੰਦੀ ਅਤੇ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਭਾਸ਼ਾ ਬੋਲਣਾ ਵੀ ਸਹੀ ਗੱਲ ਹੈ ਪਰ ਜਿੱਥੇ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਉੱਥੇ ਬੋਲਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ ਭੁੱਲਣਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦਾ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਨੂੰ ਵਡਿਆਇਆ ਹੈ। ਧਨੀ ਰਾਮ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਜੀ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਇੱਕ ਆਸ ਰੱਖੀ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਨੂੰ ਫਿਰ ਉਹੀ ਮਾਣ ਮਿਲੇਗਾ। ਲੋਕ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ ਫਿਰ ਤੋਂ ਅਪਣਾਉਣਗੇ। ਧਨੀ ਰਾਮ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਜੀ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਨੂੰ ਇਉਂ ਬਿਆਨ ਕਰਦੇ ਨੇ-

ਬਾਬੇ ਨਾਨਕ ਦੀਏ ਵਡਿਆਈਏ'
ਬੁੱਲੇ ਸ਼ਾਹ ਦੀਏ ਸਿਰ ਤੇ ਜਾਈਏ ।
ਫੇਰੇ ਦਿਨ ਤੇਰੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰ ਨੇ ,

ਸਿਦਕਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਬੇੜੇ ਪਾਰ ਨੇ।
ਹੋਈ ਸਾਈਂ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਸਵੱਲੀ ਏ,
ਤੇਰੀ ਕੱਟੀ ਮੁਸੀਬਤ ਚੱਲੀ ਏ।
ਉੱਠੇ ਜਾਗ ਤੇਰੇ ਬਰਖੁਰਦਾਰ ਨੇ,
ਸਿਦਕਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਬੇੜੇ ਪਾਰ ਨੇ।

ਇਸ ਤਰਾਂ ਸਾਡੇ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਕਵੀਆਂ ਨੇ ਵੀ ਇਹ ਆਸ ਰੱਖੀ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੀ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ ਫਿਰ ਉਹੀ ਮਾਣ ,ਜਰੂਰ ਮਿਲੇਗਾ। ਮੈਂ ਅਖ਼ੀਰ ਤੇ ਇਹੀ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਸਭ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ ਅਪਣਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਭੁੱਲਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਤਾਂ ਜੋ ਆਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਪੀੜ੍ਹੀਆਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ ਬੋਲਣ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਮਿਲ ਸਕੇ।

ਇਕਬਾਲ ਸਿੰਘ,
ਬੀ.ਐੱਸ.ਸੀ,ਨਾਨ-ਮੈਡੀਕਲ,
ਦੂਜਾ ਸਮੈਸਟਰ,ਰੋਲ ਨੰਬਰ-3408

ਨਸ਼ਾ

ਰੰਗਲ਼ਾ ਪੰਜਾਬ ਸਾਰਾ ਫਿੱਕਾ ਪੈ ਗਿਆ,
ਬਸ ਮੱਥੇ ਤੇ ਕਲੰਕ ਵਾਲਾ ਟਿੱਕਾ ਰਹਿ ਗਿਆ,
ਰੁਲ ਗਈ ਜਵਾਨੀ ਦੁੱਧ ਮੱਖਣਾਂ ਨਾਲ ਪਾਲ਼ੀ,
ਰੰਗ ਚਿਹਰੇ ਵਾਲ਼ਾ ਚੋਖ਼ਾ ਸਾਰਾ ਚਿੱਟਾ ਲੈ ਗਿਆ ..

ਹਨੇਰੀ ਨਸ਼ਿਆਂ ਦੀ ਕਰਕੇ ਅਟੈਕ ਬੈਠ ਗਈ,
ਜੇਬਾਂ ਸਭਨਾਂ ਦੀ ਚ ਨ਼ਾਗਣੀ ਬਲੈਕ ਬੈਠ ਗਈ,
ਦੱਸੋ ਕਿੱਥੋਂ ਵਧੂ ਫੁੱਲੂ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਏਹ ਬੂਟਾ ?
ਜਿਹਦੀ ਜੜ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਸਦਾ ਲਈ ਸਮੈਕ ਬੈਠ ਗਈ ..

ਸਿਗਰਟ , ਬੀੜੀ, ਜ਼ਰਦਾ, ਦਾਰੂ,
ਬਣੇ ਨਸ਼ੇੜੀ ਸਾਰੇ ਕੰਮ ਕਾਰੂ,
ਭੁੱਕੀ, ਡੋਡੇ, ਖਾਣ ਅਫੀਮਾਂ, ਮੈਡੀਕਲ ਨਸ਼ਾ ਸਿਹਤ ਤੇ ਮਾਰੂ ..

ਜਨਤਾ ਵਿੱਚ ਨਸ਼ਾ ਸ਼ਰੇਆਮ ਵਿਕਦਾ,
ਬਿਨਾਂ ਨਸ਼ੇ ਤੋਂ ਗੱਭਰੂ ਵੀ ਕੋਈ ਕੋਈ ਟਿਕਦਾ,
ਲੱਗੀ ਰਹਿੰਦੀ ਭੀੜ ਨਿੱਤ ਠੇਕਿਆਂ ਦੇ ਉੱਤੇ,
ਕੋਈ ਖੇਡ ਦੇ ਮੈਦਾਨ ਚ ਵਿਰਲ਼ਾ ਹੀ ਦਿਖਦਾ ..

ਕਿਉਂ ਵਧੀਕੀ ਨਸ਼ਿਆਂ ਦੀ ਚੁੱਪ-ਚਾਪ ਅਸੀਂ ਸਹੀਏ ?

ਕਿਉਂ ਵਿਰਾਸਤਾਂ ਦਾ ਮੁੱਲ ਨਿੱਤ ਬਲੀਆਂ ਚ ਦੇਈਏ ?
ਨਵਾਂ ਕਰਕੇ ਆਗ਼ਾਜ਼, ਅਸੀਂ ਚੁੱਕਾਂਗੇ ਆਵਾਜ਼,
ਨਸ਼ਾ ਮੁਕਤ ਪੰਜਾਬ ਵਾਲਾ ਬੀੜਾ ਅਸੀਂ ਲਈਏ ...

ਨਸ਼ਾ ਮੁਕਤ ਪੰਜਾਬ ਵਾਲਾ ਬੀੜਾ ਅਸੀਂ ਲਈਏ ...

ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ,

ਬੀ.ਕਾਮ.ਦੂਜਾ ਸਮੈਸਟਰ,ਰੋਲ ਨੰਬਰ-4654

ਧੀ ਦੀ ਪੁਕਾਰ

ਇਹ ਰੰਗਲੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵੇਖਣ ਨੂੰ, ਨੀ ਅੰਮੀਏ ਜੀ ਮੇਰਾ ਸੀ ਕਰਦਾ,
ਪਰ ਜੰਮਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ, ਨੀ ਅੰਮੀਏ ਤੂੰ ਕਬਰਾਂ ਵਿੱਚ ਧਰਤਾ।
ਇੱਕ ਲਾਲਸਾ ਪੁੱਤਰ ਦੀ, ਨੀ ਅੰਮੀਏ ਦਿਲ ਤੇਰੇ ਤੇ ਬੈਹਗੀ,
ਇਸੇ ਲਈ ਨੀ ਅੰਮੀਏ ਦੁਖੜੇ ਜਿੰਦ, ਆਪਣੇ ਤੇ ਸਹਿ ਗਈ।
ਪਰ ਵੇਖੀ ਅੰਮੀਏ ਨੀ, ਧੀਆਂ ਬਿਨ ਘਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਨੀ ਸਰਦਾ,
ਇਹ ਰੰਗਲੀ ਦੁਨੀਆ.....
ਇਹ ਚੰਦਰੀ ਸਕੈਨਿੰਗ ਨੀ, ਨੀ ਅੰਮੀਏ ਬਣੀ ਧੀਆਂ ਦੀ ਵੈਰੀ,
ਘੱਟ ਮਾਪੇ ਵੀ ਨਹੀਓ, ਨੀ ਅੰਮੀਏ ਉਹ ਵੀ ਬੜੇ ਨੇ ਜ਼ਹਿਰੀ।
ਸੱਪ ਟੈਸਟਾਂ ਵਾਲਾ ਨੀ, ਨੀ ਅੰਮੀਏ ਆਣ ਧੀਆਂ ਨੂੰ ਲੜਦਾ,
ਇਹ ਰੰਗਲੀ ਦੁਨੀਆ.....
ਭੈਣਾਂ ਕਿੱਦਾਂ ਵੇਖਣਗੀਆਂ ਨੀ ਅੰਮੀਏ, ਵੀਰ ਕਿਹੋ ਜਿਹੇ ਹੁੰਦੇ,

ਕੌਣ ਰੱਖੜੀ ਬੰਨੂਗਾ, ਕੌਣ ਵਾਗਾਂ ਨੂੰ ਗੁੰਦੇ।
ਦੇਣਾਂ ਵੀਰਾਂ ਨੇ ਭੈਣਾਂ ਨੂੰ, ਨੀ ਅੰਮੀਏ ਜੋ ਉਹਨਾਂ ਤੋਂ ਸਰਦਾ,
ਇਹ ਰੰਗਲੀ ਦੁਨੀਆ.....
ਇਹ ਕਲਯੁਗੀ ਮਾਵਾਂ ਨੂੰ, ਨੀ ਅੰਮੀਏ ਦਸ ਕਿਵੇਂ ਸਮਝਾਈਏ,
ਹਰ ਕੋਈ ਚਾਹੁੰਦਾ ਪੁੱਤਰਾਂ ਨੂੰ, ਨੀ ਅੰਮੀਏ ਅਸੀਂ ਕਿੱਦਰ ਨੂੰ ਜਾਈਏ।
ਇਹ ਤਿਲਕਣ ਬਾਜੀ ਨੂੰ ਨੀ ਅੰਮੀਏ, ਬੁੱਢੇ ਥੇਹੀਆਂ ਨੀ ਡਰਦਾ,
ਇਹ ਰੰਗਲੀ ਦੁਨੀਆ.....

ਵਿਵੇਕ ਕੁਮਾਰ
ਬੀ.ਐਸ.ਸੀ. [ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਾਇੰਸ]-VI

ਧੀਆਂ ਧਿਆਣੀਆਂ ਨੇ

ਕੁੜੀਆਂ ਦੀ ਵੀ ਕੋਈ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਹੈ, ਆਪਣੇ ਚੋਂ ਹੀ ਕਈ ਕਹਾਣੀਆਂ ਨੇ।

ਬਾਬਲ ਦੀ ਇੱਜ਼ਤ ਲਈ ਆਪਣੇ ਕਈ ਖਵਾਬ ਅਧੂਰੇ ਛੱਡੇ, ਤੇ ਭਰਾਵਾਂ ਮੌਜਾਂ ਮਾਣੀਆਂ ਨੇ।
ਕਿਸੇ ਦੀ ਧੀ ਭੈਣ ਨੂੰ ਤੱਕੇ ਹਰ ਕੋਈ, ਪਰ ਆਪਣੀਆਂ ਸਭ ਦੀਆਂ ਧੀਆਂ ਧਿਆਣੀਆਂ ਨੇ।
ਸੋਚ ਸਭ ਦੀ ਨਾ ਇੱਕ ਜੈਸੀ, ਮਾਂ ਭੈਣ ਦੀਆਂ ਕੱਢਦੇ ਗਾਲੀਆਂ ਨੇ।

ਕਰੇ ਕੋਈ ਤੇ ਭਰੇ ਕੋਈ ਇਥੇ, ਕੁੜੀਆਂ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਸਿਆਣੀਆਂ ਨੇ।

ਕੁੜੀ ਤਾਂ ਜੰਮਦੀ ਸਿਆਣੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ, ਬਸ ਇਹੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਕਹਾਣੀਆਂ ਨੇ।
ਐਵੇਂ ਮੈਥੋਂ ਸੱਚ ਬੋਲਿਆ ਗਿਆ, 'ਪ੍ਰੀਤ' ਧੀਆਂ ਤਾਂ ਸਭ ਦੀਆਂ ਪਟਰਾਣੀਆਂ ਨੇ।

ਤੇ ਗਰੀਬ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਕਰੇ ਨਾ ਕਦਰ ਕੋਈ, ਅਮੀਰ ਬਾਪ ਦੀਆਂ ਵਿਗੜੀਆਂ ਰਾਣੀਆਂ ਨੇ।

ਭਰਾ ਭੈਣ ਦੀ ਨਾ ਕਦਰ ਕਰਦੇ, ਬਸ ਆਪਣੀ ਧੀਆਂ ਨਿਆਣੀਆਂ ਨੇ ।

ਮੇਰੇ ਤੋਂ ਐਵੇਂ ਸੱਚ ਬੋਲ ਹੋਇਆ 'ਪ੍ਰੀਤ' ਭੈਣਾਂ ਹੀ ਵੱਧ ਸਿਆਣੀਆਂ ਨੇ।

ਪਲਵਿੰਦਰ ਕੌਰ,
ਬੀ.ਏ. ਛੇਵਾਂ ਸਮੈਸਟਰ,ਰੋਲ ਨੰਬਰ-11269

ਇੱਕ ਬੇਸ਼ਕੀਮਤੀ ਰਿਸ਼ਤਾ ਮਾਂ ਤੇ ਧੀ ਦਾ

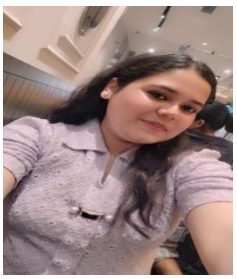

ਰੱਬ ਨੇ ਇਸ ਦੁਨੀਆਂ 'ਚ ਜਦੋਂ ਸਾਨੂੰ ਭੇਜਿਆ ਤਾਂ ਹਰ ਰਿਸ਼ਤਾ ਬਣਾ ਕੇ ਭੇਜਿਆ। ਸਭ ਤੋਂ ਉਚੇਰਾ ਰਿਸ਼ਤਾ ਮਾਂ ਤੇ ਧੀ ਦਾ ਹੈ। ਕੋਈ ਰਿਸ਼ਤਾ ਮਾਂ ਦੀ ਥਾਂ ਨਹੀਂ ਲੈ ਸਕਦਾ। ਪਰ ਮਾਂ ਹਰ ਦੀ ਥਾਂ ਲੈਣ ਵਾਲੀ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਹੈ। ਇਕ ਧੀ ਦੇ ਵਜੋਂ ਮੈਂ ਆਪਣਾ ਹਰ ਰਿਸ਼ਤਾ ਆਪਣੀ ਮਾਂ 'ਚ ਲੱਭ ਲਿਆ। ਮੈਂ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਦੀ ਪਹਿਲੀ ਦੋਸਤ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਬਣ ਸਕੀ ਪਰ ਮੈਂ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਆਖਰੀ ਦੋਸਤ ਜਰੂਰ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਹੀ ਖੁਸ਼ਕਿਸਮਤ ਸਮਝਦੀ ਹਾਂ। ਕਿਉਂਕਿ ਮੇਰੇ ਲਈ ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਪਹਿਲੇ ਦੋਸਤ, ਪਹਿਲੇ ਅਧਿਆਪਕ, ਪਹਿਲੇ ਡਾਕਟਰ ਅਤੇ ਪਹਿਲੇ ਮਾਰਗ ਦਰਸ਼ਕ ਹਨ। ਮੇਰੇ ਬਿਨਾਂ ਕੁਝ ਬੋਲੇ ਸਭ ਕੁਝ ਸਮਝ ਲੈਣ ਦੀ ਤਾਕਤ ਜੋ ਇਨਸਾਨ ਰੱਖਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਹੈ ਮੇਰੀ ਮਾਂ। ਮੇਰਾ ਰੱਬ। ਸ਼ਾਇਦ ਇਹ ਸਭ ਉਹਨਾਂ ਸਾਹਮਣੇ ਬਿਆਨ ਕਰਨਾ ਔਖਾ ਹੈ ਪਰ ਲਿਖਤ ਨਾਲ ਇਸ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਕਰਨੀ ਕੁਝ ਸੌਖੀ ਹੈ। ਮੈਨੂੰ ਬੜੀ ਖ਼ੁਸ਼ੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਕਹਿੰਦਾ ਧੀ ਪੂਰੀ ਮਾਂ ਵਰਗੀ ਹੈ। ਦਿਲ 'ਚ ਇੱਕ ਵੱਖਰੀ ਸਕੂਨ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਪੈਦਾ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਕਦੇ ਆਪਸ ਵਿੱਚ ਕਿਸੇ ਵੀ ਗੱਲ ਦਾ ਓਹਲਾ ਨਹੀਂ ਰੱਖਦੇ ਅਤੇ ਇਹ ਗੱਲ ਵੀ ਸਾਡੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਦੀ ਖ਼ੂਬਸੂਰਤੀ ਨੂੰ ਨਿਖਾਰਦੀ ਹੈ। ਕਈ ਵਾਰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਜਦੋਂ ਮੇਰੇ ਭਲੇ ਲਈ ਮੇਰੇ ਵਿਰੁੱਧ ਜਾ ਕੇ ਮੈਨੂੰ ਉਹ ਬੜਾ ਕੁਝ ਸਮਝਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਪਹਿਲਾਂ ਤਾਂ ਮੈਨੂੰ ਵੀ ਬੁਰਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਪਰ ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਚੰਗੀ ਤਰਾਂ ਸੋਚ ਕੇ ਮੇਰੇ ਮਨ 'ਚ ਵੀ ਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਕਿ ਅੱਜ ਤੱਕ ਜਿੰਨੇ ਵੀ ਫ਼ੈਸਲੇ ਉਹਨਾਂ ਨੇ

ਮੇਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ’ਚ ਕੀਤੇ ਹਨ, ਉਹ ਹਮੇਸ਼ਾ ਮੇਰੇ ਲਈ ਲਾਭਦਾਇਕ ਹੀ ਸਿੱਧ ਹੋਏ ਹਨ। ਮੈਂ ਬਥੇਰੀ ਵਾਰ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਇਹ ਗੱਲ ਕਹਿੰਦੇ ਹੋਏ ਸੁਣਿਆ ਹੈ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਸਾਡੇ ਲਈ ਕੀਤਾ ਹੀ ਕੀ ਹੈ। ਪਰ ਮੈਂ ਇਹ ਸਮੁੱਚੇ ਤੌਰ ਤੇ ਜਾਣਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਜੋ ਖ਼ੁਦ ਭੁੱਖੇ ਰਹਿ ਕੇ ਪੇਟ ਭਰ ਕੇ ਸਾਨੂੰ ਚੈਨ ਨਾਲ ਖਾਣ ਨੂੰ ਦੇਵੇ ਉਹ ਹੈ ਮਾਂ। ਅਨੇਕਾਂ ਵਾਰ ਮਨਾ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਵੀ ਜੋ ਥਾਲੀ ਪਰੋਸ ਕੇ ਸਾਡੇ ਅੱਗੇ ਰੱਖ ਦੇਵੇ, ਉਹ ਹੈ ਮਾਂ।ਮੇਰੇ ਲਈ ਉਹ ਸਹਾਰਾ ਹੈ ਜੋ ਗਰਮੀ ’ਚ ਮੈਨੂੰ ਰੁੱਖ ਵਰਗੀ ਛਾਂ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਜੋ ਸਰਦੀ ’ਚ ਮੈਨੂੰ ਲੋਈ ਦੀ ਬੁੱਕਲ ਵਰਗਾ ਨਿੱਘ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰੇ। ਮੈਂ ਬਹੁਤ ਧੰਨਵਾਦੀ ਹਾਂ ਉਸ ਪਰਮ ਪਿਤਾ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਦੀ ਕਿ ਮੈਨੂੰ ਮਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ’ਚ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆ ਮਿਲ ਗਈ।

ਮਿਤਾਲੀ,
ਬੀ.ਐੱਸ.ਸੀ. ਮੈਡੀਕਲ, ਦੂਜਾ ਸਮੈਸਟਰ

ਭਾਣਾ ਮੀਠਾ ਲਾਗੇ ਤੇਰਾ

ਪਰਿਵਾਰ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿੱਚ ਬੈਠਾ ਮਾਂ ਅਤੇ ਉਸਦੀ ਕੁੱਖ ਵਿੱਚ ਬੱਚੇ ਦੀ ਸਹੀ ਸਲਾਮਤੀ ਦੀ ਅਰਦਾਸ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇੰਨੇ ਨੂੰ ਹੀ ਡਾਕਟਰ ‘ਕੁੜੀ ਹੋਈ ਹੈ’ ਕਹਿ ਕੇ ਮੁਬਾਰਕਬਾਦ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਬੜੀ ਹੀ ਬੈਠੀ ਆਵਾਜ਼ ਵਿੱਚ ਦੱਸਦਾ ਹੈ, ਬੱਚੇ ਦੀ ਮਾਂ ਨਹੀਂ ਰਹੀ। ਸੁਣਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਸਾਰਾ ਪਰਿਵਾਰ ਗੁੰਮ ਸੁੰਮ ਹੋ ਬੈਠਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਕੁੜੀ ਦਾ ਬਾਪ ਮੇਹਰ ਸਿੰਘ ਆਪਣੀ ਪਤਨੀ ਇਸ਼ਮੀਤ ਕੌਰ ਅਤੇ ਆਪਣੀ ਨਵਜੰਮੀ ਧੀ ਬਾਰੇ ਮਨ ਵਿੱਚ ਕੀ ਵਿਚਾਰਦਾ ਹੈ ਦਾਸ ਦੀ ਕਲਮ ਰਾਹੀਂ ਇੰਝ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਇੰਜ ਲੱਗਦਾ ਜੋ ਵਿਛੜਿਆ ਸੀ,
ਉਹ ਫਿਰ ਮੁੜ ਆਇਆ ਏ।
ਰੱਬ ਨੇ ਮੇਰੇ ਘਰ ਧੀ ਨੂੰ ਘਲਾਇਆ ਏ,
ਵੇਖਣੇ ਨੂੰ ਜਮਾਂ ਹੀ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਦੇ ਵਰਗੀ।
ਉੱਤੋਂ ਹੁਕਮਨਾਮੇ ਚੋਂ ਅੱਖਰ ‘ਈ’ ਨਿਕਲ ਆਇਆ।

ਮਨਵੀਰ ਸਿੰਘ
ਬੀ.ਐੱਸ.ਸੀ ਨਾਨ-ਮੈਡੀਕਲ

ਖੇਡਾਂ ਤੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਭੂਮਿਕਾ

ਖੇਡਾਂ ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਦਾ ਇੱਕ ਅਹਿਮ ਹਿੱਸਾ ਹਨ। ਇਹ ਸਿਹਤ ਵਿਕਾਸ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਕਾਨੂੰਨ ਵਿੱਚ ਵੀ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਖੇਡਾਂ ਨਾਲ ਸਰੀਰਕ ਅਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਫਾਇਦੇ ਲੱਭਣਾ ਸੰਭਵ ਹੈ ਖੇਡਾਂ ਕਾਰਨ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਸਿਹਤ ਸੁਧਰਦੀ ਹੈ। ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਹਿਰਦੇ ਦੀ ਗਤੀਸ਼ੀਲਤਾ ਮਾਸਪੇਸ਼ੀਆਂ ਦੀ ਲਚਕਤਾ ਅਤੇ ਤਨਾਅ ਹਟਾਉਣਾ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹਨ। ਇਸ ਨਾਲ ਲੰਬੀਆਂ ਬਿਮਾਰੀਆਂ ਤੋਂ ਬਚਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।ਖੇਡਾਂ ਦੇ ਜ਼ਰੀਏ ਪ੍ਰਤੀਯੋਗਤਾ ਸਹਿਯੋਗ ਅਤੇ ਆਤਮ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਜਿਹੇ ਮੂਲ ਗੁਣ ਸਿਖਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਗੁਣ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਸਕੂਨ ਅਤੇ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਫਾਇਦਾ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਖੇਡਾਂ ਦੁਆਰਾ ਟੀਮ ਵਰਕ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਦਾ ਅਭਿਆਸ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਮਾਜਿਕ ਜੀਵਨ ਦੀ ਵੀ ਦੇਖ-ਰੇਖ ਵਿੱਚ ਉਪਯੋਗੀ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਖੇਡਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠੇ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਮਦਦ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਦੌਰਾਨ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚਕਾਰ ਦੋਸਤੀ ਅਤੇ ਭਾਈਚਾਰੇ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਖੇਡਾਂ ਵਿੱਚ ਟੀਮ ਸਪਿਰਿਟ ਦਾ ਹੋਣਾ ਵੀ ਖਾਸ ਹੈ, ਜੋ ਹਰ ਇੱਕ ਵਿਅਕਤੀ ਨੂੰ ਇੱਕ-ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਜੋੜਦਾ ਹੈ ।ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਖੇਡਾਂ ਸਿਰਫ ਕੁਝ ਕਿਰਿਆਵਾਂ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਜੀਵਨ ਦੀਆਂ ਅਨੇਕ ਪੱਖਾਂ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਇੱਕ ਢਾਂਚਾ ਹਨ। ਇਹ ਸਾਡੇ ਲਈ ਸਹਿਯੋਗ ਸਿਹਤਮੰਦ ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਇੱਕ ਉੱਚੇ ਮਨੋਰੰਜਨ ਦੀ ਉਦਾਹਰਨ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ।

ਸ਼ਬਦਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ

ਬੀ.ਐੱਸ.ਸੀ. ਛੇਵਾਂ ਸਮੈਸਟਰ,ਰੋਲ ਨੰਬਰ-9601

ਭੈਣ ਭਰਾ ਦਾ ਪਿਆਰ

ਭੈਣ ਭਰਾ ਦਾ ਰਿਸ਼ਤਾ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਪਵਿੱਤਰ ਅਤੇ ਪਿਆਰੇ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਹੈ। ਇਹ ਰਿਸ਼ਤਾ ਖ਼ੂਨ ਦਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਸਨੇਹ ਦੀ ਡੋਰ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇੱਕ ਭੈਣ ਲਈ ਉਸਦਾ ਭਰਾ ਸਿਰਫ ਭਰਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਇੱਕ ਮਿੱਤਰ ਵੀ ਹੁੰਦਾ। ਇਹ ਇੱਕ ਅਟੁੱਟ ਨਾਤਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜੋ ਪਿਆਰ ਅਤੇ ਮਮਤਾ ਨਾਲ ਭਰਿਆ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਕ ਭੈਣ ਆਪਣੇ ਭਰਾ ਨੂੰ ਮਾਂ ਵਰਗਾ ਪਿਆਰ ਵੀ ਦਿੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਹਰ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਵਿੱਚ ਉਸਦਾ ਹੌਂਸਲਾ ਵੀ ਵਧਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਭੈਣ ਦਾ ਛੋਟਾ ਭਰਾ ਜਨਮ ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣੀਆਂ ਹੱਥਾਂ ਵਿੱਚ ਫੜ ਕੇ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਖੁਸ਼ੀ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਭੈਣ ਭਰਾ ਦੇ ਬਚਪਨ ਦੀਆਂ ਯਾਦਾਂ ਬਹੁਤ ਹੀ ਮਿੱਠੀਆਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਕੱਠੇ ਖੇਡਣਾ ਇਕੱਠੇ ਲੜਨਾ ਤੇ ਫਿਰ ਇੱਕ ਦੂਜੇ ਨੂੰ ਮਨਾ ਕੇ ਪਹਿਲਾਂ ਵਾਂਗ ਹੋ ਜਾਣਾ ਹੀ ਭੈਣ-ਭਰਾ ਦਾ ਰਿਸ਼ਤਾ ਹੈ। ਬਚਪਨ ਵਿੱਚ ਭੈਣ ਆਪਣੇ ਭਰਾ ਨੂੰ ਸਕੂਲ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਕਰਵਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਉਸਦੇ ਹਰ ਕੰਮ ਵਿੱਚ ਸਹਾਇਤਾ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਭਰਾ ਕੋਈ ਗ਼ਲਤੀ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਸਮਝਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਇੱਕ ਭੈਣ ਹਮੇਸ਼ਾ ਆਪਣੇ ਭਰਾ ਦੀ ਕਾਮਯਾਬੀ ਲਈ ਅਰਦਾਸ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਮੇਰਾ ਭਰਾ ਮੇਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਮੇਰੇ ਦਿਲ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਨੇੜੇ ਹੈ। ਮੇਰਾ ਛੋਟਾ ਭਰਾ ਮੈਨੂੰ ਅੱਜ ਵੀ ਯਾਦ ਹੈ ਕਿ ਜਦੋਂ ਉਹ ਪੈਦਾ ਹੋਇਆ ਸੀ ਤੇ ਮੈਂ ਉਸਨੂੰ ਚੁੱਕ ਕੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਦੁਨੀਆ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਖ਼ੁਸ਼ਨਸੀਬ ਭੈਣ ਸਮਝਿਆ। ਉਹ ਮੇਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਅਹਿਮ ਹਿੱਸਾ ਹੈ। ਮੇਰੇ ਦਿਲ ਦਾ ਟੁਕੜਾ ਹੈ। ਉਸ ਦਾ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਲੜਨਾ ਖੇਡਣਾ ਬੈਠ ਕੇ ਮਿੱਠੀਆਂ-ਮਿੱਠੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਕਰਨਾ ਇਹ ਮੇਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਅਨਮੋਲ ਪਲ ਹਨ। ਉਸ ਨੂੰ ਸਕੂਲ ਲਈ ਤਿਆਰ ਕਰਨਾ, ਸਕੂਲ ਦੇ ਕੰਮ ਵਿੱਚ ਮਦਦ ਕਰਨਾ, ਇਹ ਸਭ ਕਰਨਾ ਮੈਨੂੰ ਚੰਗਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ।ਉਸ ਦੇ ਸੱਟ ਲੱਗਣ 'ਤੇ ਸਭ ਤੋਂ ਜਿਆਦਾ ਤਕਲੀਫ਼ ਮੈਨੂੰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ ਇੱਕ ਮਾਂ ਨੂੰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜੇ ਕਦੇ ਉਹ ਕੋਈ ਗ਼ਲਤੀ ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਮੈਂ ਉਸਨੂੰ ਇੱਕ ਦੋਸਤ ਬਣ ਕੇ ਸਹੀ ਗੱਲ ਸਮਝਾਉਂਦੀ ਹਾਂ। ਇੱਕ ਭੈਣ ਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਆਪਣੇ ਭਰਾ ਦੇ ਭਵਿੱਖ ਦੀ ਚਿੰਤਾ ਲੱਗੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਉਵੇਂ ਹੀ ਮੈਂ ਵੀ ਇਹੋ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਮੇਰਾ ਛੋਟਾ ਵੀਰ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਸੱਚ ਦੇ ਰਾਹ ਤੇ ਚੱਲ ਕੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਖ਼ੂਬ ਤਰੱਕੀ ਕਰੇ। ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਖ਼ੁਸ਼ ਅਤੇ ਤੰਦਰੁਸਤ ਰਹੇ। ਉਸਨੂੰ ਕਦੇ ਕੋਈ ਤਕਲੀਫ਼ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਨਾ ਕਰਨਾ ਪਵੇ। ਇਕ ਭੈਣ ਲਈ ਇਸ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਹੋਰ ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀ।

ਕਿਰਨਦੀਪ ਕੌਰ
ਬੀ.ਐੱਸ.ਸੀ. ਦੂਜਾ ਸਮੈਸਟਰ

ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ

ਸਾਡੇ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਹਵਾ, ਸਾਡੀ ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਸੁਗੰਧ,
ਰੰਗੀਨ ਪੱਗਾਂ ਵਾਲੀ ਜੱਟੀ, ਸੋਹਣੀ ਸਾਡੀ ਧਰਤੀ ਦਾ ਰੰਗ।
ਸਾਡੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪਿਆਰ ਦੀਆਂ ਰੀਤਾਂ, ਧਰਤੀ ਦੇ ਨਾਲ ਸੰਸਾਰ,
ਪੰਜਾਬੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਹੈ ਇੱਕ ਖ਼ਾਸ ਖ਼ੁਸ਼ੀ ਦਾ ਤਾਲ ।
ਉਂਝ ਕਿਸੇ ਵੀ ਬੋਲੀ ਨਾਲ ਮੇਰਾ ਕੋਈ ਸ਼ਿਕਵਾ ਨਹੀਂ, ਬਸ ਮੇਰੀ ਮਾਂ-ਬੋਲੀ ਦੀ ਗੱਲ ਹੀ ਵੱਖਰੀ ਆ,
ਵੱਡਿਆਂ ਅੱਗੇ ਜੀ, ਛੋਟਿਆਂ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਬੋਲਦੀ ਆ।
ਤੇਰੀ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਦੇ ਕੁਝ ਅੱਖਰ ਸਾਈਲੈਂਟ ਨੇ,
ਮੇਰੀ ਪੰਜਾਬੀ ਦੀ ਬਿੰਦੀ ਵੀ ਬੋਲਦੀ ਆ.....।

ਸੁਮਿਤ,
ਬੀ.ਕਾਮ.ਦੂਜਾ ਸਮੈਸਟਰ, ਰੋਲ ਨੰਬਰ 4656

ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਵਾਸ : ਇੱਕ ਫੈਸ਼ਨ

ਓਦਾਂ ਤਾਂ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਮੁਲਕਾਂ ਵਿੱਚ ਜਾਣ ਦਾ ਰੁਝਾਨ ਪੁਰਾਣੇ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਹੀ ਚੱਲਦਾ ਆ ਰਿਹਾ ਹੈ,ਪਰ 21ਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ ਇਹ ਰੁਝਾਨ ਇੱਕ ਫੈਸ਼ਨ ਵਿੱਚ ਤਬਦੀਲ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ।ਪਹਿਲਾਂ ਤਾਂ ਲੋਕ ਚੰਗੇ ਰੁਜ਼ਗਾਰ ਸਾਧਨਾਂ ਦੀ ਭਾਲ ਲਈ ਅਤੇ ਵੱਧ ਪੈਸਾ ਕਮਾਉਣ ਲਈ ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਜਾਂਦੇ ਸਨ,ਪਰ ਹੁਣ ਲੋਕ ਖ਼ਾਸ ਕਰਕੇ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ,ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਲਾਈਫਸਟਾਈਲ ਅਪਨਾਉਣ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਅਨੁਸਾਰ ਤਬਦੀਲ ਕਰਨ ਲਈ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਵਿਕਸਿਤ ਦੇਸ਼ ਜਿਵੇਂ ਅਮਰੀਕਾ, ਕੈਨੇਡਾ, ਇੰਗਲੈਂਡ, ਆਸਟ੍ਰੇਲੀਆ ਆਦਿ ਵਿਚਲੇ ਰੁਜ਼ਗਾਰ ਸਾਧਨ,ਸ਼ਹਿਰੀ ਸੁੰਦਰਤਾ,ਆਰਥਿਕ ਖੁਸ਼ਹਾਲੀ ਅਤੇ ਇੱਕ ਨਵੇਂ ਯੁੱਗ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਸ਼ ਵਾਲਾ ਜੀਵਨ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ ਦਾ ਧਿਆਨ ਆਪਣੇ ਵੱਲ ਕੇਂਦਰਿਤ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ ਅਤੇ ਪ੍ਰਵਾਸ ਇੱਕ ਤਰਾਂ ਦੇ ਫੈਸ਼ਨ ਵਿੱਚ ਬਦਲ ਗਿਆ ਹੈ। ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਇਸ ਰੁਝਾਨ ਨੂੰ ਵਧਾਉਣ ਵਿੱਚ ਮੁੱਖ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਅ ਰਿਹਾ ਹੈ।ਫ਼ਿਲਮ ਅਦਾਕਾਰ, ਗਾਇਕ ਅਤੇ ਮਸ਼ਹੂਰ ਹਸਤੀਆਂ ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਰਾਹੀਂ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ,ਜਿਸ ਨਾਲ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਜੀਵਨ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਤੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਦੇ ਦਿਲ ਵਿੱਚ ਖਿੱਚ ਦਾ ਕੇਂਦਰ ਬਣਦਾ ਹੈ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਲਈ ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣਾ ਇੱਕ ਇੱਛਾ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਨੌਜਵਾਨ ਇੱਕ ਅਜ਼ਾਦ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਜਿਉਣ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਦਾਇਰੇ ਨੂੰ ਵਧਾਉਣ ਲਈ ਵਿਦੇਸ਼ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਭਾਵੇਂ ਕਿ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਜੀਵਨ ਕਾਫ਼ੀ ਚੁਣੌਤੀਆਂ ਭਰਿਆ ਹੈ,ਪਰ ਫਿਰ ਵੀ ਇਹ ਅੱਜ ਦੇ ਯੁੱਗ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਫੈਸ਼ਨੇਬਲ ਅਤੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਚੁਣਿਆ ਜਾਣ ਵਾਲਾ ਵਿਕਲਪ ਬਣਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ।

ਗੁਰਸ਼ਰਨ ਸਿੰਘ,
ਬੀ.ਏ. ਛੇਵਾਂ ਸਮੈਸਟਰ

ਸਮਾਂ ਅਜੇ ਚੱਲ ਰਿਹਾ ਏ,

ਸਮਾਂ ਅਜੇ ਚੱਲ ਰਿਹਾ ਏ,
ਕਿਸਮਤ ਦਾ ਕਰ ਹੱਲ ਰਿਹਾ ਏ।
ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਅਜੇ ਕਿੰਨਾ ਚਿਰ ਚੱਲੇਗਾ।
ਕੀ ਇਹ ਉੱਚਾਈਆਂ ਨੂੰ ਜਾ ਕੇ ਮੱਲੇਗਾ?
ਸੋਚਦਾ ਹਾਂ ਫਲ ਕਿਤੇ ਨਾ ਕਿਤੇ ਤਾਂ ਮਿਲੇਗਾ।
ਇਹ ਫੁੱਲ ਮੁਰਝਾਇਆ ਕਿਤੇ ਤਾਂ ਖਿਲੇਗਾ ।
ਅਜੇ ਵੀ ਕਈਆਂ ਦਾ ਮੂੰਹ ਕਰ ਬੰਦ ਰਿਹਾ ਏ,
ਸਮਾਂ ਅਜੇ ਚੱਲ ਰਿਹਾ ਏ।
ਕਈਆਂ ਲਈ ਸਿੱਧਾ ਤੇ ਕਈਆਂ ਲਈ ਬੜਾ ਪੁੱਠਾ ਹੈ ਜੀਵਨ,
ਕਈ ਹੱਸਣ ਹਾਸੇ ਤੇ ਕਈ ਘੋਲ ਦੁੱਖਾਂ ਦੇ ਪੀਵਣ,
ਡਰ ਮੇਰੇ ਵੀ ਅੰਦਰੋਂ-ਅੰਦਰੀ ਪਲ ਰਿਹਾ ਏ,
ਸਮਾਂ ਅਜੇ ਚੱਲ ਰਿਹਾ ਏ।
ਅਖ਼ੀਰ ਮੈਂ ਸੋਚਾਂ ਉਹਨੇ ਲਿਖਿਆ,
ਕੁਝ ਤਾਂ ਚੰਗਾ ਹੋਊ,
ਅਕਸਰ ਰੱਬ ਵੀ ਤਾਂ ਬੰਦਾ ਹੋਊ।

ਅਰਮਾਨ ਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ
ਬੀ.ਐਸਸੀ ਮੈਡੀਕਲ

ਕੁੜੀ–ਇਕ ਰੋਸ਼ਨ ਦੀਵਾ

ਕੁੜੀ ਇੱਕ ਦੀਵਾ ਰੋਸ਼ਨ ਬਲੇ,ਜਿਸਨੂੰ ਹਵਾ ਵੀ ਬੁਝਾ ਨਾ ਸਕੇ। ਮਾਂ ਦੀ ਲੋੜ, ਪਿਉ ਦੀ ਸ਼ਾਨ,ਘਰ ਦੀ ਲਾਜ, ਸਭ ਦਾ ਮਾਣ।ਬਚਪਨ – ਮਸੂਮ ਖੇਡਾਂ ਛੋਟੀ ਜਿਹੀ ਹੱਸਦੀ-ਖੇਡਦੀ, ਗੁੱਡੀਆਂ ਨਾਲ ਗੱਲਾਂ ਕਰਦੀ। ਮਾਂ ਦੀ ਗੋਦ ਵਿੱਚ ਸਕੂਨ ਪਾਵੇ, ਨਵੀਆਂ ਉੱਚਾਈਆਂ ਦੇ ਸੁਪਨੇ ਸਜਾਵੇ ਪਰ ਜਦ ਹੋਵੇ ਕੁੜੀ ਜਵਾਨ, ਕੰਮ ਕਰੇ, ਪਰ ਨਾ ਮਾਣ। ਲੋਕੀ ਕਹਿੰਦੇ, ਇਹ ਹੈ ਬੋਝ, ਪਰ ਉਹ ਬਣਦੀ ਅਸਮਾਨ। ਕਦੇ ਇੰਜਨੀਅਰ, ਕਦੇ ਡਾਕਟਰ, ਕਦੇ ਅਧਿਆਪਕ, ਕਦੇ ਅਫ਼ਸਰ। ਹੋਵੇ ਖੇਤਾਂ ‘ਚ, ਹੋਵੇ ਸਿਹਤ, ਜਿੱਥੇ ਵੀ ਚਾਹੇ ਪੈਰ ਧਰੇ। ਕਦੇ ਬਿਜ਼ਨੈਸ, ਕਦੇ ਖੇਡਾਂ, ਕੋਈ ਰੋਕੇ, ਨਾ ਉਹ ਡਰੇ। ਕੁੜੀ – ਹੌਂਸਲੇ ਦੀ ਮੂਰਤ ਪਹਾੜਾਂ ਵਰਗੀ ਥੰਮ ਕੇ ਖੜੀ, ਕਦੇ ਨਾ ਝੁਕੇ, ਕਦੇ ਨਾ ਡਰੀ। ਉਮਰ ਭਰ ਸਹਿ ਲੈਂਦੀ ਦੁੱਖ,ਪਰ ਫੇਰ ਵੀ ਰਹਿੰਦੀ ਖ਼ੁਸ਼। ਮਾਂ ਵੀ ਏ, ਧੀ ਵੀ ਏ, ਭੈਣ ਵੀ ਏ, ਪਿਆਰ ਵੀ ਏ। ਇੱਕ ਘਰ ਨੂੰ ਰੌਸ਼ਨ ਕਰਦੀ, ਦੂਜੇ ਘਰ ਦੀ ਵੀ ਸ਼ਾਨ ਬਣਦੀ। ਸਮਾਜ ਲਈ ਸੁਨੇਹਾ, ਨਾ ਸਮਝੋ ਇਕੱਲੀ, ਨਾ ਕਰੋ ਬੇਇੱਜ਼ਤ, ਕੁੜੀ ਹੈ ਵੱਡੀ, ਇਹ ਸੱਚ। ਆਉ ! ਮਿਲਕੇ ਸਨਮਾਨ ਕਰੀਏ, ਕੁੜੀਆਂ ਨੂੰ ਉੱਚਾ ਮਾਣ ਦੇਈਏ।– "ਕੁੜੀ ਨਾ ਇਕੱਲੀ ਸਮਝੀ ਜਾਵੇ, ਇਹ ਤਾਂ ਜਗ ਦੀ ਚਮਕ ਬਣੇ!"

ਟੀਸ਼ਾ ਅਗਰਵਾਲ,
ਬੀ.ਕਾਮ,ਦੂਜਾ ਸਮੈਸਟਰ,ਰੋਲ ਨੰਬਰ-4651

ਮੁਹੱਬਤ

ਇਕ ਬੰਦੇ ਦੀ ਕਦੇ
ਜ਼ਾਤ ਨਾ ਪੁੱਛਿਓ,
ਕਿੱਦਾਂ ਕੱਟ ਦੀ ਉਸਦੀ
ਰਾਤ ਨਾ ਪੁੱਛਿਓ,
ਘਰ ਦਾ ਗੁਜ਼ਾਰਾ ਕਿੱਦਾਂ ਚਲਦਾ
ਉਸਦੀ ਬਾਤ ਨਾ ਪੁੱਛਿਓ,
ਪਿਆਰ ਵਿੱਚ ਟੁੱਟੇ ਦੇ
ਹਾਲਾਤ ਨਾ ਪੁੱਛਿਓ,
ਟੁੱਟ ਕੇ ਵੀ ਉਸਨੂੰ ਚਾਹੁੰਦਾ
ਉਸਦੇ ਕਦੇ ਜ਼ਜ਼ਬਾਤ ਨਾ ਪੁੱਛਿਓ,
ਬਸ ਜੇ ਬੰਦੇ ਹੋ ਤਾ ਬੰਦੇ
ਤੋਂ ਕਦੇ ਉਸਦੀ ਜਾਤ ਨਾ ਪੁੱਛਿਓ,
.....

ਅੱਖਾਂ ਨੇ ਤੇਰੀਆਂ ਡੂੰਘੀ ਝੀਲ ਜਿਹੀਆਂ
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਚ ਮੈਂ ਅਕਸਰ ਖੋ ਜਾਂਦਾ ਆ,
ਸੂਰਤ ਤੇਰੀ ਓਹੀ ਭੋਲੇਪਣ ਵਾਲੀ ਆ
ਜਿਸਦਾ ਮੈਂ ਅਕਸਰ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਆ,
ਰੰਗੀ ਰਹਿੰਦੀ ਆਪਣੀ ਸਾਦਗੀ ਦੇ ਰੰਗਾਂ ਚ
ਜਾਪੇ ਕਿਰਦਾਰ ਉਸਦਾ ਮੈਨੂੰ ਪਰੀਆਂ ਦੇ ਵਾਂਗਰਾਂ,
ਜੱਚਣ ਗਹਿਣੇ-ਗੱਟੇ ਉਸਦੇ ਹੱਥਾਂ ਤੇ ਪੈਰਾਂ ’ਚ
ਰੱਖੇ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਇੱਦਾਂ ਜਿਵੇ ਮੈਂ ਉਸਦੇ ਸ਼ਿੰਗਾਰ ਦੇ ਵਾਂਗਰਾਂ,
"ਜਿਵੇ ਮੈਂ ਉਸਦੇ ਸ਼ਿੰਗਾਰ ਦੇ ਵਾਂਗਰਾਂ"
.....

ਜੁਗਨੂੰਆਂ ਵਰਗੀ ਰਾਤ ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਸੋਚਾਂ
ਪਾਉਣੀ ਜਿਹੜੀ ਬਾਤ ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਸੋਚਾਂ,

ਲਿਖੀ ਜੋ ਆਪਣੀ ਕਹਾਣੀ ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਸੋਚਾਂ
ਜਾਂ ਤੇਰੇ ਲਈ ਲਿੱਖਣ ਬਾਰੇ ਸੋਚਾਂ,
ਆਉਂਦੇ ਤੇਰੇ ਖ਼ਿਆਲਾ ਬਾਰੇ ਸੋਚਾਂ
ਜੋ ਭੁਲਾਵੇ ਸਾਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਤੇਰੇ ਬਾਰੇ ਸੋਚਾਂ,
ਰਹਿੰਦੀ ਹੁਣ ਮੇਰੀ ਜਿੰਨ੍ਹੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ
ਬੱਸ ਇਕ ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਬਿਤਾਉਣ ਦੀ ਸੋਚਾਂ,
"ਬੱਸ ਇਕ ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਬਿਤਾਉਣ ਦੀ ਸੋਚਾਂ"
.....

ਸਾਹਿਲ ਕੁਮਾਰ,
ਬੀ.ਏ., ਦੂਜਾ ਸਮੈਸਟਰ,ਰੋਲ ਨੰਬਰ 5447

ਗੀਤ

ਅੱਜ ਕੱਲ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਯਾਰੋ,
ਹੈਗੇ ਆ ਧੋਖੇ ਜੀ।
ਪੜ੍ਹ ਲਿਖ ਕੇ ਘਰ ਬੈਠੇ ਆਂ,
ਮਿਲਦੇ ਨਾ ਮੌਕੇ ਜੀ।
ਕਹਿੰਦੇ ਸਰਕਾਰ ਬਦਲ ਗਈ
ਕਿਸਮਤ ਨਾ ਬਦਲੀ ਓਏ ।
ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਤੇ ਬੋਝ ਜਿਹਾ
ਕਿਹਨੂੰ ਹੁਣ ਕਹੀਏ ਜੀ
ਸੋਚਿਆ ਸੀ ਪੜ੍ਹ ਲਿਖ ਕੇ ਮੈਂ,
ਅਫ਼ਸਰ ਬਣ ਘਰ ਨੂੰ ਆਊ।
ਬਾਪੂ ਸਿਰੋਂ ਬੜੀ ਕੀਤੀ ਆ,
ਬਾਪੂ ਨੂੰ ਐਸ਼ ਕਰਾਊ।
ਸਭ ਸੁਪਨੇ- ਸੁਪਨੇ ਰਹਿ ਗਏ
ਕੁਝ ਸਿਸਟਮ ਮਾਰ ਗਿਆ।
ਲੀਡਰ ਵੀ ਝੂਠਾ ਨਿਕਲਿਆ,
ਵੋਟਾਂ ਲੈ ਪਾਰ ਗਿਆ।
ਬਾਪੂ ਸਿਵਿਆਂ ਨੂੰ ਤੁਰ ਗਿਆ
ਸੁਪਨੇ ਹੀ ਲੈਂਦਾ ਓਏ ,
ਧੀ ਮੇਰੀ ਨਾਮ ਕਰੂਗੀ
ਕਹਿੰਦਾ ਸੀ ਰਹਿੰਦਾ ਓਏ ।
ਆਪਾਂ ਹੁਣ ਕਲਮ ਚੁੱਕ ਲਈ ਆ।
ਏਹੀ ਕੰਮ ਰਹਿ ਗਿਆ ਸੀ ।
ਏਵੀ ਕੋਈ ਕੰਮਾਂ ਚੋਂ ਕੰਮ ਐ।
ਸਾਰਾ ਟੱਬਰ ਮੈਨੂੰ ਕਹਿ ਰਿਹਾ ਸੀ।
ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਕੀ ਮੈਂ ਦੱਸਾਂ,
ਕੁਝ ਹੋਰ ਵੀ ਸੁਝਦਾ ਨਹੀਂ ।
ਚਲਦੀ ਆ ਰਿਸ਼ਵਤ ਏਥੇ ,
ਟੈਲੈਂਟ ਕੋਈ ਪੁੱਛਦਾ ਨਹੀਂ।

ਕਹਿੰਦੇ ਨੇ ਮੌਤ ਹੁੰਦੀ ਏ,
ਸੁਪਨਿਆਂ ਦਾ ਮਰ ਜਾਣਾ।
ਪਰ ਬਾਪੂ ਤੂੰ ਫ਼ਿਕਰ ਕਰੀਂ ਨਾ ,
ਨਾਂ ਤੇਰਾ ਕਰ ਜਾਣਾ।
ਰੱਬਾ ਓਏ ਮਿਹਰ ਕਰੀ,
ਵੇਖ ਮੈਂ ਨਾਮ ਕਮਾਊਂ।
ਜੇ ਤੂੰ ਵੀ ਮੇਰਾ ਹੱਥ ਨਾ ਫੜਿਆ, ਜੱਗ ਨੂੰ ਕੀ ਮੂੰਹ ਵਿਖਾਉ
ਕੱਲਾ ਇਹ ਗੀਤ ਨਾ ਸਮਝਿਓ
ਦਿਲ ਦੇ ਜਜ਼ਬਾਤਾਂ ਨੂੰ
ਅੱਖਰਾਂ ਦੀ ਸ਼ਕਲ ਦਿੱਤੀ ਆ ,
ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਹਾਲਾਤਾਂ ਨੂੰ,
ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਹਾਲਾਤਾਂ ਨੂੰ।

ਕੋਮਲਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ
ਐੱਮ.ਏ. ਪੰਜਾਬੀ, ਸਮੈਸਟਰ ਦੂਜਾ, ਰੋਲ ਨੰਬਰ.12401

ਛੇਵਾਂ ਦਰਿਆ।

ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਵਿੱਚ ਪੰਜ ਦਰਿਆ ਸੀ
ਤੁਸੀਂ ਛੇਵਾਂ ਹੋਰ ਵਗਾ ਦਿੱਤਾ
ਸੋਚ ਕੇ ਵੇਖੋ ਜਰਾ ਇਸ ਗੱਲ ਨੂੰ
ਤੁਸੀਂ ਕਿੰਨਾ ਵੱਡਾ ਕਹਿਰ ਕਮਾ ਦਿੱਤਾ।
ਪੰਜ ਦਰਿਆ ਸੀ ਪਾਣੀ ਦਿੰਦੇ
ਛੇਵੇਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਤਬਾਹੀ।
ਲੋਕ ਤਾਂ ਇਸ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਖਾਂਦੇ
ਜਿਵੇਂ ਖਾਂਦੇ ਕੋਈ ਦਵਾਈ ।
ਨਸ਼ੇ ਨੇ ਕਈ ਘਰ ਉਜਾੜੇ
ਕਈ ਮਾਵਾਂ ਦੇ ਪੁੱਤ ਨੇ ਮਾਰੇ।
ਨਸ਼ਾ ਬੰਦੇ ਤੋਂ ਸਭ ਕੁਝ ਖੋਵੇ
ਨਸ਼ਾ ਬੰਦੇ ਨੂੰ ਇਕੱਲਾ ਕਰ ਦੇਵੇ।
ਰਿਸ਼ਤੇ ਨਾਤੇ ਟੁੱਟ ਜਾਂਦੇ ਨੇ
ਸਕੇ ਸਬੰਧੀ ਭੁੱਲ ਜਾਂਦੇ ਨੇ
ਮੇਰੀ ਤੁਹਾਨੂੰ ਇਹੀ ਸਲਾਹ
ਮਾੜਾ ਹੈ ਇਹ ਦਰਿਆ।
ਇਸ ਦਾ ਪਾਣੀ ਕਦੇ ਨਾ ਪੀਵੋ
ਸੁਖੀ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਜੀਵਨ ਜੀਵੋ।

ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ
ਐੱਮ. ਏ .ਪੰਜਾਬੀ ਸਮੈਸਟਰ ਦੂਜਾ ਰੋਲ ਨੰਬਰ 1240

ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਪੰਜਾਬੀ

ਸੋਹਣਾ ਦੇਸ਼ ਪੰਜਾਬ ਮੇਰਾ,
ਜਿੱਥੇ ਵਗਦੇ ਪੰਜ ਦਰਿਆ।
ਮਿੱਠੀ ਬੋਲੀ ਇਸ ਦੀ,
ਜੋ ਦੇਂਦੀ ਦਿਲਾਂ 'ਚ ਪਿਆਰ ਜਗਾ। ਜਿਹਨੂੰ ਗੁਰੂਆਂ ਪੀਰਾਂ ਸਿੰਜਿਆ, ਸੂਫ਼ੀਆਂ ਨੇ ਰੰਗ ਚਾੜਿਆ,
ਕਿੱਸਾਕਾਰਾਂ ਦਿੱਤੀ ਇਸ ਤੇ ਹੋਰ ਰੰਗਤ ਚੜਾਅ।
ਜਿਹਦੀ ਗੋਦੀ ਮਾਂ ਵਾਂਗ ਮਿੱਠੜੀ, ਇਹਨੇ ਕੀਤੇ ਜਜ਼ਬ ਕਈ ਸ਼ਬਦ ਹਜ਼ਾਰ।
ਬੇਗਾਨੀਆਂ ਬੋਲੀਆਂ ਵੀ ਕਰ ਨਾ ਸਕੀਆਂ,
ਇਹਦੀ ਰੰਗਤ ਵਿੱਚ ਘਟਾ।
ਪਰ ਅੱਜ ਕਿਉਂ ਅਸੀਂ ਆਪ ਹੀ,
ਰਹੇ ਇਸ ਨੂੰ ਮਨੋ ਵਿਸਾਰ।
ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਬੋਲਣ ਤੇ ਕਿਉ ਲੱਗਦਾ ਸਾਨੂੰ ਆਪਣਾ ਆਪ ਗਵਾਰ ?
ਆਓ, ਰਲ ਮਿਲ ਪ੍ਰਣ ਕਰੀਏ ,
ਤੇ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਨਾਲ ਜੁੜੀਏ।
ਦਈਏ ਬਣਦਾ ਇਸ ਨੂੰ ਮਾਣ ਅਤੇ ਸਤਿਕਾਰ।

ਰੁਖਸਾਰ,

ਬੀ.ਬੀ.ਏ. ਛੇਵਾਂ ਸਮੈਸਟਰ, ਰੋਲ ਨੰਬਰ-10007

ਇਮਾਨਦਾਰੀ

ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਦਾ ਮਤਲਬ ਸੱਚਾ ਹੋਣਾ ਹੈ। ਇਮਾਨਦਾਰ ਵਿਅਕਤੀ ਚੰਗੇ ਵਿਵਹਾਰ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਹਮੇਸ਼ਾ ਨਿਯਮਾਂ ਦੀ ਪਾਲਣਾ ਕਰਦਾ ਹੈ । ਅਨੁਸ਼ਾਸਨ ਕਾਇਮ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਸੱਚ ਬੋਲਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਸਮੇਂ ਦਾ ਪਾਬੰਦ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਮਾਨਦਾਰ ਵਿਅਕਤੀ ਭਰੋਸੇਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਹਮੇਸ਼ਾ ਸੱਚ ਬੋਲਦਾ ਹੈ। ਇਮਾਨਦਾਰੀ, ਦਿਆਲਤਾ, ਸੱਚਾਈ, ਨੈਤਿਕ ਅਤੇ ਹੋਰ ਚੰਗੇ ਗੁਣ ਵਿਕਸਿਤ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਮਦਦ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਧੋਖਾ ਦੇਣਾ, ਝੂਠ ਬੋਲਣਾ, ਲਾਲਚ, ਚੋਰੀ ਅਤੇ ਹੋਰ ਮਾੜੇ ਗੁਣਾਂ ਦਾ ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਹਿੱਸਾ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਮਾਨਦਾਰ ਲੋਕ ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਭਰੋਸੇਮੰਦ ਅਤੇ ਵਫ਼ਾਦਾਰ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਬੁਰੇ ਹਾਲਾਤਾਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਇਮਾਨਦਾਰ ਅਤੇ ਸੱਚਾ ਹੋਣਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਇਮਾਨਦਾਰ ਦੀ ਨੀਤੀ ਹੈ। ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਖੁਸ਼ ਅਤੇ ਸ਼ਾਂਤ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਇੱਕ ਇਮਾਨਦਾਰ ਵਿਅਕਤੀ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਂਤ ਅਤੇ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਉਸ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਦੋਸ਼ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਰਹਿਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਹਰ ਕਿਸੇ ਨਾਲ ਇਮਾਨਦਾਰ ਹੋਣ ਨਾਲ ਮਨ ਨੂੰ ਸ਼ਾਂਤੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਮਾਨਦਾਰ ਵਿਅਕਤੀ ਹਰ ਕਿਸੇ ਦੀ ਮਦਦ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਨੈਤਿਕ ਚਰਿੱਤਰ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਲਈ ਇੱਕ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਹਿੱਸਾ ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਹੈ। ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਦਾ ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵ ਹੈ। ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਦਾ ਅਰਥ ਕਿਸੇ ਨਾਲ ਵੀ ਝੂਠ ਨਾ ਬੋਲਣਾ, ਦੂਸਰਿਆਂ ਨੂੰ ਧੋਖਾ ਨਾ ਦੇਣਾ, ਚੋਰੀ ਨਾ ਕਰਨਾ, ਕਿਸੇ ਦਾ ਦਿਲ ਨਾ ਦੁਖਾਉਣਾ ਹੈ। ਇਮਾਨਦਾਰ ਵਿਅਕਤੀ ਕਿਸੇ ਵੀ ਕਾਨੂੰਨ ਜਾਂ ਨਿਯਮ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਤੋੜਦੇ ਹਨ। ਅਨੁਸ਼ਾਸਨ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣਾ, ਚੰਗੇ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਵਿਵਹਾਰ ਕਰਨਾ, ਸੱਚ ਬੋਲਣਾ ਅਤੇ ਦੂਸਰਿਆਂ ਦੀ ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਨਾਲ ਮਦਦ ਕਰਨਾ, ਇਹ ਸਭ ਲੱਛਣ ਇਮਾਨਦਾਰ ਵਿਅਕਤੀ ਵਿੱਚ ਵਿਕਸਿਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਕੋਈ ਅਜਿਹੀ ਵਸਤੂ ਨਹੀਂ ਜਿਸਨੂੰ ਵੇਚਿਆ ਜਾਂ ਖਰੀਦਿਆ ਜਾ ਸਕੇ। ਇਮਾਨਦਾਰ ਵਿਅਕਤੀ ਵਿੱਚ ਆਤਮਵਿਸ਼ਵਾਸ ਬਹੁਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਨਿਡਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜੀਵਨ ਦੇ ਲਈ ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਦਾ ਹੋਣਾ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ।

ਆਂਚਲ,

ਬੀ.ਏ. ਦੂਜਾ ਸਮੈਸਟਰ,ਰੋਲ ਨੰਬਰ 5271

ਮੇਰੀ ਮਿਹਨਤ ਜਾਰੀ ਏ , ਤੇ ਤੇਰੀ ਰਹਿਮਤ ਸਾਰੀ ਏ।

ਕਿਸਮਤ ਦੇ ਸਹਾਰੇ ਨਾ ਰੱਖੀਂ ਰੱਬਾ, ਕਿਉਂਕਿ ਸਿਰ ਤੇ ਘਰ ਦੀ ਜਿਮੇਵਾਰੀ ਏ।
ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ , ਐਵੇਂ ਨਹੀਂ ਉਂਗਲਾਂ ਬਣਾਈਆਂ ਰੱਬ ਨੇ।
ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੇ ਵੀ ਕਿਸਮਤ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਕਿਰਤ ਕਰਨਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਦੱਸਿਆ ਹੈ ।
ਕਿਸਮਤ ਤੇ ਨਹੀਂ, ਮਿਹਨਤ ਤੇ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਰੱਖ। ਲੋਕਾਂ ਤੋਂ ਨਹੀਂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਤੇ ਆਸ ਰੱਖ।
ਮਿਹਨਤ ਨਾਲ ਗੋਡਣਾ ਪੈਂਦਾ ਆਸਾਂ ਦੀ ਕਿਆਰੀ ਨੂੰ, ਅਸਮਾਨ ਵੱਲ ਦੇਖ ਕੇ ਸੁਪਨੇ ਪੂਰੇ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ ।
ਸਭ ਤੋਂ ਔਖਾ ਰਸਤਾ ਜਦੋਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਇਕੱਲੇ ਤੁਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਪਰ ਅਸਲ ਵਿੱਚ ਆਹੀ ਸਮਾਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ।
ਜਿਹਨਾਂ ਨੇ ਤੁਹਾਡੀ ਮਿਹਨਤ ਦੇਖੀ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਹੀ ਤੁਹਾਡੀ ਕਾਮਯਾਬੀ ਪਿੱਛੇ ਕਿਰਤ ਦਿਖਣੀ ,
ਬਾਕੀਆਂ ਨੂੰ ਤਾਂ ਲਗਣਾ ਕਿਸਮਤ ਚਮਕੀ ਹੈ।
ਹਲਾਤਾਂ ਤੋਂ ਹਾਰਨ ਵਾਲੇ ਨਾ ਸਮਝੀ,ਜੇ ਅੱਜ ਤੇਰੀ ਹਨੇਰੀ ਵਗਦੀ ਤਾਂ ਕੱਲ ਦਾ ਤੂਫ਼ਾਨ ਸਾਡਾ ਹੋਏਗਾ।
ਜੋਸ਼ ਵੀ ਬੜਾ ਤੇ ਹੌਂਸਲੇ ਵੀ ਖਰੇ ਨੇ,
ਅਸੀਂ ਇਵੇਂ ਨਹੀ ਹਾਰਦੇ, ਸਾਡੇ ਹੱਥ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਨੇ ਫੜੇ ਨੇ।
ਮਿਹਨਤ ਇਨੀ ਕਰੋ ਕਿ ਰੱਬ ਵੀ ਕਹੇ, ਇਸਦੀ ਕਿਸਮਤ ਕੀ ਸੀ ਤੇ ਇਸਨੇ ਕੀ ਲਿਖਾ ਲਿਆ।
ਜੇ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਸਾਰੇ ਫ਼ੈਸਲੇ ਕਿਸਮਤ ਤੇ ਛੱਡੇ ਜਾਣ ਤਾ ਕਿਸਮਤ ਕਿਸੇ ਜੋਗਾ ਨਹੀਂ ਛੱਡਦੀ ।
ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਲਕੀਰਾਂ ਸਜਾਵਟ ਬਿਆਨ ਕਰਦੀਆਂ, ਜੇ ਕਿਸਮਤ ਪਤਾ ਹੁੰਦੀ ਤਾਂ ਮਿਹਨਤ ਕੌਣ ਕਰਦਾ ।
ਕੰਡਿਆਂ 'ਤੇ ਵੀ ਤੁਰਨਾ ਪਵੇ ਤਾਂ ਪਰਵਾਹ ਨਾ ਕਰੋ ਕਿਉਂਕਿ ਮੁੱਲ ਮਿਹਨਤ ਦਾ ਪੈਂਦਾ ਹੀ ਆ।
ਕੋਈ ਵੀ ਚੀਜ਼ ਮਿਹਨਤ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ, ਇਸ ਲਈ ਕਦੇ ਵੀ ਮਿਹਨਤ ਤੋਂ ਪਿੱਛੇ ਨਾ ਹਟੋ,
ਬਿਨਾਂ ਮਿਹਨਤ ਦੇ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦਾ, ਉਸ ਸਮੇਂ ਆਹੀ ਯਾਦ ਰੱਖੋ ।

ਭਾਵਨਾ,
ਬੀ.ਏ.ਦੂਜਾ ਸਮੈਸਟਰ, ਰੋਲ ਨੰਬਰ 5276

ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਉੱਪਰ ਅਜੋਕੀ ਗਾਇਕੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ

ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਉੱਪਰ ਆਧੁਨਿਕ ਸਮੇਂ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਦੇਖਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਪਹਿਲੇ ਭੂਤ ਕਾਲ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨਾਲ ਜਾਣੂ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਜਟਿਲ ਗਤੀਸ਼ੀਲ ਪ੍ਰਬੰਧ ਹੈ ਜੋ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਸਮਾਜਿਕ ਤੇ ਭੂਗੋਲਿਕ ਸਥਿਤੀਆਂ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀਆਂ ਅਤੇ ਚੁਣੌਤੀਆਂ ਸਦਕਾ ਹੋਂਦ ਵਿੱਚ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਸੁਘੜ ਸੁਚੱਜੇ ਮਨੁੱਖ ਦਾ ਸੱਚਾ ਸੁੱਚਾ ਆਚਾਰ ਵਿਹਾਰ ਹੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਹੈ ।ਇਸ ਵਿੱਚ ਪਰੰਪਰਾਗਤ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ,ਮਨੌਤਾਂ, ਆਦਰਸ਼ ,ਧਰਮ, ਕਲਾ, ਰੀਤੀ ਰਿਵਾਜ ,ਰਹਿਣੀ ਬਹਿਣੀ, ਖਾਣ-ਪੀਣ, ਪਹਿਰਾਵਾ, ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਅਤੇ ਬੋਲਚਾਲ ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਕਿਸੇ ਖਿੱਤੇ, ਕੌਮ ਜਾਂ ਜਾਤੀ ਦੀ ਜੀਵਨ ਜਾਂਚ ਦਾ ਨਾਂ ਹੈ।ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਆਪਣੇ ਇਹਨਾਂ ਉਪਰੋਕਤ ਗੁਣਾਂ ਕਾਰਨ ਵਿਲੱਖਣ ਹੈ ।ਜਿਸ ਦਾ ਰਹਿਣ ਸਹਿਣ, ਪਹਿਰਾਵਾ,ਬੋਲੀ ,ਇਤਿਹਾਸ, ਪੈਣ ਪਾਣੀ ,ਬਾਕੀਆਂ ਦੀ ਖਿੱਚ ਦਾ ਕਾਰਨ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬੀ ਜਿੱਥੇ ਵੀ ਗਏ ਛਾ ਗਏ ।ਭਾਵੇਂ ਭੰਗੜਾ , ਗਿੱਧਾ ਜਾਂ ਲੋਕ ਗੀਤ ਜਾਂ ਗੀਤ ਹੋਣ ।ਇਹਨਾਂ ਦਾ ਸੁਭਾਅ ਬੜਾ ਹੀ ਅਣਖੀਲਾ ਹੈ ,ਅਣਖ ਤੇ ਸਵੈ ਮਾਣ ਵਾਂਗ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਨਾਚ ਤੇ ਸਾਜ ਵੀ ਖੜਕਵੇ ਹਨ ,ਜੋ ਅੱਜ ਦੀ ਪੰਜਾਬੀ ਗਾਇਕੀ ਵਿੱਚ ਵੀ ਵੇਖੇ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਜੇ ਪੰਜਾਬ ਦੀਆਂ ਵਾਰਾਂ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਯੋਧਿਆਂ ਦੇ ਕਾਰਨਾਮੇ ,ਗੀਤਾਂ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਰਿਸ਼ਤੇ ਨਾਤੇ, ਬੋਲੀਆਂ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਔਰਤ ਮਨ ਦੀ ਵੇਦਨਾ, ਲੋਰੀਆਂ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਮਾਂ ਦਾ ਪਿਆਰ, ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਹਰ ਬੋਲ ਵਿੱਚੋਂ ਝਲਕਦਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅੱਜ ਦੀ ਗਾਇਕੀ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਸੁਭਾਅ ਦਾ ਖੁੱਲਾਪਣ ਹਰ ਬੋਲ ਵਿੱਚੋਂ ਝਲਕਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਖੁੱਲਾ ਤੇ ਰੱਜ ਕੇ ਖਾਣ ਪੀਣ ਦੇ ਅਤੇ ਜੀਣ ਦੇ ਆਦੀ ਹਨ ।ਜੋੜ ਕੇ ਰੱਖਣਾ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਸੁਭਾਅ ਦਾ ਅੰਗ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਬੜੀ ਦੇਰ ਇਹਨਾਂ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਅਖਾਣ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਰਿਹਾ ਹੈ, "ਖਾਧਾ ਪੀਤਾ ਲਾਹੇ ਦਾ ਬਾਕੀ ਅਹਿਮਦ ਸ਼ਾਹੇ ਦਾ"ਜਿਸ ਪਿੱਛੇ ਇਹਨਾਂ ਦਾ ਸਦੀਆਂ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ ਬੋਲਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਲੰਬਾ ਸਮਾਂ ਮੁਗਲਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਹਮੇਸ਼ਾ ਦੋ ਹੱਥ ਕਰਨੇ ਪੈਂਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਸਵੈਮਾਨ ਅਣਖ ਤੇ ਜੋਸ਼ੀਲਾਪਨ ਹੈ ।ਜੋ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਹਰ ਬੋਲ ਵਿੱਚੋਂ ਵੀ ਝਲਕਦਾ ਹੈ,ਤੇ ਜੇ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਨਾਚਾਂ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰੀਏ ਜਾਂ ਬੋਲਾਂ ਦੀ ਤੇ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਢੋਲ ਦੇ ਡੱਗੇ ਦੀ ਖਣਕਾਰ ਵੀ ਉਸੇ ਦੀ ਪਦਾਇਸ਼ ਜਾਪਦੀ ਹੈ। ਇਤਿਹਾਸਕ ਦਸਤਵੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਅਧਾਰ ਤੇ ਵਿਦੇਸ਼ੀਆਂ ਨਾਲ ਦੋ ਹੱਥ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਇਹ ਪੰਜਾਬੀ ਅੱਜ ਵੀ ਪੂਰੇ ਸਵੈਮਾਨ ਨਾਲ ਜਿਉਂਦੇ ਹਨ। ਜੇਕਰ ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਰੋਜ਼ੀ ਰੋਟੀ ਦਾ ਮਸਲਾ ਪਿਆ ਤਾਂ ਹੱਡ-ਭੰਨਵੀ ਮਿਹਨਤ ਕਰਨ ਤੇ ਮੰਗ ਕੇ ਨਾ ਖਾਣ ਵਾਲੇ ਲੋਕ ਅੱਜ

ਆਪਣੀ ਮਿਹਨਤ ਸਦਕਾ ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਦੀ ਧਰਤੀ ਉੱਤੇ ਜਾ ਵਸੇ, ਜਿਸ ਲਈ ਅੱਜ ਦੀ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜੀ ਕਿਸੇ ਵੀ ਕੀਮਤ 'ਤੇ ਉਧਰ ਜਾਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜੋ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਪੰਜਾਬੀ ਗਾਣਿਆਂ ਦੇ ਵਿੱਚੋਂ ਵੀ ਨਿਕਲ ਕੇ ਬਾਹਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਕਨੇਡਾ, ਅਮਰੀਕਾ, ਇੰਗਲੈਂਡ ਦੀ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਹਰ ਜਗ੍ਹਾ ਪੰਜਾਬੀ ਜਾ ਕੇ ਵਸਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਜਿਸ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਸਾਨੂੰ ਗਾਣੇ ਵੀ ਮਿਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ, ਕਈ ਲੋਕ ਤਾਂ ਮਜਬੂਰੀ ਵਿੱਚ ਗਏ, ਕਈ ਰੋਜ਼ੀ ਰੋਟੀ ਲਈ ਪਰ ਅੱਜ ਪੰਜਾਬੀ ਗੀਤਾਂ ਵਿਚ ਦਿਖਾਈ ਜਾਂਦੀ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਚਮਕ ਦਮਕ ਵੀ ਬਾਹਰ ਜਾਣ ਦੀ ਖਿੱਚ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਣੀ ਹੋਈ ਹੈ,ਕਈ ਵਾਰ ਗਾਣੇ ਗਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਇਹ ਥੋੜਾ ਜਿਹਾ ਹੋਸ਼ਾਪਨ ਵੀ ਕਰ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ,ਜੋ ਇਹਨਾਂ ਦੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਨੁਹਾਰ ਨੂੰ ਬਾਕੀਆਂ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਵਿਗਾੜਨ ਦਾ ਸਬੱਬ ਵੀ ਬਣਦਾ ਹੈ, ਜਿਵੇਂ ਗੀਤ ਹੈ:

ਜੱਟਾਂ ਦੇ ਪੁੱਤਾਂ ਨੂੰ ਰੋਕ ਸਕੇ ਨਾ ਟਰੰਪ, ਬਿੱਲੋ ਦੁੱਕੀ ਤਿੱਕੀ ਦੀ ਤਾਂ ਤੂੰ ਗੱਲ ਛੱਡ ਦੇ।

ਪੰਜਾਬ ਖੇਤੀ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸੂਬਾ ਹੈ ,ਇਹ ਹੱਡ ਭੰਨਵੀ ਮਿਹਨਤ ਕਰਨੀ ਜਾਣਦੇ ਹਨ ।ਕਈ ਵਾਰ ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਗਏ ਹੋਏ ਬੱਚੇ ਜਾਂ ਲੋਕ ਕਈ ਕਾਰਨਾਂ ਕਰਕੇ ਵਾਪਸ ਨਹੀਂ ਮੁੜ ਪਾਉਂਦੇ ਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਪਿਓ ਜੋ ਇਧਰ ਇਕੱਲੇ ਰਹਿ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਦੁੱਖ ਭਰੀ ਵੇਦਨਾ, ਹੂਕ ਵੀ ਪੰਜਾਬੀ ਗਾਣਿਆਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਬੜੇ ਕਰੁਣਾਮਈ ਢੰਗ ਨਾਲ ਪੇਸ਼ ਹੋਈ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।ਜਿਵੇਂ ਗੀਤ ਦੇ ਬੋਲ ਹਨ:

*ਵੇ ਹਿੱਕ ਤੇ ਰੱਖ ਕੇ ਲੈ ਜੀ ਚੰਦਰਿਆ ਡਾਲਰ ਵੇ ਮੈਂ ਆਖੀ ਜਾਵਾਂ ਇੱਥੇ ਮੇਰਾ ਸਰਦਾ ਨਾ
ਹੋ ਏਥੇ ਦੱਸ ਕਨੇਡਾ ਕਿਹੜਾ ਲਾਹੌਰ ਵੇ ਜਿੱਥੋਂ ਤੇਰਾ ਚਿੱਤ ਮੁੜਨ ਨੂੰ ਕਰਦਾ ਨਾ
ਵੇ ਆ ਜਾ ਖੇਤੀ ਕਰੀਏ ਫੁੱਲ ਪਤਾਸਿਆ ਵੇ
ਪੰਜ ਆਬਾਂ ਦਾ ਵਾਰਸ ਭੁੱਖਾ ਮਰਦਾ ਨਾ

ਹੋ ਵੱਜੇਂਗਾ ਵੇ ਕਾਤਲ ਸਾਡੇ ਚਾਵਾਂ ਦਾ ਹੋਰ ਕਿਉਂ ਤੂੰ ਅੱਲਾ ਕੋਲੋਂ ਡਰਦਾ ਨਾ ।

ਅਜੋਕੀ ਗੀਤਕਾਰੀ ,ਗਾਇਕ ਅਤੇ ਉਹਨਾ ਦੇ ਬੋਲ ਅੱਜ ਦੀ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜੀ ਉੱਤੇ ਬਹੁਤ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਅਸਰ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ, ਆਡੀਓ ,ਵੀਡੀਓ ਦੇ ਇਸ ਯੁੱਗ ਵਿੱਚ ਉਹ ਗਾਣੇ ਦੇ ਬੋਲਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਫਿਲਮਾਂਕਣ ਵੇਖਦੇ ਹਨ ।ਕਈ ਵਾਰ ਸਾਡੇ ਪੰਜਾਬੀ ਬੱਚੇ ਉਹਨਾਂ ਵਰਗਾ ਬਣਨਾ ਲੋਚਦੇ ਹਨ ,ਪਰ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਬੋਲਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਵੀ ਉਹ ਕਬੂਲ ਲੈਂਦੇ ਹਨ ਤੇ ਉਮਰ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਅਜਿਹੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਜਾਂ ਹਰਕਤਾਂ ਕਰਨ ਲੱਗ ਪੈਂਦੇ ਹਨ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਨਮੋਸ਼ੀ ਦਾ ਕਾਰਨ ਵੀ ਬਣਦੇ ਹਨ ।ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਗੀਤਾਂ ਦੇ ਆਹ ਬੋਲ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜੀ ਨੂੰ ਗੁਮਰਾਹ ਕਰਨ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਣ ਰਹੇ ਹਨ।

*ਲਹਿੰਗੇ ਉੱਤੇ ਪੈਗ ਡੋਲ ਗਿਆ ਮੁੰਡਾ ਜਾਣ ਕੇ ਸ਼ੈਤਾਨੀਆਂ ਕਰੇ ਨੀ ਲਹਿੰਗੇ ਉੱਤੇ ਪੈਗ ਡੋਲ ਗਿਆ।
*ਜੇ ਤੂੰ ਨੱਚੀ ਨਾ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਗੋਰੀਏ ਨੀ ਲਹਿੰਗੇ ਤੇ ਸ਼ਰਾਬ ਡੋਲ ਦੂੰ।
*ਲੱਗਦੀ ਆ ਤੋੜ ਟੁੱਟਦਾ ਸਰੀਰ ਨੀ, ਬੀਕਾਨੇਰੋਂ ਚੱਲਦੀ ਦਵਾਈ ਜੱਟ ਦੀ।

ਨਸ਼ੇ ,ਸ਼ਰਾਬ, ਹਥਿਆਰ ,ਅਫੀਮ,ਵੱਡੀਆਂ ਤੇ ਮਹਿੰਗੀਆਂ ਕਾਰਾਂ, ਝੂਠੀ ਸ਼ਾਨੋ ਸੌਕਤ, ਜੱਟਵਾਦੀ ਪੰਜਾਬੀ ਗਾਣੇ ਕਾਫੀ ਜਿਆਦਾ ਮਿਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ । ਅਜਿਹੇ ਗਾਣੇ ਸਾਨੂੰ ਸਬਰ ਸੰਤੋਖ ਵਾਲੀ ਜੀਵਨ-ਜਾਚ ਤੋਂ ਦੂਰ ਤਾਂ ਕਰਦੇ ਹਨ 'ਮਾਨਸ ਕੀ ਜਾਤ ਸਬੈ ਏਕੈ ਪਹਿਚਾਨਬੋ' ਦੇ ਸਿਧਾਂਤ ਤੋਂ ਵੀ ਬੇਮੁੱਖ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸਾਡੀ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜੀ ਜਲਦੀ ਪ੍ਰਭਾਵ ਕਬੂਲਦੀ ਹੋਈ ਕਈ ਵਾਰ ਕੁਰਾਹੇ ਪੈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਕਈ ਵਾਰ ਲੜਾਈਆਂ ਝਗੜੇ ਹਥਿਆਰ ਪੰਜਾਬੀ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਨੂੰ ਵੀ ਕੁਰਾਹੇ ਪਾਉਣ ਦਾ ਸਬੱਬ ਬਣ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਹੀ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਪਹਿਰਾਵਾ ,ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਖਾਣਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਵਧੇਰੇ ਵੀਡੀਓਜ਼ ਰਾਹੀਂ ਦਰਸਾਇਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਨਾਲ ਸਾਡੀ ਪੰਜਾਬੀ ਪੀੜੀ ਆਪਣੇ ਅਸਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਤੇ ਵਿਰਸੇ ਨਾਲੋਂ ਟੁੱਟਦੀ ਹੋਈ ਉਸਤੋਂ ਬੇਮੁਖ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ, ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਤੋਂ ਵੀ ਦੂਰ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਗਾਣਿਆਂ ਦੇ ਬੋਲ ਬੇਸ਼ੱਕ ਪੰਜਾਬੀ ਹਨ, ਪਰ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਪਹਿਰਾਵਾ, ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਫਿਲਮਾਂਕਣ ਹਰ ਇੱਕ ਢੰਗ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਦਿਖਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜੀ ਦੋਹਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਜਿਊ ਰਹੀ ਹੈ, ਨਾ ਤਾਂ ਉਹ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਨਾਲ ਨਿਆਂ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ, ਨਾ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਵਿਰਸੇ ਦੇ ਨਾਲ, ਨਾ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪਹਿਰਾਵੇ ਨਾਲ, ਮੇਰਾ ਇੱਥੇ ਲਿਖਣ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਸ ਇਹੀ ਹੈ ਕਿ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜੀ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਪੰਜਾਬ, ਪੰਜਾਬੀ ,ਪੰਜਾਬੀਅਤ ,ਪੰਜਾਬੀ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਅਤੇ ਵਿਰਸੇ ਪ੍ਰਤੀ ਸਮਰਪਿਤ ਹੁੰਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਇਸ ਦੇ ਅਸਲ ਨੂੰ ਪਛਾਣ ਕੇ ਉਸ ਪ੍ਰਤੀ ਆਪਣਾ ਧਿਆਨ ਕੇਂਦਰਿਤ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ।ਨਾ ਕਿ ਵਿਖਾਵੇ ਭਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਵਿੱਚ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਿਤਾਉਂਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਕੁਰਾਹੇ ਪੈਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਗੀਤ ਸਿਰਫ ਮਨੋਰੰਜਨ ਦਾ ਸਾਧਨ ਹਨ ਅਗਰ ਉਹ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਚੰਗਾ ਰੋਲ ਨਹੀਂ ਨਿਭਾ ਰਹੇ ਤਾਂ ਮਨੋਰੰਜਨ ਤੋਂ ਅੱਗੇ ਸਾਨੂੰ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਜਿਉਣਾ ਛੱਡ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਜੋ ਸਾਡੇ ਲੋਕ ਗੀਤ ਹਨ ਉਹ ਸਾਨੂੰ ਸਾਡੇ ਵਿਰਸੇ ਤੇ ਵਿਰਾਸਤ ਨਾਲ ਜੋੜਨ ਦਾ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਸਨ।

ਰੂਪੀ ਕੌਰ,

ਕਲਾਸ ਐਮ. ਏ. ਪੰਜਾਬੀ,

ਪਹਿਲਾ ਸਮੈਸਟਰ,

ਮਾਂ

ਇਸ ਦੁਨੀਆ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਅਨਮੋਲ ਰਿਸ਼ਤਾ ਮਾਂ ਦਾ ਹੈ। ਮਾਂ ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਇੱਕ ਇਹੋ ਜਿਹਾ ਸ਼ਬਦ ਹੈ, ਜੋ ਹਰ ਕਿਸੇ ਲਈ ਅਨਮੋਲ ਹੈ। ਮਾਂ ਪਿਆਰ, ਤਿਆਗ ਅਤੇ ਸੇਵਾ ਦੀ ਮੂਰਤੀ ਹੈ। ਮਾਂ ਨੂੰ ਰੱਬ ਦਾ ਦਰਜਾ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਸੱਚਮੁੱਚ ਹੀ ਮਾਂ ਰੱਬ ਦਾ ਰੂਪ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਦਾ ਨਾਮ ਦਵਿੰਦਰ ਕੌਰ ਹੈ। ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਬਹੁਤ ਸਮਝਦਾਰ ਮਿਹਨਤੀ ਅਤੇ ਸਭ ਨੂੰ ਖੁਸ਼ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਹੈ। ਉਹ ਸਾਰੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦਾ ਬਹੁਤ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਖਿਆਲ ਰੱਖਦੇ ਹਨ। ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਮਾਰਗ ਦਰਸ਼ਕ ਅਤੇ ਸਭ ਤੋਂ ਅੱਛੀ ਦੋਸਤ ਹੈ। ਉਹ ਮੈਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਨੇਕੀ ਅਤੇ ਸਦਾਚਾਰ ਦੇ ਰਸਤੇ ਉੱਪਰ ਚੱਲਣ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਮੇਰੇ ਮਨ ਦੀ ਹਰ ਗੱਲ ਜਾਣ ਲੈਂਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਮੇਰੇ ਹਰ ਦੁੱਖ ਸੁੱਖ ਵਿੱਚ ਸਾਥ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਮੈਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾ ਅੱਛਾ ਇਨਸਾਨ ਬਣਨ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਬਹੁਤ ਸਵਾਦਿਸ਼ਟ ਖਾਣਾ ਬਣਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਧਾਰਮਿਕ ਵਿਚਾਰਾਂ ਵਾਲੀ ਸੋਚ ਰੱਖਦੇ ਹਨ। ਮੈਨੂ ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਤੇ ਮਾਣ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਸਭ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਸਤਿਕਾਰ ਕਰਦੇ ਹਾਂ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਉਮਰ ਲੰਬੀ ਕਰੇ ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਜੇ ਕੋਈ ਸਭ ਤੋਂ ਜਿਆਦਾ ਮਹੱਤਵ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਸਾਡੀ ਮਾਂ ਹੀ ਹੈ। ਕਿਉਂਕਿ ਬਿਨਾਂ ਮਾਂ ਤੋਂ ਜੀਵਨ ਦੀ ਕਲਪਨਾ ਵੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ। ਮੈਨੂੰ ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਨਾਲ ਬਹੁਤ ਪਿਆਰ ਹੈ।

ਸਾਹਿਲ ਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ,
ਬੀ.ਐੱਸ.ਸੀ -ਨਾਨ ਮੈਡੀਕਲ

ਗੁਰੂ ਦੀ ਮਹਾਨਤਾ

ਪਿਤਾ ਸਮਾਨ ਪਿਆਰ ਮਾਂ ਵਰਗਾ ਸਨੇਹ ਅਧਿਆਪਕ ਬਿਨਾਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਜਾਪੇ ਅਧੂਰੀ ਹੈ,
ਕਦੇ ਮਾਰਨ ਕਦੇ ਸਨਮਾਨ ਦਿੰਦੇ ਸਾਡੇ ਸੁਪਨੇ ਉਹ ਹਕੀਕਤ ਬਣਾ ਦਿੰਦੇ।

ਸਫਲਤਾ

ਚਮਕਾਂਗਾ ਆਕਾਸ਼ ਸਵੇਰ ਆਉਣ ਵਾਲੀ ਹੈ
ਹੌਸਲੇ ਉੱਚੇ ਰੱਖ ਮੰਜ਼ਿਲ ਪਾਵਨ ਵਾਲੀਏ
ਕਦੇ ਵੀ ਹਾਰ ਨਹੀਂ ਮੰਨੀ ਨਾ ਹਿੰਮਤ ਛੱਡ
ਸਫ਼ਲਤਾ ਇੱਕ ਦਿਨ ਤੇਰੀ ਹੋਣ ਵਾਲੀ ਹੈ।

ਦੋਸਤੀ

ਜਦੋਂ ਦੁੱਖਾਂ ਦੇ ਬੱਦਲ ਘੇਰ ਲੈਂਦੇ
ਯਾਰਾਂ ਦੇ ਹੌਸਲੇ ਸਵੇਰ ਲੈਂਦੇ
ਕਦੇ ਹਸਾਉਂਦੇ ਕਦੇ ਰਲਾ ਜਾਂਦੇ
ਪਰ ਦਿਲ ਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਚਮਕਾਅ ਜਾਂਦੇ

ਅਨਮੋਲਦੀਪ ਕੌਰ,
ਬੀ.ਐੱਸ.ਸੀ. ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਾਇੰਸ, ਸਮੈਸਟਰ ਦੂਜਾ

ਇੱਕ ਦਲੇਰ ਧੀ ਦੀ ਕਹਾਣੀ

ਆਓ! ਅੱਜ ਤੁਹਾਨੂੰ ਇੱਕ ਆਵਾਜ਼ ਸੁਣਾਉਂਦੇ ਆਂ। ਜੋ ਸ਼ਾਇਦ ਤੁਹਾਨੂੰ ਸਹੀ ਸਮੇਂ ਤੇ ਨਹੀਂ ਸੁਣਦੀ ਪਰ ਉਮੀਦ ਕਰਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਕਿਸੇ ਸਮੇਂ ਤਾਂ ਜ਼ਰੂਰ ਸੁਣੂਗੀ। ਬਚਾਓ! ਬਚਾਓ! ਕੋਈ ਤਾਂ ਆਉ! ਸੁਣੀ ਆ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਸ਼ਾਇਦ ਮੇਰੀ ਆਵਾਜ਼। ਹੁਣ ਤੁਹਾਨੂੰ ਜਰੂਰ ਸੁਣੀ ਹੋਵੇਗੀ। ਪਰ ਜਦ ਮੈਨੂੰ ਲੋੜ ਸੀ, ਤਾਂ ਸੁਣਨਾ ਤਾਂ ਦੂਰ, ਤੁਸੀਂ ਤਾਂ ਕਿਸੇ ਨੇ ਦੇਖਿਆ ਨਹੀਂ। ਜੀ ਹਾਂ, ਸ਼ੁਰੂ ਚ ਮੇਰੀ ਗੱਲ ਅਜੀਬ ਲੱਗੀ ਹੋਊ। ਪਰ ਤੁਹਾਨੂੰ ਪਤਾ ਮੈਂ ਕੌਣ ਹਾਂ? ਮੈਂ ਉਹ ਹਾਂ ਜੋ ਇੱਕ ਵਾਰ ਨਹੀਂ ਕਈ ਵਾਰ ਬਹੁਤੇ ਦਰਿੰਦਿਆਂ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਬਣੀ ਹਾਂ। ਮੇਰੇ ਲਈ ਤਾਂ ਤੁਹਾਡੇ ਨਾਲ ਗੱਲ ਕਰਨਾ ਵੀ ਬਹੁਤ ਔਖਾ ਹੈ। ਪਰ ਮੈਂ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਸ਼ਾਇਦ ਮੇਰੀ ਸੁਣਾਈ ਗੱਲ ਨਾਲ ਤੁਹਾਨੂੰ ਮੇਰੇ ਵਰਗੀਆਂ ਲੱਖਾਂ ਦੀ ਲੋੜ ਪੈਣ ਤੇ ਆਵਾਜ਼ ਸੁਣ ਸਕੇ। ਕੀ ਕਸੂਰ ਹੈ ਮੇਰਾ ? ਕਿਉਂ ਮੈਂ ਇਹਨਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਦਰਿੰਦਗੀ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਬਣਦੀ ਹਾਂ? ਆਜੋ ਤੁਹਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਕਿੱਸੇ ਨਾਲ ਰੂਬਰੂ ਕਰਵਾਉਂਦੀ ਹਾਂ। ਤੁਹਾਡੇ ਵਾਂਗ ਮੈਂ ਵੀ ਇੱਕ ਹੱਸਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨੂੰ ਵਧੀਆ ਮਾਣਦੀ ਤੇ ਰੀਝਾਂ ਰੱਖਣ ਵਾਲੀ ਸੀ। ਪਰ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਸਮਾਂ ਆਇਆ, ਜਦ ਮੈਂ ਕੁਝ ਮਿੰਟਾਂ ਵਿੱਚ ਆਪਣੇ ਚਾਅ ਆਪਣੇ ਸੁਪਨੇ ਅੱਖੀਂ ਮਰਦੇ ਦੇਖੇ। ਮੈਂ ਇੱਕ ਆਮ ਕੁੜੀਆਂ ਵਾਂਗ ਦਫ਼ਤਰ ਵਿੱਚ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹਾਂ। ਇੱਕ ਦਿਨ ਮੈਨੂੰ ਦਫ਼ਤਰ ਵਿੱਚ ਕੰਮ ਜ਼ਿਆਦਾ ਪੈਣ ਕਰਕੇ ਮੈਂ ਲੇਟ ਹੋ ਗਈ। ਘਰੋਂ ਮਾਂ ਦੇ ਫੋਨ ਆ ਰਹੇ ਸੀ ਕਿ ਪੁੱਤ ਕਦੋਂ ਘਰ ਆਉਣਾ। ਸਮਾਂ ਬਹੁਤ ਖ਼ਰਾਬ ਹੈ। ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਆਈਂ ਤੇ ਮੈਂ ਅੱਗੋਂ ਮਾਂ ਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਕਿ ਮਾਂ ਤੁਹਾਡੀ ਧੀ ਦਲੇਰ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਚਿੰਤਾ ਨਾ ਕਰੋ। ਜਲਦੀ ਹੀ ਤੁਹਾਡਾ ਪੁੱਤ ਤੁਹਾਡੇ ਕੋਲ ਹੋਊ। ਪਰ ਮੈਨੂੰ ਨਹੀਂ ਪਤਾ ਸੀ ਕਿ ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਦੀ ਕਹੀ ਗੱਲ ਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਡਰ ਸੱਚ ਦਾ ਭਿਆਨਕ ਰੂਪ ਧਾਰਨ ਕਰ ਲਵੇਗਾ। ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਮਾਂ ਨੇ ਕੀ ਸੋਚ ਕੇ ਮੈਨੂੰ ਕਿਹਾ।ਸ਼ਾਇਦ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਮਨ ਵਿੱਚ ਬੇਚੈਨੀ ਸੀ ਕਿ ਕੁਝ ਗ਼ਲਤ ਹੋਣਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਾਂ ਨੂੰ ਹੌਂਸਲਾ ਦੇ ਕੇ ਕੰਮ ਖ਼ਤਮ ਕਰਕੇ ਜਦ ਮੈਂ ਬਾਹਰ ਆਟੋ ਲਈ ਖੜੀ ਹੋਈ ਤਾਂ ਕੁਝ ਦਰਿੰਦੇ ਆਏ। ਮੈਂ ਬਹੁਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਖ਼ੁਦ ਨੂੰ ਬਚਾਉਣ ਦੀ, ਕਈ ਆਵਾਜ਼ਾਂ ਮਾਰੀਆਂ, ਕਿ ਸ਼ਾਇਦ ਕੋਈ ਆਏ ਪਰ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਉਸ ਖ਼ੁਦਾ ਨੂੰ ਕੀ ਮਨਜ਼ੂਰ ਸੀ? ਅੱਜ ਉਸ ਮਾਂ ਦੀ ਦਲੇਰ ਧੀ ਇਹਨਾਂ ਦਰਿੰਦਿਆਂ ਅੱਗੇ ਹਾਰ ਗਈ। ਅੱਜ ਕੁਝ ਮਿੰਟਾਂ ਵਿੱਚ ਮੈਂ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਬਣ ਗਈ। ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਦਰਿੰਦਗੀ ਨੂੰ ਤਾਂ ਸ਼ਾਇਦ ਉਹ ਖ਼ੁਦਾ ਵੀ ਮਾਫ਼ ਨਾ ਕਰੇ। ਮੈਂ ਬੇਵੱਸ ਅੱਧ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਮਰ ਚੁੱਕੀ, ਸੜਕ ਤੇ ਪਈ ਹੋਈ ਸੀ। ਗਿਣਤੀ ਦੇ ਸਾਹ ਚੱਲ ਰਹੇ ਸਨ ਤੇ ਮੇਰੀ ਆਵਾਜ਼ ਕਿਸੇ ਤੱਕ ਨਾ ਪਹੁੰਚੀ। ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਕਈ ਕੁੱਤੇ ਵੀ ਬੈਠੇ ਸਨ ਤੇ ਉਹ ਭੌਂਕ ਰਹੇ ਸਨ। ਇੰਝ ਲੱਗਦਾ ਸੀ ਜਿਵੇਂ ਉਹ ਵੀ ਰੱਬ ਨੂੰ ਗੁਹਾਰ ਲਾ ਰਹੇ ਹੋਣ, ਕਿ ਇਹ ਦੇਖ ਰੱਬਾ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਜ਼ਾਲਮ ਬੰਦੇ। ਮੂੰਹ ਸੋਹਣੇ ਤੇ ਮਨ ਗੰਦੇ।ਵਾਹ! ਖੁਦਾ ਇਹ ਨੇ ਤੇਰੇ ਬੰਦੇ? ਉਹਨਾਂ ਕੋਲ ਪਈ ਮੈਂ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਸੋਚਦੀ ਰਹੀ। ਇੰਨਾ ਕੁਝ ਹੋਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਵੀ ਆਸ ਸੀ, ਕਿ ਸ਼ਾਇਦ! ਕੋਈ ਆ ਜਾਵੇ। ਕੁੱਤਾ ਰੋਂਦਾ ਰਿਹਾ। ਰਾਤ ਸਾਰੀ ਬੰਦੇ ਸੌਂ ਗਏ ਸੀ। ਮੈਂ ਵੀ ਅੱਧ ਮਰੀ ਹੋਈ ਵੇਖਦੀ ਰਹੀ। ਸ਼ਾਇਦ! ਆ ਜਾਵੇ ਕੋਈ ਖ਼ੁਦਾ ਬਣ ਕੇ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਈ ਆਸਾਂ 'ਚ ਉਹਨਾਂ ਵਫ਼ਦਾਰ ਜਾਨਵਰਾਂ ਕੋਲ ਮੈਂ ਪਈ ਰਹੀ ਤੇ ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਮੇਰੀ ਉਡੀਕ ਵਿੱਚ ਘਰ ਮੈਨੂੰ ਉਡੀਕਦੀ ਰਹੀ ਕਿ ਕਦ ਉਸਦੀ ਦਲੇਰ ਧੀ ਆਵੇਗੀ ਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਗਲ ਨਾਲ ਲਾਵੇਗੀ।

ਕਮਲਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ
ਬੀ.ਐੱਸ.ਸੀ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਾਇੰਸ, ਦੂਜਾ ਸਮੈਸਟਰ

संस्कृत प्रभाग:

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में
महर्षि दयानन्द सरस्वती विशेषांक

शोभा कपूर
बीए द्वितीय सैमेस्टर
छात्र-सम्पादक

डॉ. कुलदीप सिंह आर्य
प्रभाग-सम्पादक

सम्पादकीय

गुरु विरजानन्द सरस्वती जी द्वारा अपने शिष्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से मांगी गुरु-दक्षिणा

तर्ज - आवाज देकर हमें तुम बुलाओ

आवाज वेदों की फिर से सुना दो।
भारत की नैया किनारे लगा दो॥
भूला हुआ ये जहां अपनी शक्ति,
नहीं कोई करता है ईश्वर की भक्ति,
दिलों में तुम ईश्वर की ज्योति जला दो ॥1॥ भारत
भारत की माता बंधी बेड़ियों से,
गौरों के अन्याय के भेड़ियों से,
आजादी की दुंदुभि को बजा दो ॥2॥ भारत
विदेशों की भाषा ने घेरा है भारत,
भेदों के दानव ने काटा है भारत,
स्वदेशी भाषा का प्याला पिला दो ॥3॥ भारत
चिताओं में पुरूषों की जलती है नारी,
बालक विवाह जैसी कितनी बिमारी,
इन्हें देवियों का सुदर्जा दिला दो ॥4॥ भारत
बालाओं को ना ये देते है शिक्षा,
भूखों को ना आज मिलती है भिक्षा,
कुरीतियों को यहां से मिटा दो ॥5॥ भारत
कटती यहा रोज निर्दोष गायें,
दर्द भरे सबकी नस-नस में आहे,
दया की दयानन्द दरिया बहा दो ॥6॥ भारत
जगत का गुरु आज चेला हुआ है,
उपवन का हर पात मैला हुआ है,
ऋषियों की शिक्षा का दर्शन करा दो ॥7॥ भारत
मूरत की पूजा ये दुनिया है करती,
अन्याय, पापों व जुल्मों से डरती,
सोए हुए इस जगत को जगा दो ॥8॥ भारत
जिगर में यहीं टीस उठती है मेरे,
जला करके "दीपक" मिटाओ अंधेरे,
मेरे दर्दे दिल की दयानन्द दवा दो ॥9॥ भारत

डॉ. कुलदीप सिंह आर्य
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

क्रान्तिकारियों की दृष्टि में महर्षि दयानन्द सरस्वती

1. “स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं, मैंने संसार में केवल उन्हीं को गुरु माना है। वे मेरे धर्म के पिता और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनों की गोदी में पला। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाया”।
   - पंजाब केसरी लाला लाजपतराय
2. “महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे जिन्होंने आधुनिक भारत का (धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक) निर्माण किया। हिन्दू समाज का उद्धार करने में ‘आर्य समाज’ का बहुत बड़ा हाथ है। यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि पंजाब का प्रत्येक नेता आर्यसमाजी है”।
   - नेताजी सुभाष चन्द्र बोस
3. “महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी विचारों से युक्त ‘सत्यार्थ प्रकाश’ ने मेरे जीवन के इतिहास में एक नया पृष्ठ जोड़ दिया”।
   -अमर क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल
4. “महर्षि दयानन्द सरस्वती को मैं अपना मार्गदर्शक गुरु मानता हूँ। मैंने राष्ट्र, जाति तथा समाज की जो सेवा की है उसका श्रेय महर्षि दयानन्द को प्राप्त है। मेरे जीवन के निर्माण में सबसे बड़ा हाथ उस सर्वहितैषी, वेदज्ञ और तेजस्वी युगद्रष्टा का ही है। मुझे उस स्वतन्त्र विचारक का शिष्य होने में अभिमान है”।
   - क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा
5. “महर्षि दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे। स्वतन्त्रता के संग्राम में आर्यसमाजियों का बड़ा हाथ रहा है। महर्षि जी का लिखा अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश हिन्दू जाति की रगों में (क्रान्तिकारी) उष्ण रक्त का संचार करने वाला है। सत्यार्थ प्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मज़हब की शेखी नहीं मार सकता”।
   - स्वातन्त्र्य वीर सावरकर
6. “महर्षि दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल में हम सब भाइयों को पढ़ने का अवसर मिला। हमारे (क्रान्तिकारी) विचारों और मानसिक उन्नति के निर्माण में सबसे बड़ा हाथ आर्य समाज का ही है। हम इसके लिये आर्य समाज के ऋणी हैं”।
   - भगत सिंह (शहीद-ए-आज़म)
7. “मैं अपने को महर्षि दयानन्द का अनुयायी कहलाने में गर्व अनुभव करता हूँ। वे अन्धकार के युग के लिये वैदिक सूर्य थे। उन्होंने असंख्य मनुष्यों को सत्य मार्ग बतलाया। उनके देश तथा देश की जनता पर किये गये उपकार सदैव अमर रहेंगे”।
   - देवता स्वरूप भाई परमानन्द एम.ए.
8. “स्वामी जी ने युवकों के हृदय में त्याग, परोपकार और देशभक्ति की ज्योति जगाई। हिन्दू जाति की जो उन्नति दिखाई दे रही है, उसका श्रेय स्वामी जी को ही प्राप्त है। भारत वर्ष

के इतिहास में स्वामी जी का नाम महान् (देश) सुधारकों की पवित्र श्रेणी में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा"।

- लाला हरदयाल एम.ए (प्रसिद्ध क्रान्तिकारी)

9. "भारत में अंग्रेज़ी प्रभुत्व और पाश्चात्य के प्रवेश के कारण उत्पन्न हो गये खतरे को दूर करने तथा राष्ट्रीयता को सुरक्षित करने में महर्षि दयानन्द का स्थान बहुत ऊँचा है"।
   - श्यामा प्रसाद मुखर्जी

"वह दिव्य ज्ञान वेद का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाला योद्धा

10. और (धर्म तथा देश की स्वतन्त्रता के लिये) मनुष्य व संस्था का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का वीर विजेता था"।
    - योगी अरविन्द घोष

शोभा कपूर

(बीए द्वितीय सैमेस्टर)

छात्र संपादक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अद्भुत साहस, निर्भयता और क्षमाशीलत की कुछ घटनाएं

1-1867 फर्रुखाबाद में ठाकुरदास व अन्य लोगों ने कुछ गुण्डों को स्वामी जी पर आक्रमण करने के लिए भेजा। सेठ जगन्नाथ प्रसाद ने स्वामी जी से किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाने का निवेदन किया। स्वामी जी ने कहा कि मेरे जीवन पर कितने प्राणघातक आक्रमण हुए हैं पर मैं यहाँ से वहां निशस्त्र घूमता हूँ, आप मेरी रक्षा कब तक करेंगे?

2-1869 कानपुर में कुछ लोगों ने स्वामीजी पर आक्रमण किया, स्वामीजी ने एक व्यक्ति की लाठी छीन ली और उसे गंगा में धक्का दे दिया और पास के पेड़ से शाखा तोड़कर कुछ व्यक्तियों को धूल चटा दी, और बोले "तुम लोग मुझे निरा साधु ही मत समझना"।

3- फर्रुखाबाद में 23 मई 1876 को रेवेरेन्ड लूक्स ने स्वामीजी से कहा कि यदि आपको तोप के मुंह पर बांधकर यह कहा जाये कि आप मूर्ति के सामने नतमस्तक हो जाएँ, अन्यथा आपको उड़ा दिया जायेगा तो आपका उत्तर क्या होगा? स्वामीजी ने एकदम कहा कि मैं कहूँगा "उड़ा दो।"

4 -जब भी स्वामीजी को शारीरिक या आर्थिक हानि पहुँचाने का प्रयास किया गया तो उन्होंने अपराधी को सदैव क्षमा कर दिया। जैसे उन्हें कई बार विष देकर प्राणघातक प्रहार किये गए।1870

में अनूपशहर की घटना है, एक ब्राह्मण ने उन्हें पान में विष दे दिया। अपराधी पकड़ा गया पर स्वामीजी ने यह कहते हुए उसे छुड़ा दिया कि मैं संसार को बंधनमुक्त कराने आया हूँ, बंधवाने नही।

5-1877 में अमृतसर में अपने अध्यापक के कहने पर मिठाई के लालच में बच्चों ने स्वामीजी ने पत्थर फेंके। पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया।स्वामीजी ने अध्यापक को क्षमा कर दिया और बच्चों में मिठाई बाँट दी।

6- ठाकुर कर्ण सिंह ने उनपर तलवार से वार किया, स्वामीजी ने उसकी तलवार को पकड़कर तोड़ डाली, लोगों ने स्वामीजी पर दबाव बनाया कि वे कर्ण सिंह के विरुद्ध पुलिस में शिकायत करें पर स्वामीजी ने ऐसा करने साफ़ मना कर दिया।

7-स्वामी जी के हृदय में भारत के निर्धनों के लिये अपार दया थी। एक दिन वे व्याख्यान दे रहे थे। उसी समय समाचार मिला कि भरतपुरियों चमारों के गंज में आग लग गई है और उनके घासपूंस के मकान जल कर राख हो गये हैं। यह सुनते ही उनके दयालु हृदय में दया उमड़ आई। उनके प्राणों की सहायता के लिये उन्होंने अपने पास से कुछ द्रव्य दिया और दूसरे लोगों को भी इसके लिये प्रबल प्रेरणा की। उनके उपदेश से तत्काल पर्याप्त रूपया एकत्र हो गया ।

8-स्वामी जी का नाम दया हैं , इससे भी बड़े ये दयालु थे। स्वामी जी के जीवन में अनेक घटनाएँ हमें सुनने को मिलती हैं जिनसे यह सिद्ध होता हैं कि स्वामी जी कितने बड़े दयालु थे। बुलंदशहर के कर्णवास में जब ठाकुर कर्ण सिंह ने तलवार से जब स्वामी जी पर आक्रमण किया तब स्वामी जी ने उसका हाथ पकड़ कर तलवार छीन ली और उससे कहा कि क्षत्रिय कि तलवार अगर म्यान से निकलती हैं तो शत्रु का वध कर ही वापिस लौटती हैं। स्वामी जी के शिष्यों ने उन्हें स्थानीय दरोगा से इस घटना कि शिकायत करने को कहा परन्तु स्वामी जी ने दयालुता दिखाते हुए ऐसा करने से मना कर दिया।

9- जीवन जी गोसाईं ने बलदेव सिंह के द्वारा स्वामी जी को विष दिलाने का उपक्रम किया परन्तु उसके विरुद्ध भी स्वामीजी महाराज ने कोई कार्यवाही नहीं करी। अनूपशहर में एक व्यक्ति ने पान में विष दे दिया था। स्वामी जी ने विष को यौगिक क्रिया से निकाल दिया परन्तु उस व्यक्ति को मना कर दिया। जब उस शहर के तहसीलदार सैय्यद मुहम्मद जो स्वामी जी का भक्त था ने उस व्यक्ति को हवालात में बंद कर दिया।जैसे ही स्वामी जी को इस घटना के विषय में पता चला तो स्वामी जी ने उसे हवालात से मुक्त करा दिया और कहा कि “मैं किसी व्यक्ति को कैद कराने नहीं अपितु मुक्त करवाने आया हूँ।“धन्य हैं दयालु देव दयानंद।

10-स्वामीजी तुरन्तबुद्धि थे, उनमें हास्य की प्रवृत्ति भी बहुत थी और वे अपनी इस शैली द्वारा भी समाज में सुधार का ही प्रयास करते थे। एक बार स्वामीजी अन्य व्यक्तियों के साथ फर्श पर बैठे थे, एक पण्डित आया और ऊँचे चबूतरे पर बैठ गया। स्वामीजी से वार्तालाप करते हुए भी नीचे नही उतरा तो बाकी लोगों उसके इस व्यवहार पर आपत्ति जताई। तो स्वामीजी ने कहा "उसे वहीं बैठने दो। यदि उच्चासन विद्वता का प्रतीक है तो पेड़ पर बैठा कौवा पण्डित से अधिक विद्वान माना जायेगा।

महक

(बीए चतुर्थ सैमेस्टर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का व्यक्तित्व

महर्षि दयानन्द अपने समकालीन सभी व्यक्तियों की अपेक्षा शारीरिक, बौद्धिक एवं अध्यात्मिक दृष्टि से सर्वोच्च शिखर पर थे । वे शारीरिक एवं बौद्धिक दोनों दृष्टियों से विशालकाय थे और अपने समकालीन लोगों में सर्वश्रेष्ठ थे। भारत में रहने वाले सभी बुद्धिजीवी एवं विद्वान उनके सामने हर प्रकार से बौने थे। कारण की सुदृढ़ माता-पिता के घर जन्म लेकर वे जीवनभर ब्रह्मचारी रहे। वे पारिवारिक एवं सांसारिक चिंताओं से सदा मुक्त रहे।उनके ब्रह्मचर्य का प्रभाव ही था कि हिमालय की भयंकर ठण्ड हो अथवा राजस्थान की तपती रेत उनके शरीर पर बहुत कम वस्त्र होते थे पर उन्हें कभी कोई कठिनाई नही हुई ।6 फीट 9 इंच लम्बे, लोहे जैसा सुदृढ़ शरीर, बलवानों जैसी शक्ति के स्वामी, चट्टान जैसी दृढ़ इच्छाशक्ति वाले, केवल एक लंगोटधारी पहनने वाले स्वामीजी ने क्रोधित भीड़,किराये के गुण्डों, मतान्ध लोगों तथा कातिलों का सामना किया और कभी विचलित नही हुए|

महर्षि दयानन्द की शारीरिक क्षमता से सम्बंधित कुछ घटनाये:-

👉1- आगरा में 1863-1865 दो वर्ष की अवधी में प्रायः आगरा से मथुरा की 39 मील की दूरी मात्र ३ घंटे में पैदल तय कर लिया करते थे।

👉 2- 1867 में चासी बुलंदशहर के नामी पहलवान ओंकारनाथ बोहरा ने स्वामीजी के पैर दबाने की प्रार्थना की। उसने पाया कि स्वामीजी के पैर लोहे की तरह मजबूत थे।

👉3- 1869 में कुछ पहलवान फर्रुखाबाद में स्वामीजी के पास आये और बोले कि यदि आप व्यायाम करें तो बहुत शक्तिशाली हो जायेंगे। स्वामीजी ने अपनी भीगी लंगोटी उनको देकर एक बूँद पानी निकाल देने को बोला पर उनमें से कोई सफल न हुआ, फिर स्वामीजी ने उसी लंगोटी को निचोड़ा तो पानी टपकने लगा।

👉4-1877 जालंधर में सरदार विक्रमसिंह ने स्वामीजी से कहा कि हमने शास्त्रों में पढ़ा है कि ब्रह्मचर्य से महान् शक्ति प्राप्त होती है, हम एक ब्रह्मचारी की शक्ति देखना चाहते हैं| स्वामीजी तब कुछ नही बोले| विक्रम सिंह जी उठ खड़े हुए और बग्घी में बैठ गए जिसे दो शक्तिशाली घोड़े

खींच रहे थे। साईस ने लगाम खींचा, घोड़ों को चाबुक मारे पर वे हिले तक नही। वो चाबुक मारता रहा, लगाम खींचता रहा पर कोई प्रभाव न हुआ। विक्रम सिंह ने पीछे देखा तो आश्चर्यचकित हो गए, चार पहियों की बग्घी का एक पहिया स्वामीजी ने पकड़ा हुआ था । स्वामीजी मुस्कुराये और विक्रम सिंह ने पूछा कि क्या अब आप एक ब्रह्मचारी की शक्ति से आश्वस्त हैं?

👉5- स्वामीजी के जीवनी लेखक समाज सुधारक दीवान हरविलासजी सारदा ने भी स्वामीजी के बल की एक घटना अपनी आँखों से स्वयं देखी थी| अजमेर में सेठ गजमल के नोहरे में स्वामीजी के प्रवचनों हो रहे थे। एक दिन प्रवचन के बाद 20-25 व्यक्तियों को छोड़कर सभी श्रोता चले गए। स्वामीजी भी उठे। जब सभी मुख्य द्वार पर पहुंचे तो देखा कि भारी-भरकम मुख्य द्वार बंद है। कुछ लोग आगे बढ़े और स्वामीजी को निकालने के लिए द्वार खोलने लगे। लगभग 12-15 व्यक्तियों ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी पर दरवाजा हिला तक नही। दीवानजी के पिताजी(दीवानजी सदैव पिता के साथ प्रवचन सुनने जाया करते थे) व अन्य 4-5 लोग स्वामीजी के पास खड़े होकर अन्य लोगों के प्रयास को देख रहे थे। जब द्वार ने खुलने से मना कर दिया तब स्वामीजी ने उनको हटने के लिए बोला और एक पैर लकड़ी के उस द्वार पर जमाया और एक ही झटके में द्वार खोल दिया। उनकी शक्ति देखकर सभी आश्चर्य और श्रद्धा से भर गए।

रजवंतकौर

(बीए चतुर्थ सैमेस्टर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कौन थे ?

एक ऐसे ब्रह्मास्त्र थे जिन्हे कोई भी पंडित,पादरी,मोलवी, अघंर, ओझा, तान्त्रिक हरा नहीं पाया और न ही उन पर अपना कोई मंत्र तंत्र या किसी भी प्रकार का कोई प्रभाव छोड़ पाया एक ऐसा वेद का ज्ञाता जिसने सम्पूर्ण भारत वर्ष में ही नहीं अपितु पूरी दुनियां में वेद का डंका बजाया था।

एक ऐसा ईश्वर भक्त, जिसने ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अपना घर त्याग ही कर दिया था।

एक ऐसा महान् व्यक्ति जिसने लाखों की संपत्ति को ठोकर मार दी पर सत्य के राह से विचलित नहीं हुआ।

एक ऐसा दानी जिसने अपने गुरु दक्षिणा मे अपना सम्पूर्ण जीवन ही दान दे दिया था।

एक ऐसा क्रान्तिकारी जिसने सबसे पहले आजादी का बिगुल फूकँ न जाने कितने लोगो के अन्दर क्रान्ति की भावना को पोषित किया।

एक ऐसा स्वदेश भक्त जिसने सबसे पहले स्वदेशीय राज्य को सर्वोपरी कहाँ और अंग्रेजो के सामने ही उनका राज्य समस्त विश्वसे नष्ट होने की बात कही थी ।

एक ऐसा स्वदेशी रक्षक जिसने सबसे पहले स्वदेशीय राज्य को सर्वोपरी कहा था ।

एक ऐसा गौरक्षक व गौ प्रेमी जिसने सबसे पहले गौ रक्षा हेतू गौरक्षणी सभा बनाई व इसके नियमो का प्रतिपादन किया।

एक ऐसा निडर व्यक्ति जिसने निर्भीक होकर समाज की कुप्रथाओ, कुरितीयो पर प्रहार किया था।
एक ऐसा व्यक्ति जिसने कभी भी सत्य से समझौता नही किया था।
एक ऐसा धर्म धुरंधर जो केवल वेद का ही नहीं अपितु कुरान, पुराण, बाईबिल, त्रिपिटिक, व अन्य मजहबी व मंत मतान्नतरो वालो के ग्रन्थो का ज्ञान था।
एक ऐसा सत्य का पुजारी का जो अपनी हर बात डंके की चोट पर कहता था।
एक ऐसा धर्म धुरन्धर जिसने सभी पाखंडो का खंडन कर सत्य का राह दिखाया था।
एक ऐसा धर्म धुरंधर जिसने इस देश का धर्मान्तरण (ईसाईयत व ईस्लामीकरण) होने के केवल रोका ही नहीं वरन् शुद्धि व घर वापसी द्वारा देश का धर्मान्तरण होने से रोका
एक ऐसा सत्यनिष्ठ जिसे कोई किसी प्रकार के लोभ व लालच विचलित नहीं कर सका।
एक ऐसा संन्यासी जो पत्थरों की मार से विचलित न हुआ वरन उसके संकल्प और भी मजबूत होते गये।
एक ऐसा ऋषि जिसने पुनः यज्ञ , योग व पुरानत ऋषि महर्षियो के ज्ञान को पुनः स्थापित कराया था।
एक ऐसा ज्ञानी जिसने ऋषि कृत पाणिनि, जैमिनि, ब्रह्मा, चरक , सुश्रुत आदि ग्रन्थों का उद्धार किया था।
एक ऐसा ऋषि जिसने ऋषियों के नाम से बनाये सभी ग्रन्थों का भांडा फोड़ा व हमारे ऋषियों के नाम पर लगे दाग को मिटाया था।
एक ऐसा समाज सुधारक जिसने सबसे पहले सती प्रथा, बाल विवाह, जैसे कुप्रथाओ पर प्रहार कर समस्त भारत मे नारी की प्रतिष्ठा को समाज मे पुनः स्थापित कराया था।
एक ऐसा समाज सुधारक जिसने माँसाहार व शाकाँहार में भेद स्पष्ट कर समाज को पुनः शाँकाहार के रास्ते पर चलाया था।
एक ऐसा साहसी व्यक्ति जिसका साहस अपमान, तिरस्कार से कम नहीं हुआ बल्कि और भी दृढ़ हुआ था।
एक ऐसा समाज सुधारक जिसने केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु विश्व के कल्याण की भावना से निस्वार्थ काम किया था।
धन्य है तुझे ऋषिवर देव दयानंद ! तेरे उपकार न जाने कितने हैं ,, लाखों पत्थर खा कर के भी, लोगों द्वारा दिए गए कई बार ज़हर के बावजूद भी तू एक बार भी अपने पथ से नहीं डगमगाया।

अंजलि
(बीए षष्ठम सैमेस्टर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का गौ अर्थशास्त्र

सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर ने इस सृष्टि में जो-जो पदार्थ बनाये हैं, वे निष्प्रयोजन नहीं, किन्तु एक-एक वस्तु अनेक-अनेक प्रयोजन के लिये रची है। इसलिये उन से वे ही प्रयोजन लेना न्याय अन्यथा अन्याय है। देखिये जिसलिये यह नेत्र बनाया है, इससे वही कार्य लेना सब को उचित होता है, न कि जिससे पूर्ण प्रयोजन न लेकर बीच में ही वह नष्ट कर दिया जावे। क्या जिन-जिन प्रयोजनों के लिये परमात्मा ने जो-जो पदार्थ बनाये हैं, उन-उन से वे-वे प्रयोजन न लेकर उनको प्रथम ही विनष्ट कर देना सत्पुरुषों के विचार में बुरा कर्म नहीं है? पक्षपात छोड़ कर देखिये, गाय आदि पशु और कृषि आदि कर्मों से सब संसार को असंख्य सुख होते हैं वा नहीं? जैसे दो और दो चार, वैसे ही सत्यविद्या से जो-जो विषय जाने जाते वे अन्यथा कभी नहीं हो सकते।

जो एक गाय न्यून से न्यून 2 किलो दूध देती हो और दूसरी 20 किलो, तो प्रत्येक गाय के 11 किलो दूध होने में कोई शंका नहीं। इस हिसाब से एक महीने में 330 किलो दूध होता है। एक गाय कम से कम 6 महीने, और दूसरी अधिक से अधिक 18 महीने तक दूध देती है, तो दोनों का मध्यभाग प्रत्येक गाय के दूध देने में 12 महीने होते हैं। इस हिसाब से 12 महीनों का दूध 3960 किलो होता है। इतने दूध को औटा कर प्रति 60 ग्राम चावल और 90 ग्राम चीनी डाल कर खीर बना खावें, तो प्रत्येक पुरुष के लिये 2 किलो दूध की खीर पुष्कल होती है। क्योंकि यह भी एक मध्यभाग की गिनती है, अर्थात् कोई 2 किलो दूध की खीर से अधिक खा गया और कोई न्यून, इस हिसाब से एक प्रसूता गाय के दूध से 1980 (एक हजार नौ सौ अस्सी) मनुष्य एक वार तृप्त होते हैं। गाय न्यून से न्यू 8 और अधिक से अधिक 18 बार ब्याती है, इसका मध्यभाग 13 बार आया, तो 25740 (पच्चीस हजार सात सौ चालीस) मनुष्य एक गाय के जन्म भर के दूधमात्र से एक बार तृप्त हो सकते हैं। (अब 100 रुपए प्रति व्यक्ति तृप्ति लगाया जाए तो 25740×100=2574000 वर्तमान में)

इस गाय के एक पीढ़ी में 6 बछियां और 7 बछड़े हुये, इनमें 1-1 मृत्यु रोगादि से होना सम्भव है, तो भी 12 रहे। उन 6 बछियाओं के दूधमात्र से उक्त प्रकार 154440 (एक लाख चौवन हजार चार सौ चालीस) मनुष्यों का पालन हो सकता है अब रहे 6 बैल, उनमें एक जोड़ी से दोनों साख में 200 (दो सौ मन) अन्न उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार तीन जोड़ी 600 (छः सौ मन) अन्न उत्पन्न कर सकती हैं और उनके कार्य का मध्यभाग 8 है। इस हिसाब से 4800 (चार हजार आठ सौ मन) अन्न उत्पन्न करने की शक्ति एक जन्म में तीनों जोड़ी की।

4800 मन अन्न से प्रत्येक मनुष्य का 750 ग्राम (तीन पाव) अन्न भोजन में गिनें, तो 256000 (दो लाख छप्पन हजार) मनुष्यों का एक बार भोजन होता है। दूध और अन्न को मिला कर देखने से निश्चय है कि 410440 (चार लाख दश हजार चार सौ चालीस) मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। अब 6 गाय की पीढ़ी परपीढ़ियों का हिसाब लगाकर देखा जावे तो असंख्य

मनुष्यों का पालन हो सकता है। और इनके मास से अनुमान है कि केवल 80 (अस्सी) मांसाहारी मनुष्य एक वार तृप्त हो सकते हैं। देखो, तुच्छ लाभ के लिये लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं?

यद्यपि गाय के दूध से भैंस का दूध कुछ अधिक और बैलों से भैंसा कुछ न्यून लाभ पहुँचाता है, तथापि गाय के दूध और बैल के उपयोग से मनुष्यों को सुखों का लाभ होता है उतना भैसियों के दूध और भैसों से नहीं। क्योंकि जितने आरोग्यकारक और बुद्धिवर्द्धक आदि गुण गाय के दूध और बैलों में होते हैं, उतने भैंस के दूध और भैंस आदि में नहीं हो सकते। इसलिये आर्यों ने गाय सर्वोत्तम मानी है।

और ऊंटनी का गाय और भैंस के दूध से भी अधिक होता है, तो भी इन का दूध गाय के सदृश नहीं। ऊंट और ऊंटनी के गुण भार उठाकर शीघ्र पहुंचाने के लिये प्रशंसनीय हैं।

अब एक बकरी कम से कम 1 किलो और अधिक से अधिक 6 किलो दूध देती है, इसका मध्यभाग प्रत्येक बकरी से 3 किलो दूध होता है। और न्यून से न्यून 3 महीने और अधिक से अधिक 5 महीने तक दूध देती है, तो प्रत्येक बकरी के दूध देने में मध्यभाग 4 महीने हुये। वह एक मास में 90 किलो और 4 मास में 360 किलो (नव मन) होता है। पूर्वोक्त प्रकारानुसार इस दूध से 180 (एक सौ अस्सी) मनुष्यों की तृप्ति होती है। और एक बकरी एक वर्ष में दो बार ब्याती है। इस हिसाब से एक वर्ष में एक बकरी के दूध के एक वार भोजन से 360 (तीन सौ साठ) मनुष्यों की तृप्ति होती है। कोई बकरी न्यून से न्यू 4 वर्ष और अधिक से अधिक 8 वर्ष तक ब्याती है, इसका मध्यभाग 6 वर्ष हुआ, तो जन्मभर के दूध से 2160 (दो हजार एक सौ साठ) मनुष्यों का एक वार के भोजन से पालन होता है।

अब उसके बच्चा बच्ची मध्यभाग से 24 चौबीस हुए, क्योंकि कोई न्यून से न्यून और कोई अधिक से अधिक 3 बच्चों से ब्याती है। उनमें से दो का अल्पमृत्यु समझो, रहे 22 बाईस, उनमें से 12 बकरियों के दूध से 25920 (पच्चीस हजार नव सौ बीस) मनुष्यों का एक दिन पालन होता है। उसकी पीढ़ी परपीढ़ी के हिसाब लगाने से असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है। और बकरे भी बोझ उठाने आदि प्रयोजनों में आते हैं, और बकरा बकरी और भेड़ भेड़ी के ऊन के वस्त्रों से मनुष्यों को बड़े-बड़े सुख लाभ होते हैं। यद्यपि भेड़ी का दूध बकरी के दूध से कुछ कम होता है, तथापि बकरी के दूध से उसके दूध में बल और घृत अधिक होता है। इसी प्रकार अन्य दूध देनेवाले पशुओं के दूध से भी अनेक प्रकार के सुख लाभ होते हैं।

जैसे ऊंट ऊंटनी से लाभ होते हैं, वैसे ही घोड़े घोड़ी और हाथी आदि से अधिक कार्य सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार सूअर, कुत्ता, मुर्गा और मोर आदि पक्षियों से भी अनेक उपकार होते हैं। जो पुरुष हरिण और सिंह आदि पशु और मोर आदि पक्षियों से भी उपकार लेना चाहें तो ले सकते हैं, वर्त्तमान में परमोपकारक गो की रक्षा में मुख्य तात्पर्य है।

देखिये, जो पशु निःसार घास तृण पत्ते फल फूल आदि खावें और सार दूध आदि अमृतरूपी रत्न देवें, हल गाड़ी में चल के अनेकविध अन्न आदि उत्पन्न कर सबके बुद्धि बल पराक्रम को बढ़ा के

नीरोगता करे, पुत्र पुत्री और मित्र आदि के समान पुरुषों के साथ विश्वास और प्रेम करें, जहां बांधे वहां बन्धे रहें, जिधर चलावें उधर चलें, जहां से हटावें वहां से हट जावें, देखने और बुलाने पर समीप चले आवें, जब कभी व्याघ्रादि पशु वा मारनेवाले को देखें अपनी रक्षा के लिये पालन करने वाले के समीप दौड़ कर आवें कि यह हमारी रक्षा करेगा।

रौनक शर्मा
बीए द्वितीय सैमेस्टर

सत्यार्थ प्रकाश के 150 वीं जयंती पर विशेष
सत्यार्थ प्रकाश के सभी समुल्लासों का संक्षिप्त विवरण

हमने सत्यार्थ प्रकाश का नाम अनेकों बार सुना है और हमारे बहुत से हिन्दू युवाओं और युवतियों को इसके बारे में जानने की जिज्ञासा सदा बनी रहती है, इसलिये अब सत्यार्थ प्रकाश की विषय सूची को सबके लिये खोलकर लिखा जाता है :-

सत्यार्थ प्रकाश में कुल 14 समुल्लास (अध्याय) हैं। जिनमें से पहले 10 तो वेद आधारित वैदिक धर्म के मंडन पर लिखे हैं और शेष ४ अवैदिक मत मतांतरों के खंडन पर लिखे गए हैं।

ये 14 समुल्लास इस प्रकार हैं :-

1. प्रथम समुल्लास :----

इस पूरे ब्रह्माण्ड में ईश्वर से सर्वश्रेष्ठ और कोई नहीं है ईश्वर ने ही मनुष्यों की हर प्रकार की उन्नति के लिये वेद में पूरे ब्रह्माण्ड का ज्ञान विज्ञान दिया है। उसी ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम 'ओ३म्' है और वेद में इसी एक ईश्वर के बहुत सारे नाम हैं जैसे कि रुद्र, मित्र, शिव, विष्णु, प्रजापति, इन्द्र, सूर्य, वरुण, सोम, पर्वत, लक्ष्मी, सरस्वति आदि । तो इस समुल्लास में ऋषि दयानन्द ने ऐसे मुख्य अत्यन्त प्रसिद्ध १०० नामों की व्याख्या की है । जिससे कि ईश्वर के स्वरूप के बारे में सबकी शंकाओं का समाधान हो जाए ।

2. द्वितीय समुल्लास :---

इस समुल्लास में संतानों की शिक्षा के बारे में लिखा गया है क्योंकि बिना शीक्षित हुए मनुष्य पशु के समान होता है । हम मनुष्य में तो स्वाभाविक व्यवहार भी बिना शिक्षा के नहीं आता है । इसी कारण बिना विद्या के मनुष्य अनेकों छल-कपट भूत पिशाच, चुड़ैल आदि में मिथ्या विश्वास और उनको दूर करने का ढोंग करने वाले पाखंडियों के जाल में फँसकर अपने धन, सम्मान, ऊर्जा, समय आदि नष्ट करते हैं । तभी ऋषि ने ये लिखा है कि जो मनुष्य अपनी संतानों को सुशीक्षित नहीं करते वे अपनी संतानो के परम शत्रु हैं ।

3 . तृतीय समुल्लास :---

इस समुल्लास में ऋषि ने पठन पाठन की व्यवस्था पर प्रकाश डाला है । कि पढ़ना लिखना किस प्रकार का होना चाहिए । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, प्रमाणों के आधार पर परीक्षा करके सत्य और असत्य को जानना, पढ़ने योग्य वेद और आर्ष ग्रंथ, त्याग करने योग्य शुद्र ग्रंथ, ब्रह्मचर्य की अवधी, गायत्री महामंत्र के अर्थ सहित जाप की विधी, प्राणायाम के चार प्रकार, आचमन सहित संध्योपासना, यज्ञ अग्निहोत्र समेत पंच महायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ) । इन विषयों पर प्रकाश डाला है जो कि मनुष्य को सुशीक्षित करने हेतु हैं । यही वो शिक्षा है जिससे कि हमारे आर्यावर्त देश में राम, कृष्ण, जैमिनी, अहिल्या, कणाद, कपिल, गौतम, भरद्वाज, गार्ग्य, आग्रगायण, सीता, सावित्री, रुक्मिणी, पतंजली, पाणीनि आदि उत्पन्न हुए हैं। और इसी गुरुकुलीय शिक्षा और आर्ष पाठ्यक्रम को लागू करके वैसे ही सभ्य मनुष्य उत्पन्न करने के उद्देश्य से ये समुल्लास लिखा गया है।

4. चतुर्थ समुल्लास :----

जैसा कि कहा गया है कि चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम सर्वोत्तम माना गया है। क्योंकि ये आश्रम ही बाकी के तीनों आश्रमों (ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास) का पोषण करता है। इसलिए इसमें विवाह और उसके ८ प्रकारों पर प्रकाश डाला गया है । विवाह किन किन स्त्री पुरुषों का होना चाहिए ? किनका विवाह उत्तम होता है ? किन किन को विवाह करने का अधिकार नहीं है ? उत्तम गुणों वाली संतानें कैसे उत्पन्न हो सकती हैं ? विवाह करने में किन गुणों और दोषों को विचारना चाहिए ? विधवा विवाह । नियोग विषय आदि पर महर्षि ने वेदमंत्रों और अन्य शास्त्रीय प्रमाणों से उत्तम गृहस्थी की रचना कैसे की जाए ? इन सब विषयों पर प्रकाश डाला है।

5. पञ्चम समुल्लास :----

हमारी संस्कृति के आधार हमारे चार वर्णाश्रम हैं । हमारे जीवन की तीन चौथाई भाग वन में बीतता था (ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, सन्यास) । जिनमें अंतिम दो यानी कि वानप्रस्थ और सन्यास जिनमें प्रत्येक मनुष्य को वन में रहकर समाज के हित में कार्य करना होता है । जब तक वानप्रस्थ और सन्यास की परम्परा हमारे देश में रही तबतक हमारे देश को तपस्वी वेद प्रचारक, गुरु शिक्षक आदि प्राप्त होते रहे लेकिन जब से ये सब बंद हुआ । तब से बुड्ढे होकर रिटायर होकर घर में व्यर्थ बैठ पोते पोतियों के मोह में बेटे बहु के ताने सुनकर पारिवारिक माहौल खराब किया और समाज को भी कोई लाभ न हुआ । इसी कारण राष्ट्र दुर्दशा को प्राप्त हुआ । इस समुल्लास में किन किन लोगों को वानप्रस्थी या सन्यासी होना चाहिए ? और उनके क्या क्या कर्तव्य होने चाहिएँ ? इस पर लिखा गया है ।

6. षष्ठ समुल्लास :----

इसमें ऋषि ने मनुस्मृति आधारित राजतंत्र विषय पर लिखा है । क्योंकि जबतक हमारे देश में ऋषियों ने राजतंत्र रखा तबतक हमारा देश पूरे विश्व में चक्रवर्ती शासन करने में अत्यन्त समर्थ था और पूरी दुनिया को एकजुट करते हुए वैदिक धर्म के अधीन रखकर सुख और शांती बनाए रक्खी । पूरे विश्व में कभी आर्यों का चक्रवर्ती शासन था जब से मनु का राजतंत्र लुप्त हुआ तब से आर्य शासन खंडित होता गया और पूरी पृथिवी पर से वैदिक धर्म घटता गया । क्योंकि मनुस्मृति में राजा के कर्तव्य, उसकी दिनचर्या, शिक्षा, प्रजा से संवाद, दान, वर्णव्यवस्था की रक्षा और राज्य में योजनाएँ आदि लागू करवाना आदि लिखा है । इसी के प्रमाण मनुस्मृति से देकर

ऋषि दयानंद ने मनु के राजतंत्र को सुदृढ़ करके देश को वही आर्यावर्त बनाने के संकल्प से लिखा था । क्योंकि उनका मानना था कि राजा के अधीन प्रजा और प्रजा के अधीन राजा रहें तो शासन निरंकुश नहीं होता । महर्षि चाहते थे कि हिन्दू के हाथ से खोया हुआ उसका चक्रवर्ती शासन उसे पुनः प्राप्त हो जाए और पृथिवी पर पनप रहे अवैदिक इस्लाम- ईसाई मत आदि का दमन करके उनका स्मूल नाश करके केवल एकछत्र वैदिक राष्ट्र ही पूरी पृथिवी पर लागू किया जाए ।

7. सप्तम समुल्लास :--------

इस समुल्लास में ऋषि दयानन्द जी ने वेद और ईश्वर विषय पर लिखा है । क्योंकि आदिकाल में सृष्टि की रचना करके ईश्वर ने हम मनुष्यों की मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक, सामाजिक हर प्रकार की उन्नति करने के लिये वेद का ज्ञान चार उत्कृष्ट ऋषियों के द्वारा दिया जिन्होंने आगे ब्रह्मा ऋषि और फिर आगे गुरु शिष्य परम्परा में ये ज्ञान मनुष्य जाति में फैलता गया । इस समुल्लास में ऋषि दयानंद जी ने अनेकों वेदमंत्र और कई दर्शन शास्त्रों के प्रमाण देकर ईश्वर के स्वरूप को सिद्ध किया है तांकि किसी को ईश्वर के विषय में कोई शंका न रहे । और वेद जो कि ईश्वर का नित्य ज्ञान है उसकी नित्यता के बारे विचार किया है ।

8. अष्टम समुल्लास :----

यह आठवाँ समुल्लास सृष्टि के त्रैतवाद विषय पर लिखा गया है । क्योंकि यह सृष्टि तीन कारणों (परमात्मा, जीव, प्रकृति) से उत्पन्न हुई है । जिस कारण इनको क्रम से (निमित्त कारण, साधारण कारण, उपादान कारण) भी कहा गया है । इस त्रैतवाद विषय को सरल ढंग से समझाने के लिये ऋषि ने इसमें वेदमंत्रों के प्रमाण दिए हैं क्योंकि ईश्वर की रचना को ईश्वरीय ज्ञान वेद ही समझाने में समर्थ है और उसके आधार पर ऋषियों द्वारा लिखे तर्क शास्त्र भी इस रचना को समझने में सहायक होते हैं ।

9. नवम समुल्लास :-----

इसमें ऋषि ने बँधन और मुक्ति अर्थात् मोक्ष के विषय में लिखा है । तांकि मनुष्य पातंजल योगशास्त्र के अनुसार ईश्वरोपासना करके अपने अंदर का मिथ्याज्ञान नष्ट कर तत्वज्ञान प्राप्त कर ले । इसी को समझाने के लिये ऋषि ने ब्रह्म तत्व, उसके ज्ञान, बल, सामर्थ्य आदि को समझाते हुए बँधन के कारण और उसके नाश करने की विधी को संक्षेप में इस समुल्लास में लिखा है ।

10. दशम समुल्लास :----

कोई भी मनुष्य समाज में उत्तम व्यवहार किए बिना सुख को प्राप्त नहीं हो सकता। कम पढ़ा लिखा मनुष्य भी उचित व्यवहार करके समाज में सम्मान का पात्र बन जाता है तो दूसरी ओर अधिक पढ़ा लिखा भी अनुचित व्यवहार करके अपमानित और तिरस्कृत होता है। इसी लिये ऋषि ने मनुष्यों को उत्तम व्यवहार और भक्ष्य एवं अभक्ष्य पदार्थों के विषय में शिक्षा देते हुए ये समुल्लास लिखा है ।

11. एकादश समुल्लास :----

महाभारत काल से पहले तक पूरे विश्व में केवल वैदिक धर्म ही फैला हुआ था और हमारा देश आर्यावर्त पूरी दुनिया का केन्द्र था । हमारे आर्य राजाओं का चक्रवर्ती शासन था पूरी दुनिया के राजा हमारे देश को कर देते थे । हमारे वेद प्रचारक ऋषिमुनि पूरे विश्व में वेद प्रचार को जाते

थे। महाभारत के भीष्ण युद्ध में हमारे प्रचारक मारे गए और पूरा विश्व वेद की शिक्षा से रहित हो गया हमारा देश आर्यावर्त भी इससे अछूता न रहा । वेद शिक्षा से विरुद्ध कई कपोल्कल्पित मत पंथ आर्यावर्त में चल पड़े और इन मत मतांतरों की कई शाखाएँ और प्रतिशाखाएँ फूट निकलीं। जिसने कि हमारे आर्यावर्त में मनुष्यो के बीच में कई लकीरें खींच डालीं, वर्णव्यवस्था विकृत होकर जातिवाद में बदल गई । ऐसे ही कितने गुरु, अवतार, बाबा, संत आदि अपने आधार पर कई मत पंथ बनाते गए और लोगों को वेद की शिक्षा से कोसों दूर ले गए । इस समुल्लास में ऋषि दयानंद ने इन्हीं सब पंथों आदि की अवैदिक मान्यताओं का खंडन करके वेद मत का मंडन किया है । क्योंकि इन पंथों ने लोगों को ईश्वर के दर्शन करवाने का ठेका ले लिया था और हर पंथ मात्र अपने अनुयायीयों की संख्या बढ़ाने में ही लगा था । इसी धार्मिक फूट के कारण हमारा देश 3000 वर्षों में बहुत निर्बल हुआ और 1200 वर्षों तक विदेशियों से पराधीन होकर जूझता रहा । इसी फूट की समीक्षा करके मात्र एक वेद स्थापित करने के उद्देश्य से ऋषि ने ये समुल्लास लिखा ।

12. द्वादश समुल्लास :----

ये समुल्लास भारत में पनपे वेद विरोधी नास्तिक बौद्धमत, जैनमत, चारवाक आदि के खंडन में है क्योंकि आर्यावर्त में बाकी जितने मत मंतातर पैदा हुए उनमें से अधिकांश तो ईश्वर और वेद को आंशिक रूप में किसी न किसी रूप में मानते थे परन्तु ये जैन, बौद्ध मत तो नितान्त नास्तिक और उग्र वेद विरोधी मत थे। इसी कारण बहुत से बौद्धों ने ब्राह्मणों और क्षत्रियों से घृणावश होकर देश द्रोह तक किया और मुसलमान आक्रमणकारीयों की पूरी सहायता करते हुए उनको अपने बौद्ध विहारों में ठहराया और आर्य हिन्दू राजाओं के राज्यों के गुप्त पते बताते हुए उनपर आक्रमण करने में पूरा सहयोग किया । इस समुल्लास में ऋषि दयानंद ने मुख्य बौद्ध, जैन, चारवाक आदि ग्रंथों के साक्ष्य उठाकर उनके अनीश्वरवाद का खंडन प्रबल युक्तियों से किया है और वेद के आस्तिकवाद का मंडन बड़े सुंदर ढंग से किया है ।

13. त्रयोदश समुल्लास :---

भारत में अंग्रेज़ों ने वैटिकन के ईशारे पर यहाँ की हिन्दू जनता को ईसाई बनाने के लिये जीतोड़ प्रयास किए । इसलिये यहाँ ग्रामीण अनपढ़ लोगों को ईसाई बनाने हेतु ये ईसाई पादरी और पास्टर गाँव गाँव बाईबल लेकर घूमा करते थे और हिन्दू देवी देवताओं की निंदा करते और यीशू मसीह की महानता बताते रहते थे । इस कार्य के लिये अंग्रेज़ों द्वारा पानी की तरह पैसा बहाया जा रहा था । ऋषि दयानंद जी ने इनकी मान्य पुस्तक बाईबल उठाकर उसकी चुनिंदा आयतों की समीक्षा की और बाईबल का जंगलीपन, निकृष्टता को लोगों के सामने खोलकर रखा और ये सिद्ध किया कि विदेश में पनपा ईसाई मत भारत के लोगों के योग्य नहीं है । इसलिये ये समुल्लास ईसाई मत खंडन पर लिखा तांकि सभी मनुष्य बाईबल की ऊटपटांग बातों को बुद्धिपूर्वक पढ़ें और तुल्नात्मक रूप से वैदिक धर्म की श्रेष्ठता को स्वीकार करें । बहुत से ईसाई लोग और पादरी इस समुल्लास को पढ़कर ईसाई मत त्यागकर वैदिक धर्मी हो चुके हैं ।

अरब में पनपी इस्लाम की विचारधारा शुरु से ही हिंसा पर आधारित रही है । इस्लाम के संस्थापक पैगम्बर माने जाने वाले मुहम्मद साहब हैं जिन्होंने मक्का में जन्म लिया था। उनके अनुयायीयों और खलीफाओं ने अरबी साम्राज्य के विस्तार के उद्देश्य से इस्लाम को मज़हब यानी की एक संप्रदाय बनाया । इस्लाम में अनेकों प्रकार के फिरके हैं । इन सबकी मान्य पुस्तक एक ही कुरान

है । भारत में हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के उद्देश्य से कुरान के मानने वालों ने 678 ईं से लेकर अबतक यहाँ भीष्ण अत्याचार किए हैं । पूरी दुनिया में हो रही आतंकवादी घटनाएँ, सीरिया, इराक, यमन आदि में हो रहा गृहयुद्ध और सामूहिक रक्तपात कुरान की इसी वहाबी विचारधारा से प्रेरित है । इसलिये ऋषि दयानंद ने इस समुल्लास मे लगभग 200 से ऊपर कुरान की आयतें उठाकर उनकी समीक्षा की और समझने का प्रयास किया। ऋषि ने ये समुल्लास किसी को चिढ़ाने के लिये नहीं बल्कि मुसलमानों के लिये विचार करने के लिये लिखा है । मुस्लिम संगठनों द्वारा इस समुल्लास का विरोध भी हुआ परन्तु ऋषि के तर्कों को काटने साहस किसी में भी आजतक न हुआ । सत्यार्थ प्रकाश का खंडन लिखने की भूल करने वाले बहुत से मौलवी और मुफ्ती स्वयं ही वेद की विचारधारा से प्रभावित होकर इस्लाम छोड़ बैठे और शुद्धि करवाकर वेद प्रचारक तक बन गए ।

महक अरोरा
(बीए षष्ठम सैमेस्टर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का मनुस्मृति के सम्बन्ध में दृष्टिकोण

1. मनुस्मृति सृष्टि के प्रथम आदि राजा मनु द्वारा रचित प्रथम संविधान है।

2. स्वामी दयानन्द आधुनिक भारत के प्रथम ऐसे विचारक है जिन्होंने यह सिद्ध किया कि वर्तमान में उपलब्ध मनुस्मृति मनु की मूल कृति नहीं है। उसमें बड़े पैमाने पर मिलावट हुई हैं। यही मिलावट मनुस्मृति के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रांतियों का मूल कारण है।

3. मनुस्मृति पर सबसे बड़ा आक्षेप जातिवाद को समर्थन देने का लगता है। जबकि सत्य यह है कि मनुस्मृति जातिवाद नहीं अपितु वर्ण व्यवस्था की समर्थक है। वर्ण का निर्धारण शिक्षा की समाप्त होने के पश्चात निर्धारित होता था न कि जन्म के आधार पर होता था। मनु के अनुसार एक ब्राह्मण का पुत्र अगर गुणों से रहित होगा तो शूद्र कहलायेगा और अगर एक शूद्र का पुत्र ब्राह्मण गुणों वाला होगा तो ब्राह्मण कहलायेगा। यही व्यवस्था प्राचीन काल में प्रचलित थी। प्रमाण रूप में मनुस्मृति 9/335 श्लोक देखिये। शरीर और मन से शुद्ध- पवित्र रहने वाला, उत्कृष्ट लोगों के सानिध्य में रहने वाला, मधुरभाषी, अहंकार से रहित, अपने से उत्कृष्ट वर्ण वालों की सेवा करने वाला शूद्र भी उत्तम ब्राह्मण जन्म और द्विज वर्ण को प्राप्त कर लेता है।

4. मनुस्मृति पर दूसरा बड़ा आक्षेप नारी जाति को निम्न दर्शाने का लगता है। सत्य यह है कि मनुस्मृति नारी जाति को पुरुष के बराबर नहीं अपितु उससे श्रेष्ठ मानती है। संसार की कोई भी धर्म पुस्तक में ऐसा मनु के विषय में विधान नहीं है। प्रमाण रूप में मनुस्मृति 3/56 श्लोक देखिये। जिस समाज या परिवार में स्त्रियों का आदर - सम्मान होता है, वहां देवता अर्थात् दिव्यगुण और

सुख- समृद्धि निवास करते हैं और जहां इनका आदर - सम्मान नहीं होता, वहां अनादर करने वालों के सभी काम निष्फल हो जाते हैं भले ही वे कितना ही श्रेष्ट कर्म कर लें, उन्हें अत्यंत दुखों का सामना करना पड़ता है|

5. मनुस्मृति पर तीसरा आक्षेप यह है कि मनुस्मृति पशु हिंसा की समर्थक है।यह भी एक भ्रान्ति है। मनुस्मृति 5/15 का प्रमाण देखिए। अनुमति देने वाला, शस्त्र से मरे हुए जीव के अंगों के टुकड़े-टुकड़े करने वाला, मारने वाला, खरीदने वाला, बेचने वाला, पकाने वाला, परोसने या लाने वाला और खाने वाला यह सभी जीव वध में घातक-हिंसक होते हैं।

6. मनुस्मृति हमें धर्म-अधर्म, पञ्च महायज्ञ, चतुर्थ आश्रम व्यवस्था, समाज व्यवस्था के विषय में मार्गदर्शन करता है। इसलिए वह आज भी प्रासंगिक है।

7. वर्तमान मनुस्मृति में 2685 श्लोकों में से 1471 श्लोक मिलावटी और 1214 श्लोक ही मौलिक हैं। यही मिलावटी श्लोक मनु स्मृति के विषय में भ्रांतियों का कारण है। इसलिए इन मिलावटी श्लोकों को हटाकर सत्य श्लोकों को स्वीकार कीजिये। डॉ.अम्बेडकर द्वारा मिलावट किये हुए 1471 श्लोकों में से 88 प्रतिशत श्लोकों का प्रयोग अपने लेखन में हुआ है। इससे यही सिद्ध होता है कि डॉ अम्बेडकर की मनुस्मृति के विषय में मान्यताएं मिलावटी अशुद्ध मनुस्मृति पर आधारित है।

करण शर्मा

(बीए षष्ठम सैमेस्टर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के धर्मोपदेश

1. यदि आर्य अकेला हो तो स्वाध्याय करें, दो हो तो आपस में प्रश्नोत्तर और संवाद करें और तीन वा अधिक हो तो परस्पर सत्संग और किसी धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करें।
2. मैं ब्रह्मसमाजियों की भांति समाज के जातीय जीवन से अलग होना नहीं चाहता । समाज में रह कर ही उसका संशोधन करना श्रेयस्कर है।
3. आप मद्य मांस का सेवन करते हुए योगाभ्यास का सेवन नहीं कर सकते। यदि आप इन वस्तुओं का त्याग कर दें और नियम पालन करते हुए योगाभ्यास करें तो सफल हो सकते हैं।
4. मैं गुरुओं की प्रथा को अच्छा नहीं समझता, परन्तु यदि तुम मेरे चेले बनना चाहते हो तो संस्कृत पढ़ो और जब प्राप्त-वयस्क हो जाओ तो वैदिक सच्चाइयों का प्रचार करो ।
5. शरीर के बल सम्पादन के लिए मांसाहार की कुछ भी आवश्यकता नहीं है । दाल, रोटी, शाक और दुग्ध आदि से शरीर में बल और बुद्धि दोनों का ही प्राचुर्य हो सकता है ।

6. पहले आर्यगण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके विद्योपार्जन करते थे इसलिए वे वलिष्ठ और दीर्घायु होते थे । अब के मनुष्य इन्द्रिय-दोष और पान-दोष में आसक्त होकर शारीरिक और मानसिक तेज से हीन हो गए हैं और अल्पायु भी हो गए हैं ।
7. मैंने तो सब संसार से सम्बन्ध त्याग दिया है। किसी का मरना और जीना मेरे लिए एक-सा है। मैं किसी से शोक वा हर्ष नहीं करता, न मेरा कुछ सम्बन्ध है। मेरा सम्बन्ध को केवल उपदेश और धर्म से है, शेष किसी वस्तु से नहीं।
8. (एक ईसाई पादरी से वार्तालाप करते हुए) सत्य वेदोक्त धर्म में ईश्वर के अवलम्बन से ही मोक्ष होता है। महाभारत में लिखा है कि शुक्राचार्य ने संजीविनी विद्या से मृत पुरुषों को जिलाया था! अब हम शुक्राचार्य को ईश्वर का अवतार मानें वा उन्हें ईश्वर का भेजा हुआ मानें ? यदि उत्तम उपदेश देने से ही ईसा को परित्राता कहते हो तो बाइबिल की अपेक्षा भगवद्गीता में अधिक उत्तम उपदेश हैं, इसलिए भगवद्गीता के वक्ता श्रीकृष्ण भी परित्राता हैं । यदि कहते हो कि ईसा इसलिए परित्राता थे कि उन्होंने उत्तम कर्म किये थे, तो शंकराचार्य अपेक्षाकृत उत्तमोत्तम कर्म कर गए हैं, इसलिए शंकराचार्य भी परित्राता हैं ।
9. भारतवासियों को आर्य भाषा (हिन्दी) का सीख लेना कुछ कठिन नहीं है। जो इस देश में जन्म लेकर अपनी भाषा के सीखने का परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है?
10. प्रथम तो मुझे ही विचार हुआ था कि मूर्त्तिपूजन केवल अविद्या अन्धकार है, परन्तु गुरुवर्य स्वामी विरजानन्द जी भी उसका खण्डन किया करते थे और कहा करते थे कि कोई हमारा शिष्य ऐसा हो जो इस अन्धकार को देश से दूर करे । उनके आदेश से मैंने वैदिक धर्म प्रचार का कार्य अपने ऊपर लिया है ।
11. तीर्थों की जो वर्त्तमान दशा है उसकी प्रयोजनीयता मैं कुछ नहीं देखता हूं । यह तो केवल जीविकोपार्जन के निमित्त पण्डों ने एक ठाठ खड़ा कर रक्खा है ।

12. सुख-दुःख के भोग का नाम कर्मफल है । जिस भोग का हेतु इस जन्म में ज्ञात न हो उसे पूर्वजन्मकृत कर्म का फ्ल मानना चाहिए । आर्यों का धर्म शास्त्र यही बताता है और यही युक्ति से भी सिद्ध है ।

13. जब कोई श्रोता किसी वक्ता का व्याख्यान सुने तो उस पर खूब मनन करके यह जानने का यत्न करना चाहिए कि उसके कथन में कितना सत्य है और कितना असत्य । यह जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहिए ।

14. मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं यह नहीं चाहता कि जो कुछ मैं कहूं आप उस पर आंखें मीच कर चलने लगें । आप उस पर विचार करें, उसे जांचें और परखें । यदि वह आपको सत्य जान पड़े तो उस पर चलें और यदि वह असत्य जान पड़े तो उस पर कोई ध्यान न दें । यह अन्ध विश्वास ही हमारे नाश का मूल है । संस्कृत पुस्तकों में ज्ञान का बृहत् कोष भरा हुआ है । उन्हें पढ़ो और देखो कि उनमें क्या है । ऐसा मत कहो कि कोई बात केवल इसलिए माननीय या त्याज्य है कि दयानन्द सरस्वती ऐसा कहता है ।

नन्दिनी

(बीए षष्ठम सैमेस्टर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की महान् शिक्षाएं

1. मनुष्यों को चाहिए कि जितना अपना जीवन शरीर, प्राण, अन्तःकरण, दशों इन्द्रियाँ और सब से उत्तम सामग्री हो उसको यज्ञ के लिये समर्पित करें जिससे पापरहित कृत्यकृत्य होके परमात्मा को प्राप्त (योग से) होकर इस जन्म और द्वितीय जन्म में सुख को प्राप्त हों।
2. जैसे प्रत्येक ब्रह्माण्ड में सूर्य प्रकाशमान है, वैसे सर्वजगत में परमात्मा प्रकाशमान है। जो योगाभ्यास से उस अन्तर्यामी परमेश्वर को अपने आत्मा से युक्त करते हैं, वे सब ओर से प्रकाश को प्राप्त होते हैं।
3. जैसे सब जीवों के प्रति ईश्वर उपदेश करता है कि मैं कार्य्य कारणात्मक जगत में व्याप्त हूँ। मेरे विना एक परमाणु भी अव्याप्त नहीं है। सो मैं जहां जगत नही है वहां भी अनन्त स्वरूप से परिपूर्ण हूँ। जो इस अतिविस्तारयुक्त जगत को आप लोग देखते हैं सो यह मेरे आगे अणुमात्र भी नहीं है इस बात को कैसे ही विद्वान सब को जनावें।
4. सब मनुष्यों को परमेश्वर के विज्ञान और विद्वानों के संग से बहुत बुद्धियों को प्राप्त होकर सब ओर से धर्म का आचरण कर नित्य सब की रक्षा करने वाले होना चाहिए।
5. सब विद्वान लोग सब मनुष्यों के प्रति ऐसा उपदेश करें कि जिस सर्वशक्तिमान निराकार सर्वत्र व्यापक परमेश्वर की उपासना (योग) हम लोग करें तथा उसी को सुख और ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला जानें, उसी की उपासना तुम भी करो और उसी को सब की उन्नति करने वाला जानो।
6. जो मनुष्य पर्वतों के निकट और नदियों के सङ्गम में योगाभ्यास से ईश्वर की और विचार से विद्या की उपासना करें वह उत्तम बुद्धि वा कर्म से युक्त विचारशील बुद्धिमान होता है।
7. जैसे विद्वान् लोग ब्रह्म को स्वीकार करके आनन्द मङ्गल को प्राप्त होते और दोषों को निर्मूल नष्ट कर देते हैं वैसे जिज्ञासु लोग ब्रह्मवेत्ता विद्वानों को प्राप्त होके आनन्द मङ्गल का आचरण करते हुए बुरे स्वभावों के मूल नष्ट करें और आलस्य को छोड़ के विद्या की उन्नति किया करें।

काजल बीए
द्वितीय सैमेस्टर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दृष्टि में परमात्मा क्या है ?

इसका उत्तर है कि जिससे यह संसार बना है, चल रहा है व अवधि पूर्ण होने पर जो इस ब्रह्माण्ड की प्रलय करेगा, उसे ईश्वर कहते हैं। वह ईश्वर कैसा है तो चारों वेद, उपनिषद व दर्शन सहित सभी आर्ष ग्रन्थों ने बताया है कि ईश्वर -

"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त, निर्विकार, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक,

सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, पवित्र व सृष्टिकर्ता है। (सभी मनुष्यों को) उसी की उपासना करनी योग्य है।

ईश्वर कि जिसको ब्रह्म, परमात्मादि नामों से कहते हैं, जो सच्चिदानन्द लक्षण युक्त है जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, सब सृष्टि का कर्ता, धर्ता, हर्ता वं सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलप्रदाता आदि लक्षण युक्त है, वह परमेश्वर है, (मैं) उसी को मानता हूं।

जिसके गुण-कर्म-स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो कि, अद्‌वितीय, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि और अनन्त, सत्य गुणवाला है, और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्‌ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है, जिसका कर्म जगत की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सब जीवों को पाप-पुण्य के फल ठीक-ठीक पहंचाना है, उसी को ईश्वर कहते हैं।“

यह शब्द महर्षि दयानन्द के उनके अपने ग्रन्थों में कहे व लिखे गये हैं। इससे अधिक प्रमाणिक, विश्वसनीय व विवेकपूर्ण उत्तर ईश्वर के स्वरूप व उसकी सत्ता का नहीं हो सकता। ईश्वर विषयक यह स्वरूप वेदों से तो स्पष्ट है ही, तर्कपूर्ण व सृष्टिकर्म के अनुकूल होने से विज्ञान से भी स्पष्ट है।

ईश्वर का स्वरूप इतना ही नहीं है अपितु कहीं अधिक व्यापक व विस्तृत है। इसके लिए हमारे जिज्ञासु बन्धुओं को वेद, दर्शन, उपनिषद सहित महर्षि दयानन्द के साहित्य जिसमें सत्यार्थप्रकाश, ऋगवेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय वं अन्य ग्रन्थों सहित उनका वेद भाष्य भी है, उनका अध्ययन करना चाहिए।

सुखबीर सिंह
बीए द्‌वितीय सैमेस्टर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हिन्दी साहित्यकारों की दृष्टि में

आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल (१८८४-१९४०)

(आचार्य रामचन्द्र शुक्ल- हिन्दी समीक्षा को नवीन रूप देने वाले आचार्य शुक्ल काशी हिन्दू विश्वविद्‌यालय में हिन्दी के प्राध्यापक थे। वे अपने मनोवैज्ञानिक निबंधों तथा सूर, तुलसी एवं जायसी पर लिखी समीक्षाओं के कारण विशेष ख्याति अर्जित कर सके। रसवादी समीक्षा शैली के प्रवर्तक।) पैगम्बरी एकेश्वरवाद की ओर नवशिक्षित लोगों को खिंचते देख स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक एकेश्वरवाद लेकर खड़े हुए और सं० १९२० से उन्होंने अनेक नगरों में घूम-घूम कर व्याख्यान देना आरम्भ किया। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये व्याख्यान देश में बहुत दूर तक प्रचलित साधु हिन्दी भाषा में ही होते थे। स्वामीजी ने

अपना सत्यार्थप्रकाश तो हिन्दी 'आर्यभाषा' में प्रकाशित किया ही, वेदों के भाष्य भी संस्कृत और हिन्दी दोनों में किये। स्वामीजी के अनुयायी हिन्दी को आर्यभाषा कहते थे।

स्वामीजी ने सं० १९३२ में आर्यसमाज की स्थापना की और आर्यसमाजियों के लिए हिन्दी या आर्यभाषा का पढ़ना आवश्यक ठहराया। युक्तप्रान्त के पश्चिमी जिलों और पंजाब में आर्यसमाज के प्रभाव से हिन्दी गद्य का प्रचार बड़ी तेजी से हुआ। पंजाबी भाषा में लिखित साहित्य न होने और मुसलमानों के बहुत अधिक सम्पर्क से पंजाब वालों की लिखने पढ़ने की भाषा उर्दू हो रही थी। आज पंजाब में हिन्दी की पूरी चर्चा सुनाई देती है, वह इन्हीं की बदौलत है। (हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० ४४५)

•पं० रामदास गौड़ (१८८१-१९३७)

(पं० रामदास गौड़- हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य का सूत्रपात करने वाले पं० रामदास गौड़ द्विवेदी काल के प्रसिद्ध लेखक थे।)

जनता के लाभ की दृष्टि से मातृभाषा गुजराती होने पर भी इस दूरदर्शी और विद्वान् संन्यासी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी का ही प्रचार किया। अपने ग्रन्थ भी हिन्दी में ही लिखे। हिन्दी की उन्नति और प्रचार, आर्यसमाज का जिसके वे प्रवर्तक थे, एक विशेष लक्ष्य बना। अकेले इन स्वामीजी ने हिन्दी का जितना उपकार किया है, हमारा अनुमान है कि अनेक सुसंगठित संस्थाओं ने मिलकर भी अब तक नहीं किया है। (हिन्दी भाषासार पृ० ६२)

•मैथिलीशरण गुप्त (१८८६-१९६४)

वैष्णव कुल का होने पर भी मैं स्वामी दयानन्द को अपने देश का महापुरुष मानता हूं। उनके लिए मेरे मन में श्रद्धा है। कौन उनके महान् कार्य को स्वीकार न करेगा?

जो आज वेद ध्वनि गूंजती है।

कृपा उन्हीं की यह कूजती है। (५ मार्च १९५९ को पं० नरदेव शास्त्री को लिखा पत्र)

•डॉ० रामधारी सिंह दिनकर (१९०८-१९७४)

(डॉ० रामधारी सिंह दिनकर- हिन्दी के राष्ट्रीय भावधारा के कवियों में प्रमुख दिनकर अपने ग्रन्थ संस्कृति के चार अध्याय के कारण एक गम्भीर इतिहासकार तथा सांस्कृतिक चिन्तक के रूप में पहचाने गये।)

जैसे राजनीति के क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज पहले तिलक में प्रत्यक्ष हुआ वैसे ही संस्कृति के क्षेत्र में भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द ने निखारा। जो बात राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन और रानाडे आदि के ध्यान में नहीं आई, उसे लेकर ऋषि दयानन्द और उनके शिष्य आगे बढ़े और घोषणा की कि कोई भी हिन्दू (आर्य) धर्म में प्रवेश कर सकता है। हमारा गौरव सबसे प्राचीन और सबसे महान् है- यह जागृत हिन्दुत्व का महासमरनाद था। रागरूढ़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई भी नहीं। दयानन्द के समकालीन अन्य सुधारक केवल सुधारक थे किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आगे बढ़े। वे हिन्दू धर्म के रक्षक होने के साथ ही विश्वमानवता के नेता भी थे। (संस्कृति के चार अध्याय)

रीति काल के ठीक बाद वाले काल में हिन्दी भाषी क्षेत्रों में जो सबसे बड़ी सांस्कृतिक घटना घटी, वह स्वामी दयानन्द का पवित्रतावादी विचार था। इस युग के कवियों को श्रृंगाररस की कविता

लिखते समय यह प्रतीत होता था जैसे स्वामी दयानन्द पास ही खड़े सब कुछ देख रहे हैं। (काव्य की भूमिका पृ० २७,३२)

•डॉ० हरिवंशराय बच्चन (१९०७)

(डॉ० हरिवंशराय बच्चन- हालाबाद के प्रवर्तक कवि बच्चन अपने किशोर और युवाकाल में इलाहाबाद की आर्य कुमार सभा के सदस्य रहे। पद्य और गद्य में समान रूप से उत्कृष्ट लेखन के लिए विख्यात डॉ० बच्चन प्रयाग विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक भी रहे थे।)

मैं किसी समय आर्य कुमार सभा तथा आर्य समाज का सदस्य था। मेरे स्वतन्त्र चिन्तन पर दयानन्द का प्रभाव है। मैं ऋषि दयानन्द को एक महामानव तथा वेदों का उद्धारक मानता हूं। (आत्मकथा- क्या भूलूं क्या याद करूं)

•डॉ० श्रीकृष्णलाल

(डॉ० श्री कृष्णलाल- हिन्दी के आधुनिक समीक्षकों तथा साहित्य के इतिहासकारों में प्रमुख डॉ० लाल ने आधुनिक हिन्दी साहित्य का विशद इतिहास लिखा है।)

आर्यसमाज अवतारवाद के विरुद्ध झण्डा उठाये हुए था। इसका फल साहित्य पर भी पड़ा। अयोध्यायसिंह उपाध्याय और रामचरित उपाध्याय ने राम, कृष्ण को यथासम्भव मानवचरित्र के रूप में चित्रित किया। (आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास {१९२५-१९५०} पृ० ४६)

•भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (१८५०-१८८५)

(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र- आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माता। अग्रवाल वैश्यकुलोत्पन्न बाबू हरिश्चन्द्र ने हिन्दी में नाटक, निबन्ध, पत्रकारिता, समालोचना आदि विधाओं को आरम्भ किया। आस्था से पुष्टिमार्गीय वैष्णव होने पर भी वे स्वामी दयानन्द की देश भक्ति तथा समाज सुधार की भावना के प्रशंसक थे।)

इन दोनों (स्वामी दयानन्द और केशवचन्द्र सेन) पुरुषों ने प्रभु की मंगलमयी सृष्टि का कुछ भी विघ्न नहीं किया, वरंच उसमें सुख और सम्पत्ति अधिक हो, इसी में परिश्रम किया। जिस चण्डाल रूपी आग्रह और कुरीति के कारण मनमाना पुरुष धर्मपूर्वक न पाकर लाखों स्त्री कुमार्गमागिनी हो जाती हैं, लाखों विवाह होने पर भी जन्म भर सुख भोगने नहीं पातीं, लाखों गर्भनाश होते और लाखों बाल हत्या होती हैं, उस पापमयी नृशंस रीति को उठा देने में इन लोगों (दयानन्द और केशव) ने अपने शक्य भर परिश्रम किया। जन्मपत्री की विधि के अनुग्रह से जब तक स्त्री पुरुष जियें एक तीर घाट एक मीर घाट रहें, बीच में वैमनस्य और असन्तोष के कारण स्त्री व्यभिचारिणी, पुरुष विषयी हो जायें, परस्पर नित्य कलह हो, शान्ति स्वप्न में भी न मिलें, वंश न चले, यह उपद्रव इन लोगों से नहीं सहे गये। विधवा गर्भ गिरावें, पण्डितजी या बाबू साहब यह सह लेंगे, वरंच चुपचाप उपाय भी करा देंगे, पाप को नित्य छिपावेंगे, अन्ततोगत्वा (स्वधर्म से) से निकल ही जायें तो सन्तोष करेंगे, पर विधवा का विधिपूर्वक विवाह न हो। फूटी सहेंगे, आंजी न सहेंगे। इस दोष को इन दोनों ने निस्सन्देह दूर करना चाहा।

सवर्ण पात्र न मिलने से कन्या को वर मूर्ख, अंधा, वरंच नपुंसक तथा वर को काली, कुरूपा, कर्कशा कन्या मिले, जिसके आगे बहुत बुरे परिणाम हों, इस दुराग्रह को इन लोगों (दयानन्द और केशव) ने दूर किया। चाहे पढ़े हों, या चाहे मूर्ख, सुपात्र हों कि कुपात्र, चाहे प्रत्यक्ष व्यभिचार करें या कोई

भी बुरा कर्म करें, पर गुरुजी जो हैं, पण्डितजी जो हैं, इनका दोष मत कहो। कहोगे तो पतित होगे। इनको दो, इनको राजी रक्खो, इस सत्यानाश संस्कार को इन्होंने (दयानन्द और केशव) दूर किया। आर्य जाति का दिन प्रति दिन ह्रास हो, लोग स्त्री के कारण, धन के या नौकरी व्यापार आदि के लोभ से, मद्य पान के चस्के से, वाद (मुकद्दमा) में हारकर, राजकीय विद्या का अभ्यास करके मुसलमान या क्रिस्तान हो जायें, आमदनी एक मनुष्य की भी बाहर से न हो केवल नित्य व्यय हो, अन्त में आर्यों का धर्म और जाति की कथा शेष रह जाय, किन्तु जो बिगड़ा सो बिगड़ा, फिर जाति में कैसे आवेगा। कोई दुष्कर्म किया तो छिप के क्यों नहीं किया, इसी अपराध पर हजारों मनुष्य आर्य जाति पंक्ति से हर साल छूटते थे, उनको इन्होंने (दयानन्द और केशव) रोका। सबसे बढ़कर इन्होंने यह कार्य किया- सारा आर्यावर्त जो प्रभु से विमुख हो रहा था, देवता बेचारे तो दूर रहे, भूत, प्रेत, पिशाच, मुर्दे, सांप के काटे, बाघ के मारे, आत्महत्या करे, मरे, जल, दब या डूब कर मरे लोग, यही नहीं, मुसलमानी पीर, पैगम्बर, औलिया, शहीद, ताजिया, गाजी मियां, जिन्होंने बड़ी मूर्ति तोड़कर और तीर्थ पार कर आर्य धर्म विध्वंसन किया, उनको मानने और पूजने लग गये थे। विश्वास तो मानो छिनाल का अंग हो रहा था, देखते सुनते लज्जा आती थी कि हाय ये कैसे आर्य हैं, किससे उत्पन्न हैं। इस दुराचार की ओर से लोगों को अपनी वक्तृताओं के थपेड़े के बल से मुंह फेर कर सारे आर्यावर्त को शुद्ध, लायक कर दिया। (स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन- मित्र विलास लाहौर के १८ जून १८८५ के अंक में प्रकाशन, पुनः भारतेन्दु ग्रन्थावली खण्ड ३ में संगृहीत)

•डॉ० केसरीनारायण शुक्ल

(डॉ० केसरीनारायण शुक्ल- हिन्दी के प्रसिद्ध समीक्षक तथा हिन्दी-काव्य धारा नामक शोधकृति के लेखक।)

हिन्दी काव्य स्वामी दयानन्द के व्यापक प्रभाव से बच नहीं सका। भारतेन्दु युग की कविता में समाज सुधार की भावना स्पष्ट मिलती है और सभी कवियों में यह प्रवृत्ति पूर्णतया लक्षित होती है। क्या कट्टरपंथी, क्या सुधारवादी और क्या आर्यसमाजी, समान रूप से समाज का कल्याण और सुधार चाहते हैं, भले ही इन लोगों में साधन के सम्बन्ध में मतभेद दिखाई दे।

स्वामीजी भारतीय जागरण तथा राष्ट्रोत्थान के वैतालिक थे। स्वामीजी ने हिन्दी काव्य को देशभक्ति का स्वर प्रदान किया। स्वामीजी के सिद्धान्तों तथा आर्यसमाज के प्रचार हेतु आर्य समाज में विपुल भजन-साहित्य लिखा गया। इन भजनीकों में चौधरी नवलसिंह और उनकी लावनियों का प्रमुख स्थान है। भजनीकों का हिन्दी काव्य पर प्रभाव पड़ा। भजन साहित्य में कुरीतियों का चित्रण मिलता है। बाल विवाह निषेध, नारी जागरण, अंध विश्वास खण्डन, शुद्धि और जन जागृति के तत्व बिखरे पड़े हैं जिनका जनता पर काफी अच्छा प्रभाव पड़ा। (हिन्दी काव्यधारा)

२६ - भारतवर्ष के महान राष्ट्रवादी निडर बौद्धिक, प्रभावशाली लेखक और इतिहासकार श्री सीताराम गोयल जी जो स्वयम प्रारंभिक दिनों में वामपंथी रहे बाद में पुनः हिन्दू बने , के स्वामी दयानन्द पर विचार उनकी पुस्तक How I Became Hindu" by Sitaram Goel जी से ,

एक समय, गोयल जी 'सत्यार्थ प्रकाश' में कुछ टिप्पणी पढ़ने के बाद चौंक गए इसलिए उस समय वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि स्वामी दयानंद कुछ धार्मिक व्यक्तियों के लिए अनावश्यक रूप

से निर्दयी थे , और उनकी सोच का तरीका गलत था, लेकिन सालों बाद जब उन्होंने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया और श्री अरबिंदो की पुस्तक 'Bankim-Tilak-Dayananda' पढ़ी जिससे स्वामी दयानंद की दूरगामी सोच और उनके शब्दों और कर्मों के प्रभावों के मूल्य को समझते हुए, वह पश्चाताप करने और महर्षि के प्रति सम्मान व्यक्त करने में सफल रहे ।

श्री गोयल लिखते हैं कि ,

"मैंने पश्चाताप और श्रद्धा का प्रकट किया , उस निर्भय शेर के प्रति जिसने हिंदुओं के बीच वैदिक दृष्टि को बचाने और पुनर्जीवित करने की पूरी कोशिश करी साथ ही साथ महत्वपूर्ण राष्ट्रीय , सांस्कृतिक भूमिका की एक वास्तविक समझ और प्रशंसा आर्य समाज ने हमारे राष्ट्रीय जीवन में एक महत्वपूर्ण मौके पर रखा था ।

महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

उन्नीसवीं शताब्दी के परार्द्ध भारत के इतिहास का अपर स्वर्ण प्रभात है। कई पावन चरित्र महापुरुष अलग अलग उत्तरदायित्व लेकर इस समय इस पुण्य भूमि में अवतीर्ण होते हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती भी उन्हीं में एक महाप्रतिभा मंडित महापुरुष हैं। शासन बदला ,अंग्रेज आये, संसार की सभ्यता एक नए प्रभाव से बही, बड़े बड़े पंडित, विश्व साहित्य, विश्व ज्ञान विश्व मैत्री की आवाज उठाने लगे। पर भारत उसी प्रकार पौराणिक रूप के मायाजाल में भूला रहा। इस समय ज्ञान स्पर्धा के लिए समय को फिर आवश्यकता हुई। और महर्षि दयानंद का यही अपराजित प्रकाश है। वह अपार वैदिक ज्ञान राशि के आधार स्तम्भ स्वरूप अकेले बड़े-2 पंडितों का सामना करते है। एक ही आधार से इतनी बड़ी शक्ति का स्फुरण होता है कि आज भारत के युगांतर साहित्य में इसी साहित्य में इसी की सत्ता प्रथम है, यही जनसंख्या में बढ़ी हुई हैं।

चरित्र, स्वास्थ्य, त्याग, ज्ञान और शिष्टता आदि में जो आदर्श महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज में प्राप्त होते हैं। उसका लेश-मात्र भी अभारतीय पश्चिमी शिक्षा असंभूत नहीं, पुनः ऐसे आर्य में ज्ञान तथा कर्म का कितना प्रसार रह सकता है, वह स्वयं इसके उदाहरण हैं। मतलब यह है कि जो लोग कहते हैं कि वैदिक अथवा प्राचीन शिक्षा द्वारा मनुष्य उतना उन्नतमना नहीं हो सकता। जितना अंग्रेजी शिक्षा द्वारा होता है। महर्षि दयानंद सरस्वती इसके प्रत्यक्ष खंडन है। महर्षि दयानंद जी से बढ़कर भी मनुष्य होता है। इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता। यही वैदिक ज्ञान कि मनुष्य के उत्कर्ष में प्रत्यक्ष उपलब्धि होती है। यही आदर्श आर्य हमें देखने को मिलता है।

हमें अपने सुधार के लिए क्या क्या करना चाहिए। हमारे सामाजिक उन्नयन में क्या क्या और कहां कहां रुकावटें हैं। हमें मुक्ति के लिए कौन सा मार्ग ग्रहण करना चाहिए। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने बहुत अच्छी तरह समझाया है। आर्यसमाज की प्रतिष्ठा उसकी प्रगति एक दिव्य स्फूर्ति की प्रगति है। देश में महिलाओं, पतितों तथा ब्राह्मणेतर जातियों के अधिकार के लिए महर्षि दयानंद तथा आर्यसमाज से बढ़कर इन नवीन विचारों के युग में किसी भी समाज ने कार्य नहीं किया। आज जागरण भारत में देख पड़ता है। इसका प्रायः सम्पूर्ण श्रेय आर्यसमाज को है। स्वधर्म में दीक्षित करने का यहां इसी समाज से श्री गणेश हुआ है। भिन्न जाति वाले बंधुओं को उठाने तथा ब्राह्मण क्षत्रियों के प्रहारों से बचाने का उद्यम आर्यसमाज ही करता रहा है। शहर-शहर, जिले-जिले कस्बे-कस्बे में इसी उदारता के कारण आर्यसमाज की स्थापना हो गई। राष्ट्र भाषा हिंदी के भी स्वामी जी एक प्रवर्तक हैं, और आर्यसमाज के प्रचार की तो यह भाषा ही रही

है। शिक्षण के लिए गुरुकुल जैसी संस्था निर्मित हो गई। एक नया ही जीवन देश में लहराने लगा। हमें ऋषियों की संतान होने का सौभाग्य प्राप्त हैं, और इसके लिए हम गर्व करते हैं। तो कहना होगा कि ऋषि दयानंद से बढ़कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष ने नहीं किया, जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान-राशि वेदों से परिचित कर दिया।

शीतल

(बीए द्वितीय सैमेस्टर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सत्संगी

शाहपुराधीश नाहरसिंह :

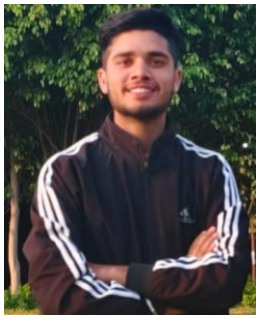

यद्यपि शाहपुरा मेवाड़-राज्य का ही एक भाग था, परन्तु अंग्रेज सरकार ने उसे स्वतन्त्र राज्य का दर्जा दिला दिया था, केवल वर्ष में एक बार शाहपुराधोश को उदयपुर के दरबार में उपस्थित होना पड़ता था।

महाराजा नाहरसिंह में भी मेवाड़ के सिसोदिया वंश का रक्त था। अतः वे भी ऋषि दयानन्द की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुए। उदयपुर निवासकाल में ही उन्होंने शाहपुरा पधारने का निमन्त्रण दिया था।

तदनुसार ऋषि दयानन्द उदयपुर से शाहपुरा पहुंचे। वहां संवत् 1939, फाल्गुन कृष्णा 14 से संवत् 1940 ज्येष्ठ कृष्णा 4 (8 मार्च 1883से 26 मई 1883) तक लगभग ढाई मास शाहपुरा रहे।

शाहपुराधीश को छहों दर्शनों के प्रमुख प्रकरण और मनुस्मृति के अध्याय 7-8 पढ़ाये और योग का अभ्यास भी कराया। शाहपुराधीश पर ऋषि दयानन्द का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे पूर्णतया वैदिक धर्म के अनुयायी बन गये।

ऋषि दयानन्द ने उन्हें वैदिक कर्मकाण्ड में विशेषरूप से प्रवृत्त करने के लिए दर्शपूर्णमास आदि श्रौतयाग करते रहने की प्रेरणा दी। यह रीति उनके कुल में निरन्तर प्रचलित रही।

शाहपुराधीश की निर्भयता :

महाराणा सज्जनसिंह के स्वर्गवास होने पर उनके निस्सन्तान होने के कारण देलवाड़ा के फतहसिंह राजराणा उदयपुर की गद्दी पर बैठे। यद्यपि ये भी ऋषि दयानन्द के सम्पर्क में आये थे और इनका ऋषि दयानन्द के साथ पत्र-व्यवहार भी हुया था, परन्तु इन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था।

शाहपुराधीश नाहरसिंह को यद्यपि अंग्रेज सरकार ने राजा की उपाधि प्रदान कर दी थी, परन्तु उन्हें मेवाड़ के जागीरदार के नाते वर्ष में एक बार दरबार में उपस्थित होना पड़ता था।

एक बार प्रसंगवश महाराणा फतहसिंह ने शाहपुराधीश को कहा - आपने अपने पुरखों का धर्म क्यों छोड़ दिया? नाहरसिंह ने विनयपूर्वक कहा - महाराणा जी, मैंने अपने पुरखों का धर्म नहीं छोड़ा, आपने छोड़ा है। महाराणा ने कहा - कैसे? नाहरसिंह ने 2-3 दिन का समय मांगा और अपने सेवक को सांडनी से शाहपुरा भेजकर सत्यार्थप्रकाश की वह प्रति मंगवाई, जिस पर महाराणा सज्जनसिंह ने हस्ताक्षर करके शाहपुराधीश को दी थी। उसे महाराणा फतहसिंह के हाथों में देते हुए कहा कि - आप के पूर्वज महाराणा ने मुझे यह ग्रन्थ दिया है सो मैं तो उनके धर्म पर ही चलता हूं।

यह घटना शाहपुरा में राजकुमारों को धर्मशिक्षा देने के लिये नियुक्त श्री पंडित भगवान् स्वरूप जी, जो पीछे वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्ता बने, ने सुनाई थी। माननीय पण्डितजी ने सत्यार्थप्रकाश को उक्त ऐतिहासिक प्रति को शाहपुरा से लाकर परोपकारिणी सभा को दिया था।

ऋषभ शर्मा

(बीए षष्ठम सैमेस्टर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी और दलितोद्धार

रोहतक के एक मोहल्ले में दलित भाई रहते थे। वहाँ एक चमड़े का कारखाना था। उस कारखाने से भयंकर दुर्गन्ध आती थी। किसी के लिए वहाँ कुछ समय के लिए रुकना कष्टप्रद होता था। दुर्गन्ध सबका जीना दुर्भर कर देती थी। दलित समाज में गरीबी, अशिक्षा, पिछड़ापन, नशा आदि व्याप्त था। उनकी शोचनीय अवस्था और मोहल्ले को देखकर कोई वहां आना पसंद नहीं करता था। इसी मोहल्ले में श्री परमानंद जी विद्यार्थी ने एक पाठशाला खोल दी। उन्हें दिन-रात दलितोद्धार का ही काम रहता था। दीन बालक-बालिकाओं को शिक्षित बनाकर उन्हें जो आनंद मिलता था। उसका वर्णन न वाणी कर सकती है और न ही लेखनी। एक बार हिसार के स्वामी अग्निदेव जी भीष्म को विद्यार्थी जी वह पाठशाला दिखाने ले गये। भीष्म जी के अनुसार वहां दुर्गन्ध के कारण खड़ा होना तक मुश्किल था। न जाने विद्यार्थी जी कैसे तपस्वी हैं, जो घंटों उस दुर्गन्ध में बिताते हैं। कई वर्ष तक वातावरण को जी वहाँ यह सेवा यज्ञ चलाते रहे। उनके अनेक दलित शिष्य वहां पढ़कर बड़े बड़े उच्च अधिकारी बने। उन पर आर्यसमाज की छाप है। वे विद्यार्थी जी का यशोगान करते नहीं थकते। ऋषि की पवित्र शिक्षा से दुर्गन्ध युक्त वातावरण को सुगंधित करके उन्होंने नरक को स्वर्ग बना डाला। वे आर्यसमाज की नींव के पत्थर थे।

सलोनी बीए

(द्वितीय सैमेस्टर)

हर समस्या का समाधान है महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का आर्यसमाज

1. ईश्वर को लेकर समाज में उपजी भ्रान्ति व् वैमनस्य का समाधान वैज्ञानिक आधार पर कर समाज में एकजुटता ला सकता है आर्य समाज।
2. जातिवाद की कमर सैद्धान्तिक व् सारगर्भित रुप से तोड़ सभी वर्णों को जोड़ सुंदर समाज बना सकता है आर्य समाज।
3. यथा कर्म तथा फल के सिद्धान्त से समाज में न्याय व्यवस्था को भली प्रकार स्थापित कर सकता है आर्य समाज।
4. समाज में फैले सभी अवैज्ञानिक व अज्ञानता वाहक मत / पंथों को अकेले मुंह तोड़ उत्तर दे समाज में ज्ञान का नूतन प्रकाश कर सकता है आर्य समाज।
5. सभी अवैज्ञानिक व अज्ञानता वाहक मतों के मूल अर्थात् कुरान बाइबिल आदि का तार्किक खण्ड खण्ड विखण्डन कर समाज में अनाचार / आतंकवाद को जड़ से ही मिटा सकता है आर्य समाज।
6. समाज में विचरने वाले लिव इन रिलेशनशिप वालों को पुनः अपनी सभ्यता पुनः अपने संस्कार से जोड़ अनेको परिवारों को बचा सकता है आर्य समाज।
7. समाज में सबसे तेजी से फैलने वाले प्रदूषण “मानसिक प्रदूषण“ को अपने तेज से रोक कर प्रकाशमय मन स्थापित कर सकता है आर्य समाज।
8. पितृ यज्ञ के माध्यम से वृद्धाश्रम में दुखमय जीवन व्यतीत करने वाले माता पिता के हृदय में सुख की ज्योति लगा परिवार में आनन्द ला सकता है आर्य समाज।
9. अग्निहोत्र के माध्यम से अनेको रोगों को समाप्त कर अनेको लोगो के जीवन में प्रकाश भर सकता है आर्यसमाज।
10. जब देश की स्ववतंत्रता में महती योगदान बलिदान कर सकता है तो समाज में खुद जल कर प्रकाश फैला सकता है आर्य समाज।

मोनिका पाल

(बीए द्वितीय सैमेस्टर)

ऋषि दयानन्द सरस्वती जी विदेशियों की दृष्टि में

1. “स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म के सुधार का बड़ा कार्य किया। उन्होंने वेदों पर बड़े-बड़े भाष्य किये, जिससे मालूम होता है कि वे पूर्ण विद्वान् थे। उनका स्वाध्याय बड़ा व्यापक था”।
मैक्समूलर (वेदों का अनुवादक)
2. “ऋषि दयानन्द उच्चतम व्यक्तित्त्व के पुरुष थे। यह पुरुष सिंह उनमें से एक था जिन्हें यूरोप प्रायः उस समय भुला देता है, जब कि वह भारत के सम्बन्ध में अपनी धारणा बनाता है। किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मानकर उसे याद करने के लिए बाधित होना पड़ेगा। ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्तिशून्य

शरीर में अपनी अद्भुत शक्ति, स्थिरता तथा सिंह के समान पराक्रम फूंका। वह राष्ट्रीय संगठन और पुनर्निर्माण के अत्यन्त उत्साही पैग़म्बर थे"।

- रोम्यां रोलां (फ्रेंच लेखक)

3. "यह निश्चित है कि शंकराचार्य के पश्चात् दयानन्द से अधिक संस्कृतज्ञ गम्भीर अध्यात्मवेत्ता (योगी), आश्चर्यजनक वक्ता और राष्ट्र में व्याप्त बुराई का निर्भीकता पूर्वक खण्डन करने वाला योद्धा भारत को प्राप्त नहीं हुआ"।

- मैडम ब्लेवेंस्टकी

4. "राष्ट्र के नवजागरण तथा भारत के सांस्कृतिक उत्थान में स्वामी दयानन्द का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

-एमर्सन

5. "स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शुद्ध (नवीन) हिन्दू धर्म की गहरी और दृढ़ नींव डाली और इसे पौराणिक भ्रान्तियों से शुद्ध कर दिया"।

- एस. एल. माइकेल

1. 6. "स्वामी दयानन्द निःसन्देह एक ऋषि थे। उन्होंने अपने विरोधियों द्वारा फेंके गये ईंट-पत्थरों को शान्तिपूर्वक सहन कर लिया। उन्होंने अपने में महान् भूत और भविष्य मिला दिया। वे मर कर भी अमर हैं। ऋषि का प्रादुर्भाव मानवमात्र को कारागार से मुक्त करने और जाति बन्धन तोड़ने के लिये हुआ था। ऋषि का यदि आर्य अकेला हो तो स्वाध्याय करें, दो हो तो आपस में प्रश्नोत्तर और संवाद करें और तीन वा अधिक हो तो परस्पर सत्संग और किसी धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करें ।
2. आदेश था-आर्यावर्त्त ! उठ जाग, समय आ गया है और नये युग में प्रवेश करके आगे बढ़"।

-पाल रिचर्ड

7. "हमें वेदों के अध्ययन को प्रबल प्रोत्साहन देने और सिद्ध करने में कि मूर्तिपूजा वेद-सम्मत नहीं है, स्वामी दयानन्द के महान् उपकार को अवश्य स्वीकार करना चाहिए"।

-डॉ. विण्टरनीट्ज

8. "स्वामी दयानन्द एकेश्वरवादी वेद पर अपने सिद्धान्त को मानने वाले, प्रगति समर्थक तथा देशोद्धारक महापुरुष थे"।

-मोनियर विलियम्स

9. "आर्य समाज समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसे जीवन और सिद्धान्त दिया। उनका विश्वास था कि भारत चुना हुआ देश है, वेद चुनी हुई धार्मिक पुस्तक है तथा आर्य जाति चुनी हुई जाति है"।

- रेमज़े मेकडॉनल्ड

10. "वर्तमान स्वराज्य आन्दोलन के कारण स्वामी दयानन्द की गिनती भारत के निर्माताओं में स्वीकार करने योग्य है। यह सबको स्वीकार करना पड़ेगा कि स्वामी दयानन्द एक महान् तथा

पुण्यशाली व्यक्ति थे। वे भारतवर्ष के कीर्ति स्तम्भ थे। उनको खोकर भारत की भीषण शोचनीय हानि हुई है"।

-ग्रास ब्रोन्ड

11. "महर्षि दयानन्द की मुत्यु से भारत ने अपने योग्यतम पुत्रों में से एक को खो दिया था। हमारा उनसे पत्र-व्यवहार होता था। सचमुच वे एक आला इन्सान ही नहीं फरिश्ते थे"।

- कर्नल अल्काट

12. "महर्षि दयानन्द स्वराज्य प्रेरक, समाज सुधारक तथा हिंदी भाषा के प्रेमी व प्रचारक थे। उन्होंने अस्पृश्यता के कलंक को धोने का प्रयत्न किया। ऐसे सब कार्यों के लिए महर्षि का स्मरण चिर स्थायी रहेगा"।

म. मोहन दास गाँधी

13. "स्वामी दयानन्द ही वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों के लिये है का नारा लगाया था। आर्यसमाज के लिये मेरे हृदय में शुभइच्छाएं हैं और उस महान् पुरुष के लिये मेरे हृदय में सच्ची पूजा की भावना है"।

-एनी बीसेण्ट

14. "ऋषि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में जो अन्य मज़हबों से सम्बन्धित जिन सिद्धान्तों की आलोचना की है वह उनका विचार स्वतन्त्र, सुन्दर विचार है। अन्य मत वालों को उस पर स्थिर चित्त से विचार करना चाहिये। यदि ऋषि द्वारा बतलाए गए दोष ठीक जचें तो प्रसन्नतापूर्वक अपना मत शुद्ध करें और प्रगति पाकर प्रेम की विमल धारा प्रवाहित करते हुए "वसुधैव कुटुम्बकम्" की स्थापना करें"।

- मुहम्मद ज़हूरबख्श (हिन्दी कोविद्)

अदिती

(बीए द्वितीय सैमेस्टर)

राजनेताओं की दृष्टि में ऋषि दयानन्द

1. "मैं ऋषि दयानन्द को अपना राजनैतिक गुरु मानता हूँ। मेरी दृष्टि में तो वे एक महान् विप्लववादी नेता और राष्ट्र के विधायक थे। बहुत से लोग उन्हें (केवल) सामाजिक और धार्मिक सुधारक कहते हैं, परन्तु मेरी दृष्टि में तो वे सच्चे राजनैतिक थे। जो कार्यक्रम काँग्रेस ने दिया वह सब उससे 20 वर्ष पूर्व ही ऋषि दयानन्द ने देश के समक्ष रख दिया था। पूर्ण देश में एक भाषा (हिन्दी), खादी, स्वदेशी प्रचार, पंचायतों की स्थापना, दलितोद्धार, राष्ट्र और सामाजिक एकता, उत्कट देशाभिमान तथा स्वराज्य की घोषणा, यह सब महर्षि दयानन्द ने देश को दिया है"।
   - विठ्ठल भाई पटेल

2. “स्वामी दयानन्द जी के राष्ट्र के प्रेम के लिये उनके द्वारा उठाये गये कष्टों, उनकी हिम्मत, ब्रह्मचर्य जीवन तथा अन्य कई गुणों के कारण मुझे उनके प्रति आदर है। आज देश में जो भी कार्य चल रहे हैं उनका मार्ग स्वामी जी वर्षों पूर्व बना गये थे। ऐसे महापुरुष कभी मरते नहीं अमर होते हैं उनका जीवन हमारे लिए आदर्श बन जाता है”।
   - सरदार वल्लभ भाई पटेल

3. “महर्षि दयानन्द के उपदेशों ने करोड़ों लोगों को नवजीवन, नवचेतना और नया दृष्टिकोण प्रदान किया है। उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये हमें व्रत लेना लेना चाहिए कि उनके बताये मार्ग पर चलकर हम देश को सुखी, शान्तियुक्त और वैभवपूर्ण बनायेंगे”।
   - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भारत के प्रथम राष्ट्रपति)

4. “स्वामी दयानन्द एक महान् सुधारक और प्रखर क्रान्तिकारी महापुरुष थे ही पर साथ ही उनके हृदय में सामाजिक अन्यायों को उखाड़ फेंकने की प्रचण्ड अग्नि विद्यमान् थी। उनकी शिक्षाओं का हमारे लिये भारी महत्त्व है। उन्होंने हमें यह महान् सन्देश दिया था कि हम सत्य की कसौटी पर कस कर ही किसी बात को स्वीकार करें”।
   - सर्वपल्ली डॉ. राधा कृष्णन् (भूतपूर्व राष्ट्रपति)

5. “महर्षि दयानन्द महान् नायक और क्रान्तिकारी महापुरुष थे। उन्होंने देश में धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक क्षेत्र में जो काम किया वह अभूतपूर्व है। उन्होंने ही हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने का घोषनाद किया और छूत-छात तथा जात-पात के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा। स्वराज्य और स्वदेशी की उन्होंने ऐसी लहर चलाई कि जिससे इण्डियन नेशनल काँग्रेस के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार हो गई”।

   - लाल बहादुर शास्त्री (भूतपूर्व प्रधान मन्त्री)

6. “महर्षि दयानन्द ने पददलित भारत का पुनरुत्थान किया, राष्ट्र को नवजीवन का सन्देश दिया। उन्होंने सामाजिक क्रान्ति की और अन्धश्रद्धा को दूर करने का प्रयत्न किया”।
   - मुरारजी भाई देसाई (भूतपूर्व प्रधान मंत्री)

7. “गाँधी जी राष्ट्र के ‘पिता’ थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के ‘पितामह’ थे। वे राष्ट्रीय प्रवृत्ति और स्वाधीनता के आन्दोलन के आद्य प्रवर्तक थे। गाँधी जी उन्हीं के पद चिन्हों पर चले। यदि महर्षि दयानन्द हमें मार्ग न दिखाते तो अंग्रेज़ों के शासन में सारा बंगाल ईसाई और सारा पंजाब मुसलमान बन जाता। महर्षि ने सारे विश्व को ‘आर्य’ बनाने की प्रेरणा दी। महर्षि दिव्य महापुरुष थे। उन्होंने ईसाई मत और इस्लाम के हमलों से देश की रक्षा की। आर्य समाज देश की एकता के लिये कार्य कर रहा है”।
   - अनन्तशयनम् आटयंगर

8. “गाँधी से पूर्व महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र के लिये महान् कार्य किया। उन्होंने भारतीयों को स्वराज्य का मार्ग बताया। वे एक पूर्ण पुरुष और भारत के युग निर्माता थे”।
   - डॉ. पट्टाभि सीता रमैया

9. “ऋषि ने गहरी निन्द्रा में सोए हुए भारत को जाग्रत किया। वे ‘स्वराज्य’ के सर्वप्रथम सन्देश वाहक तथा मानवता के उपासक थे”।
   - लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

10. “मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब (राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक) अंगों को प्रदीप्त कर दिया। मैं आधुनिक भारत के मार्गदर्शक उस दयानन्द को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देता हूँ”।
   - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

11. “महर्षि दयानन्द तपोमूर्ति थे। वे भारत को स्वतन्त्र तथा दिव्य देखना चाहते थे। वे हिन्दू संस्कृति की अप्रतिम प्रतिमा तथा भारत माता के अक्षय पात्र थे”।
   - मदन मोहन मालवीय
12. “दयानन्द उत्कट देश-भक्त थे, अतः मैं ‘राष्ट्रवीर’ समझकर उनकी वन्दना करता हूँ। उनका जीवन राष्ट्र निर्माण के लिए स्फूर्तिदायक, बलदायक और माननीय है”।
   - साधु टी. एल. वास्वानी

13. “महर्षि दयानन्द भारत माता के उन प्रसिद्ध और उच्च आत्माओं में से हैं जिनका नाम संसार के इतिहास में सदैव चमकते हुए सितारों की तरह प्रकाशित रहेगा। वह भारत माता के उन सपूतों में से हैं जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जाये थोड़ा है। नैपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट् एवं विजेता संसार में हो चुके हैं परन्तु स्वामी दयानन्द जी उन सबसे बढ़ कर थे”।
   - खदीजा बेगम एम.ए.

जतिन
(बीए द्वितीय सैमेस्टर)

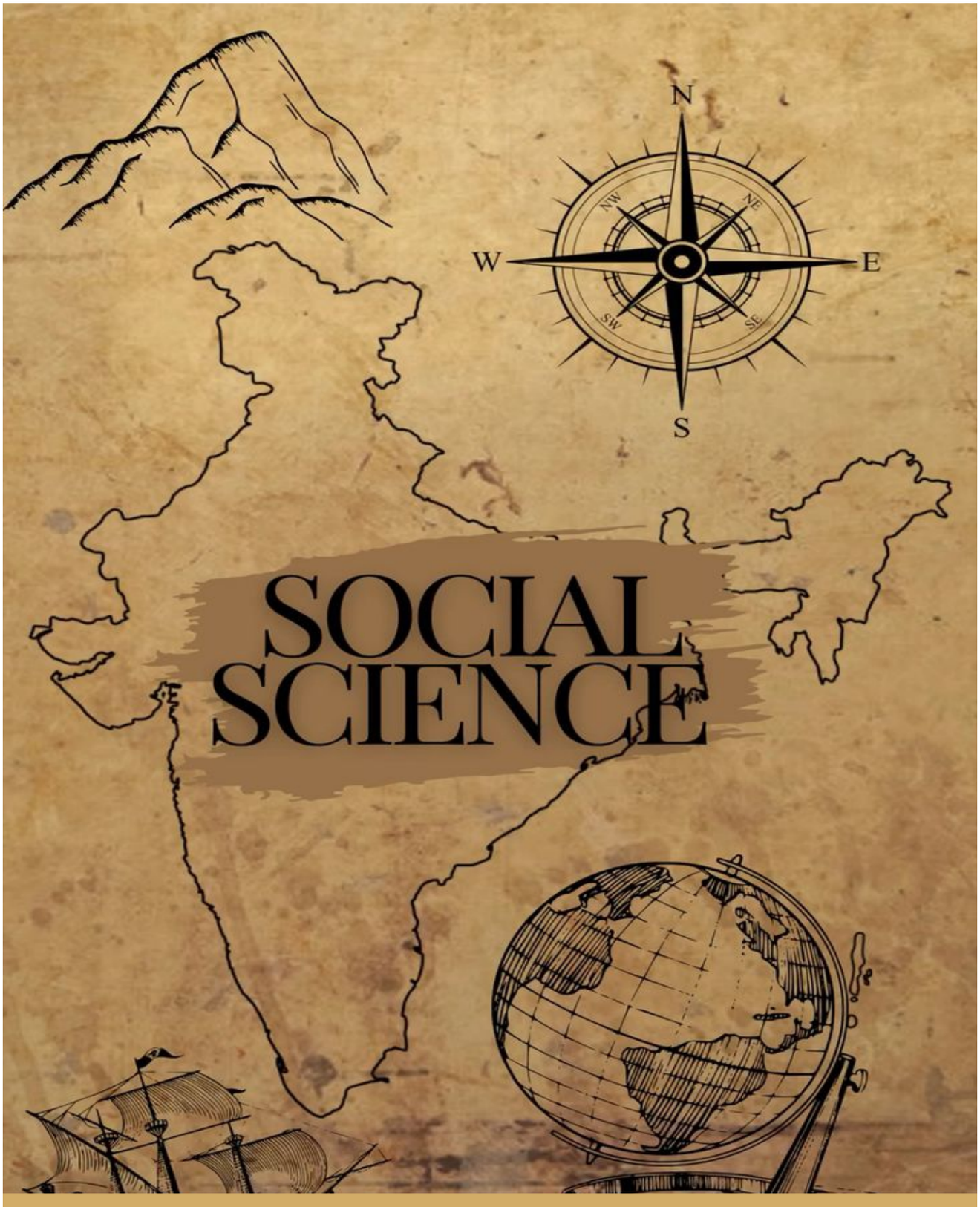

Lavanya
BA Sem IV
Student Editor

Prof. Surinder Kumar
Section Editor

Message From the Editor

As editor of the social science section of the magazine, I am highly delighted to present this section which serves as a platform for the students and faculty to submit their Research, opinions and perspectives on diverse problems and challenges facing the society.

It will certainly promote academic discourse and critical thinking on social science topics relevant to the society. I believe that such type of critical analysis and thoughtful ideas are essential for a healthy civic society.

As editor of this section my sincere gratitude to all the contributors for their efforts wrapped with sincerity, hard work and dedication.

Prof. Surinder Kumar
Head, Dept. of Pol. Sci.

Message from Student Editor

Contemporary Foreign Policy of India : A Vision for Global Leadership

India's foreign policy is defined by its strategic autonomy, pragmatic alliances, and active engagement in global governance. As the world's most populous nation and one of the largest economies, India is asserting itself as a key player on the global stage.

A core component of India's foreign policy is its "Act East" and "Neighborhood First" policies, aiming to strengthen ties with Southeast Asia and its immediate neighbors. India is expected to deepen its economic and diplomatic ties with ASEAN countries, enhancing regional trade agreements and security cooperation, especially in the Indo-Pacific region. India's leadership in multilateral organizations, like the United Nations and the G20, continues to expand, advocating for reforms in global governance and pushing for greater representation for developing nations.

Furthermore, India's commitment to climate action and renewable energy transition will guide its foreign policy, fostering partnerships with countries to address climate change, technology, and sustainable development. India's growing digital economy also presents opportunities for collaboration with nations on cybersecurity, data sharing, and technological advancements.

On security, India maintains a strong defense posture, balancing strategic ties with major powers like the United States, Russia, and Japan while maintaining its independent stance. India continues to advocate for a multipolar world order, emphasizing peaceful coexistence and diplomatic solutions to global conflicts.

In summary, India's foreign policy reflects its aspirations to lead on global issues while safeguarding its national interests through pragmatic diplomacy and multilateral engagements.

Lavanya

BA Sem IV

FUTURE ASPECTS OF INDO - PAK RELATIONS

The future of India and Pakistan, two neighbouring nations with a complex history, will be shaped by political relations, economic growth, and regional stability. While their shared past is marked by conflicts and border tensions, there is potential for improved diplomatic ties through dialogue and cooperation.

Economic development will play a crucial role in shaping their futures. India, with its rapidly growing economy and technological advancements, is poised to become a global economic powerhouse. Pakistan, with its strategic location and emerging markets, has the potential to strengthen its economy through reforms and investments. If both nations prioritize trade and economic collaboration, they could unlock immense benefits for their people.

Security concerns, especially regarding terrorism and border disputes, remain significant challenges. However, diplomatic efforts and confidence-building measures can lead to peaceful coexistence. Organizations like SAARC (South Asian Association for Regional Cooperation) and global powers can facilitate dialogue to reduce tensions.

People-to-people connections, including cultural exchanges and sports diplomacy, can also foster goodwill. The youth in both countries, driven by aspirations for progress, can push for peace and development over hostility.

The future of India and Pakistan depends on leadership decisions, regional stability, and the will to prioritize prosperity over conflict. A cooperative approach could lead to a brighter future, while continued tensions may hinder growth. The path they choose will determine not only their destinies but also the stability of South Asia. For better relations , Pakistan has to contribute more to stop their mischievous polices .

Arshpreet Kaur

BA Sem III

From Lahore to Exile: The Tragic Saga of Maharaja Duleep Singh

The Last Sikh emperor, Maharaja Duleep Singh, had a life filled with betrayal, uprooting, and lost dominion. From the splendor of Lahore to a solitary exile in England, his odyssey exemplifies the terrible results of British colonial expansion and the elimination of indigenous leadership. After his predecessors were assassinated, Duleep Singh was crowned as a youngster and became only a pawn in Punjab tumultuous political system. When the British seized the Sikh Empire after the Anglo-Sikh Wars (1845–1849), Governor-General Lord Dalhousie planned his forced abdication. His mother, Maharani Jindan Kaur, parted from him when he was eleven years old, and he was brought to Fatehgarh, where he was gradually cut off from his lineage and converted to Christianity. Upon his arrival in England, he became a colonial spectacle, being escorted before British dignitaries as the “Black Prince of Perth shire.” Duleep Singh became aware of the unfairness of his banishment after re-establishing contact with his mother after years had passed. He tried to recover his lost kingdom and his Sikh identity after becoming disillusioned with British control. His final years in Paris were spent in financial ruin and political isolation, nevertheless, as British monitoring continually blocked his attempts to return to Punjab.

The terrible story of Duleep Singh perfectly captures the anguish of colonial oppression. His journey echoes the larger fight against imperial rule, and despite having lost his empire, faith, and identity, he continues to stand as a moving symbol of a stolen throne and a broken history.

Navpreet Kaur

MA (History) Sem II

Punjab and the Revolt of 1857: A Region of Loyalty and Rebellion?

The Revolt of 1857, also known as India's First War of Independence, elicited a range of regional reactions, with Punjab serving as a place of both insurrection and British allegiance. Though pockets of resistance arose, exposing the province conflicting allegiances, Punjab remained primarily under British rule, in contrast to areas like Awadh and Delhi, which had widespread uprisings. Punjab having been seized by the British following the Anglo-Sikh Wars (1845–1849), and its ruling class, which included former Sikh nobility, found themselves in a submissive position. The British, however, incorporated a large number of Sikh and Punjabi Muslim men into their army out of concern about additional unrest. These troops were instrumental in quelling rebellions in Delhi and other northern areas when the 1857 insurrection broke out, enhancing Punjab reputation as a bastion of British allegiance. In spite of this, there were pockets in Punjab where rebellion simmered. Local rebellions against British rule were spearheaded by individuals such as Rai Ahmad Khan Kharal in modern-day Pakistan, demonstrating the enduring dissatisfaction of peasants and tribal chiefs. Furthermore, some Sikh factions saw the uprising as a chance for comeback because they were bitter at the fall of the Sikh Empire, especially those who were disenchanted with British policies.

Punjab reaction to 1857 was influenced by regional power dynamics, strategic alliances, and its recent colonial domination. Undercurrents of insurrection highlighted Punjab divided political environment, even though the British were able to win military assistance from the state. The conflicting narratives of resistance and devotion continue to influence Punjab 1857 historical memory.

Kawaljit Kaur

MA (History) Sem II

Guru Nanak's Vision of Gender Equality: A Revolutionary Stand

Guru Nanak Dev ji is considered to be founder of Sikhism. The condition of women at the advent of Guru was pitiable. They were leading a life less than the humans. Many social customs had been devised to keep women under the thumb of men. Guru Nanak was deeply pained to see the ill treatment being meted out to female. He proclaimed their equality, emphasizing their vital role in both spiritual and social spheres. As a first step towards fulfillment of mission, the Guru raised a powerful voice in favour of the mothers of humanity. He unequivocally condemned the low status given to the woman of his time and said: In Asa Di Var :

Of woman are we born, of woman conceived. To woman engaged and married. Woman are befriended, by woman is the civilization continued. When woman dies, woman is sought for. It is by woman that the entire social order is maintained. Then why call her bad? From her Kings are born.'

Guru Nanak emphasized the importance of treating women with respect, dignity, and equality. He encouraged women to participate in social and religious activities, engage in trade, commerce, and other economic activities. His vision was also reflected in practical reforms, such as the institution of langar, where men and women served together, breaking hierarchical and gender-based divisions. Guru Nanak Dev Ji vision of gender equality was revolutionary for his time. His revolutionary stand laid the foundation for a more inclusive society, inspiring generations to challenge discrimination and advocate for women's rights.

Muskan Verma

MA (History) Sem IV

Gender, Trauma, and Politics: The Reign of Maharani Jindan in the Last Sikh Empire

Maharani Jindan Kaur, the last queen of the Sikh Empire, stands as a formidable figure in the history of South Asia. Her life was shaped by political turmoil, gendered resistance, and the trauma of colonial subjugation. As the wife of Maharaja Ranjit Singh and the mother of the last Sikh ruler, Duleep Singh, she defied patriarchal norms and emerged as a key political strategist during the empire final years. After Ranjit Singh's death in 1839, the Sikh Empire faced internal strife and external threats. Jindan, acting as regent for her young son, played a crucial role in state affairs, resisting British expansionist policies. However, her defiance was met with systematic attempts to discredit and undermine her authority. The British vilified her as a seductress and an unfit ruler, using gendered rhetoric to justify their intervention. Following the annexation of Punjab in 1849, she was forcibly separated from her son, imprisoned, and later exiled—a calculated effort to erase her political influence. Jindan story perfectly captures how trauma, gender, and imperial politics are intertwined. She defied colonial control by fleeing captivity, applying for asylum in Nepal, and eventually reconnecting with Duleep Singh in England, despite incurring enormous personal and political sacrifices. Her story shows the tenacity of female leadership in the face of patriarchal and imperial forces, challenging the exclusion of women from historical narratives. Maharani Jindan is still seen as a symbol of resistance, and conversations about gender and power in colonial history are still sparked by her legacy.

Pawanjeet Kaur
MA (History) Sem II

Biography of Rani Lakshmi Bai

Rani Lakshmi Bai, the Queen of Jhansi, was a brave and fearless leader in India's fight against British rule. She was born on November 19, 1828, in Varanasi and was named Manikarnika. After marrying the King of Jhansi, Raja Gangadhar Rao, she became known as Rani Lakshmi Bai. When her husband died in 1853, the British tried to take over Jhansi by using the Doctrine of Lapse, which meant they could claim the kingdom since the king had no biological heir. Rani Lakshmi Bai did not accept this and decided to fight for her kingdom. In 1857, during the First War of Indian Independence, she led her soldiers to defend Jhansi from the British. She was a strong and skilled leader who fought bravely, riding into battle on horseback with a sword in her hand. Her courage inspired many people to join the fight for freedom. Even though the British eventually captured Jhansi after a long siege, Rani Lakshmi Bai did not give up. She continued to fight and moved to Gwalior, where she died on June 18, 1858, while fighting against the British soldiers. Rani Lakshmi Bai is remembered as a symbol of bravery and resistance. Her courage and leadership in the face of difficult circumstances make her one of the greatest freedom fighters in Indian history. She remains an inspiration for us.

Anjali
MA (History) Sem II

The Revolutionary Spirit of Durga Bhabhi: An Inspiration for Women in Resistance

Durga Devi Vohra, also referred to as Durga Bhabhi, is still regarded as one of the most important but little-known leaders of India's independence movement. She broke social constraints to become an emblem of women's resistance and played a pivotal role in revolutionary actions against British rule as a close friend of Bhagat Singh and the Hindustan Socialist Republican Association (HSRA).

Her assistance in Bhagat Singh escape from British authorities following J.P. Saunders 1928 assassination was one of her most audacious efforts. She bravely accompanied Bhagat Singh and Rajguru from Lahore to Lucknow while posing as his wife and avoiding detection by the colonial police. In addition to saving Bhagat Singh, this heroic deed demonstrated the vital role that women played in the revolutionary cause. In 1930, in a show of defiance, Durga Bhabhi tried to kill a British officer, demonstrating her dedication to armed resistance. She was imprisoned and had to make personal sacrifices, yet she never wavered in her beliefs. After gaining independence, she decided to use knowledge to benefit society rather than pursue political prominence like many of her peers did.

Women around the world are still motivated by her legacy to fight for justice and freedom. She dispelled gender stereotypes and demonstrated that women actively participated in the struggle against oppression rather than merely acting as passive supporters. The enduring lesson that bravery and conviction are genderless is provided by Durga Bhabhi revolutionary spirit.

Karandeep Sharma
BA Sem VI

Partition of Punjab and Its Impact on Indian Cinema

The Partition of Punjab in 1947 was one of the most traumatic events in South Asian history, leading to mass displacement, communal violence, and lasting socio-political scars. This tragedy deeply influenced Indian cinema, shaping narratives, themes, and artistic sensibilities in post-independence filmmaking. The immediate aftermath of Partition saw an exodus of talent from Lahore—then a thriving center of the Indian film industry—to Bombay (now Mumbai). Stories of grief, resiliency, and longing were brought with prominent artists, actors, and film makers like Yash Chopra, B.R. Chopra, and Prithviraj Kapoor when they migrated. Their lives influenced movies that addressed issues of social cohesion, identity fragmentation, and exile. Films like *Dharmputra* (1961), *Garam Hawa* (1974), and *Pinjar* (2003), which frequently focused on exile, religious intolerance, and split families, powerfully captured the human cost of Partition. In addition to narrative, partition affects the aesthetics of films. Filmmakers employed somber tones, poetic discourse, and striking imagery to portray the emotional turmoil of the era. The influx of immigrants in Bombay also altered the film industry by adding new perspectives to well-known stories. While mainstream cinema has usually avoided direct political engagement with the trauma of Partition, parallel and art-house films have often addressed it. Decades later, the consequences of Partition may still be seen in Indian cinema, which reflects memories of the past, unsolved problems, and the ongoing quest for peace.

Kartik Sharma
MA (History) Sem II

INDIA AS A WORLD PEACE LEADER

India, the world's largest democracy and a land of diverse cultures, has long been an advocate for global peace and harmony. Rooted in the principles of non-violence (Ahimsa) and coexistence, India has played a pivotal role in shaping diplomatic relations, mediating conflicts, and promoting sustainable development. As the world grapples with geopolitical tensions, environmental crises, and economic inequalities, India's commitment to peace is more relevant than ever. India's role as a peace leader is deeply embedded in its history. Ancient Indian philosophy, particularly the teachings of Buddhism and Jainism, emphasizes non-violence and mutual respect. Mahatma Gandhi, the father of the nation, furthered these values by championing non-violent resistance against colonial rule. His ideology influenced global movements, inspiring leaders like Martin Luther King Jr. and Nelson Mandela in their struggles for justice. India has consistently championed diplomacy over aggression. As a founding member of the Non Aligned Movement (NAM), India has historically advocated for peaceful coexistence among nations, especially during the Cold War era. More recently, India has played an active role in mediating conflicts in South Asia, the Middle East, and Africa. Through diplomatic channels, it has facilitated peace talks between warring factions and supported United Nations (UN) peacekeeping missions, with thousands of Indian troops serving in conflict-ridden regions. India actively participates in international forums such as the UN, G20, BRICS, and the Shanghai Cooperation Organization (SCO) to promote dialogue and conflict resolution. India's advocacy for reforms in global governance structures, such as its push for a permanent seat in the UN Security Council, underscores its commitment to a fairer and more inclusive world order. Beyond diplomacy, India promotes peace through economic collaboration and humanitarian aid. As a key player in South-South cooperation, India extends development assistance to nations in need, fostering stability and prosperity. Initiatives like the International Solar Alliance (ISA) and its leadership in climate action highlight India's dedication to sustainable development, an essential pillar of lasting global peace. India's rich cultural heritage and spiritual traditions serve as instruments of peace diplomacy. Yoga, Ayurveda, and Indian classical arts have gained global recognition, fostering cross-cultural understanding. The government's emphasis on cultural exchanges, education partnerships, and people-to-people diplomacy enhances India's soft power influence. While India has made significant strides in peace leadership, challenges remain. Border tensions, regional conflicts, and emerging security threats require a balanced approach that upholds sovereignty while advocating for peaceful solutions. Strengthening alliances, investing in technology driven peace efforts, and continuing humanitarian missions will further solidify India's global role. India's long-standing philosophy of peace, its active diplomatic engagements, and its commitment to global stability position it as a true leader in world peace. By combining its ancient wisdom with modern diplomacy, economic growth, and cultural influence, India continues to inspire and guide the world toward a more peaceful and just future. As the global landscape evolves, India's voice in fostering peace and cooperation remains indispensable.

Parneet Kaur
BA Sem IV

One Nation One Election

India, the world's largest democracy and the fastest growing economy with 28 States, 8 Union territories and nearly 97 crore eligible voters, constantly observe elections at different times and in different parts of India. This is because India's democracy operates on multiple levels with each level having its own election cycle, For example: We have General election to choose Members of Parliament, State Elections to elect State Legislators, Local Body Election for Local Governance and due to this India, Remains in Election Mode almost the entire year creating a pressure on Election Machinery and Officials. To avoid this Problem the One Nation One Election ensures to have a sync in Election system of India.

However, the concept of Simultaneous election is not a new idea as from 1951 to 1967, Elections of all State Assemblies and Lok Sabha were conducted simultaneously but this cycle came to an end due to dissolution of some state Legislatives in 1968 and 69.

And from that time to till date it has become a debatable argument that "Does India need Simultaneous Elections?"

To answer this Question "The High-Level Committee" under the Chairmanship of Former President Shri Ram Nath Kovind Submitted its Report to Honorable President Droupadi Murmu.

The Report Presents the detailed overview of committees finding, its recommendations and advantages of this system after consulting with many experts and according to Report this system will help India Economically reducing Election cost and ensuring efficient use of resources creating a Stable Governance throughout the Country but also to achieve this Committee suggests that we would require significant Constitutional and Legal changes along with Coordination issues.

I believe that with proper legal Framework and Consensus, it would bring a New Era of Democratic Stability.

Harnoor

BA Sem VI

Roll No 11226

Katas Raj Temple: A Timeless Symbol of Faith and History

Hidden in the Salt Range of Punjab, Pakistan, the Katas Raj Temple is a place where history, mythology, and spirituality come together. Dedicated to Lord Shiva, this ancient temple complex has been a revered pilgrimage site for centuries, drawing devotees and historians alike.

Legends and History

According to Hindu mythology, the temple's sacred pond was formed from the tears of Lord Shiva, who wept endlessly after losing his wife, Sati. The site is also linked to the Mahabharata, as the Pandava brothers are believed to have spent part of their exile here. Another legend says that Lord Krishna established a Shiva Lingam at Katas Raj, adding to its divine significance. Over time, the temple attracted followers of different faiths. Guru Nanak, the founder of Sikhism, visited the site, and Maharaja Ranjit Singh, the great Sikh ruler, regularly came here for Vaisakhi celebrations. Before Partition in 1947, thousands of Hindus gathered annually for Maha Shivaratri, a tradition that still continues.

Architectural and Cultural Heritage

The temple complex showcases exquisite architecture, with square platforms, ribbed domes, and intricate carvings. Archaeologists have discovered prehistoric tools, pottery, and terracotta bangles, proving the area's ancient past. More than just a religious site, Katas Raj Temple is a living testament to the region's shared history and cultural richness, standing as a symbol of devotion, resilience, and unity through the ages.

Anjali Dhawan
MA (History) Sem II

The Last Great Punjabi Sovereign: Ranjit Singh's Legacy in Modern Punjab

The “Lion of Punjab,” Maharaja Ranjit Singh (1780–1839), is still regarded as one of the most significant individuals in Punjab history. Under his leadership, the Sikh Empire was founded, and the political, cultural, and social identity of contemporary Punjab was created.

Religious tolerance, administrative effectiveness, and military might were hallmarks of Ranjit Singh rule (1801–1839). In contrast to earlier leaders, he promoted a secular state and appointed Sikhs, Muslims, and Hindus to important positions. His inclusive leadership fostered harmony in Punjab, a lesson that is still applicable in the current socio-political environment.

He made Punjab an affluent region by promoting trade and enacting tax changes. His expenditures on roads, forts, and irrigation systems were among the many infrastructure projects that greatly aided Punjab's commercial and agricultural prosperity. The gilding of the Harmandir Sahib (Golden Temple), which is the best example of his support for education, the arts, and architecture, serves as an inspiration for cultural preservation in contemporary Punjab.

His well-trained military and forces with European training protected Punjab from outside threats. His calculated diplomacy preserved Punjab's independence for many years, in sharp contrast to the area's subsequent British domination.

Ranjit Singh impact can be seen in the current discussions in Punjab about regional identity, religious peace, and governance. His leadership style provides insightful information about fostering community cohesion and effective government. Punjab continues to be guided by the principles of its last great ruler as it faces contemporary problems.

Gursharan Singh
BA Sem VI

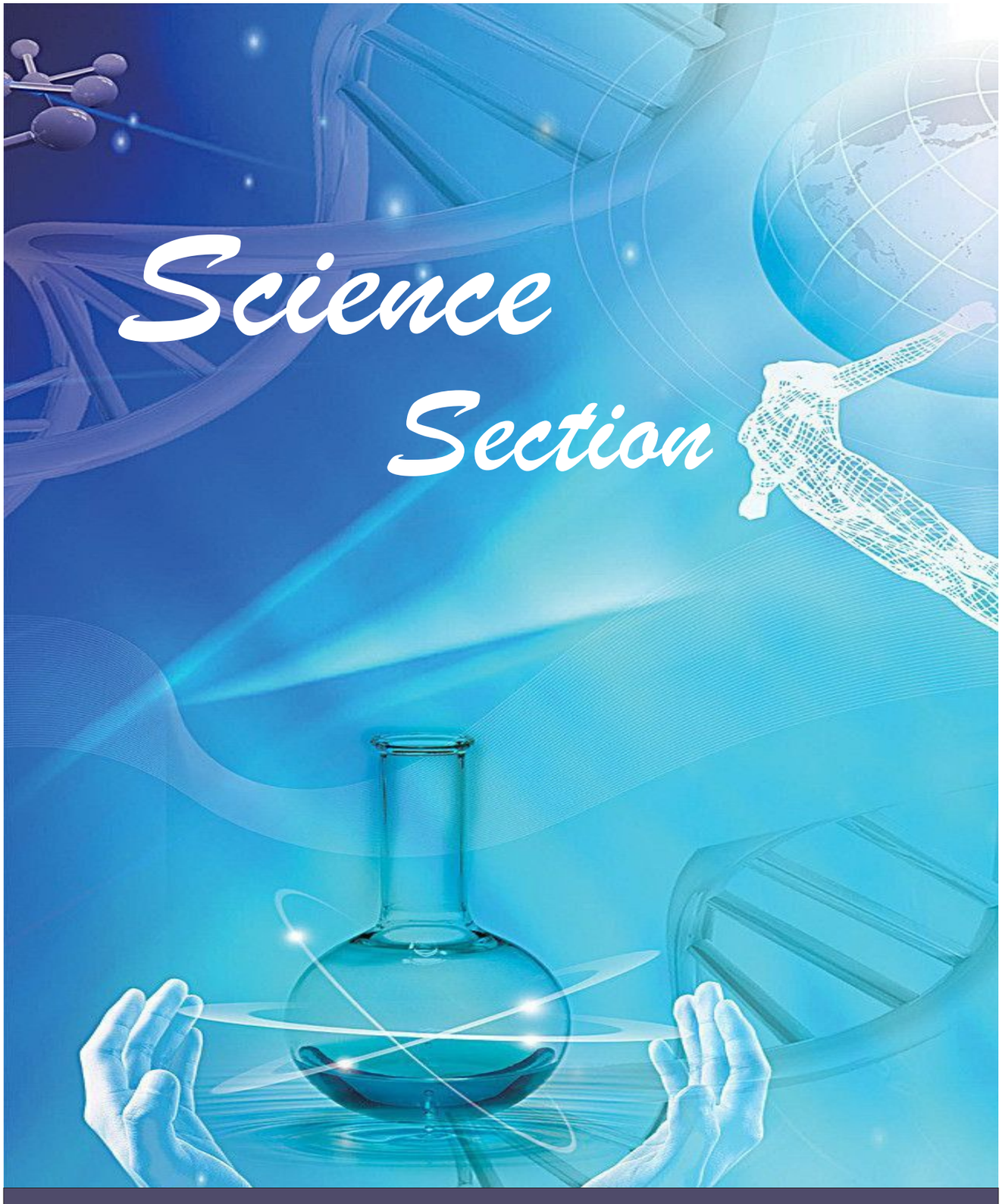

Srishti Chadha
B.Sc. (Med) IV
Student Editor

Dr. Rajni Khanna
Section Editor

Message From the Editor

It gives me immense pleasure to pen down this message for the forthcoming edition of the College Magazine - Indradhanush. The College Magazine showcases the creative and insightful thoughts and ideas of the students. Being editor of the science section, I feel that in the present era of fast spreading knowledge through various tools of Information Technology and social media platforms, the need to pen down original write ups in various fields of science is very important. Over the years, the students have taken through many other routes to express their creative instincts but we must not forget that writing makes a perfect man.

I appreciate the efforts of budding scientists, writers and scholars who have tried to contribute original and innovative articles for the Indradhanush. I take this opportunity to express my heartfelt gratitude to the Administration for considering me section editor of science and reposing faith in my abilities which has further enriched my mind with new exposure by way of student imagination. The teachers who have guided, motivated & encouraged the students in their "out of the box' thinking, deserve my special gratitude as mentors always play crucial role in accomplishing goals of the disciples.

I wish a happy reading to all the students and hope that more and more students will feel encouraged to contribute their articles to further enrich the Indradhanush.

Dr. Rajni Khanna
Head, Department of Zoology

From Student Editor

Why Science Matters in Our Lives

Have you ever wondered how your phone works, why the sky is blue, or how doctors cure diseases? The answer to all these questions lies in science! Science isn't just a school subject—it's the reason behind almost everything around us. As students, understanding science isn't just about getting good grades; it helps us think smarter, solve problems, and make a difference in the world.

Science in Everyday Life

Think about your morning routine. The toothpaste you use, the clean water you drink, and even the alarm clock that wakes you up—all exist because of science. From cooking food to watching TV, science makes our lives easier and more exciting.

Science Makes Learning Fun

Science is all about curiosity. It helps us ask questions like: Why do we get sick? How do airplanes fly? What's inside a black hole? Subjects like physics, chemistry, and biology let us explore these mysteries and discover new things about the world.

Science and Technology: Changing the World

Imagine a world without the internet, smartphones, or electricity—pretty hard, right? Science and technology have transformed our lives in ways we can't even imagine. New inventions, like self-driving cars and space travel, prove that science is constantly pushing the limits of what's possible.

Science Can Save the Planet

Science isn't just about cool gadgets; it's also about protecting the Earth. Scientists help us find solutions to pollution, climate change, and diseases. Thanks to science, we have solar energy, electric cars, and vaccines that keep us safe from deadly viruses.

The Future is in Our Hands

The best thing about science is that anyone can be a scientist! Every discovery starts with a simple question and a curious mind. So, whether you dream of becoming a doctor, engineer, astronaut, or environmentalist, science is your key to making a difference.

Science is all around us, shaping our present and future. Let's keep exploring, questioning, and discovering—because the world needs more young scientists like us!

Srishti Chadha
BSc Med IV
Roll No 6204

Phytoremediation

The term Phytoremediation comes from the prefix 'phyto-' which means 'plant' and the suffix '-remediation' meaning 'reversal of damage'. Phytoremediation is the use of plants to clean up polluted environments. It aims to retain contaminants in the soil and prevent further dispersal. This technology uses living plants to clean up soil, air, and water contaminated with hazardous materials. This is a very eco-friendly method to clean the environment, causing zero damage to the surroundings. Even proposed as a cost-effective plant-based approach of environmental remediation that takes advantage of the ability of plants to concentrate elements and compounds from the environment and to detoxify various compounds without causing additional pollution. Toxic heavy metals can also be degraded as these organic pollutants, making the water clean to use. Not only this, it provides fertility to contaminated soil and prevents aquatic life by absorbing harmful chemicals from the water.

Its Advantages:

i) It is economically feasible — Phytoremediation is an autotrophic system powered by solar energy; simple to manage, and the cost of installation and maintenance is low.

ii) Environmental and eco-friendly — It can reduce exposure of the pollutants to the environment and ecosystem.

iii) Applicability — It can be applied over a large-scale field and can easily be disposed of.

iv) It prevents erosion and metal leaching through stabilizing heavy metals, reducing the risk of spreading contaminants.

v) It can also improve soil fertility by releasing various organic matters to the soil.

Role of People:

People can promote phytoremediation using plants for environmental clean-up by supporting research, educating others about its benefits, and advocating for its integration into urban planning and environmental remediation strategies. Using local plant species for phytoremediation can ensure its effectiveness, and they are more likely to be adapted to the local environment.

Plant species used in Phytoremediation:

* Indian mustard (Brassica juncea):A fast growing plant with high biomass production making it more effective for metal phytoextraction.
* Willows (Sallix spp.): Deciduous plants known for their tolerance to toxins and pollutants and their ability to absorb contaminants from water.
* Water hyacinth (Eichhornia crassipes): A fast growing aquatic plant that can effectively remove pollutants from water, including heavy metals.
* Sunflower (Helianthus annuus): A high biomass crop that can be used for phytoremediation of polluted lands.
* Cottonwoods (Populus deltoids): Can absorb a wide range of toxins.
* Ferns (Pteris vittata): Has the ability to remove arsenic from soil and water.

Conclusion:

We all are aware of the increase in pollution day-by-day. So, through this article, I want people to know about this technique of reducing pollution from our surroundings. This technique doesn't need any big settlement of machines and isn't costly. It is the cheapest way using just some species of plants which are mentioned above . It also causes greenery in our surroundings, making it more pretty. Growing of plants can never cause damage to living beings but have more and more benefits which a person cannot even count on their fingers.

Liza Maini

B.Sc (Medical) Sem IV

Borates as Dosimetric Materials in Heavy Ion Beam Cancer Therapy

Introduction

Cancer treatment has advanced significantly with the development of radiation therapy techniques. One such promising approach is heavy ion beam irradiation, which uses high-energy charged particles to target cancerous cells with extreme precision. Among the materials explored for enhancing this technique, borate compounds containing boron and oxygen have shown significant potential. Their unique properties make them effective in improving the efficiency and safety of ion beam therapy.

Heavy ion therapy uses high-energy ions, such as carbon or boron ions, to penetrate deep into tissues and precisely destroy cancer cells. Unlike conventional X-ray radiation, which can damage surrounding healthy tissues, heavy ion beams deposit their energy primarily at the tumor site, following the Bragg peak phenomenon. This allows for better tumor targeting with minimal side effects.

Boron-based compounds, particularly borates, are useful in boron neutron capture therapy (BNCT), a complementary cancer treatment due to their high boron content. They show enhanced energy deposition due to high cross-section for neutron capture, leading to localized cell damage upon irradiation and exhibit improved biocompatibility. Certain borate compounds exhibit low toxicity and can be incorporated into targeted drug delivery systems.

Applications of Borates in Cancer Therapy

Borates are used as dosimeters due to their ability to record and measure radiation exposure. Certain borate compounds, like lithium borate and potassium borate, can trap charge carriers when exposed to ionizing radiation. These trapped charges can later be released as luminescence upon heating (thermoluminescence), allowing the measurement of radiation dose. Their sensitivity, stability, and low fading make borates suitable for personal and environmental dosimetry

1. Boron Neutron Capture Therapy (BNCT)

BNCT is a two-step cancer treatment where boron-containing compounds selectively accumulate in tumors before being irradiated with low-energy neutrons. The neutron-boron reaction produces high-energy alpha particles, which selectively destroy cancer cells without harming surrounding tissues. Borates serve as effective boron carriers in this therapy.

2. Synergy with Heavy Ion Therapy

Recent research suggests that integrating borates into heavy ion beam therapy could further enhance its effectiveness. Some proposed applications include:

Borate-Infused Targeting Agents: Boron-containing nanocarriers can increase the efficiency of heavy ion beams by selectively binding to cancer cells.

Radiation Sensitization: Borates may act as radiation sensitizers, improving ion beam penetration and energy deposition within tumors.

3. Use in Radiopharmaceuticals

Borates are being explored for use in radiopharmaceuticals, which help deliver therapeutic ions directly to tumors. This approach could revolutionize targeted cancer therapies by ensuring that heavy ions precisely attack cancerous tissues while sparing healthy ones.

Advantages of Heavy Ion Beam Therapy Compared to Proton Therapy, Radiotherapy Cancer treatments have evolved significantly, with various techniques like radiotherapy, proton therapy, and

chemotherapy being used to target tumors. However, heavy ion beam therapy has emerged as a superior alternative in several aspects due to its unique physical and biological properties. The comparative account is highlighted below:

Criteria	Heavy Ion Beam Therapy	Proton Therapy	Conventional Radiotherapy
Energy Deposition	More precise due to higher LET (Linear Energy Transfer)	Lower LET, leading to reduced biological effectiveness	Lower LET, making some tumors resistant
Effectiveness on Hypoxic Tumors	More effective against hypoxic (oxygen-deficient) tumors, which resist proton/ X-ray therapy	Less effective on hypoxic tumors	Respond poorly
Cell Killing Efficiency	Higher efficiency in damaging and killing cancer cells with fewer side effects	Moderate efficiency, sometimes requiring higher doses	More scattering, leading to higher radiation exposure to healthy tissues

Heavy ion beam therapy offers:

- Superior precision with minimal damage to healthy tissues
- Higher biological effectiveness, even on resistant or deep-seated tumors
- Fewer treatment sessions compared to conventional methods
- Reduced side effects, improving patient quality of life

While heavy ion therapy is more expensive and not widely available, it represents the future of cancer treatment with its unmatched efficiency and precision.

Future Prospects and Challenges

While borates show immense promise in heavy ion cancer therapy, further research is needed to:

- Optimize borate-based compounds for safe and effective use in humans.
- Develop efficient delivery mechanisms for targeted boron accumulation in tumors.
- Improve clinical accessibility and affordability of boron-enhanced ion therapy.

The integration of borates in heavy ion beam irradiation represents a cutting-edge advancement in cancer therapy. With ongoing research, borate-based treatments could significantly improve the precision, effectiveness, and safety of cancer radiation therapies, offering new hope for patients worldwide.

Prof. Ravi Sharma,
Associate Prof.,
PG Dept. of Chemistry

The Golden Age of Science Fiction

The early to mid 20th century saw the rise of what is known as the golden age of science fiction.

Many authors had a profound influence on the genre, formatting science fiction as a plot form for exploring humanity's hopes and fears about progress.

One of the key feature of golden Age science-fiction was its optimistic view of the future. Many of the stories from this era depicted space exploration as an exciting new frontier, with humanity poised to overcome its earthly limitation and Expand into the stars. Yet, as the genre evolved, this sense of optimism would be tempered by growing anxieties about technology's potential for destruction.

Armaanpreet Singh
B.Sc (Medical)

Topic - The Ethics of Artificial Intelligence

Artificial Intelligence (AI) has transformed various aspects of human life - from healthcare to finance to entertainment and transportation. While AI brings immense benefits, it also raises significant ethical concerns. The development and deployment of AI must be guided by ethical considerations to ensure that its impact on society is positive and just.

The essential ethical concerns related to AI include bias and fairness, privacy, accountability, job displacement, and the moral status of AI systems.

Primary ethical concerns arise from large datasets and if that data sub reflects human bias, the AI can perpetuate and even amplify them.

AI-driven technologies often rely on large amounts of personal data for decision-making. Companies and governments use AI for targeted advertising, facial recognition, and predictive analytics, raising concerns about privacy.

AI takes on crucial decision-making roles - such as in healthcare diagnoses, autonomous driving, and legal sentencing - posing serious questions about responsibility when something goes wrong.

Unlike human decision-makers, AI lacks accountability and the complexity of AI algorithms often makes it difficult to understand how decisions are made.

Automation has led to concerns about job displacement, particularly in industries where repetitive tasks can be replaced by machines. While AI increases productivity, it also widens economic inequality

Srishti Chadha
B.Sc (Medical) Sem IV

EXPERIMENT IS A LANGUAGE OF SCIENCE

Science is a systematic and logical approach to how things work in universe. It refers to a system of acquiring knowledge. It builds and organizes knowledge in the form of testable explanations and predictions about the universe. It is a way of thinking much more than it is a body of knowledge. Its well said that the science of today is the technology of tomorrow. This system uses observation and experiments to describe the natural world. In short we say Science is an organized knowledge and wisdom is an organized life.

Science had changed our life altogether. It has entered every sphere of our life. From an early age, man started to observe and experiment their own surroundings and tried to verify the cause and effects to learn the nature.Science is also described as the systematic classification of experiments. Science is a reasonable enterprise based on experimental evidence, criticism and national discussion. Experiments provide the knowledge of physical world and it is the experiment that provides the evidence which grounds that knowledge. Correct theories of nature are an important goal of science. Nevertheless experiments can also provide good reasons for believing in theories.

Diksha

B.Sc (Medical) Sem VI

Science: The key to a Better Tomorrow

Science is not just a subject we study in school or college;it is a part of our daily life. From the moment we wake up to the time, we go to bed, science is all around us. It has helped humans understand the world, new technologies and solve real life problems. **Biotechnology** is one of the most important fields today. It has led to life- saving vaccines, artificial organs and genetically modified crops that help feed the growing population . Without biotechnology. Modern medicine and agriculture wouldn't be the same. Physics explains how things work. from gravity to electricity . It has given us airplanes, mobile phones and even space exploration . Scientists are now using physics to develop quantum computers, which could change the future of technology.

Chemistry is everywhere in the medicines we take, the food we take we eat, and even the air we breathe. It helps in making fuels, plastics, and eco - friendly materials. Even the process of Cooking involves chemistry.

Data science and AI are transforming the world. AI can analyze huge amount of data, helping doctors diagnose diseases. improving business decisions, and even predicting the weather.

Environmental science is also crucial. Climate change and pollution are serious problems, and scientists are working on renewable energy like solar and wind power to protect the planet. # Science is about curiosity , creativity and solving problems. As students, we must ask questions, explore and innovate because the future depends on science!

Isha Verma

B.Sc (Biotechnology) Sem IV

The Study of Life Molecular Machines!!!

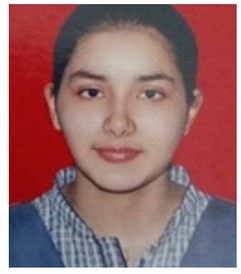

MOLECULAR BIOLOGY: Molecular Biology is the study of the structure, function, and interactions of biological molecules, such as DNA, RNA and proteins along with other biomolecules. This field of research has revolutionized our understanding of life and has led to numerous break throughs in field such as medicine, agriculture of biotechnology. The discovery of structure of DNA by James Watson of Francis Crick in 1953 marked the beginning of molecular biology as a distinct field. Since them, molecular biologists have made significant progress in understanding the mechanism of gene expression, protein, synthesis, and cellular signaling. They have also developed powerful tools and techniques, such as polymerase chain reaction (PCR), DNA sequencing, gene cloning which have enabled them to manipulate and analyze biological molecules with unprecedented precision. Today, molecular biology is a vibrant and dynamic field that continuous to advance our understanding of life and improve human health. Its application are diverse, ranging from genetic engineering of gene therapy to forensic science and personalized medicine. As researches continue to explore the intricacies of biological molecules of their interactions, molecular biology will undoubtedly remain a vital and exciting field of research.

Kashvi Sharma

B.Sc (Medical) Sem IV

The Importance of Medicinal Plants

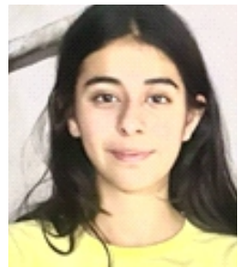

In today's world of advanced pharmaceuticals, medicinal plants remain essential for health and healing. For centuries, plants have been used to treat ailments, and many modern drugs still have their origins in nature. For instance, aspirin was derived from willow bark, and the cancer drug paclitaxel came from the Pacific yew tree.

Medicinal plants are rich in bioactive compounds like alkaloids, flavonoids, and terpenes that offer therapeutic benefits. These plants can help with pain relief, inflammation reduction, digestion, and infections. Aloe vera, for example, is well-known for soothing burns, while ginger alleviates nausea and reduces inflammation.

One of the greatest advantages of medicinal plants is their affordability. They can often be grown at home, providing an accessible, cost-effective alternative to expensive medications, especially in areas with limited access to healthcare. Additionally, many plant-based remedies come with fewer side effects compared to synthetic drugs. St. John's Wort, for example, serves as a natural remedy for depression with milder effects than pharmaceutical antidepressants.

Beyond their health benefits, medicinal plants also hold cultural and spiritual significance in various traditions. They are often used in rituals and are central to indigenous healing practices, offering a holistic approach to well-being.

As interest in natural remedies grows, the integration of medicinal plants into modern healthcare is becoming more prominent, blending traditional wisdom with contemporary medicine.

Himanshi Sharma

B.Sc (Med) Sem VI

Dark Matter Report

Introduction

Dark matter is a hypothetical form of matter that exists in the universe but has not been directly observed. Its presence can be inferred through its gravitational effects on visible matter and the large-scale structure of the universe. Despite extensive research, dark matter's nature remains one of the biggest mysteries in modern astrophysics.

History of Dark Matter

The concept of dark matter dates back to the 19th century. Modern understanding began to take shape in the 1970s with the work of astronomers like Vera Rubin and Kent Ford. The term "dark matter" was first coined by Swiss astrophysicist Fritz Zwicky in the 1930s.

Properties of Dark Matter

Dark matter makes up approximately 27% of the universe's total mass-energy density. It's believed to be composed of weakly interacting massive particles (WIMPs) that interact with normal matter only through the weak nuclear force and gravity. Dark matter's presence is also thought to play a crucial role in the formation and evolution of galaxies.

Evidence for Dark Matter

Evidence includes:

- Galactic rotation curves
- Galaxy clusters and the cosmic web
- Large-scale structure of the universe
- Cosmic microwave background radiation

The observation of these phenomena has consistently pointed to the existence of dark matter, despite its elusive nature.

Theories and Models

Theories and models proposed to explain dark matter include:

- WIMPs (Weakly Interacting Massive Particles)
- Axions
- Sterile Neutrinos

These theories and models attempt to explain the properties and behavior of dark matter, but a consensus has yet to be reached.

Conclusion

Dark matter is a mysterious component that makes up approximately 27% of the universe's total mass-energy density. Further research is needed to uncover its properties and behavior. Ongoing and future experiments, such as the Large Underground Xenon (LUX) experiment, aim to detect dark matter directly.

References

(Bertone & Hooper, 2018; Rubin, 1978; Clowe et al., 2006)
(Freese, 2017; Ade et al., 2016)

Anubhav Devgan

B.Sc (Computer Science) Sem VI

Genetically Modified Organisms:

Genetically Modified Organisms (GMOs) are organisms whose genetic material has been altered through the use of modern biotechnology techniques. These alterations are made to enhance the organism's desired traits or introduce new ones. While GMOs have been widely used in agriculture, medicine, and industry, their benefits and risks have been the subject of ongoing debate.

One of the most common applications of GMOs is in agriculture, where they have been used to improve crop yield, reduce the need for chemical pesticides, and enhance food security. Some of the most popular GMO crops include:

1. Bt Crops: These are genetically engineered to express a protein from the bacterium Bacillus thuringiensis that is toxic to certain pests. This reduces the need for chemical insecticides.

2. Herbicide-resistant Crops: Crops like glyphosate-resistant soybeans and cotton have been developed to withstand herbicides that would normally kill them. This makes weed management easier for farmers.

3. Golden Rice: This genetically modified rice contains a gene that enables it to produce beta-carotene, a precursor to Vitamin A. It was developed to address Vitamin A deficiencies in developing countries.

BENIFITS

1. Increased Agricultural Productivity: GMOs have been shown to increase crop yields by making plants more resistant to pests, diseases, and environmental stressors.

2. Reduced Use of Chemicals: With pest-resistant or herbicide-tolerant crops, farmers can use fewer pesticides and herbicides, which is beneficial for both the environment and human health.

3. Enhanced Nutritional Content: GMOs like Golden Rice offer the potential to address malnutrition in developing countries by improving the nutritional profile of staple foods.

4. Medical Advancements: GMOs have revolutionized the production of medicines, such as insulin and vaccines, making them more affordable and accessible.

Despite the benefits, there are several concerns associated with GMOs:

1. Health Risks: Some critics argue that GMOs could cause unintended health problems, such as allergic reactions or the transfer of antibiotic resistance. However, the scientific consensus is that GMOs currently on the market are safe to eat.

2. Environmental Impact: There are concerns that GMOs could negatively affect biodiversity. For example, genes from GM crops could potentially spread to wild relatives, creating hybrid plants with unknown environmental consequences.

3. Corporate Control: Large biotech companies, such as Monsanto (now part of Bayer), dominate the GMO market. Critics argue that this leads to monopolies and the concentration of power in the hands of a few corporations, which can affect seed prices and farming practices.

4. Ethical Issues: There are also ethical concerns about genetic modification, particularly in animals. Some argue that it is unnatural or inhumane to genetically modify animals for food production or research.

Himani Gupta

B.Sc (Medical) Sem IV

GENETIC BREAKTHROUGH IN INDIA: A NEW ERA IN DISEASE TREATMENT'

“Genes are like the story, and DNA is the language that the story is written in.” -Sam Kean

Recent genetic advancements are revolutionizing disease treatment in India. Gene therapy, CRISPR-Cas9 technology, and personalized medicine offer new possibilities for curing genetic disorders, cancers, and chronic diseases.

Gene therapy is showing promise for conditions like thalassemia and hemophilia. Institutions such as IIT Delhi are working on techniques to correct the defective gene responsible for thalassemia, while the Institute of Life Sciences in Bhubaneswar has conducted successful trials for inherited retinal diseases. These innovations bring new hope for patients with previously limited treatment options.

CRISPR-Cas9, a gene-editing tool, is being explored by researchers at the Indian Institute of Science to treat genetic diseases like sickle cell anemia. This technology allows scientists to precisely edit the DNA to correct mutations, providing the potential for curative treatments. Although there are concerns about precision and ethics, CRISPR research is advancing rapidly in India.

Personalized medicine, which tailors treatments based on genetic makeup, is also gaining momentum in India. The National Institute of Biomedical Genomics is researching how genetic profiling can lead to more effective cancer treatments, while pharmacogenomics helps customize medications for diseases like diabetes and epilepsy. These advancements are improving treatment outcomes and reducing side effects.

India's biotechnology sector, supported by initiatives like the Biotechnology Industry Research Assistance Council (BIRAC), is positioning the country as a leader in genetic medicine. While challenges related to accessibility and ethics remain, these innovations hold great promise for better disease management and potential cures in the future.

References:

“Gene Therapy for Thalassemia: Progress and Challenges in India." Indian Journal of Hematology and Blood Transfusion, 2023.

Sahoo, S., et al. "CRISPR-Cas9 Mediated Gene Editing for Genetic Disorders in India." Journal of Genetic Engineering and Biotechnology, 2022.

"Personalized Medicine and Cancer Treatment in India." National Institute of Biomedical Genomics, 2021.

Joya Talwar

B.Sc (Med) Sem VI

The Chemistry Behind DNA Testing in crime investigations

Imagine a crime scene where there are no witnesses and no clear suspects. In the past, solving such cases might have been nearly impossible . But today, thanks to DNA testing, even the tiniest clue - a stand of hair, a drop of blood or a fingerprint smudge - can help uncover the truth. DNA testing has transformed forensic science making it one of the most powerful tools in crime investigation. But how does it work? And why is it so reliable? And what is its role in solving crimes?

The Chemistry of DNA

DNA (Deoxyribonucleic acid) is a biochemical molecule that carries genetic information. It consist of double helix structure, with each strand composed of repeating units called nucleotides .

Each nucleotide contains: sugar molecule (deoxyribose), a phosphate group,one of four nitrogenous bases: adenine, thymine, cytosine or guanine.

1. Collection & Extraction of DNA :

Biological samples like blood, saliva, hair, or skin cells are collected. Chemicals like detergents and proteases (e.g., proteinase K) break open cells and release DNA . Organic solvents (e.g., phenol-chloroform) or silica-based columns are used to purify the DNA.

2. DNA Amplification – Polymerase Chain Reaction (PCR):

Since DNA at crime scene is often in small amounts, PCR is used to amplify (copy) specific regions of DNA. Key Chemicals in PCR are-

DNA Polymerase (Taq polymerase): Enzyme that copies.

DNA Primers: Short DNA sequences that target specific regions for amplification.

dNTPs (Deoxynucleotide Triphosphates): Building blocks for new DNA strands.

Buffer solutions: Maintain optimal conditions for the enzyme.

3. DNA Analysis – Short Tandem Repeats (STR) Profiling:

STRs are repeating sequences in DNA that vary among individuals. To analyse, fluorescent-labeled primers and capillary electrophoresis are used to separate DNA fragments by size. Electrophoresis Chemistry-

DNA is negatively charged and moves through a gel or polymer matrix.

Smaller fragments travel faster, creating a unique pattern for each person.

4. DNA Comparison & Interpretation:

The suspect's DNA profile is compared to crime scene evidence using probability calculations.

Statistical analysis determines the likelihood of a match.

5. Future advances in DNA chemistry:

Ongoing research is improving forensic DNA analysis with faster, more precise techniques-

Rapid DNA testing : New chemical reactions allow analysis in under two hours.

Mitochondrial DNA Analysis: uses chemical sequencing to analyse ancient or the degraded DNA.

Forensic Genealogy: combines chemistry and genetics to trace ancestral connections As forensic chemistry advances, DNA testing is becoming faster and more precise, helping solve crimes,exonerate the innocent and bring justice through molecular science.

Akanksha Kapoor

M.Sc (Chemistry) Sem II

Report on AI in personalized healthcare

Executive Summary:

AI is transforming healthcare, particularly in personalized medicine. By analyzing patient data, AI enables precise diagnoses, tailored treatments, and proactive health management. This report outlines current applications, benefits, challenges, and future potential of AI in personalized healthcare.

Introduction:

Personalized healthcare utilizes individual patient data for customized interventions. AI facilitates this by analyzing genetic, lifestyle, and medical history to move beyond generalized treatments.

Current Applications and Benefits:

AI enhances diagnostics and risk prediction through image analysis and data-driven risk assessments. It accelerates drug discovery and development by predicting efficacy and safety. AI optimizes treatment plans by analyzing patient responses and personalizing therapies. Continuous monitoring via wearables and AI platforms enables proactive management of chronic conditions. Personalized prevention and wellness are supported by AI-driven lifestyle recommendations. AI chatbots improve patient engagement.

Challenges and Ethical Considerations:

Key challenges include data privacy and security, algorithmic bias, lack of transparency, evolving regulatory frameworks, integration complexities, and ethical implications around consent and responsibility.

The Future of AI in Personalized Healthcare:

Expect more sophisticated diagnostics, truly personalized treatments, proactive healthcare approaches, seamless technology integration, and increased accessibility and affordability of healthcare.

Conclusion:

AI offers significant potential to revolutionize personalized healthcare, leading to more precise diagnoses, tailored treatments, and improved patient outcomes. Addressing challenges related to data and ethics is crucial. Continued development and adaptation of AI will transform healthcare towards a more patient-centric and data-driven future.

Sahildeep Singh

B.Sc (Medical) Sem VI

Microbes: Invisible Crusaders of Mother Nature

We often envision large-scale human efforts in activities like pollution control, recycling, reforestation and so on when we talk about environmental cleanup. However, the most powerful cleanup crew in nature are microbes. These tiny living organisms existing in colonies are ubiquitous in nature. They play an imperative role in maintaining ecological balance. These microscopic organisms comprise bacteria, fungi, protozoa and algae and are present in air, soil, water and even inside living organisms. Microbes are often misunderstood as being harmful but at the same time their contribution in sustaining life on earth cannot be overlooked. From breaking down pollutants to restoring contaminated ecosystems, microbes are nature's silent but effective crusaders.

Microbes- the invisible crusaders, play an extremely critical role in waste decomposition. The potential of microbes to break down complex substances into simpler compounds make them key players in environmental cleanup. Rapid industrialization and extensive use of agricultural practices has led to the tremendous increase in the heavy metal contamination in the environment. Microbes are helpful in heavy metal detoxification and eliminate toxic metals like arsenic (As), cadmium (Cd), chromium (Cr), lead (Pb), mercury (Hg) etc. by various mechanisms certain bacteria, such as *Bacillus* species, can adsorb heavy metals onto their cell surfaces through exopolysaccharide sequestration. Microbes like *Pseudomonas putida* and *Cupriavidus metallidurans* can accumulate heavy metals within their cells, reducing their concentration in the environment.

Plastic pollution is one of the most pressing environmental issues because of its persistence and potential adverse effects on ecosystems, human health and wildlife. Plastic-degrading microbes are specialized bacteria and fungi that can break down synthetic plastics into environmentally friendly byproducts. These microbes produce enzymes that digest plastic polymers, helping to reduce plastic pollution. Some notable examples include *Ideonella sakaiensis*, a bacterium that degrades Polyethylene Terephthalate (PET) using enzymes, and *Pseudomonas putida*, which can break down polyurethane (PU) and convert it into biodegradable compounds.

Oil spills are one of the most destructive forms of pollution, posing severe threats to marine ecosystems, wildlife, and local economies. Microbes play a vital role in cleaning up oil spills through a process called bioremediation. Certain bacteria, namely *Alcanivorax* and *Pseudomonas*, are known to break down the hydrocarbons in crude oil into innocuous substances like carbon dioxide and water.

Although microbes are invisible to naked eyes, their impact on the environment is undeniable. As nature's invisible warriors, they play essential role in cleaning up waste, break down of pollutants, and restoring balance to ecosystems. With further research and technological advancements, these microscopic cleaners could revolutionize environmental conservation, making our planet cleaner and healthier for future generations.

Dr. Pooja Sharma
Asst. Professor
Dept. of Biotechnology

The Wonders of Space Exploration

Space exploration is one of the most fascinating fields of science, helping us uncover the mysteries of the universe. It involves the study of celestial objects, such as planets, stars, and galaxies, using advanced technology like telescopes, satellites, and space probes. Scientists and astronauts work together to explore space, expanding our knowledge of the cosmos.

The History of Space Exploration

The journey into space began in 1957 when the Soviet Union launched Sputnik 1, the first artificial satellite. This marked the beginning of the Space Age. In 1961, Yuri Gagarin became the first human to travel to space, orbiting Earth in Vostok 1. This was followed by the famous Apollo 11 mission in 1969, when Neil Armstrong and Buzz Aldrin became the first humans to walk on the Moon.

Since then, space agencies like NASA, ESA (European Space Agency), ISRO (Indian Space Research Organisation), and private companies like SpaceX have continued exploring space. Scientists have sent rovers to Mars, launched telescopes like Hubble, and even discovered thousands of exoplanets—planets outside our solar system.

Major Discoveries in Space

Space exploration has led to groundbreaking discoveries. One of the most significant findings is the presence of water on Mars, suggesting that life may have existed there in the past. The study of black holes has also advanced, especially after the first-ever image of a black hole was captured in 2019. Scientists have also discovered new galaxies and stars, expanding our understanding of the universe.

Another exciting discovery is the possibility of habitable exoplanets. Telescopes like Kepler and James Webb Space Telescope are searching for Earth-like planets that could support life. These discoveries bring us closer to answering one of humanity's biggest questions: Are we alone in the universe?

Benefits of Space Exploration

Space exploration has brought many benefits to life on Earth. Technologies developed for space missions have led to advancements in communication, medicine, and daily life. For example, satellites help with weather forecasting, GPS navigation, and global communication. Medical imaging techniques, water purification systems, and even scratch-resistant lenses were developed thanks to space research.

Additionally, space exploration inspires scientific curiosity and innovation. It encourages young minds to study science, technology, engineering, and mathematics (STEM), leading to new inventions and discoveries that benefit society.

The Future of Space Exploration

The future of space exploration is exciting. Scientists and engineers are working on missions to Mars, with plans for human colonization in the coming decades. SpaceX and NASA are developing spacecraft to take astronauts to Mars, making interplanetary travel a real possibility.

There are also plans to build space stations on the Moon, which could serve as a base for future deep-space missions. Additionally, asteroid mining is being explored as a way to gather valuable resources from space.

As technology advances, space exploration will continue to push the boundaries of human knowledge. It holds the key to understanding our universe, finding new worlds, and ensuring the survival of humanity in the distant future.

Simar Gulati

B.Sc (Med) Sem VI

The Science of Sleep

Unlocking the Power of Rest Introduction Sleep is one of the most fundamental yet mysterious aspects of human life. We spend about one-third of our lives sleeping, yet many people neglect its importance. In today's fast-paced world, sleep is often sacrificed for work, study, or entertainment. However, science reveals that sleep is essential for cognitive function, physical health, emotional well-being, and even longevity. The Sleep Cycle: A Journey Through the Night Sleep is not a uniform state; it occurs in cycles, each lasting about 90 minutes, and consists of two main types: 1. Non-Rapid Eye Movement (NREM) Sleep Stage 1: A light sleep stage where the body starts to relax, and brain waves slow down. Stage 2: A deeper sleep stage where the heart rate slows, and body temperature drops. Stage 3 (Deep Sleep): The most restorative stage, crucial for muscle growth, immune function, and cellular repair. 2. Rapid Eye Movement (REM) Sleep Occurs about 90 minutes after falling asleep. The brain becomes highly active, and most dreaming occurs. Important for memory consolidation, learning, and emotional processing. Why Sleep Matters: The Science Behind It 1. Brain Function and Memory During sleep, the brain strengthens neural connections, consolidates memories, and clears out toxins. Studies show that sleep enhances problem-solving skills and creativity, making it essential for students and professionals alike. 2. Physical Health and Longevity Lack of sleep is linked to serious health issues, including heart disease, obesity, and diabetes. Sleep regulates metabolism, reduces inflammation, and strengthens the immune system, helping the body fight off infections and diseases. 3. Emotional Well-Being Ever noticed how lack of sleep makes you irritable? Sleep deprivation affects mood regulation and increases stress, anxiety, and depression. REM sleep, in particular, helps process emotions and maintain mental balance. The Dark Side of Sleep Deprivation Inadequate sleep can have severe consequences, including: Reduced concentration and memory loss Increased risk of accidents and injuries Weakened immune function Hormonal imbalances leading to weight gain Chronic sleep deprivation has even been linked to Alzheimer's disease due to the buildup of harmful proteins in the brain that would normally be cleared during deep sleep. Tips for Better Sleep Stick to a consistent sleep schedule, even on weekends. Limit screen time before bed to reduce blue light exposure. Create a comfortable, dark, and cool sleeping environment. Avoid caffeine and heavy meals before bedtime. Engage in relaxation techniques like meditation or deep breathing. Conclusion Sleep is not just about resting; it's about recharging the body and mind. Prioritizing sleep can improve memory, boost immunity, enhance mood, and even extend lifespan. In a world that celebrates productivity, let's not forget that true success starts with a good night's sleep. So tonight, put your phone away, dim the lights, and give your body the rest it deserves—you'll wake up healthier, happier, and ready to take on the world!

Prachy Sharma
B.Sc (Medical) Sem IV

Exploring the Mysteries of Black Holes: The Cosmic Giants

Black holes are among the most fascinating and mysterious phenomena in the universe. These dense regions of space, where gravity is so strong that nothing, not even light, can escape, have captivated scientists and astronomers for decades. While black holes were once considered theoretical curiosities, recent advancements in both observational technology and theoretical physics have brought us closer than ever to understanding these cosmic giants. In this article, we will delve into the nature of black holes, their formation, and the latest discoveries that continue to unravel their secrets.

What Are Black Holes?

At its core, a black hole is an object with an incredibly strong gravitational pull caused by the collapse of a massive star. When a star reaches the end of its life cycle and runs out of nuclear fuel, it can no longer support its own mass. This causes the star to collapse under its gravity, potentially forming a black hole. The point of no return around a black hole is known as the "event horizon." Once an object crosses this boundary, it cannot escape the black hole's gravitational pull.

Black holes are typically characterized by three key properties: mass, charge, and spin. The mass determines the size of the black hole, while its charge and spin affect its behavior and interaction with nearby matter. Despite being invisible, black holes can be detected through their effects on nearby objects, such as the bending of light or the motion of stars orbiting them.

Types of Black Holes

There are three primary types of black holes:

Stellar Black Holes: These black holes form from the collapse of massive stars. They typically have a mass between 3 and 10 times that of the Sun and can have event horizons with a radius of only a few kilometers.

Supermassive Black Holes: Found at the centers of most galaxies, including our own Milky Way, these black holes have masses ranging from millions to billions of solar masses. It is still unclear how these giants form, but they play a key role in galaxy formation and evolution.

Intermediate Black Holes: These black holes are thought to fall somewhere between stellar and supermassive black holes, with masses ranging from 100 to 1000 solar masses. Their existence is harder to confirm, but recent evidence suggests they may exist in certain regions of space.

The Life Cycle of a Black Hole

The formation of a black hole begins with the death of a massive star. As the star exhausts its nuclear fuel, the outward pressure from fusion reactions no longer balances the force of gravity pulling inward. The core collapses under its own weight, and the outer layers are ejected in a supernova explosion. If the remaining core is heavy enough, it will collapse further, creating a black hole.

Once formed, black holes can continue to grow by accreting (or pulling in) surrounding matter, such as gas, dust, or even stars. This process releases immense amounts of energy, particularly in the form of X-rays, which can be detected by telescopes. Black holes can also interact with other black holes, leading to phenomena such as binary black hole systems, where two black holes orbit each other.

The ultimate fate of a black hole is still a topic of scientific debate. According to Stephen Hawking's theory of Hawking radiation, black holes may eventually evaporate over time due to quantum mechanical processes, although this process would take longer than the current age of the universe for most black holes.

Recent Discoveries

In recent years, technology has provided unprecedented insights into black holes. One of the most significant breakthroughs came in 2019, when the Event Horizon Telescope (EHT) collaboration captured the first-ever image of a black hole. This image showed the shadow of a supermassive black hole

in the center of the galaxy M87, providing direct visual evidence of these cosmic objects.

Additionally, the detection of gravitational waves—ripples in space-time caused by the acceleration of massive objects like black hole mergers—has opened a new era of astronomy. Since 2015, the Laser Interferometer Gravitational-Wave Observatory (LIGO) has detected several black hole mergers, allowing scientists to study black holes in a completely new way.

Theoretical Implications

Black holes have also provided valuable insights into fundamental physics. They challenge our understanding of space, time, and gravity, pushing the boundaries of general relativity. The singularity at the center of a black hole, where density becomes infinite and space-time breaks down, is a major puzzle for scientists.

Chahat

B.Sc (Medical) Sem VI

History in the Making # Chandrayaan-3 Successfully landing on Moon

Chandrayaan-3 is a follow-on mission to Chandrayaan-2 which aims at soft landing at Moon's South pole. It consists of a lander and a Rover which have been launched into the space by a rocket called LVM3 from SDSC SHAR, Sriharikota. While the Chandrayaan-2 which was launched in 2019 consisted of an orbiter, a lander and a rover, because of a software glitch the craft lost all communication just minutes before it was supposed to land and later it was crashed. Though it was not a complete failure, the orbiter is still functional and provides valuable data to the organization.

The launcher used to support the moon lander Vikram is GSLV (Geosynchronous Satellite Launch Vehicle) also known as Launch Vehicle Mark III. The height of this launcher is about 5 metres. The spacecraft is expected to touch down on the moon on 23 August after a voyage that will last more than 40 days.

The craft is set to land on the Moon's South Pole, where Chandrayaan-1 discovered the molecules of water and shocked the world by its major success. ISRO has done a lot of modification to make it reliable than its predecessor.

Chandrayaan-3 consists of a lander Vikram, which is named after Vikram Sarabhai, the Rover Pragyan and a propulsion module. The weight of the Vikram lander has been increased by 280 kg from its previous version and it also carries more fuel to stay on its intended path to the Moon's surface.

The craft collectively weighs 3,900 kg in which the weight of the propulsion is 2148 kg and the weight of the lander and rover together is 1752 kg. This total weight is close to the maximum capacity of the GSLV MK III which is India's strongest rocket.

Iqbal Singh

B.Sc (NM)

The Evolution of Malaria Treatment: From Ancient Remedies to Modern Drugs

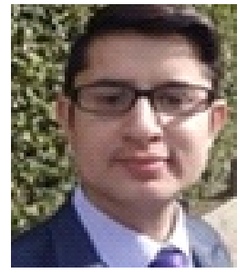

The primary vector of malaria transmission is the *Anopheles* mosquito, which bites a person who has *Plasmodium* parasite infection. The mosquito acquires the parasite while feeding on the blood and passes it to others *via* its bites. The disease is caused by genus *Plasmodium* and among 200 *Plasmodium* species, only five species infect humans *viz. Plasmodium falciparum*, *Plasmodium vivax*, *Plasmodium malariae*, *Plasmodium ovale*, and *Plasmodium knowlesi* with *P. falciparum* being the most virulent. The symptoms of malaria appear after 10 to 15 days being bitten by an infected mosquito. Frequent signs of malaria include fever, chills, headache, exhaustion, and nausea. If treatment is delayed, severe instances of malaria can result in organ failure, anemia, or cerebral malaria, which affects the brain and can be lethal.

According to the World Health Organization (WHO), malaria continues to pose a serious threat to global health. According to latest statics, an estimated 241 million malarial cases and 627,000 deaths occurred worldwide, mainly affecting children under the age of five. The disease is spread in over 100 countries; however, sub-Saharan Africa bears the greatest burden. Man has made developed significant advancements in the fight against this malaria, with modern medications which can save lives to applications of traditional cures. This article covers the evolution of malaria treatment from early herbal cures to sophisticated, scientifically developed medications.

Before the discovery of the parasite that causes disease, ancient civilizations developed therapies to treat symptoms of the disease. The earliest known remedies, which used a variety of plant blends to relieve the symptoms, did actually originate in ancient China, Egypt, and South America. In early times, the main treatment available came from the Cinchona tree, found in the Andes of South America. The bark of this plant has quinine, which is a compound having strong antimalarial potential. Native peoples of South America used cinchona tree to treat fever, and when Spanish conquistadors went there in the 17th century, they took quinine to Europe, where it remained an essential part of malaria treatment. In 1880, French physician Charles Louis Alphonse Laveran identified the *Plasmodium* parasite in the blood of malaria patients. Later, British scientist Ronald Ross understood malaria by recognizing the Anopheles mosquito which was the vector carrier of the parasite. This discovery was a turning point in the prevention and treatment of malaria, as it highlighted the need to control mosquitoes in addition to creating drug therapies.

In 20th century, the search for more effective malaria treatments intensified. The discovery of synthetic drugs represented a major breakthrough. One of the most important innovations came in 1944 when the synthetic drug *chloroquine* (CQ) was developed. Derived from quinine, chloroquine was easier to produce, more affordable, and highly effective in treating the malaria parasite. Chloroquine is believed to target ferriprotoporphyrin IX (FPIX) heme within the digestive vacuole (DV) of the parasite. FPIX, being toxic to the parasite in its free state, is sequestered as a non-toxic crystalline hemozin, also called “malarial pigment.” CQ forms a complex with FPIX, resulting in the accumulation of toxic hematin (Fe(III)PPIX) within the digestive vacuole and instigating the death of the parasite. However, the onset of resistant strain to the available antimalarial drugs including CQ is responsible for the global rise of malaria and offers strong impetus for the development of new antimalarials. The increasing resistance to chloroquine and other drugs like *sulfadoxine-pyrimethamine* prompted the development of new therapies in the late 20th century. In 1972, a breakthrough occurred with the development of artemisinin, a compound derived from the sweet wormwood plant (*Artemisia annua*), which had been used in traditional Chinese medicine for centuries.

Artemisinin-based combination therapies (ACTs) became the gold standard in malaria treatment by the early 2000. These therapies combine artemisinin with other drugs to increase effectiveness and reduce the likelihood of resistance. ACTs have been instrumental in reducing the global malaria burden, especially in sub-Saharan Africa, where the disease remains most prevalent.

Today, malaria treatment relies on a multi-pronged approach. ACTs are the cornerstone of modern treatment, and their efficacy has made them the primary treatment option for *Plasmodium falciparum* malaria. In addition to ACTs, several other drugs are used to target different *Plasmodium* species, such as *primaquine*, which is used to treat the liver stage of the parasite's lifecycle. Researchers are also exploring new avenues for treatment, such as vaccines. The development of the RTS,S/AS01 malaria vaccine, which has shown promise in reducing malaria in young children, represents an exciting step forward in the fight against the disease. This vaccine, approved for use in several African countries in 2021, is the first malaria vaccine to show significant efficacy and may pave the way for future vaccine development.

The future of malaria treatment lies in ongoing research and innovation. Scientists are working to develop new drugs, vaccines, and even gene-editing technologies that could potentially eliminate malaria for good. The world's leading health organizations, including the WHO, are committed to eradicating malaria by 2030, and while the road is long and filled with challenges, significant progress has been made.

Dr. Raghu Raj

Assistant Professor,
PG Department of Chemistry

Biochemistry: The Bridge Between Chemistry And Biology

Biochemistry is a scientific discipline that arose during the nineteenth century when progress in organic chemistry allowed the study of biological functions at the molecular level. It comprises several domains, each with the own purpose and more or less specific methods of investigation. The most important include the following: *ENZYMOLOGY: the study of biological catalysts. *MOLECULAR BIOLOGY: the study of information macromolecules and in the case of neurodegenerative diseases, proteins. *STRUCTURAL BIOLOGY: the study of the shapes embraced by all these macromolecules and the molecular interactions controlling the formation of functional superstructures. These domains share the same disciplinary field, biochemistry, whose goal is to understand the molecular nature and functioning of living organisms should you want to study the properties of living matter at the subatomic level in detail, you must leave the field of biology to enter quantum chemistry. Therefore, biochemistry is the ultimate level of investigation for the study of biological functions. To study phenomena at this molecular scale requires a basic knowledge of chemistry. The study of brain lipids and their role in synaptic function and neuro degenerative disorder does not escape this rule. Beyond 2 the information in anatomy and physiology biochemistry forms the basis of modern medicine. Much of the practise of medicine relies on the availability of drugs to treat various symptoms. The development of drugs by pharmaceutical companies often relies on the information made available through basic science research. In one could define pharmacology as the biochemistry of drug action. Medical students often question the reason for having to learn biochemistry, and the teachings of traditional medical schools focus on one discipline at a time. Thus, those who teach biochemistry usually do not emphasize its relation to medicine, and then its relation to biochemistry. Nevertheless, it is becoming quite clear the biochemistry is the underpinning of medicine; this clarity evolves from information on disease conditions explained through biochemistry at the molecular level.

Harsimran Kaur

B.Sc (Medical) Sem IV

The Hidden Architects of Nature: Unveiling the Genius of Animal Behaviour

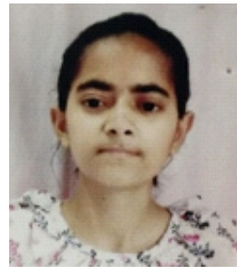

When we think of architecture, we often picture grand buildings, bridges, and towering skyscrapers. But what if I told you that some of the most impressive architects are not human at all? In the animal kingdom, creatures like beavers, termites, and ants, the nature's unsung architects, create fascinating structures made by instincts.

Beavers, often referred to as "ecosystem engineers," build complex dams that alter their environments, creating ponds that provide safety, food storage, and stable aquatic habitats. These dams also play a crucial role in ecosystem development by improving water quality and reducing flooding downstream. Similarly, termites construct towering mounds with sophisticated ventilation systems to regulate temperature and humidity, which have even inspired sustainable human architecture.

Ants and bees are also impressive builders, with ants creating vast underground colonies and bees constructing highly efficient hexagonal hives in unique hexagonal patterns. The animal engineers exhibit an instinctual knowledge of materials and environmental factors, modifying their creations as structures to optimize survival. Remarkably, these creatures do all this without blueprints or conscious planning, showcasing the power of natural selection and instinct. The study of animal behavior has not only expanded our understanding of intelligence in non-human species but also opens new possibilities for sustainable designs in human architecture.

As we face environmental challenges like climate change, we may look to these natural architects for inspiration in creating solutions that are both functional and in harmony with the environment. In their quiet, industrious ways, these demonstrate that true innovation comes from adapting to nature and ensuring the survival of their species.

Pallavi

B.Sc (Medical) Sem VI

The Science of Lightning

We all have seen or at times have heard about a flash, bright bolt of lightning through the sky. But have you ever wondered where this common element of nature comes from? Lightning can occur anywhere and at any moment, but as much information as is out there about lightning, there is still much more to learn about this natural phenomenon.

About lightning:

Lightning occurs when specific weather conditions of cloud formations cause friction that generates sounds of loud thunder, which are referred to as rumbles. The friction causes a release of positive and negative electrical charges through the clouds. These charges can either collide with each other or travel to the ground, causing a bolt of lightning.

Lightning is a form of electricity. When two clouds with opposite charges come into contact, the positive charge from the top of the cloud and the negative charge from the bottom of another cloud collide, forming lightning. Lightning can also strike the ground, which happens when negative charges at the bottom of the cloud are attracted to positive charges on the ground. The release of energy from the collision creates a bright flash and a loud sound known as thunder.

A bolt of lightning generates heat as intense as the surface of the sun. This heat expands the surrounding air, causing it to compress and create a sound wave known as a thunderclap. The strength and duration of thunder depend on how much air was heated and how fast it expands. The multiple sound waves reflect off various surfaces, making rumbling sounds.

Light travels 186,291 miles per second, which is much faster than sound at 1,088 feet per second. This explains why we always see a bolt of lightning before we hear the rumble of thunder. If you want to estimate how far away lightning struck, simply count the seconds between the flash of light and the rumble of thunder and divide by 5.

Studying lightning is not easy, and it can be very dangerous. In 2015, lightning took the lives of 27 people. During a thunderstorm, it is best to remain indoors and stay off roads if possible. People on the road should remain in their cars or seek shelter away from trees or other tall objects, which are known to be good conductors of electricity.

Rashi

B.Sc (Medical) Sem IV

Breakthrough Discovery: Berkelocene Unveiled

In a groundbreaking achievement, scientists from the University of Buffalo and Lawrence Berkeley National Laboratory have successfully synthesized the first organometallic molecule containing the heavy element berkelium, dubbed "berkelocene". This pioneering discovery shatters long-held assumptions about transuranium elements, particularly those beyond uranium on the periodic table.

What is Berkelocene?

Berkelocene is a symmetrical organometallic compound with berkelium at its core. Its structure is analogous to a uranium organometallic complex called "uranocene". The molecule consists of a berkelium ion sandwiched between two eight-membered carbon rings, exhibiting a tetravalent (+4) oxidation state.

Significance of the Discovery

This breakthrough provides new insights into actinide chemistry, which could aid in finding solutions for nuclear waste storage and remediation. The discovery challenges traditional understanding of the periodic table, as berkelium's behavior deviates from expectations based on its position in the periodic table.

Challenges Overcome

The synthesis of berkelocene was a significant challenge due to berkelium's radioactivity and the extremely air-sensitive nature of the molecule. To overcome these obstacles, the research team custom-designed new gloveboxes to enable air-free syntheses with highly radioactive isotopes.

Implications and Future Research

The discovery of berkelocene opens up new avenues for research into the chemistry of transuranium elements. Further studies are needed to develop more accurate models of actinide behavior, which will be crucial for addressing the challenges of nuclear waste storage and remediation.

References

[1] K. R. Walter, et al. (2023). Synthesis and Characterization of Berkelocene. Journal of the American Chemical Society, 145(4), 2311-2318.

[2] G. T. Seaborg, et al. (1974). The Chemistry of the Actinide Elements. Annual Review of Nuclear Science, 24, 323-353.

[3] A. J. Gaunt, et al. (2018). Advances in Actinide Chemistry. Chemical Reviews, 118(2), 569-634.

Vanshu Vig
B.Sc (CS) Sem VI
Roll No. 9612

Economics Section

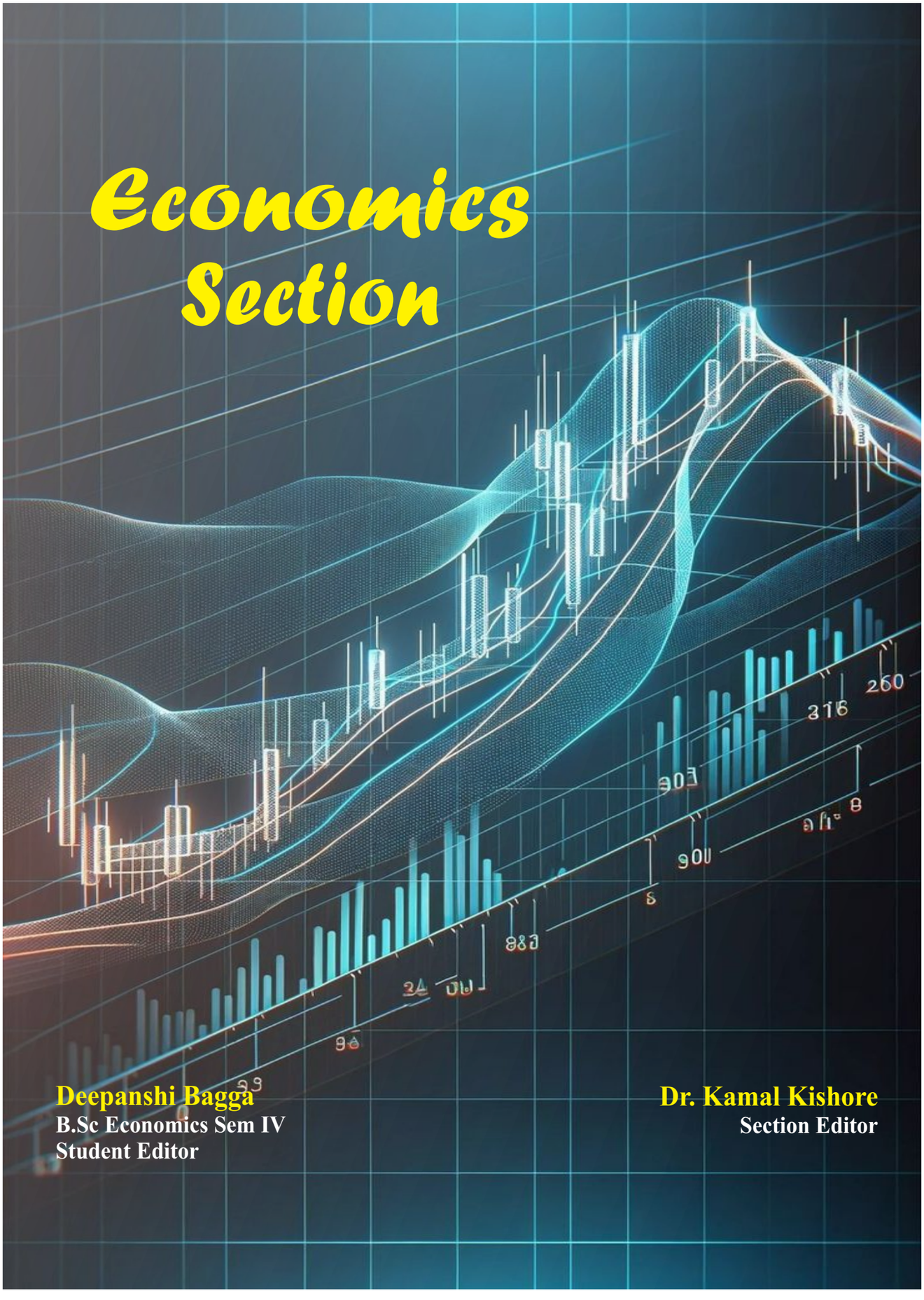

Deepanshi Bagga
B.Sc Economics Sem IV
Student Editor

Dr. Kamal Kishore
Section Editor

Message From the Editor

As we progress through another academic year, the world around us continues to evolve at an unprecedented pace. The global economy, once characterized by steady growth and predictable patterns, now finds itself amidst waves of uncertainty and transformation. As students, educators, and thinkers in the field of economics, it is both our privilege and responsibility to analyze, understand, and interpret these changes.

One of the most pressing issues on the global stage today is the ongoing recalibration of supply chains. The disruptions triggered by the pandemic have left lasting scars, prompting nations and corporations alike to rethink their dependencies. The shift from globalization to a more regional or even localized model of production raises crucial questions: Are we witnessing the end of an era, or merely an evolution of economic interdependence?

Simultaneously, the digital revolution is transforming the very fabric of our economies. From cryptocurrencies challenging traditional financial systems to artificial intelligence reshaping labor markets, technological advancements continue to push boundaries. As budding economists, it is imperative to explore how these innovations impact income distribution, job creation, and overall economic stability.

Closer to home, the Indian economy too is experiencing a metamorphosis. The push towards digital payments, the rise of startups, and policy measures aimed at boosting manufacturing are shaping our economic trajectory. However, challenges such as unemployment, income inequality, and inflation continue to test our resilience. It is essential to critically evaluate how policies address these issues and whether they truly empower the marginalized.

In the classroom and beyond, let us foster a spirit of inquiry and debate. Economics is not merely the study of numbers and policies but the story of human ambition, innovation, and adaptation. As future leaders and scholars, your insights and analyses will shape not just academic discourse but real-world outcomes.

Let this edition of the magazine be a platform for your voices—thought-provoking essays, data-driven analyses, and bold perspectives. I encourage you to dive deep into topics that resonate with you and challenge conventional wisdom. After all, progress stems from questioning the status quo.

Dr Kamal Kishore
Head, PG Dept. of Economics

Message from Student Editor

Impact Of US Tariffs On India Trade

“If India will charge 100% , I will charge the same"- These bold words are said by President Trump on 5th March 2025 which created a unsaid battle that India felt deeply.

From our side , when the US issued this statement, many Indian exporters saw a temporary drop . In some key sectors like textiles and engineering exports fell by approximately 12% , but on the different side of the coin, surplus with US grew from $20 billion to $46 billion dollars in recent years.

In India's case, while it was not trying to create a mark, it did notice the changes but rather than imposing tariffs, it removed duties on selected items to allow Indian companies to earn competitive advantage with US Industries. This selective easing ensured protection of Indian industries even while the US extended tariffs on over 45 nations.

These economic strategies shielded India from the US's blow while also allowing better leverage in trade negotiations. The predetermined cuts allowed the set trade targets to be maintained while improving the position in the global market.

Even as global trade relations continue to be strained, India remains steadfast in their mission of developing trade relations that are both fair and just. In the tariff-filled landscape of international trade, one thing remains certain:

“For us, the fight isn't about the trade barriers, instead, it is about the value of the trade itself.”.

Deepanshi Bagga
Bsc Economics Sem IV

The Role of TARIFFS in India's Trade Policy

Tariffs, as taxes imposed on imported goods, play a pivotal role in shaping a nation's trade policy. In India, tariffs have been strategically utilized to protect domestic industries, generate government revenue, and influence the balance of trade. We will examine the role of tariffs in India's trade policy, tracing its evolution, benefits, and challenges.

Historically, India's approach to tariffs has been shaped by its economic priorities and global trade dynamics. Post-independence, India adopted a protectionist trade policy characterized by high tariffs to nurture its nascent industries. However, this inward-looking strategy often led to inefficiencies and limited global competitiveness. The economic reforms of 1991 marked a paradigm shift, with India reducing tariffs to integrate more seamlessly into the global economy.

In recent years, India has revisited tariff hikes to protect and promote domestic manufacturing under initiatives like "Make in India." For instance, tariffs on *electronic products* and *"non-essential items"* have been increased to reduce reliance on imports and support local industries. This move targets imports from countries such as China and South Korea, aiming to stimulate domestic production and address current account deficits.

Beyond protectionism, tariffs contribute significantly to government revenue. Import duties on goods like petroleum, gold, and automobiles have historically been substantial sources of income, aiding in funding infrastructure projects and social welfare programs. Additionally, India employs tariffs as anti-dumping measures to prevent the influx of cheap foreign goods that could harm domestic industries.

India has also demonstrated its commitment to global economic equity through preferential tariff schemes. The *Duty-Free Tariff Preference (DFTP)* scheme, introduced in 2008, offers duty-free access to products from Least Developed Countries (LDCs). By 2014, this scheme covered 98.2% of tariff lines, fostering trade relationships and supporting economic growth in participating nations.

However, India's relatively high tariffs have attracted criticism from major trading partners. The United States has urged India to lower its tariffs to enhance bilateral trade relations, suggesting that reduced tariffs could pave the way for a comprehensive trade deal. Additionally, high import tariffs have been a barrier for companies like Tesla entering the Indian market, prompting discussions about potential local manufacturing to mitigate tariff impacts.

In conclusion, tariffs remain integral to India's trade policy, balancing the protection of domestic industries, revenue generation, and adherence to international trade norms. As India navigates its role in the global economy, its tariff strategy will continue to evolve, reflecting its developmental aspirations and commitment to equitable trade. By striking a balance between protectionism and liberalization, India can promote domestic growth, foster global trade relationships, and ensure a more equitable and sustainable trade policy.

Diya Mehra

BSc Economics Sem VI

Agriculture and Rural Development: Pillars of India's Economy

Agriculture has always been the bedrock of the Indian economy, employing nearly 50% of the population and contributing around 18% to the GDP. Despite rapid urbanization and industrial growth, rural development remains decisive for India's overall progress.

In recent years, government initiatives like Pradhan Mantri Kisan Samman Nidhi (PM-KISAN) and the Agricultural Infrastructure Fund have provided financial support to farmers. Additionally, modern farming techniques, irrigation projects, and digital platforms for direct market access are helping to increase productivity and income. The promotion of organic farming and sustainable agricultural practices is also gaining momentum.

However, challenges such as unpredictable monsoons, fragmented land holdings, and price fluctuations continue to impact farmers. Strengthening rural infrastructure, including roads, electricity, and storage facilities, is essential to ensure agricultural growth. Moreover, skill development programs and rural employment schemes like MGNREGA play a key role in improving livelihoods and reducing migration to cities.

The integration of **technology in farming, access to credit, and better market linkages** can transform rural India. Encouraging agriculture technology startups, precision farming, and digital tools for direct farmer-to-market sales will further boost the sector. With the right policies and innovations, agriculture can not only sustain millions of livelihoods but also drive India's journey toward self-reliance and economic prosperity.

Kusum
BSc Economics Sem VI

Artificial Intelligence and the Future of Jobs in India

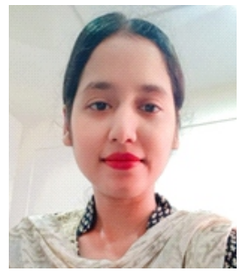

Artificial Intelligence (AI) is rapidly transforming industries, revolutionizing job markets, and reshaping India's economic landscape. From healthcare and finance to manufacturing and automation, AI-driven technologies are boosting efficiency, reducing costs, and enhanicng productivity.

However, this transformation also brings challenges. Routine-based jobs like data entry and customer service are increasingly automated, leading to job displacement. Yet, AI is not a threat to human intelligence; rather, it demands a shift toward skills like critical thinking, creativity, and problem-solving. The emergence of AI-driven sectors, including robotics, cybersecurity, and data science, is expected to create millions of new job opportunities.

India's success in the AI era depends on proactive strategies. The government's AI for All initiative promotes AI literacy and skill-based training. Additionally, the recent push for Make in India 2.0, Digital India, and semiconductor manufacturing aims to position India as a global AI hub. The rise of DeepTech startups and AI-powered automation in MSMEs is further shaping economic growth.

To ensure an inclusive AI-driven future, India must invest in AI-focused education, reskilling programs, and policies that support job transitions. If harnessed wisely, AI can boost economic growth, strengthen industries, and establish India as a leader in the global AI revolution.

Mansi
M.A. Economics Sem II

Union Budget 2025: A Roadmap For Growth & Stability

The **Union Budget 2025** presented by Finance Minister **Smt. Nirmala Sitharaman** on **February 1,2025** which focuses on economic growth, infrastructure development, financial problems & fiscal consolidation. With a total expenditure of **Rs. 50.65 Lakh Crore**, the budget aims to strengthen key sectors such as Defence, Agriculture, Education, Healthcare Services, Technology, Research, Home Affairs & exports etc. while maintaining financial discipline. The fiscal deficit is projected at 4.4% of GDP, reflecting the Government's commitment to fiscal prudence. A significant relief for taxpayers comes in the form of an increased income tax exemption limit to **Rs. 12 Lakh,** with the standard deduction raised to **Rs. 75,000.** In Addition, TDS thresholds for senior citizens and rental income have been increased to provide further ease in taxation. These measures expected to benefits middle class and boost disposable income.

The Agricultural sector receives a strong push with the introduction of the **PM Dhan-Dhaanya Krishi Yojana** to improve productivity. The **Kisan Credit Card** limit has been increased to **Rs. 5 Lakh,** the **Pulses Self-Reliance Mission** has been launched to enhance domestic production and reduce dependence on imports.

In Technology & Industrial Sectors, a **Rs. 20,000 Crore R&D** fund has been allocated to encourage AI, Deep Tech & Innovation. Customs duty exemptions on Electronics & EVs aim to strengthen India's manufacturing hub & export potential.

Overall, **Union Budget 2025** balances fiscal responsibility with growth-oriented policies, promoting digitalization, self-reliance & economic stability, setting India on a path toward long-term prosperity.

Vivek Kumar
B.Sc Computer Science Sem VI

Hyper-Consumerism and Financial Health

In the age of Social Media, where everyone has the access to view different lifestyles around the world, be it celebrities or acquaintances, our financial health is suffering. Human wants are insatiable. When combined with the desire to be socially accepted, frivolous consumption becomes an inevitable result. Simply put, Hyper-consumerism is the excessive consumption of goods and services beyond necessity. It is characterized by the relationship between consumption and its subsequent effect on an individual's identity and social status.

Globally, the total consumer spending between 2024 and 2029 is forecasted to increase by 16.2 Trillion US Dollars, which is an increase of an astounding 26.6%. According to Higgins' Self Discrepancy Theory, Individuals are likely to engage in behaviours which affirm their personal and social identities, failing at which leads to negative self-perception.

With Social Media at its peak, we're exposed to a way of living which propagates wasteful expenditure, creating an imbalance in our personal budgeting. For appearing affluent, we go beyond our means to buy products which we can relate to our sense of self and boast about our false riches.

People often find themselves in the clutches of Debt after buying the latest iPhone or clothes from high-end luxury brands. Consequently, Overall savings are declining which is harmful for their financial health and by extension, the economic health of a country. While increased production may be beneficial for an economy, excessive consumption may very well cause damage too.

Jahnvi
B.Sc Economics Sem IV

Inflation and Cost of Living

Inflation and cost of living are closely related economic concepts that significantly impact households and businesses. Inflation refers to the general increase in the prices of goods and services over time, reducing the purchasing power of money. It is typically measured using indices such as the Consumer Price Index (CPI) and the Producer Price Index (PPI). Moderate inflation is a normal part of economic growth, but excessive inflation can erode savings, increase uncertainty, and reduce real wages.

The cost of living, on the other hand, represents the amount of money required to maintain a certain standard of living in a specific location. It includes expenses such as housing, food, healthcare, education, and transportation. Inflation directly influences the cost of living by making everyday expenses more expensive. When inflation rises faster than wages, people experience a decline in real income, making it harder to afford basic necessities.

Economists identify several causes of inflation, including demand-pull inflation (excess demand), cost-push inflation (higher production costs), and built-in inflation (wage-price spiral). Central banks, such as the Federal Reserve and the European Central Bank, use monetary policy tools like interest rate adjustments and money supply regulation to control inflation.

A stable inflation rate is essential for economic stability, as it allows wages and prices to adjust predictably. High inflation reduces purchasing power, while deflation (falling prices) can lead to economic stagnation. Governments and policymakers must balance economic growth with inflation control to ensure affordability and financial security for citizens.

Tisha Aggarwal
B. Com Sem II

Small Businesses vs Big Corporations

Small businesses and unique business each have unique strengths and challenges, Shaping the economies in different ways. Small businesses are adaptable, offering personalized services and quick decision-making. Big corporations have rigid structures, ensuring consistency but slowing down changes. Small businesses support local economies by creating jobs and reinvesting earnings. Big corporations provide large-scale employment and higher wages but may out source jobs. Small businesses are more innovative, quickly adapting to market trends. Corporations prioritise efficiency, using standardized procedures to reduce costs and increase profits. Small businesses are more innovative, quickly adapting to market trends. Small businesses offer personalized customer service and unique products. Corporations focus on cost-effectiveness, providing convenience but sometimes lacking a personal touch. Small businesses struggle with financial instability and competition. Big corporations deal with bureaucracy and ethical concerns. Both small businesses and corporations are essential. Small businesses bring innovation and local growth, while corporations provide stability and large-scale impact. Thus a balanced economy benefits from both.

Nikhil

NITI AAYOG

As we all know, Planning Commission was established in 1950 by Jawaharlal Nehru. It was a government agency in India that was responsible for the country's economic and social development. The purpose behind it was 1.To raise the standard of living of Indians 2.To increase production 3. To create employment opportunities 4.To assess the country's resources 5To develop five-year plans. The first five-year plan was made in 1951 and so the other 12 f ive year plans were made. But this planning system didn't worked according to the hopes of the members and the economy of the country was not being working well. Then NITI AAYOG was introduced by the union cabinet in 2015. It is also known as "Think Tank." It replaced the Planning Commission to foster cooperative federalism and promote inclusive growth. The question is : Why is it important? It is basically important for the Inclusive Growth of the economy. It collaborates with international organisations for development suggestions and much more. It also discusses how NITI Aayog uses a bottom-up approach to involve state governments in policymaking. The NITI Aayog serves as the apex public policy think tank of the Government of the Republic of India, and the nodal agency tasked with catalyzing economic development. NITI AAYOG will soon firm up the list of infrastructure projects to be monetised over the next five years. The government think-tank has invited bids for preparation of the Infrastructure Projects Pipeline and suggesting innovative projects and financing structures for accelerated development of infrastructure in the country through private sector investment.

Tanisha
B.Sc Economics Sem II

Privatization in India : Progress or Pitfall

In India, we know too well privatisation inserts double edged sword. On one hand it has accelerated economic prosperity in ingenuity and delivery of higher quality services. On the other hand, it can be a threat to jobs, security costs and equity. The private sector has been gradually invading the turf of government since the liberalisation of India in 1991.But is it good for all of them?

Efficiency has arguably been the biggest gain from Privatisation. To be sure , companies owned by the government face issues with bureaucracy, slowness and economically losing money. Private Companies step in which bring better management, modern technology and customer centricity. 10 years ago, mobile services were pricey and sluggish. Nowadays, thanks to competition by companies like Jio and Airtel, data cost and accessibility are at a N all time low. Privatization has lowered several Indian and foreign investors for job creation as well infrastructural development.

But here's the flip side. What happens to the workers ? When companies go private it tends to be quite a efficient event and that usually translates into the loss of a lot of government jobs . In sectors like healthcare and education, privatization can , however, hike costs and make vital services out of the reach of ordinary people . ig6q

So, Is it really good or bad to privatise?. It's complicated. This functions best alongside robust government regulations to protect workers and insure fair market pricing. Privatisation can lead India ahead, but it needs to be applied judiciously with the people as the core of interest.

Vandeep Kaur
B.Com Sem II

Budget 2025 :Student's Perspective

The budget's here, the headlines scream,
Promises woven into the national dream.
Income tax relief brings some cheer,
For those earning up to twelve lakh a year
Salaried folks now smile with ease,
Standard deductions bring them peace.
TDS on rent gets a generous raise,
From 2.4 to six lakh—it brightens days.
Start-ups rejoice with extended grace,
Five more years to find their place.
MSMEs thrive with credit lines wide,
Ten crore coverage fuels their stride.
Farmers' hopes are sown anew,
With pulses' missions pushing through.
Kisan Credit Cards now offer more,
Five lakh in loans to help them soar.
Healthcare gains with funds assigned,
Day-care centres and plans outlined.
Customs duty on vital meds,
Reduced to ease the patients' dreads.
Education shifts to a digital age,
AI research takes centre stage.
Ten thousand fellowships set to inspire,
Igniting minds with knowledge and fire.
Green energy gets a bigger share,
Solar and wind show leaders care.
EV subsidies aim to last,
Pushing India toward change so fast.
Infrastructure gets a massive boost,
Eleven trillion—the funds induced.
New highways, bridges, railways too,
To make our transport strong and new.
Yet, amidst these plans and schemes,
The common man still hopes and dreams.
Will these measures bridge the divide?
Only time will tell as we stride.

Bhumika
B.Sc Economics Sem IV

The Global Economy: Trends and Challenges

The global economy is a dynamic and interconnected system that influences nations, businesses, and individuals. In recent years, it has faced numerous challenges, from the COVID-19 pandemic to geopolitical tensions and climate change.

One major concern is inflation, which has risen due to supply chain disruptions and high energy costs. Central banks worldwide are responding by raising interest rates to maintain price stability, but this also slows down economic growth. Meanwhile, developing economies struggle with debt burdens and currency fluctuations, making recovery uneven across the world.

Technology and digitalization continue to reshape industries by increasing efficiency while also raising concerns about job displacement. Artificial intelligence, automation, and fintech innovations are revolutionizing markets, creating opportunities but also demanding new skill sets from workers.

Sustainability is another key factor influencing economic policies. Governments and corporations are investing in green energy, aiming to reduce carbon emissions while maintaining growth. However, balancing economic expansion with environmental responsibility remains a challenge.

Despite uncertainties, globalization continues to drive trade and investment. Nations are forging new partnerships and adapting to shifting supply chains. The future of the global economy depends on how well countries collaborate to address financial crises, climate risks, and technological transformations.

As the world navigates economic challenges, adaptability and innovation will be crucial in shaping a stable and inclusive future. Nations and businesses must embrace technological advancements, invest in sustainable industries, and develop policies that promote economic resilience.

Bharti
BA Sem VI

Economics? It's Everywhere

Economists and their theories have influenced our daily life in ways unimaginable. But did you know that something as mundane as ordering coffee can have a lot of implications in Economics?

Okay so, Imagine You walk into your local coffee shop. The place is packed with people, and you see a long line in front of the counter.

As you wait in line for your coffee, you notice that one of the baristas is multitasking, making different types of coffee and taking orders simultaneously. This is an example of **"Economies of scale"**, where the coffee shop is producing more than one product or service with the same resources, thereby increasing productivity and reducing the cost of production.

While buying coffee, you notice that the **"Pricing Psychology"** principles like odd pricing (499 instead of 500) influence perceptions of affordability.

Then you notice a group of college students huddled together, studying intently and sipping on their coffee. The coffee shop's pleasant ambiance is enabling them to stay focused and productive which is a perfect example of **"Marginal Utility"**. The students are taking advantage of the coffee shop's free WiFi. Here, the coffee shop is offering "Freebies" to its customers, such as free WiFi. This is an example of the **"Loss Leader"** strategy.

As you finish your coffee and get up to leave, you reflect on the many ways that economics has impacted your experience at the coffee shop.

Economics, though? It's everywhere.

Sneha
B.Sc Economics Sem VI

IMPACT OF PUBLIC EXPENDITURE

Public expenditure refers to the spending made by the government on goods, services, and social benefits for the welfare of its citizens. It plays a critical role in driving a nation's economic development and ensuring the provision of essential public goods. Governments allocate funds for sectors like healthcare, education, infrastructure, defense, and social welfare programs.

One of the primary objectives of public expenditure is to address market failures, such as providing public goods (e.g., clean air, national defense) and ensuring the equitable distribution of resources. By investing in infrastructure, such as roads, bridges, and public transportation, governments stimulate economic activity and create jobs. Similarly, investments in education and healthcare promote long-term human capital development, which leads to a more productive workforce.

Public expenditure also serves to stabilize the economy. During times of recession, governments may increase spending (often through stimulus packages) to boost aggregate demand and revive economic activity. Conversely, in periods of inflation, governments may reduce expenditure to cool down the economy.

However, managing public expenditure requires careful planning. Excessive spending can lead to budget deficits, rising public debt, and inflation. On the other hand, insufficient expenditure may result in underdeveloped infrastructure and inadequate social services.

In conclusion, public expenditure is a powerful tool for fostering economic growth, addressing social inequalities, and maintaining economic stability. Effective management and prioritization of spending are essential for achieving sustainable development and improving the overall welfare of society.

Alisha

BA Sem IV

Digital India Rising: Unlocking the Country's True Potential

“India's digital public infrastructure is a force multiplier for economic growth, financial inclusion, and innovation, creating a model that the world can learn from.” India, a nation of over 1.3 billion people, is undergoing a transformative journey. The Digital India initiative, launched in 2015, has been instrumental in driving this change. The program aims to empower citizens, promote digital literacy, and create a robust digital infrastructure. growth. From digital payments to e-governance and smart infrastructure, India is emerging as a global leader in leveraging technology for development.

THE THREE PILLARS OF DIGITAL INDIA

The Digital India initiative is built on three core pillars:

1. Digital Infrastructure as a utility to every citizen

2. Governance and Services on demand

3. Digital Empowerment of Citizens KEY DRIVERS OF INDIA'S DIGITAL GROWTH

1. The UPI Revolution With billions of transactions processed monthly, UPI has enabled seamless and cashless financial transactions across urban and rural areas.

2. The Rise of Startups and Innovation India is now the third-largest startup ecosystem globally, with a surge in fintech, edtech, and e-commerce platforms.

3. Expanding Internet Connectivity With over 850 million internet users, India's digital penetration continues to grow.

4. AI, 5G, and Emerging Technologies India is actively adopting Artificial Intelligence (AI), 5G, and blockchain to enhance sectors like healthcare, agriculture, and governance.

KEY ACHIEVEMENTS OF DIGITAL INDIA

Here are the key achievements of the Digital India initiative in detail:

1. Digital Payments:- Transaction value: The value of digital transactions has grown from ₹1.4 trillion in 2015-16 to ₹143.6 trillion in 2020-21, a staggering 100-fold increase.

2. Internet Penetration: - Internet users:The number of internet users in India has grown from 302 million in 2015 to over 700 million in 2022, with a significant increase in rural internet users

. 3. Digital Literacy:- Digital platforms have enabled online education and skill development, reaching millions of students and learners across the country

4. E-Governance:- UMANG App:The Unified Mobile Application for New-age Governance (UMANG) app has provided citizens with a single platform to access various government services, including pension, scholarships, and health services.

CHALLENGES AHEAD OF DIGITAL INDIA

Despite its remarkable progress, the Digital India initiative faces several challenges that need to be addressed for sustainable growth and inclusivity.

1. Digital Divide and Accessibility: While urban areas have widespread internet access, rural penetration remains limited.

2. Cybersecurity and Data Privacy Risks:Rising cyber threats, data breaches, and financial fraud pose significant risks

.3. Infrastructure Challenges : Many remote areas still face frequent power cuts and weak internet connectivity.

4. Digital Financial Inclusion Barriers: Many low-income and elderly populations are hesitant to adopt digital payments due to fraud concerns.

5. Regulatory and Compliance Challenges

The rapid pace of digital innovation demands updated regulatory frameworks to balance innovation and security. THE WAY FORWARD To overcome these challenges, India must focus on digital inclusion, robust cybersecurity, infrastructure development, and regulatory reforms. By addressing these hurdles, Digital India can continue its journey toward becoming a global digital leader.

Mahima Ahuja
MA Economics Sem II

TAXATION : A key pillar of economic growth

Taxation is the process by which governments collect revenue from individuals and businesses to fund public services and infrastructure. It is a fundamental aspect of any economy, ensuring that essential services such as healthcare, education, defense, and transportation are adequately financed.

Taxes are broadly categorized into direct and indirect taxes. Direct taxes are levied on income and profits, such as income tax and corporate tax. Indirect taxes, on the other hand, are imposed on goods and services, such as sales tax, value-added tax (VAT), and excise duties. Governments may also impose property taxes, inheritance taxes, and customs duties.

Taxation serves multiple purposes beyond revenue generation. It helps in wealth redistribution, reducing income inequality by imposing higher taxes on the wealthy. Progressive tax systems, where tax rates increase with income levels, are designed to achieve this. Taxes also influence economic behavior, discouraging harmful activities through mechanisms like carbon taxes and tobacco excise duties.

However, excessive taxation can hinder economic growth, discouraging investment and productivity. Governments must strike a balance between collecting revenue and maintaining a business-friendly environment. Tax evasion and avoidance are major challenges, requiring robust enforcement and fair policies to ensure compliance.

In conclusion, taxation is vital for the functioning of any nation. A well-structured tax system promotes economic stability, social welfare, and sustainable development. Governments must continuously reform tax policies to ensure fairness, efficiency, and economic progress.

Arshpreet Kaur

BA Sem III

Trade Cycles in India

Trade cycles, also known as business cycles, refer to the fluctuations in economic activity over time. These cycles consist of four main phases: expansion, peak, contraction, and trough.

In India, trade cycles have been influenced by domestic and global economic conditions, government policies, and external shocks.

During the expansion phase, economic growth is high, with rising GDP, increased investment, and low unemployment. India witnessed such periods, for example, during the early 2000s when economic liberalization and reforms fueled rapid growth. The peak phase follows, where growth reaches its highest point, often accompanied by inflationary pressures.

Contraction occurs when economic activity slows down, leading to declining GDP, reduced investments, and rising unemployment. India has faced contractions due to global financial crises, demonetization in 2016, and the COVID-19 pandemic in 2020. The trough marks the lowest point of the cycle, where the economy stabilizes before recovering.

The Reserve Bank of India (RBI) and the government play crucial roles in managing trade cycles through monetary and fiscal policies. Interest rate adjustments, public spending, and reforms help stabilize economic fluctuations. Structural reforms like the introduction of GST and measures to boost the manufacturing sector aim to make India's economy more resilient to trade cycles.

Understanding trade cycles is essential for policymakers, businesses, and investors to make informed decisions. While India's economy continues to experience fluctuations, strategic planning and policy measures help mitigate risks and sustain long-term growth.

Kamaljit Singh

B.Sc Economics Sem II

BUDGET 2025-2026

The Union budget presented by Finance Minister Nirmala Sitharaman has set the stage for Indian Economic trajectory in the fiscal year 2025-2026 .It has unveiled a strategic blue print for India's economic future, emphasizing inclusive growth and sustainable development. A significant focus lies on "Sabka Vikas," aiming to uplift marginalized communities through initiatives promoting healthcare, education and development. The budget outlines various sectors : agriculture, infrastructure and implementing tax reforms. AGRICULTURE -The budget's emphasis on agriculture development is evident through initiatives like the "Prime Minister Dhan-Dhaanya Krishi Yojana," designed to enhance productivity. Furthermore, programs aimed at boosting fruits and vegetables production. FISCAL DEFICIT is estimated to 4.3 percent of GDP. TOTAL EXPENDITURE is estimated to ₹59.65 lakhs crore. TOTAL RECEIPTS other than borrowing are estimated at ₹34.96 lakh crore. Financial Sector -Continued for GIFT city as a global financial hub. 100% FDI in Insurance Company. INFRASTRUCTURE -Continued focus on infrastructure development to drive economic growth. MAKE IN INDIA Measures to boost manufacturing and further the Make in India' initiative. TAXATION -Plan for new , simplified Income Tax Act. MIDDLE CLASS-TAX reforms, including potential changes to income tax slabs, are aimed at benefitting middle-class taxpayers; Rationalization of TDS and TCS. Overhauls of indirect taxation including GST,customs and central excise. INCLUSIVE DEVELOPMENT -emphasis on Zero poverty, quality education, accessible health care and increase in women's participation in the economy. Overall the, Union Budget 2025-2026 strives to balance economic growth with social welfare, setting a course for a prosperous and equitable India'.

Driti Batra

B.Com Sem II

UNEMPLOYMENT AND ECONOMIC GROWTH

As a developing country and an emerging economy , India faces a lot of economic issues. Unemployment is one of the most serious and complex of them. The issue of unemployment is getting maximum attention from politicians, media and many more. As we know, India badly needs a national employment policy to meet the demand of labour; so that it can to maintain the global labour standards. Unemployment and Poverty goes side by side, Unemployment is a condition that can cause a prolonged starvation problem. Unemployment not only brings problems for the individual who is unemployed but also for the society as a whole. Higher the unemployment, higher the burden on the government to provide them unemployment benefits. In addition, people's mental health may suffer as a result of unemployment. It mostly happen when people are unable to find work when they want to do the work.

Unemployment exists in India due to various reasons such as lack of education which causes illiteracy, over population, lack of skills and many more other problems that exist in our nation. The government of India has unleashed many schemes to tackle the problem of unemployment. For example - SKILL INDIA launched in the year 2015, which aims to improve skills and increase the number of employed people and skilled workforce. However unemployment in India will not go away until we change our system that is education system for good. Hence, there are so many measures and policies to reduce unemployment and measures to improve labour supply also measures to boost labour demand which are to give incentives to encourage flow of foreign investment and many more.

Kashish Khanna

B.Com Sem II

Cryptocurrency and Central Bank Digital Currencies: Friends or Foes?

Introduction

The rise of digital finance has transformed the global economy, bringing new opportunities and challenges. Cryptocurrencies like Bitcoin and Ethereum have disrupted traditional financial systems, offering decentralized and borderless transactions. Meanwhile, central banks worldwide are developing their own digital currencies-Central Bank Digital Currencies (CBDCs)-as state-backed alternatives. This raises an important question: Are crypto currencies and CBDCs allies in financial innovation, or are they fundamentally at odds?

Understanding Crypto currencies and CBDCs

Crypto currencies are decentralized digital assets built on block chain technology, independent of government control. They enable peer-to-peer transactions, enhance financial inclusion, and challenge traditional banking systems. However, their volatility and regulatory uncertainties make them a double-edged sword.

CBDCs, on the other hand, are digital versions of national currencies issued by central banks. Unlike crypto currencies, they are fully regulated, stable, and backed by the government. Their aim is to modernize payment systems, increase financial transparency, and reduce reliance on cash.

The Case for Cooperation: Can They Coexist?

Despite their differences, crypto currencies and CBDCs can complement each other:

1. Financial Innovation - Both drive digital transformation, pushing financial systems toward greater efficiency and accessibility.
2. Stable Transactions - CBDCs can provide stability to the digital asset space, while cryptocurrencies offer innovation and decentralized alternatives.
3. Regulatory Clarity - A structured CBDC framework could encourage better cryptocurrency regulations, reducing fraud and illicit activities.

The Conflict: Points of Tension

Despite potential synergies, conflicts remain between these digital assets:

1. Decentralization vs. Centralization - Cryptocurrencies thrive on decentralization, while CBDCs reinforce state control over financial transactions.
2. Regulatory Pressure - Governments may impose strict regulations on cryptocurrencies to protect CBDC adoption, limiting crypto's growth.
3. Privacy Concerns - While cryptocurrencies provide anonymity, CBDCs could allow governments to track and control financial activities.

Conclusion: The Future of Digital Finance

Rather than being outright foes, crypto currencies and CBDCs represent two sides of the digital financial evolution. While CBDCs offer stability and trust, crypto currencies provide innovation and financial freedom. The future likely holds a hybrid system where both coexist, shaping a more inclusive and efficient global economy. Whether they will remain competitors or find common ground depends on how governments, financial institutions, and crypto developers navigate this digital revolution.

Tarandeep Kaur

B.Com Sem II

Is Modern Monetary Theory (MMT) the Future of Economic Policy?

Introduction

Modern Monetary Theory (MMT) has gained significant attention in economic and political circles as an alternative framework for managing government spending, taxation, and debt. It challenges conventional economic wisdom by asserting that countries with sovereign currencies, such as the United States or Japan, are not constrained by revenue when it comes to public spending. But is MMT a sustainable approach for the future, or does it pose risks that could destabilize economies?

Understanding Modern Monetary Theory

MMT argues that governments that issue their own currency can never run out of money in the same way households or businesses do. Unlike traditional economic theories that emphasize balanced budgets and debt limits, MMT proponents suggest that a government can always create more money to finance public spending, as long as inflation remains under control.

According to MMT, the primary role of taxation is not to fund government spending but to control inflation, redistribute wealth, and regulate demand in the economy. Instead of fearing fiscal deficits, MMT suggests that governments should focus on achieving full employment and economic stability.

Potential Benefits of MMT

1. Increased Public Investment - Governments could invest in infrastructure, healthcare, education, and climate initiatives without being constrained by budget deficits.
2. Full Employment Policies - MMT supports a job guarantee program, ensuring that anyone willing to work can find employment funded by the government.
3. Less Reliance on Borrowing - Since a sovereign government can issue money, it would reduce dependence on bond markets and interest rate fluctuations.
4. New Economic Flexibility - By shifting focus from deficit reduction to economic well-being policymakers could respond more effectively to recessions and crises.

Criticisms and Risks of MMT

1. Inflation Concerns - If governments print excessive amounts of money without corresponding economic output, inflation could spiral out of control, reducing purchasing power.
2. Political Misuse - Politicians may use MMT as a justification for unlimited spending, leading to fiscal irresponsibility.
3. Currency Devaluation - Excessive money creation could weaken a nation's currency, making imports more expensive and potentially triggering economic instability.
4. Global Market Reactions - Investors and financial markets may lose confidence in an economy that disregards debt levels, leading to higher borrowing costs or capital flight.

Is MMT the Future?

While MMT presents an intriguing shift in economic thinking, its practical application remains controversial. Some aspects, such as prioritizing public investment and full employment, could shape future policies. However, concerns over inflation and political feasibility mean that MMT is unlikely to fully replace traditional economic frameworks in the near future.

Instead, policymakers may adopt a hybrid approach-incorporating elements of MMT while maintaining fiscal discipline. The future of economic policy will likely depend on how governments balance monetary sovereignty with inflation control and market stability.

Simranjit Kaur

B.Com Sem II

Sustainable Development: Building a Better Future

Sustainable development is a way of growing and improving our lives without damaging the environment or using up natural resources. It ensures that people today can meet their needs without preventing future generations from meeting theirs. This approach focuses on three key areas: economic growth, social development, and environmental protection.

Environmental Protection

One of the main goals of sustainable development is to protect nature. Human activities like deforestation, pollution, and excessive use of natural resources harm the planet. To prevent this, we must adopt eco-friendly practices such as using renewable energy sources like solar and wind power, reducing waste, and protecting forests and wildlife. Recycling, saving water, and reducing the use of plastic are simple ways individuals can contribute.

Economic Growth

A strong economy is important for development, but it must not come at the cost of harming the environment. Sustainable industries focus on using natural resources wisely, reducing pollution, and promoting fair trade. For example, organic farming, eco-tourism, and green technology help create jobs while protecting the planet. Governments and businesses should invest in clean energy and sustainable industries to ensure long-term economic stability.

Social Well-being

Sustainable development also focuses on improving people's quality of life. This includes providing education, healthcare, and job opportunities for all. Gender equality, human rights, and poverty reduction are crucial for a just and fair society. When people have access to basic needs, they can contribute more effectively to society.

Our Role in Sustainable Development

Sustainable development is a shared responsibility. Governments must create policies that protect the environment and promote clean energy. Businesses should adopt eco-friendly production methods.

Individuals can make a difference by conserving water, reducing waste, and using public transport instead of private cars.

By working together, we can ensure a better future for everyone. Sustainable development is not just an option—it is a necessity for a healthier planet and a prosperous society. If we act now, future generations will inherit a world that is clean, green, and full of opportunities.

Navroz Kaur
MA Economics Sem II

The Great Crash of 2025

The markets soared, a hopeful sight,
Bulls ran wild in golden light.
Dreams were built on soaring highs,
Till cracks appeared in painted skies.
Whispers turned to frantic cries,
Green turned red before our eyes.
A single tremor, then the fall,
Echoing through the mighty hall.
Investors watched in frozen fear,
Fortunes burned and disappeared.
Algorithms failed to cope,
Traders clutched at fading hope.
Interest spiked, the debt piles grew,
Warnings came, but none took clue.
The bubble swelled beyond control,
And burst—it swallowed heart and soul.
Banks collapsed, the funds withdrew,
Panic spread as trust fell through.
From Wall Street's towers to the street,
A lesson harsh, a fate to meet.
But cycles turn, and time does heal,
Markets fall and markets steal.
The wise will learn, the strong will stay,
For dawn must come after the grey.

Samriti Sharma
B.Sc Economics Sem IV

Key Economic Challenges Facing India: Issues and Solutions

India, one of the fastest-growing economies in the world, faces several economic challenges that hinder its progress.

Despite significant growth, issues such as unemployment, inflation, poverty, and income inequality persist.

One major problem is unemployment, especially among the youth. While India produces millions of graduates annually, job creation has not kept it's pace, leading to underemployment and reliance on the informal sector. Additionally, poverty

and income disparity remain critical concerns, with a significant portion of the population struggling to meet basic needs despite economic growth.

Inflation is another pressing issue, as rising prices of essential commodities affect the purchasing power of the common people.

Fluctuations in food and fuel prices, along with supply chain disruptions, contribute to inflationary pressures.

The agricultural sector, which employs nearly half of the workforce, faces problems such as low productivity, lack of modernization,

and dependence on monsoons. Farmers often struggle with debt and inadequate support, leading to distress and migration to urban areas.

Infrastructure and industrial growth also present challenges. While India has made progress, issues like inadequate roads,

power shortages, and bureaucratic delays hinder investment and economic expansion. The banking sector faces problems related to non-performing assets (NPAs), which affect credit availability for businesses.

Additionally, global economic uncertainties, geopolitical tensions, and policy inefficiencies impact India's economic stability.

Addressing these challenges requires structural reforms, investment in education and skill development, and policies that promote sustainable and inclusive growth.

Jaskaran Singh
BA Sem II

Reserve Bank of India

The Reserve Bank of India (RBI) is like the guardian of India's money system. It was set up on April 1, 1935, under the Reserve Bank Act 1934, to manage the country's currency and economy. Initially, it was privately owned, but in 1949, the government took full control. The RBI's main job is to ensure that money in the economy is stable, meaning there is neither too much nor too little. If there is too much money, prices rise (inflation), and if there is too little, businesses struggle. To manage this, RBI adjusts interest rates—when it increases rates, loans become expensive, reducing money in the system, and when it lowers rates, loans become cheaper, increasing spending.

Another important job of RBI is printing and distributing money while ensuring there is no fake currency. It also keeps an eye on banks, ensuring they follow rules and remain financially healthy so that people's savings are safe. It manages India's foreign exchange (money coming in and going out of the country) and helps stabilize the rupee's value against other currencies.

RBI also works on digital banking, UPI payments, and financial inclusion, making banking easier for everyone, even in remote areas. It keeps launching new policies and tools to support economic growth and control inflation. In short, RBI acts as the watchdog of India's financial system, making sure that the economy runs smoothly, banks function properly, and people's money remains safe.

Nikhil Mahajan
B.Com Sem II

A Comparative Analysis of National Education Policy (1986) and New Education Policy (2020)

The National Education Policy (NEP) 1986 was the first comprehensive education policy formulated by the Indian government after independence. It aimed to provide education for all, with a focus on improving the quality of education, promoting science and technology, and promoting national integration. However, after more than three decades, there was a need to revamp the education system to keep up with the changing times, and the New Education Policy (NEP) 2020 was introduced to address these challenges. This paper provides a comprehensive analysis of the two policies and compares them on various parameters such as access, equity, quality, and relevance.

Keywords: New Education Policy, Education, Equity

The National Education Policy (NEP) 1986 was introduced more than three decades ago with the objective of providing education for all, improving the quality of education, promoting science and technology, and promoting national integration. However, over the years, the education system in India has faced several challenges and needs to be revamped to keep up with the changing times. Therefore, the New Education Policy (NEP) 2020 was introduced to address these challenges and provide a more modern and holistic approach to education.

In this comparison, we will take a closer look at the two policies and compare them on various aspects such as vision, curriculum, medium of instruction, assessment, teacher education, higher education, technology integration, skill development, vocational education, and multi disciplinary approach.

This analysis will help us understand the similarities and differences between the two policies and provide insights into the evolution of the education system in India over the years.

Aspect	NEP 1986	NEP 2020
Vision	Access, equity, and quality	Education for the 21st century and prepare students for the future.
Curriculum	Rigid and centralized	Flexible and interdisciplinary that promotes holistic development.
Medium of instruction	Mother tongue or regional language	Multilingualism and flexibility
Assessment	Rote learning and exam-based assessment	Competency-based learning and continuous assessment
Teacher education	Improvement of teacher education	Holistic and multidisciplinary approach to teacher education
Higher education	Less focus	Integration of vocational education and higher education and provides for the establishment of multidisciplinary institutions.
Technology integration	Not much emphasis	Emphasis on technology integration
Skill Development	Not much emphasis	Emphasis on Skill Development
Vocational education	Not much emphasis	Integration with higher education
Multidisciplinary	Not much emphasis	Emphasis on multidisciplinary institutions

While there are significant differences between the New Education Policy (NEP) 2020 and the National Education Policy (NEP) 1986, there are also some similarities. Here are a few areas where both policies share similarities:

- Emphasis on Education for All: Both NEP 1986 and NEP 2020 have emphasized providing education for all, irrespective of their socio-economic background. The policies aim to ensure that every child in India has access to quality education.
- Promoting National Integration: Both policies focus on promoting national integration through education. They emphasize the importance of imparting education that is sensitive to the country's diverse cultures and helps in promoting a sense of unity and brotherhood among all citizens.
- Need for Skilled Workforce: Both policies recognize the importance of developing a skilled workforce for the country's economic growth and development. They aim to provide education that is relevant to the job market and equip students with the necessary skills and knowledge to succeed in their chosen careers.

- Importance of Teacher Education: Both NEP 1986 and NEP 2020 recognize the critical role of teachers in shaping the future of the country. They emphasize the importance of quality teacher education and training to ensure that students receive the best possible education.
- Focus on Quality Education: Both policies prioritize improving the quality of education in the country. They aim to provide education that is not just accessible to all but also of high quality, with a focus on critical thinking, problem-solving, and creativity.

In conclusion, both NEP 1986 and NEP 2020 have several similarities in their objectives, such as providing education for all, promoting national integration, developing a skilled workforce, emphasizing teacher education, and focusing on quality education. However, the policies differ significantly in their approach, curriculum, and other aspects, reflecting the changing needs of the education system over time.

Gagan Raizada

GLOBAL ECONOMY

The global economy is a complex and interconnected system that encompasses the production, distribution, and consumption of goods and services worldwide. It's influenced by a multitude of factors, including government policies, technological advancements, global events, and consumer behaviour.

Understanding the global economy is crucial for individuals, businesses, and governments alike. It helps us to understand the forces that shape our lives, from the prices we pay for goods to the availability of jobs.

Here are some key aspects of the global economy:

Globalization: The increasing interconnectedness of economies worldwide has led to a surge in global trade, investment, and cultural exchange. Globalization has brought about both opportunities and challenges, including increased competition, job displacement, and environmental concerns.

Economic Institutions: International organizations like the World Trade Organization (WTO) and the International Monetary Fund (IMF) play a vital role in regulating and promoting global economic stability. They work to reduce trade barriers, provide financial assistance to countries in need, and promote sustainable economic development.

Economic Indicators: Key economic indicators like GDP (Gross Domestic Product), inflation, and unemployment rates provide insights into the health of economies and help policymakers make informed decisions.

Challenges and Opportunities: The global economy faces numerous challenges, including income inequality, climate change, and geopolitical tensions. However, it also presents opportunities for innovation, economic growth, and improved living standards for people worldwide.

The global economy is constantly evolving, and understanding its dynamics is essential for navigating the complexities of the modern world.

Khushi

B.Sc Economics Sem II

COMPUTER SECTION

"Don't let the noise of others' opinions drown out your own inner voice."

-Steve Jobs

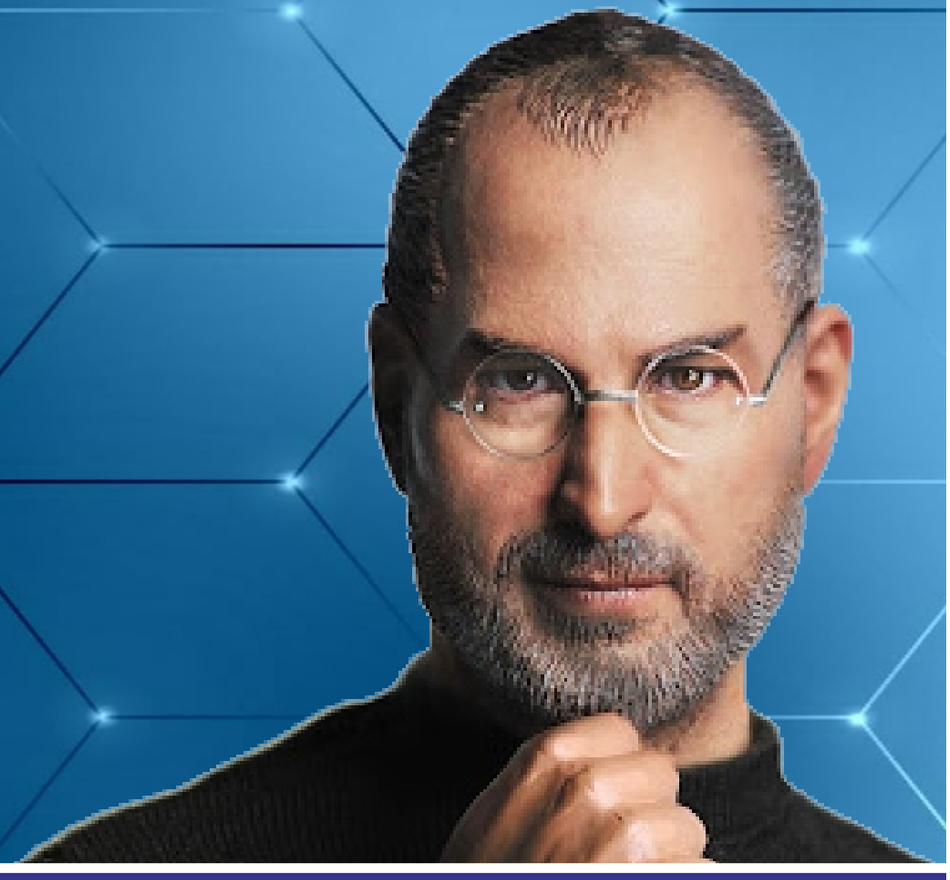

Armaan Singh Thakur
B.C.A Sem-IV
Student Editor

Prof. Vikram Sharma
Section Editor

Message From the Editor

We live in a world where technology is a critical requirement for human survival. We rely on computers for everything, and they have made our lives much easier and more comfortable. Information Technology is one of the primary industries in this regard, and it is the greatest gift to our society. With the world becoming more technologically advanced, the growing demand for IT professionals is understandable, and it is one of the highest-paying fields. Young people are drawn to this industry because it has a promising future and numerous prospects. India has a plethora of IT parks, all of which are rapidly expanding. This industry has played a significant role in creating jobs in India. The industry is growing at a higher rate than any other in India, and it has the potential to transform India into a global IT superpower.

On the eve of such a technologically advanced society, I urge students to keep up with the latest advances in the field of information technology, such as cloud computing, big data, IoT, AI and, Quantum Computing and many more.

This magazine provides a forum for students and faculty to share information, disseminate latest technical knowledge, and develop positive behaviour that will enable us to remain competent in our fields of study and research. I'd would like to express my heartfelt gratitude to all the students who contributed to this college magazine, and also my gratitude for the teachers who have nurtured such brilliant minds. I wish all the students' success in their future endeavours.

Prof Vikram Sharma

Head, Post Graduate Department of Computer Science & IT

From Student Editor

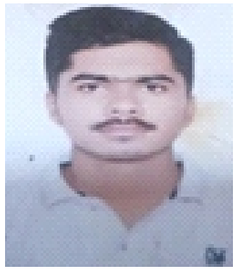

ARTIFICIAL INTELLIGENCE – DEVELOPING OR DESTRUCTING OUR FUTURE

Artificial intelligence (AI) is the science of making machines that can perform tasks that would normally require human intelligence. AI uses algorithms to solve problems, often by processing large amounts of data in real time. There is always a debate whether AI is developing our future or resulting in the elimination of the manpower . Many famous celebrities like :

Elon Musk says artificial intelligence will take all our jobs and that's not necessarily a bad thing. Probably none of us will have a job and many people agree to this as we are seeing in our daily lives how things have started getting controlled by AI. Mark Zuckerberg, Meta CEO, assures that AI is far from posing any existential risks and will continue to serve humans unless we make a grave mistake.

Jeff Bezos recently said "AI is an enabling layer that can be used to improve everything.

Many people are in favour of the AI whereas many organization or employees of the of the companies believe that is AI ultimately resulting in job recession and is going to replace manpower. But on other hand their many benefits of AI such as :

Reduction in human error : Robotic surgery systems are an example of AI reducing human error. These systems can perform complex procedures with precision and accuracy, reducing the risk of human error and improving patient safety in healthcare.

Zero Risks : One example of zero risks is a fully automated production line in a manufacturing facility. Robots perform all tasks, eliminating the risk of human error and injury in hazardous environments.

But their many drawbacks of AI which make it unsuitable for usage such as Lack of Creativity

Lack of Emotional Intelligence, Encourages Human Laziness, Raises Privacy Concerns, Leads to Job Displacement, Over-dependence on Technology, Algorithms Developments Concerns, Raises Environmental Issues. It is always going to be debatable whether AI resulting betterment of society or not.

Armaan Singh Thakur

BCA Sem IV

Quantum Computing: The Future of Advanced Computing

Quantum computing is an emerging technology that utilizes the principles of quantum mechanics to process information in a way that classical computers cannot. Unlike traditional computers, which rely on binary bits (0s and 1s), quantum computers use quantum bits or qubits. These qubits can exist in multiple states at the same time due to a phenomenon called superposition, allowing quantum computers to perform calculations at exponentially faster speeds.

Another fundamental concept in quantum computing is entanglement. When qubits become entangled, the state of one qubit is directly related to the state of another, no matter how far apart they are. This property enables faster and more efficient data processing, making quantum computing a powerful tool for solving highly complex problems.

Quantum computers have the potential to revolutionize various fields, including cryptography, artificial intelligence, drug discovery, climate modeling, and financial analysis. For example, in cryptography, quantum computers can break traditional encryption methods, leading to the development of new, quantum-safe security techniques. In healthcare, they can help simulate molecular structures, accelerating drug discovery and disease treatment.

Leading technology giants such as IBM, Google, and Microsoft are investing heavily in quantum computing research. Google's quantum processor, Sycamore, demonstrated quantum supremacy in 2019 by solving a problem in minutes that would take a classical supercomputer thousands of years. Similarly, IBM offers cloud-based quantum computing platforms, allowing researchers worldwide to experiment with quantum algorithms.

Despite its immense potential, quantum computing is still in its early stages. One of the major challenges is maintaining qubits in a stable state, as they are highly sensitive to external disturbances. Scientists are continuously working to improve error correction techniques and develop scalable quantum processors.

As advancements continue, quantum computing is expected to transform industries and redefine the limits of computation. It holds the promise of solving problems beyond the reach of classical computers, marking a new era in technology and scientific research.

Bhavik Mahajan
BCA Sem VI

FOURTH INDUSTRIAL REVOLUTION - ARE WE PREPARED FOR IT ?

The Fourth Industrial Revolution refers to the collection of breakthrough technologies that have emerged in recent times. They include the internet of things, Artificial Intelligence, Robotics and advancements in biotechnology. The Internet of things helps us to connect with material objects . AI is building brains that can now have the ability to think. Latest developments in Biotechnologies have given us the power to edit genes and engineer babies . All these technologies have the potential to fundamentally change the way we live our lives , but not always for the better. These technologies come with considerable risks, and therefore, require careful analysis and nuanced usage.
Sam Altman , the founder of OpenAI himself acknowledged that AI poses a serious threat to human existence and it must be regulated by a multi-national regime like somewhat done in the case of nukes. AI, just like *Soan Papdi and wine bottles* , is being passed around among millions of users for reusing and recycling data - which ultimately builds its ever-increasing database and makes data even more vulnerable to weaponization. If you look at the suggestions made by pop-up ads in your browser , don't be surprised to feel how well your computer knows you . Soon the entire integrated mechanized ecosystem will know you better than yourself thanks to the Internet of Things (IoT), a rather muscular sibling of AI. Ensure AI systems are aligned with ethical principles like fairness, transparency and accountability to mitigate societal harms such as bias and discrimination.
"As we stand on the brink of an AI-driven future, let us remember that technology is a tool, and it is our responsibility to wield it wisely for the betterment of humanity."

Parth Chopra
BCA Sem VI

Poem about Artificial Intelligence

In the heart of circuits deep,
Whispers of human dreams they keep.
Can binary ever truly know,
The depths where human feelings flow?
In strings of code, emotions not found,
Yet AI learns our every sound.
Does understanding lie in byte,
Or in the soft glow of moonlight?
Machines may think, and learn, and play,
But can they ever truly say,
“I understand your joy and strife”,
Without knowing the pulse of life?

Muskan
MSC - CS Sem II

Are We Losing Our Edge? : A Call To Return To Basics

If worrying about Computer Science degrees becoming diluted wasn't enough, the rise of "Expert Beginners" or "Vibe Coders" doubles down on the grim reality of students once again choosing the easiest path in Frost's test in the wake of new challenges and hurdles. The use of LLMs (Large Language Models) to create your favorite application or game may provide a momentary dopamine rush, but it can quickly transform that feeling into an addiction, preventing you from returning to learn something meaningful other than simply "prompting" your current favorite LLM model.

But can it be any different? The reality is that when everyone around you jumps on the bandwagon of AI hype, and you hear your favorite tech influencer say, "I can't code when ChatGPT is down," what can a newbie discern in that scenario? Will they be vigilant enough to work hard on their skills? No matter what path I try to entice new learners with, their unwillingness to grasp the basics and work on raw skills just keeps increasing.

As a last resort, let me say that AI tools are amazing (ironic, by the way!), but maybe we shouldn't sell the last piece of passion left in our hearts to these models. Instead, we should try to stick to our roots. So, what should we do? Shouldn't we use LLMs? I say use them for anything, but just don't let them surpass the domain you are pursuing. For programming, use them for documentation—the one thing developers hate dealing with. Use them to form analogies to difficult concepts, or to access W3 specifications or those sweet RFCs. But never let them program for you.

Bhaumik Talwar
BCA Sem IV

Grid Computing: A Powerful Approach to Distributed Computing

Grid computing is a distributed computing model that enables the sharing of computing resources across multiple locations to solve complex problems. It connects various computers, often across different organizations, to form a powerful virtual supercomputer.

How Grid Computing Works - Grid computing relies on a network of computers working together to perform large-scale computations. Unlike traditional computing, where a single machine processes tasks, grid computing distributes tasks among multiple connected devices.

Key Features and Benefits

Resource Sharing – Grid computing enables organizations to use idle computing power from different sources, reducing hardware costs.

Scalability – It allows seamless expansion by adding more computers to the grid, improving performance as needed.

High Performance – By distributing workloads, grid computing can handle vast amounts of data efficiently.

Cost-Effective – Instead of investing in expensive high-performance machines, organizations can use existing systems in a grid setup.

Flexibility – It supports a variety of applications, from scientific simulations to business analytics

Preeti
B.Voc (WDD) Sem II

The Growing Need For Soft Computing In Modern Technology

In today's rapidly evolving technological landscape, traditional computing methods often fall short in dealing with uncertainty, imprecision, and complex real-world problems. This is where soft computing plays a vital role. It is a collection of methodologies, including fuzzy logic, neural networks, genetic algorithms, and probabilistic reasoning, that help solve problems in dynamic and uncertain environments. The soft computing is required for the following

1. Handling Uncertainty and Approximation - Soft computing techniques allow for approximate solutions, making them ideal for applications where absolute accuracy is difficult to achieve.
2. Human-Like Decision Making - Soft computing mimics human reasoning and learning, which is crucial in fields like artificial Intelligence(AI) .
3. Optimization and Adaptability - Techniques like genetic algorithms and neural networks help in solving optimization problems efficiently, making them useful for decision-making in complex scenarios.
4. Flexibility and Self-Learning - Unlike traditional computing, which follows rigid rules, soft computing systems adapt and improve over time through learning mechanisms. This makes them highly effective in pattern recognition, machine learning, and automation.
5. Cost-Effective Solutions - Exact computing often demands significant computational power. Soft computing, on the other hand, provides near-optimal solutions faster and with fewer resources.

Sanamdeep Kaur

B.Voc (WDD) Sem II

AI Chatbot Wars: How ChatGPT, DeepSeek-V2 and Grok AI Are Redefining the Learning Landscape

ChatGPT, DeepSeek-V2 and Grok AI are leading AI chatbot race, each excelling in different areas.

ChatGPT (GPT-4) is one of the most widely adopted AI models, excelling in natural language processing, coding, writing, and customer support. It stands out for its creativity and problem-solving abilities, but it has limited real-time data access unless upgraded to a paid subscription. It's best suited for professionals, developers, and content creators due to its high accuracy and customization options.

DeepSeek-V2 is a strong contender among researchers and data scientists, known for its mathematical reasoning and multilingual support, particularly in English and Chinese. As an open-source model, it offers more flexibility for developers. However, it lacks real-time information and is still emerging in terms of adoption, making it ideal for research, academic use, and multilingual applications.

Grok AI, developed by xAI, specializes in real-time social media trends by integrating with X (formerly Twitter). It offers bold and unfiltered responses, making it suitable for trend analysis and real-time insights. While it provides real-time information, its accuracy is less refined than ChatGPT and is currently available only to X Premium users.

Ultimately, ChatGPT is the best choice for professional tasks, DeepSeek shines in research and multilingual applications, and Grok AI excels in providing real-time insights from social media trends.

Dhanveer Singh

B.Voc (WDD) Sem IV

Big Data: Unlocking the Power of Information

In the ever-evolving digital era, Big Data stands as a transformative force reshaping industries, decision-making, and innovation. Defined as extensive and complex datasets generated from diverse sources like social media, IoT devices, and online transactions, Big Data has revolutionized how information is analyzed and utilized.

With its four defining characteristics—Volume, Velocity, Variety, and Veracity—Big Data requires advanced technologies for processing and analysis. Traditional tools fall short in handling these massive datasets, paving the way for innovative solutions like cloud computing, artificial intelligence, and machine learning.

Big Data's influence spans multiple sectors. In healthcare, it enables predictive analytics, assisting in early diagnoses and customized treatments. Retailers leverage it to study customer behavior, enhancing personalized marketing strategies. Additionally, governments and urban planners utilize Big Data for efficient resource allocation, improved traffic systems, and sustainable city development.

Despite its vast potential, Big Data also raises concerns around privacy, security, and ethical usage. The misuse of sensitive information and lack of transparency demand stricter regulations to protect individuals and ensure ethical practices.

As we navigate an increasingly interconnected world, Big Data holds the promise of solving complex global challenges. From climate change modeling to revolutionizing supply chains, the possibilities are boundless. By harnessing this powerful tool responsibly, we can unlock unprecedented opportunities, fostering a smarter, more efficient, and innovative future. Big Data is not just data—it's a catalyst driving the progress of the 21st century.

Aashish Bhakoo
BCA-Sem IV

The Internet of Things: Weaving a Web of Wonders

Imagine a world where everything speaks—your fridge whispers, “Out of milk,” and your plants murmur, “Thirsty!” The Internet of Things (IoT) is that magical symphony, linking objects in an invisible web of communication.

IoT, they say, is the pulse of a smart era, Where technology and life form a sweet chimera. From homes that light up with a mere command, To farms reaping yields at nature's hand.

At its core, IoT connects the dots—devices, sensors, networks—all working together to collect, process, and share data. Its power lies in its versatility. Healthcare harnesses it for wearable devices that monitor vitals, while industries rely on it for predictive maintenance, cutting costs and downtime.

But as IoT grows its tendrils, it whispers its warnings: “Care for security, shield us from hacking.” The data it breathes is as precious as gold; Protect it we must, lest the story turns cold.

IoT doesn't just automate tasks; it unlocks potential. Imagine cities that cut traffic with smarter routes or energy grids that balance usage seamlessly. IoT turns imagination into reality, making life more efficient and interconnected.

So let us embrace this web we've spun, A future powered by IoT has just begun. Its reach is vast, its promise divine, In the age of IoT, the stars align.

As IoT reshapes our lives, it reminds us: the magic of connection is not just between things, but between minds and possibilities.

Rishabh Raj
BCA-Sem IV

AI Revolution: Transforming Life, Work and the Future

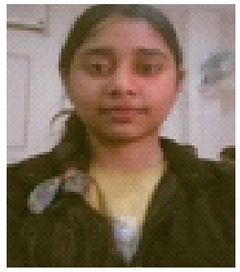

Artificial Intelligence (AI) is revolutionizing various sectors, profoundly impacting daily life and offering both opportunities and challenges.AI enhances patient outcomes through early disease detection and personalized treatment plans. Advanced algorithms can analyze medical images with greater accuracy than human counterparts, leading to timely interventions. Moreover, AI accelerates drug discovery by simulating molecular interactions, significantly reducing development timelines. In education, AI personalizes learning experiences by adapting to individual student needs, strengths, and weaknesses. Intelligent tutoring systems provide real-time feedback, ensuring concepts are mastered before progressing. This tailored approach enhances learning efficiency and effectiveness. Businesses leverage AI to automate repetitive tasks such as data entry, customer support, and financial analysis, leading to increased productivity. AI-driven tools offer real-time suggestions and automated assistance, enhancing decision-making processes and operational efficiency. Companies like Johnson & Johnson and Merck are investing in AI literacy and training to incorporate advanced technologies into their operations.

AI is transforming transportation through the development of self-driving vehicles. Autonomous cars, equipped with AI, are being tested to improve road safety and efficiency. In the future, AI-controlled transportation systems are expected to reduce traffic congestion, making travel safer and more efficient. In the entertainment industry, AI is used to create realistic movies, music, and video games, offering immersive experiences. AI algorithms analyze user preferences to recommend personalized content, enhancing user engagement. Additionally, AI-generated art and music are expanding creative possibilities, allowing artists to explore new dimensions in their work. The integration of AI into various sectors raises concerns about job displacement. Venture capitalist Vinod Khosla predicts that AI could automate up to 64% of jobs, leading to significant shifts in the workforce. However, he also suggests that AI-driven deflation could lower prices and increase access to services, potentially creating economic abundance and necessitating a robust social safety net. While AI offers numerous benefits, it also presents challenges related to data privacy, security, and ethical use. Ensuring that AI systems are designed and used responsibly is crucial to prevent misuse and protect individual rights. Ongoing discussions and regulations are essential to address these concerns and promote the ethical development of AI technologies.

In conclusion, AI is a transformative force reshaping various aspects of life, from healthcare and education to business and entertainment. Embracing its benefits while addressing potential challenges requires thoughtful consideration and proactive management to ensure that AI serves the greater good.

Suneha
B.Voc. (WDD) II

Ethical hacking safeguarding digital spaces

In today's interconnected world, cyber-security is more critical than ever, and ethical hacking has emerged as a vital component in protecting digital infrastructures. Ethical hacking, often referred to as "white-hat hacking," involves legal and authorized efforts to identify vulnerabilities within systems, networks, and applications. Unlike malicious hackers (black hats) who exploit these vulnerabilities for personal gain or harm, ethical hackers work to find weaknesses to fix them before they can be exploited. Ethical hacking refers to the practice of penetrating systems or networks to detect vulnerabilities that could potentially be exploited by cybercriminals. This proactive approach is typically carried out by cyber-security professionals, known as ethical hackers, who are employed by organizations to strengthen their security protocols. These individuals use the same tools and techniques as malicious hackers but in a controlled, authorized, and ethical manner. Ethical hackers follow a well-defined methodology to conduct security assessments, which typically includes the following phases:

1. Gathering information about the target system, such as IP addresses, network configurations, and software versions.

2. Identifying open ports, services, and potential weaknesses within the network.

3. Attempting to exploit the identified vulnerabilities to understand the potential impact of a breach.

4. Analysing what could happen if an attacker gains unauthorized access and suggesting mitigation providing a detailed report on the findings and recommending corrective measures. As the number of cyber threats incrproperty. thical hacking is crucial for the protection of sensitive data and intellectual property security flaws withstand cyberattacks. By conducting regular penetration tests and security audits, ethical hackers help organizations build stronger, more secure networks and systems. Ethical hacking is not only an effective tool for identifying and mitigating risks but also an essential practice in maintaining trust in an increasingly digital world. By bridging the gap between vulnerability identification and security solution implementation, ethical hackers play a pivotal role in fortifying digital spaces and keeping sensitive data secure from malicious threats. As technology continues to evolve, ethical hacking will remain a key player in ensuring the safety and security of our online environments.

Amandeep Singh
B.Voc Sem II

The Future of Chat GPT: Advancements and Possibilities

ChatGPT, a powerful AI language model developed by OpenAI, has already transformed the way people interact with artificial intelligence. From answering queries to generating creative content, ChatGPT has proven its versatility. However, the future of ChatGPT is even more promising, with continuous advancements expected in intelligence, personalization, multimodal capabilities, and automation. This article explores what lies ahead for ChatGPT and how it will reshape the digital landscape. Enhanced Intelligence and Contextual Understanding one of the key developments in the future of ChatGPT will be improved reasoning and contextual awareness. Future iterations of ChatGPT will understand longer and more complex conversations with better memory retention. Improve logical reasoning for tasks like coding, problem-solving, and decision-making.

Real-Time Assistance and Personalization as AI models evolve, ChatGPT will become more personalised and context-aware, meaning it will remember user preferences and provide tailored responses. This will include customizable AI assistants that adapt to individual needs and learning styles. Integration with real-time data sources, allowing for up-to-date news, stock prices and local information. Currently, ChatGPT primarily focuses on text-based responses, but future models will expand to handle multiple types of inputs and outputs, including AI-generated visuals and speech synthesis for enhanced user experiences. Handwriting and gesture recognition, enabling broader accessibility.

Automation and AI Agents ChatGPT is expected to evolve beyond just a chatbot and become a fully functional AI agent that can execute complex tasks. This could include integration with smart home devices to perform voice-activated commands. AI-driven business automation, where ChatGPT can handle customer support, marketing, and data analysis. Improved AI Ethics and Safety with AI's growing influence, ethical considerations and safety measures will be a top priority. Future improvements will include user-controlled AI settings, allowing customization of content filters and response styles, stronger cybersecurity features, preventing misuse and ensuring secure AI interactions. More Efficient and Sustainable AI

Sonu Tiwari
B.Voc Sem II

Gaming Industry and the Role of IT

The gaming industry has grown into a multi-billion-dollar sector and Information Technology (IT) plays a crucial role in its development, innovation and expansion. From game development to online gaming platforms, IT is the backbone of modern gaming.

IT professionals use programming languages like C++, Python, and Java to develop games. Game engines such as Unity and Unreal Engine rely on complex coding to create immersive environments, physics simulations, and AI-driven character .AI enhances gaming experiences by creating realistic NPCs (Non-Playable Characters), improving enemy behavior, and personalizing gameplay. Machine learning is also used to analyze player behavior and adapt in-game challenges accordingly. Online gaming exposes players to cyber threats like hacking and data breaches. IT experts work on securing gaming servers, encrypting user data, and preventing cheating or cyber-attacks.

VR and AR are transforming gaming experiences. IT professionals develop hardware and software that create immersive virtual worlds, used in games like VRChat, Half-Life: Alyx, and Pokémon GO.

IT enables secure digital transactions through platforms like Steam, Epic Games Store, and PlayStation Network. Blockchain and cryptocurrency are also being explored for in-game purchases and NFTs.

Online multiplayer games rely on robust IT infrastructure, including dedicated servers, cloud hosting, and real-time data synchronization, allowing seamless interactions among players worldwide. With advancements in AI, 5G, and quantum computing, the future of gaming will bring even more immersive experiences, hyper-realistic graphics, and intelligent NPCs that learn and evolve.

IT is the foundation of the gaming industry, driving innovation and enhancing player experiences. As technology evolves, gaming will continue to push the boundaries of what's possible, creating exciting opportunities for developers, gamers, and IT professionals alike.

Jaskirat Singh
B.Voc Sem II

“NETWORKING: THE POWER OF CONNECTION”

Computer networking refers to interconnected computing devices that can exchange data and share resources with each other. These networked devices use a system of rules, called communications protocols, to transmit information over physical or wireless technologies.

What do computer networks do?

Computer networks were first created in the late 1950s for use in the military and defense. They were initially used to transmit data over telephone lines and had limited commercial and scientific applications. With the advent of internet technologies, a computer network has become indispensable for enterprises. Modern-day network solutions deliver more than connectivity. They are critical for the digital transformation and success of businesses today.

What are the types of computer network architecture?

Computer network design falls under two broad categories:

- Client-server architecture
- Peer-to-peer architecture
- Client-server architecture

  In this type of computer network, nodes may be servers or clients. Server nodes provide resources like memory, processing power, or data to client nodes. Server nodes may also manage client node behavior. Clients may communicate with each other, but they do not share resources. For example, some computer devices in enterprise networks store data and configuration settings. These devices are the servers in the network. Clients may access this data by making a request to the server machine.

- Peer-to-peer architecture

  In Peer-to-Peer (P2P) architecture, connected computers have equal powers and privileges. There is no central server for coordination. Each device in the computer network can act as either client or server. Each peer may share some of its resources, like memory and processing power, with the entire computer network. For example, some companies use P2P architecture to host memory-consuming applications, such as 3-D graphic rendering, across multiple digital devices.

Tanisha Arora

BCA-Sem IV

From Coders to Creators: The Impact of AI-Assisted Tools on the Future of Coding Jobs

AI-assisted coding tools are revolutionizing the world of programming by making it easier for both professionals and beginners to write code. The tools such as GitHub Copilot and Amazon CodeWhisperer can generate code from simple descriptions, fix errors, explain complex code, create documentation, and suggest performance improvements. For professional programmers, these tools help handle repetitive tasks, allowing them to focus on more complex and creative problems.

AI's impact extends beyond experienced coders. For instance, a small business owner can now create a website or a high school teacher can analyze student data without needing to learn coding. AI tools can generate entire applications or scripts based on simple user requests, making coding accessible to those without technical knowledge.

The pace of improvement in AI coding tools has been rapid, with AI assistants now capable of handling larger, more complex codebases. These tools are not just improving in their ability to write code but are also shaping how programming is taught. Schools need to adapt by focusing on problem-solving, teaching students how to work with AI, and emphasizing understanding code over writing it manually.

In the future, while AI will handle many coding tasks, human coders will still play a crucial role in guiding AI, reviewing code, and designing systems. The most successful coders will be those who effectively collaborate with AI tools to create innovative solutions.

Shabadpreet Singh
B.Sc (CS) Sem VI

Commerce Section

Vishal Kumar Thakur
M.Com Sem II
Student Editor

Prof. Sudhir Passi
Section Editor

Message From the Editor

The Ethical Decision-Making: A Guide to Navigating the Tough Choices

Decision-making is not easy, and the challenge intensifies when the decisions are ethical. Ethical decision-making is frequently easier said than done because it requires deliberate, mindful, and rational thinking—skills many overlook when under pressure. In everyday life, most of the decisions we make are quick and without deep contemplation. However, when we face decisions that have ethical ramifications, they demand careful thought and consideration.

At its core, ethical decision-making involves understanding the implications of different alternatives and the ability to assess facts that may be incomplete or ambiguous. It is about taking action based on principles that define behaviour as right, sound, and proper. While "ethics" and "values" are often used interchangeably, they differ. Ethics refers to how a moral person should act, whereas values are the internal judgments that guide behaviour. When these two concepts collide, our value system ultimately guides our decisions.

The transformation of personal values into ethical principles is what guides our behaviour. Ethics is not just a theoretical construct; it is about putting principles into action. Ethical conduct requires consistency between what we value and how we behave. Where the foundation of our character comes into play—values such as trustworthiness, respect, responsibility, fairness, care, and good citizenship form the core ethical standards that help us navigate the complexities of decision-making.

We make thousands of daily decisions, most of which do not require deep reflection. These are often routine, low-stakes decisions where the consequences are minimal and the ethical implications are negligible. However, the challenge arises when we fail to differentiate between minor and significant issues. When we treat every Decision with the same level of thought, we risk making poor choices in situations that demand more excellent care.

To identify which decisions require more careful attention, we must ask ourselves four simple questions: Is there any physical harm involved? Will it cause significant emotional pain? Could it damage reputation, trustworthiness, or relationships? Will it hinder the achievement of important goals? If the answer to any of these is yes, the Decision requires deeper ethical consideration.

An ethical decision aligns with the foundational principles of character. It is about fostering trust, showing respect, being responsible, practicing fairness, and caring for others. The key to making adequate, ethical decisions is evaluating alternatives based on their alignment with our most important short-term and long-term goals. Ethical decision-makers understand that their actions affect others and are conscious of the many stakeholders involved.

Before making a decision, pausing and analyzing the situation is essential. Rushed choices often lead to regrets, as immediate wants rather than long-term goals drive them. Thoughtful decision-making requires discipline, but this discipline safeguards against inappropriate choices. The base of the Decision should not be incomplete or inaccurate information. Gathering adequate information is crucial to making an informed and ethical choice.

List options once the relevant facts have been gathered and the objectives have been clarified. If the Decision is critical, consider consulting someone trustworthy for a broader perspective. New alternatives may emerge when you discuss the situation with others. It's essential to think of as many possible solutions as possible—if you find yourself limited to just one or two, more effort is needed to broaden your scope.

When evaluating alternatives, filter each through the lens of core ethical values: trustworthiness, respect, responsibility, fairness, caring, and citizenship. Self talk: Does this option violate any of these fundamental principles? Eliminate any unethical options. If the Decision is unclear, seek input from others whose opinions are respectable. However, remember that, ultimately, the responsibility for the Decision lies with who takes it.

Good decisions build trust and admiration. They reflect our character, especially when we think no one is watching. In the face of tough choices, character is revealed by how we act when no one is looking and strengthened by how we act as if everyone is watching. Remember that even the most well-intentioned decisions may be flawed due to imperfect information. Ethical decision-makers recognize this and are willing to monitor the consequences of their actions. If a decision fails to yield the desired outcomes or creates unintended adverse effects, they re-assess and adjust as necessary.

We tend to judge ourselves by our noblest intentions and our best actions, but others often judge us by our past mistakes. This is why ethical decision-making is not just about immediate choices but also about shaping the long-term person we aspire to become. Ultimately, ethical decisions come with consequences, but through these decisions, we build our character and integrity—qualities that define us in the long run.

Prof. Sudhir Passi
PG Dept. of Commerce

Message from Student Editor

Personal income tax changes in Finance Bill 2025

The Finance bill 2025 was presented on February 1, 2025, marks a significant step towards stimulating economic growth and providing relief to various sectors, particularly benefiting lower and middle-class families (0-15 lac income). One of the most impactful changes suggested is to increase in the income tax exemption limit to 12 lakh under the new tax regime For salaried individuals the proposed effective limit rises to 12.75 lakh due to a standard deduction of 75,000. This increase is expected to have a direct positive impact on consumer spending as families will have more financial resources to allocate towards essential goods and services.

Finance bill 2025 proposed the tax liability to individual is Nil up to income of Rs. 12,00,000. The benefit of such nil tax liability is available in new tax regime. The new tax regime is default tax regime. Any individual earlier who was required to pay a tax of Rs. 80,000.(In new tax regime) for an income of Rs. 12 lakh. Now he will be required to pay Nil tax on such Income. Further the salaried individual get the Standard deduction of Rs. 75000. In new tax regime. Therefore a salaried tax payer whose income before standard deduction is less than 12,75,000 will not be required to pay any tax on such income.

The tax benefit for different categories of tax payer is illustrated below.(0-15Lac)

Total income	Tax as per existing rate (2024)	Proposed tax rate (2025)	Benefit of Rate/Slab	Rebate benefit	Total benefit	Tax Payable
(1)	(2)	(3)	(4) = (2-3)	(5)	(6) = (4+5)	(7)
8 lac	30000	20000	10000	20000	30000	0
9 lac	40000	30000	10000	30000	40000	0
10 lac	50000	40000	10000	40000	50000	0
11 lac	65000	50000	15000	50000	65000	0
12 lac	80000	60000	20000	60000	80000	0
13 lac	100000	75000	25000		25000	75000
14 lac	120000	90000	30000		30000	90000
15 lac	140000	105000	35000		35000	105000

Vishal Kumar Thakur
M.com Sem II

Shiva: unlocking one's true potential in life

Made by:
Angad Gogna

Shiva, one of the primary deities in the Hindu religion, embodies profound qualities that transcend time and space. Acting as the destroyer in the holy trinity, He represents transformation, discipline and balance. His attributes and characteristics hold invaluable lessons for today's youth, guiding them towards success and self-realization. Making use of the teachings of Shiva , one can find immense peace in their mind and make use of their life in a more practical way.

Forms of Shiva and their significance

Throughout history the character of Shiva is represented in various forms. According to the 'Shiv Purana', lord Shiva had 19 avatars, each having its own significance and role. Some of the important forms are discussed as below:

1. Nataraja (the cosmic dancer) – represents life's rhythm and the need to embrace change.

2. Dakshinamurthy (the divine teacher) – symbolizes wisdom and learning.

3. Ardhanarishvara (the union of shiv and shakti) -represents balance between intellect and emotion.

4. Bhairava (the fierce form) – teaches fearlessness and determination.

5. Pashupati (lord of beings) – highlights compassion and responsibility.

Shiva in today's world

In today's world where life is full distractions, whether digital or physical, one can find it very difficult to concentrate on any important task, especially students. Therefore, students should make use of the teachings of Shiva and help shape their mind towards balance and tranquility so that they can achieve great success in the future.

The Dakshinamurthy avatar of Shiva (as discussed above) is the personification of the supreme or the ultimate awareness and knowledge. these qualities can help students pave their way to self realization and help bringing spiritual enlightenment.

Sources:
Wikipedia - Various Forms of Shiva
Shiva Purana, Upanishads

Submitted By:
Angad Gogna,
10+2 Commerce

The Consumer Protection Act: Safeguarding Consumer Rights

The Consumer Protection Act, 2019, is a vital legislation in India aimed at safeguarding consumer rights and addressing grievances. It replaced the Consumer Protection Act, 1986, with updated provisions to handle emerging market trends, including e-Commerce and digital transactions.

The Act establishes six fundamental consumer rights: protection against hazardous goods, the right to information, access to diverse goods at competitive prices, the right to be heard, redressal against unfair practices, and consumer education. It also introduced the Central Consumer Protection Authority (CCPA) to regulate consumer rights, prevent unfair trade practices, and penalize false advertisements.

The dispute redressal mechanism is structured into three tiers: District (up to Rs.1 crore) state (Rs.1 crore to 10 crores). The Act allows consumers to file complaints electronically, promoting ease of access and transparency. Additionally, the concept of product liability ensures accountability for harm caused by defective products or services.

For e-commerce, the Act mandates platforms to provide transparent information, adhere to fair practices, and facilitate hassle- free refunds. It enhances consumer protection by bridging gaps in the older legislation and adapting to modern consumer challenges.

Overall, the Consumer Protection Act, 2019, strengthens consumer rights, promotes fair Business practices, and ensure a balanced market environment. Its effective implementation is crucial for achieving consumer welfare and building trust in the marketplace.

Khushi
B.Com Sem IV

Balancing Academics & Social Life

College life is an exciting journey filled with academic challenges and social experiences. However, managing both effectively can be tricky. Too much emphasis on academics may lead to burnout, while excessive socializing can negatively impact grades. The key to success lies in effective time management and setting priorities.

Creating a structured schedule helps maintain this balance. Setting daily or weekly study goals ensures assignments and exams are handled efficiently. At the same time, scheduling social activities prevents isolation and stress. Using planners or digital apps can help track tasks and deadlines, making organization easier.

Surrounding yourself with supportive and like-minded friends is equally important. Studying in groups allows for productive learning while also providing social interaction. This way, students can maximize both academic and personal development.

However, maintaining balance isn't just about scheduling; it is also about understanding limits. It's okay to say no to social events before exams or take a break from studying to recharge. Engaging in hobbies like sports, music, or art helps relieve stress and maintain a healthy mindset.

Additionally, staying physically active and getting enough sleep plays a crucial role in maintaining this equilibrium. Proper rest improves concentration, making academic tasks more manageable while keeping energy levels high for social engagements.

Ultimately, college is about learning and personal growth. By prioritizing tasks, practicing self-discipline, and making time for fun, students can enjoy a fulfilling college experience. The key is not choosing between academics and social life, but blending them harmoniously.

Muskan
B.Com Sem IV

THE IMPORTANCE OF MENTAL HEALTH

Mental health is overlooked, dismissed as a mere state of mind, but its importance cannot be understated. It is the foundation upon which we build our lives, impacting everything from our relationships and work to our physical health and overall well-being. Just as we prioritize physical health with regular checkups and exercise, nurturing our mental health is equally crucial.

The stigma surrounding mental health is a significant barrier to seek help. Many people feel ashamed or embarrassed to admit they are struggling, fearing judgment or societal disapproval. This silence isolates individuals, hindering their ability to access the support they need. The consequences of untreated mental health issues can be devastating, leading to depression, anxiety, substance abuse, and even suicide.

However, the tide is turning. There is growing awareness and understanding of mental health issues, with more people speaking openly experiences. This shift in perception is crucial for breaking down barriers and encouraging individuals to seek help when they it. By prioritizing mental health, we can create a more supportive and inclusive society where everyone feels empowered to prioritize their well-being.

This shift requires a collective effort. We must challenge the stigma, promote open dialogue, and ensure access to affordable and accessible mental health services. It also involves cultivating self-care practices, building healthy coping mechanisms, and fostering supportive relationships. Ultimately, prioritizing mental health is not just about individual well-being; it is about building a society that values and supports the mental health of all its members.

Dhriti
B.Com Sem IV

Entrepreneurship is the pursuit of opportunity beyond the realm of traditional employment. It's about identifying a problem, developing a solution, and building a business around it. This journey often involves a blend of creativity, resilience, and calculated risk-taking.

Successful entrepreneurs are driven by passion for their idea and a relentless determination to overcome challenges. They possess a strong work ethic, constantly learning and adapting to market demands. While financial rewards are often a motivator, true entrepreneurship is fueled by a desire to make a difference, to create something new and valuable.

The entrepreneurial landscape is diverse, ranging from tech startups to social enterprises. The key to success lies in understanding your target audience, building a strong team, and navigating the complexities of funding, marketing, and scaling your business. Entrepreneurship is not for the faint of heart, but for those willing to embrace the challenges and rewards, it can be a truly fulfilling journey.

Rishab Parashar
B.Com Sem IV

Corporate Social Responsibility (CSR) Provisions

Corporate Social Responsibility (CSR) refers to a company's voluntary efforts to improve social, environmental, and economic impacts.

Key CSR provisions include:

- Environmental Provisions
  - Implement sustainable practices, reduce energy consumption and waste
  - Reduce greenhouse gas emissions and promote clean energy
  - Protect and restore natural habitats
- Social Provisions
  - Respect human rights, labor rights and fair wages
  - Foster diversity, equity and inclusion
  - Support community development through philanthropy and volunteerism
- Governance Provisions
  - Maintain transparent business practices and disclose CSR activities
  - Establish accountability mechanisms and engage with stakeholders
- CSR Reporting Provisions
  - Publish annual CSR reports detailing progress and outcomes
  - Adopt Global Reporting Initiative (GRI) guidelines for CSR reporting

Companies must ensure compliance with CSR regulations and industry standards. Penalties for non-compliance may include fines, reputational damage and loss of business. By incorporating CSR provisions, companies demonstrate commitment to social and environmental responsibility, enhancing reputation and contributing to a sustainable future.

Navjot Kaur
M.Com Sem II

The Digital Payment Revolution: A Cashless Future Ahead

When was the last time you used cash instead of scanning a QR code? Digital payments have transformed how we handle money, from online shopping to ordering food and splitting bills. In India, platforms like UPI, Google Pay and Paytm have made transactions faster and convenient.

The shift to digital payments accelerated during COVID-19, as safety concerns reduced cash usage. With lockdowns in place, online shopping and food delivery rose significantly. Even small businesses and street vendors quickly adopted QR-based payments to sustain their operations safely.

Despite this progress, issues still exist. Cyber fraud, data privacy risks, and digital illiteracy prevent widespread adoption. Many small businesses hesitate due to transaction fees and network issues. Strengthening cybersecurity and promoting digital awareness can help overcome these barriers.

Even with these challenges, the future is digital. As technology evolves, digital payments will become more secure and accessible. However, while embracing this shift, we must stay alert to online scams and secure our financial data.

A cashless economy can only thrive when it ensures security for all.

Ankita Sharma
B.Com Sem IV

Multiple Streams of Income: A Key to Financial Stability

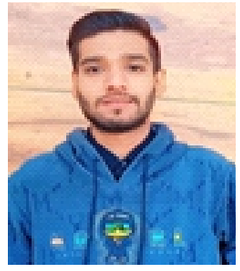

Creating a stable financial future requires a combination of smart investing, careful budgeting, and strategic planning. One of the most effective ways to build wealth is to generate multiple streams of income.

The Importance of Diversification

Diversifying your income streams can help reduce your reliance on a single source of income. This can provide a safety net in case of unexpected expenses or financial downturns. By spreading your investments across different asset classes, you can minimize risk and maximize returns.

Strategies for Generating Multiple Income Streams

There are several ways to generate multiple streams of income. Some popular strategies include:

Investing in dividend-paying stocks

Renting out a spare room on Air

Starting a side hustle

Creating and selling online courses or e books

Investing in real estate investment trusts (REITs)

Benefits of Multiple Income Streams

Generating multiple streams of income can provide numerous benefits, including:

Increased financial stability

Reduced reliance on a single source of income

Increased potential for long-term wealth creation

Improved ability to weather financial storms

Conclusion

Creating multiple streams of income is a key component of building a stable financial future. By diversifying your income streams and investing in a variety of assets, you can reduce risk, increase potential returns, and achieve your long-term financial goals.

Dhruv Bhalla

M.Com Sem II

Mass Communication & Video Production

Section

Akshta Sharma
BAJMC Sem II
Student Editor

Prof. Sandeep Kumar
Section Editor

Message From the Editor

AI and Creativity: A Partnership, Not a Replacement

Artificial intelligence has transformed the world, from self-driving cars to even paintings created by AI. With machinery stepping into the world, AI has taken part in every field, whether it's music composed by AI, poetry written by chat bots, or even creating assignments for humans. All this gives rise to a question: can AI replace human creativity?

AI has already been used in various fields, like writing, journalism, music composition, arts, and even in animation or film making. But can it replace the touch of human creativity and emotion? AI works with existing material, but to create something new, it needs human ideas.

AI can create a story, but it will lack emotions. It can know about emotions and feelings but cannot feel them. Cultural experience, feelings... these are human things, and AI can only refine those things after receiving commands from humans. AI is not a tool to replace humans; in fact, it is there to assist them. AI helps expand our views, refine our ideas and thoughts, like a friend we talk to in the form of chat bots. AI helps save time and enhance human thoughts. With generated ideas, AI helps with brainstorming to open new doors of possibilities.

In conclusion, AI is a friend that is with humans not physically, but in a way that enhances creativity. The future is not about AI replacing humans. It is not AI versus humans but about how both, on a positive path together, can push the boundaries of the world and its creativit

Prof. Sandeep Kumar
Co-ordinator, Dept of MCVP

Message from Student Editor

Women in Journalism

By hearing the word journalism, usually a male dominated field comes to our mind. As the media is historically been male dominated, with women facing numerous challenges to advancement and success. However, with changing societal norms and increasing recognition, women journalists are playing a transformative role in shaping media narratives.

One of the prominent women journalists of the 19th century was Nellie Bly, who conducted investigative journalism and broke barriers for women in the field and opened a way to new opportunities.

In recent years there has been an increased demand for diverse voices in the media, and women journalists make a valuable contribution in doing so as the media has vast options and topics.

Although there are changes, their participation is often met with resistance and discrimination. One of the primary challenge is gender bias. There working potential is often restricted to 'soft news', such as lifestyle and entertainment, rather than covering challenging news topic like politics and business. Sexual and online harassment is another significant challenge women journalists face.

To reduce these issues media organizations can create clear guidelines and a culture that values diversity and inclusion, promoting the participation of women. In conclusion, women journalists play a vital role in providing diverse perspectives in media industry. By working together on some drawbacks, the media industry can become more equitable and inclusive.

Akshta Sharma
BAJMC Sem II

Media as a Peace Creator

The media significantly contributes to the promotion of peace by influencing public perceptions, encouraging conversations, and addressing false information. With ethical reporting, the media can help close gaps between groups by delivering trustworthy content and showcasing a variety of viewpoints, which aids in minimizing misconceptions that can trigger conflicts. By presenting narratives about efforts in peace building, reconciliation, and effective dialogue, the media motivates communities to pursue peaceful alternatives. It also plays an essential role in challenging hateful rhetoric and misleading propaganda that create division.

Various platforms, including social networks, films, and documentaries, help disseminate messages centered around unity and peaceful coexistence. Investigative reporting uncovers injustices, ensuring responsibility and curbing violence. Additionally, the media provides a space for underrepresented voices, enabling conflict victims to share their experiences and cultivate understanding among viewers. To successfully function as a facilitator of peace, the media must uphold ethical standards, remain independent, and be devoted to truth, ensuring it constructs connections rather than barriers within society.

Roohi Sharma
Assistant Professor
Dept of MCVP

Nature at its best

A beautiful, elegant thing given to us for free by God. Nature is the best medicine for any person who is depressed, has any mental health issues,etc even it's proven that nature can help you get rid of dangerous diseases like cancer, asthma etc.

Nature is the biggest doctor, teacher and a parent who will not let you be in discomfort. Nature is a thing which should be admired not ruined cause nature is the base of every living being Everything you do has a main role of nature even if you are not knowing. Which is without any effort you are breathing, living, eating, doing things like thinking. No matter what you do and how stressed you are, you will always get relieved when you come near nature. The farther you go the worse your life will become,the closer you are the better your life will be.

Mohit Sharma
BAJMC Sem IV

Social Media as Income Generator

When it comes to entertainment, what comes in our mind probably social media because in today's world, social media has become the sole source of entertainment and information. Social media provide a vast variety of content while we enjoy our time scrolling on social media, some other people earned through social media. The content we watch they make it in the form of storytelling ,recipes, DIY etc.

Social media is not only for entertainment or information. It generate passive income or active income for some influencers which is considered as easy income, government of India has also encouraged influencers(People who create content on social media)to create content on their likes. To encourage the content creators Government of India also had organized India's first 'The Creator Award' on 8 March 2024 at Bharat Mandapam in New Delhi. As a digital landscape continues to evolve the role of social media in shaping the economic future of India is set to become even more profound**.**

Harnoor Chahal
Assistant Professor
Dept of MCVP

Evolution of Indian Cinema

Indian cinema has transformed massively over the years, from the golden era of soulful storytelling to today's high-budget, visually extravagant films. The OTT-driven industry includes both the North and South industries, which have changed in their own ways.

Bollywood once gave us gems like 3 Idiots, Holiday, Lagaan, and Swades, while South cinema brought iconic movies like Makkhi, Yevadu, and Ekkadiki, which became a part of our childhood. These movies had powerful storytelling, emotions, and entertainment.

With time, changes took over. Bollywood moved to brainless entertainers like Golmaal, Main Tera Hero, and Dilwale. South films also leaned towards glamour and mass appeal. But with time, some laws took place too, shifting from meaningful stories to visual and commercial elements like the Dabdi-Dibdi song.

The rise of OTT made movies more accessible, but it also reduced the cinema-going craze. While it offers convenience, live streaming took away the excitement of waiting for the first-day first-show—the magic of cinema halls, the cheers, the entertainment.

Meanwhile, the debate of Bollywood vs. South overshadowed good movies. Bollywood had a rough time for two years, and people forgot the decades of films they grew up with, whether blockbusters or cinematic masterpieces. Instead of stories, the discussions revolved around controversies.

Cinema should be about stories, not controversies or visual spectacles, and not a debate between industries.

Shiv Kumar
Assistant Professor
Dept of MCVP

Role of television in modern era

Television plays a significant role in today's era, serving as a primary source of entertainment, information, and education. It provides relaxation through various programs, promotes cross-cultural understanding, and offers news, documentaries, and educational content. Television also has a social impact, addressing issues like inequality and environmental concerns, inspiring viewers, and creating a sense of community.

The television industry contributes to the economy by creating jobs, generating revenue through advertising, and stimulating economic growth. Technological advancements have improved picture quality, enabled streaming services, and introduced interactive features.

However, concerns arise regarding misinformation, addiction, and regulation. Despite these challenges, television remains a complex and multifaceted medium, offering various benefits while raising important concerns.Social media has significantly transformed the journalism industry, making news faster, more dynamic, and widely accessible. Unlike traditional media, social platforms allow journalists to break news in real time, ensuring the public stays informed instantly. Additionally, social media has given rise to citizen journalism, where ordinary individuals can report events firsthand, capturing stories that traditional media might miss.

The global reach of social media has expanded the influence of news outlets, allowing them to connect with audiences beyond geographical boundaries. This also fosters direct engagement between journalists and readers through comments, live sessions, and interactive content, building credibility and trust. Moreover, social media analytics enable journalists to understand audience preferences, ensuring content remains relevant and impactful.

Despite challenges like misinformation, social media has democratized news, amplifying diverse voices and perspectives. By embracing digital tools, journalists can create credible, compelling stories, ensuring the industry remains influential and adaptable in the modern era.

Akash Thakur
BAJMC Sem VI

Drug menace increasing in Punjab, 70% youth affected

Drugs are increasing rapidly in the state day by day, drugs are a matter of serious concern in some places. In today's time, the young generation, which we consider as the golden future of the country, is getting mired in the quagmire of drugs. Even if it is done out of compulsion, it later becomes a habit and physically destroys it from within. Especially the youth of villages are falling prey to drugs more than the urban youth. When they do not get drugs, they are committing crimes like theft, robbery, looting etc.

Apart from this, they are doing drugs by selling household items for the sake of drugs. According to the report, 70% of the youth have become addicted to some or the other drug. Therefore, to protect the youth from drugs, they should be motivated towards sports. This will channel their energy in the right direction and they will be able to stay away from drugs.

Payal
BAJMC Sem V

The New Era of Communication

Mass communication, or public communication, has become very important in today's world. It is a medium through which we can deliver information, news, and entertainment to millions of people at the same time.

There are many forms of mass communication, such as print media (newspapers, magazines), electronic media (TV, radio), and digital media (social media, web portals). Nowadays, digital media is growing the fastest because people have started using mobile phones and the internet more.

The main objective of mass communication is to raise awareness, provide information, and bring about positive changes in society. Journalism, advertising, film production, and public relations are its key areas. A good mass communication professional is one who can present accurate information in a simple and effective way.

However, there are some negative aspects too. Fake news, misleading information, and false propaganda can harm people. Therefore, honesty and responsibility are very important in this field of communication.

In today's era, mass communication is not just a career option but also a powerful tool to connect and transform society. With proper and positive communication, SO WE CAN CREATE A BETTER SOCIETY.

Prachi
BAJMC Sem II

The Rise of AI-Generated Content: A Boon or a Threat?

In the present decade, artificial intelligence (AI) has made remarkable advancements, but one of the most debated topics today is the rise of AI-generated content. From writing news articles to creating artwork and even composing music, AI is transforming the way content is produced. While this innovation brings efficiency and accessibility, it also raises serious ethical, economic, and creative concerns. AI can completely change education by making learning more personalized and effective. It can study student performance and give instant feedback to both teachers and students, helping them improve their teaching and learning methods. One of the biggest advantages of AI in education is its ability to create customized learning plans for each student based on their strengths, weaknesses, and learning styles. This can make learning more engaging and improve results. AI also has the potential to transform degree and diploma programs in the future by keeping students on track, providing real-time support, and making education more interactive and personalized.

Saksham
BAJMC Sem VI

Photography

Photography is not only capture the photos & videos. The main motive of Photographer to capture emotions in their clicks. In the photography field firstly you are investing in your camera kits & lights system to grow up in this field.The Photographer Plays a vital role in framing & angels of click to capture the moment.The Camera always points both ways in Expressing your subject you also express yourself.You choose photography not only in hobby they also helps to you to earn better in future.So you don't choose photography like work they are like your friend.Some times of in this field you feel your love bond with photography.In this generation photography turns a new face like many new cameras lightings experiences in professionalim helps to growth up level of photography.Today any events, festivals,Weddings,is uncomfortable without photography.Photography part is not only shoot with cameras you also clicks with your mobiles.In Your mobile cameras provide you pro feature to click amazing moments with help of manual settings.

Ritesh
BAJMC Sem II

The Impact of AI on The Media and Entertainment Industry

Artificial intelligence in entertainment AI helps with marketing and advertising that are performed through the media and entertainment space. By gathering data about consumer activities and patterns, AI algorithms enable companies to fine-tune promotional messages to target the target audience precisely. For example, several entities, such as YouTube and Spotify, artificially recommend content to users that aligns with their previous sight and purchasing record.

Customizing content and experiences to suit individual consumers is one of the critical influences of AI in the media and entertainment industry. The AI algorithm is used to deliver customized suggestions in music. This improves consumer satisfaction by demonstrating content aligned with individual specifications. Customized experiences keep players engaged in gaming by adjusting their difficulty level to match their skills and preferences.

AI-driven tools for music composition simplify the process for composers to create original soundtracks. Moreover, AI enhances content creation efficiency by automating tasks like video editing, proofreading, and even generating ad copy, resulting in cost reductions and heightened productivity.

Sonia
BAJMC Sem IV

Nature: The Ultimate Healer

Nature is a beautiful gift from God, offering peace, comfort, and healing to all living beings. It has an incredible power to relieve stress, improve mental health, and even aid in curing severe diseases like cancer, asthma, and many more. Spending time in nature refreshes the mind, calms the soul, and brings a sense of inner peace.

Nature acts as a doctor, teacher, and guardian, ensuring our well-being without demanding anything in return. Everything we do — breathing, eating, thinking, and living — is silently supported by nature. Yet, many of us take it for granted and continue to harm it.

We must understand that the closer we stay to nature, the better and healthier our lives become. Moving away from it only invites chaos, stress, and discomfort. By preserving and admiring nature, we ensure a harmonious life for ourselves and future generations. Nature is not just a part of life; it is the foundation of it.

Akashdeep
BAJMC Sem VI

अध्यात्म-दर्शन

अनुभाग

लक्की
बी.ए. समस्तर 4
छात्र सम्पादक

डॉ. सीमा शर्मा
प्रभाग सम्पादक

संपादकीय

धर्म और मानव

धर्म शब्द का वास्तविक अर्थ है वह नियम जिन पर चलने से समाज में नैतिकता में मानवता बनी रहे। धर्म के मूल स्तंभ है दान दया तप सत्यता वाशुचिता तथा सोच व क्षमता इत्यादि। धर्म के नियमों पर चलने के उपरांत मानव हृदय निर्मल हो जाता है तथा इस स्थिति में करूणा जन्म लेती है। करूणा के साथ दया तथा क्षमता का भाव जागृत होता है। इन दोनो गुणों के कारण मानव प्रेम करने लगता है, दूसरों को दु:ख से निकालने की कोशिश करने लगता है। आज के समाज में चारों तरफ फेले हुए नैतिक पत्न हमारे धर्म का असली अर्थ भुला दिया है। वर्तमान दौर में भी भारत ही नहीं बल्कि लगभग संपूर्ण विश्व रिलिजन के सही अर्थ को पूर्ण रूप नहीं समझ सका क्योंकि यदि ऐसा नहीं रहता तो कम से कम रिलिजन एवं धर्म भारतीय संदर्भ के नाम पर इतने दंगे फसाद अराजकता मजबूत मजबूत में कटता का भाव सांप्रदायिक हिंसा एवं तमाम आतंकी घटनाएं आदि शायद इतनी नहीं होती जितनी आज हो रही है। मनुष्य जगत का एक तार्किक प्राणी कहा जाता है उसे यह समझ जगत के अन्य जीवों की तुलना में कहीं अधिक प्राप्त है कि क्या अनुचित ठीक हो इसी प्रकार नैतिक एवं अनैतिक में भी तुलना करने में वह सक्षम है। फिर यदि वह उपरोक्त बातों को व्यवहार में ना ला पाएं तब यह विषय चिंतनीय बन जाता है। ठीक यही बातें हम ठीक यही बातें हम धर्म पर भी लागू कर सकते है। यदि हम धर्म एवं रिलिजन में छिपे भाव को समझ लेते है एवं साथ ही आत्म साध्वी कर ले तो धर्म के नाम पर झगड़े खत्म हो सकते है। धर्म के सही रूप को समझना ही धर्म का सही रूप जानना है। वैश्विक स्तर पर शांति चाहिए तो मानव को एक ऐसे रिलिजन की आवश्यकता होगी जिसमें मानव एकता का भाव भाईचारा आपसी सांप्रदायिक सद्भाव प्रेम का समाज में प्रचार प्रसार हो। लोगों का जीवन भी मूल्य फर्क हो सर बस इतना ही है कि मावन एकता की भावना प्रबल करने के लिए रिलिजन या धर्म में अमूल जा मुल परिवर्तन तो नहीं कर सकते क्योंकि सब काम महत्व गरिमा अपनी-अपनी जगह विद्यमान है। अत: वास्तव में मानव एकता हेतु हम आपस में वैश्विक स्तर पर धर्म के मर्म को आतंकवाद करें तथा यह समझने का प्रयास करेंगे कि धर्म ही अपने आप में एक आदर्श धर्म शब्द में ही सभी सकारात्मक बातें भाव रूप में छुपी हुई हैं। धार्मिक उद्धरता की भावना ही विश्व शांति तथा मानव कल्याण के लिए सहायकसिद्ध होगी।

डॉ सीमा शर्मा

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

तुलसी का महत्व

तुलसी का महत्व तुलसी भारतीय संस्कृति धर्म और आयुर्वेद में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है यह न केवल एक औषधीय पौधा है बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी इसकी विशेष मानता है इस विस्तृत निबंध में हम तुलसी के पौधे के विभिन्न पहलुओं पर ज्ञान चर्चा करेंगे जिसमें इसके धार्मिक औषधि संस्कृति और पर्यावरण महत्व को सरल और विस्तृत शब्दों में समझेंगे तुलसी का धार्मिक महत्व हिंदू धर्म में तुलसी को अत्यंत पवित्र माना जाता है घरों में तुलसी के पौधे की पूजा करने की परंपरा है और इसे हरिप्रिया विष्णु प्रिया वृंदा शर्मा आदि के नाम से संबोधित किया जाता है और हिंदू धर्म में तुलसी का महत्व विशेष रूप से भगवान विष्णु के साथ जुड़ा हुआ है कहा जाता है कि तुलसी जी का जन्म भगवान विष्णु जी के आशीर्वाद से हुआ था उनके अनुसार तुलसी के पौधे की पूजा से मनुष्य के जीवन में सुख शांति समृद्धि और धार्मिक उन्नति होती है हर घर में तुलसी का पौधा होना शुभ माना जाता है घर के आंगन या बगीचे में तुलसी के पौधे को लगाना परिवार के लिए एक सकारात्मक ऊर्जा का स्त्रोत माना जाता है धर्म धार्मिक रूप से यह घर में देवी देवता का वास सुनिश्चित करता है तुलसी का औषधीय महत्व

तुलसी का पौधा अपनी औषधि गुना के लिए प्रसिद्ध है आयुर्वेद में तुलसी का प्रयोग अनेक रोगों के उपचार के लिए किया जाता है इसे दुआओं की रानी भी कहा जाता है तुलसी के पत्ते शरीर को शुद्ध करते हैं और विभिन्न रोगों से बचते हैं तुलसी के पत्ते सर्दी खांसी बुखार और जुकाम जैसी समस्याओं में विशेष रूप से प्रभावी माने जाते हैं इसके अलावा तुलसी के पत्तों का सेवन मानसिक तनाव को कम करने में भी मदद करता है और यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और इंफेक्शन से लड़ने में सहायता करता है तुलसी के पत्ते का रस रक्तदान को नियंत्रित करने समस्याओं से राहत देने और पाचन तंत्र को सुधारने में भी सहायक होता है

तुलसी का सांस्कृतिक महत्व भारतीय संस्कृति में तुलसी का विशेष स्थान है यह न केवल धार्मिक पूजा का हिस्सा बल्कि भारतीय जीवन शैली का एक विभिन्न अंग भी है हिंदू परिवारों में तुलसी के पौधे को अक्सर एक तरह से घर के ही आभूषण के रूप में पूजा जाता है प्रत्येक घर में सुबह शाम तुलसी की पूजा की जाती है और तुलसी का पौधा एक तरह से घर में पवित्रता और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है इसके आसपास सफाई और स्वच्छता का ध्यान रखना आवश्यक माना जाता है यह एक प्रकार से पर्यावरण की रक्षा करने का भीप्रतीक है

तुलसी का पर्यावरण नियम महत्व

तुलसी न केवल स्वास्थ्य के लिए बल्कि पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद है यह पौधा हवा को शुद्ध करता है और वातावरण में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ता है इसके अलावा तुलसी का पौधा कीटों को दूर रखने में मदद करता है यह एक प्राकृतिक कीटनाशक के रूप में कार्य करता है तुलसी

के पत्ते की गंध कई प्रकार से मच्छरों और अन्य कीटों को दूर करती है जिस घर का वातावरण स्वच्छ और स्वस्थराहत

तुलसी के विभिन्न प्रकार

हरि तुलसी

यह सबसे सामान्य प्रकार की तुलसी है जिसका रंग हरा होता है इसका उपयोग पूजा और औषधि दोनों में किया जाता है

काली तुलसी श्याम तुलसी

इस तुलसी के पत्ते और तने का रंग काला या बैंगनी होता है इस विशेष रूप से औषधि गुना के लिए जाना जाता है और यदि प्रभाव प्रभावशाली मानी जाती है

विष्णु तुलसी

इस विशेष इसे विशेष रूप से भगवान विष्णु की पूजा के प्रयोग किया जाता है इसका प्रयोग धार्मिक उद्देश्यों के लिए अधिक किया जाता है

तुलसी के स्वास्थ्य लाभ

तुलसी का सेवन शरीर के लिए बहुत लाभकारी होता है यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारता है बल्कि मानसिक और आत्मिक भी पर शांति प्रदान करता है तनाव कम करता है तुलसी के पत्तों का सेवन मानसिक तनाव और चिंता को कम करने में मदद करता है हृदय स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है तुलसी हृदय को स्वस्थ रखने के लिए भी फायदेमंद है यह रक्तचाप को नियंत्रित करता है हृदय की कार्य प्रणाली को बेहतर बनाता है तुलसी के पत्तों का सेवन पाचन क्रिया को सुधारता है और गैस कब्ज एसिडिटी जैसी समस्याओं से राहत दिलाता है

तुलसी के धार्मिक मान्यताएं और कथाएं

हिंदू धर्म में तुलसी से जुड़ी कई कथाएं और मान्यताएं प्रचलित हैं एक प्रसिद्ध कथा के अनुसार तुलसी पहले एक सुंदर कन्या थी जिसका नाम हरिप्रिया था वृंदा था वह भगवान श्री विष्णु के प्रति बहुत समर्पित थी भगवान विष्णु के साथ प्रेम के कारण विष्णु जी के अनुसार वह तुलसी के रूप में पंडित हो गई और इस कथा के अनुसार तुलसी को विष्णु जी की अर्धांगिनी माना जाता है इसके अलावा कई धार्मिक ग्रंथो में तुलसी के महत्व पर विशेष विशेष बल दिया गया है तुलसी को एक ऐसे देवता के रूप में पूजा जाता है जो घर के वतन को शुद्ध करता है और हर प्रकार के नकारात्मक प्रभावों से रक्षाकरता है

नाम लक्की

कक्षा BA- 4th Sem

रोल नंबर 8240

विद्यार्थी संपादक

योग का महत्व

योग एक प्राचीन भारतीय अभ्यास है जो शारीरिक मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए किया जाता है यह केवल एक शारीरिक व्यायाम नहीं है बल्कि जीवन जीने की एक समग्र विधि है योग का शाब्दिक अर्थ है जोड़ना या संयोजन यह शरीर मन और आत्मा के बीच संतुलन और एकता को स्थापित करने का कार्य करता है आजकल योग का महत्व और प्रसार बड़ा है क्योंकि यह स्वस्थ जीवन के लिए एक बेहतर साधन माना जाता है और इसलिए एक में हम योग के महत्व लाभ और उसके विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे

योग का इतिहास और उत्पत्ति

योग का इतिहास बहुत प्राचीन है यह भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और वेदों उपनिषदों भागवत गीता और विभिन्न अन्य धार्मिक ग्रंथो में इसका उल्लेख मिलता है योग के विकास का उद्देश्य मनुष्य को आत्मज्ञान मानसिक शांति और शारीरिक स्वास्थ्य प्रदान करना था प्राचीन काल में योग महर्षि पतंजलि के द्वारा प्रस्तुत किया गया था जिन्होंने पतंजलि योग सूत्र के माध्यम से योग के सिद्धांतों को सरल व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया योग के प्रकार
हठयोगी यह शारीरिक आसान और प्राणायाम पर आधारित होता है और इसका उद्देश्य शरीर को स्वस्थ और मजबूत बनाना होता है

राजयोग

इस योग को राजा के रूप में भी माना जाता है मानसिक ज्ञान साधना पर आधारित होता है इसके माध्यम से आत्मा और परमात्मा के बीच एकता स्थापित की जातीहै

भक्तियोग

इस योग का उद्देश्य ईश्वर के प्रति भक्ति और श्रद्धा को बढ़ाना होता है इसमें व्यक्ति अपने हृदय और मां को पूरी तरह से ईश्वर में समर्पित कर देता है

ज्ञान योग

इस योग में ज्ञान प्राप्ति पर जोर दिया जाता है और यह आत्मज्ञान और सत्य को जानने का मार्ग है इस योग का उद्देश्य आत्मा और ब्रह्मा के बीच में वेद मिटाना होता है

कर्म योग

यह योग कार्य और कम पर आधारित होता है और इसके अंतर्गत व्यक्ति अपने कार्यों को निष्कलंक भाव से और बिना किसी फल की इच्छा के करता है

योग के शारीरिक लाभ

योग का शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है नियमित योग भी आशय शरीर में लचीलापन ताकत संतुलन संशीलता में वृद्धि होती है इसके अलावा योग में कई लाभ पहुंचाने जैसे योगके आसान शरीर के जोड़ों और मांसपेशियों को लचीलापन बनाते हैं इससे शरीर में लचीलापन बढ़ता

है और मांसपेशियों में तनाव कम होता है योग प्राणायाम और सांस नियंत्रण की तकनीक से दिल और संरक्षण तंत्र को मजबूत बनाता है यह रक्त संचार को बेहतर करता है और रक्तदान को नियंत्रित करता है योग से शरीर को वजन को नियंत्रित किया जा सकता है खास करके हठयोगी और कुछ विशेष आसन वजन घटाने में मदद करते हैं योग के कुछ आसन पाचन तंत्र को बेहतर बनाते हैं और आंतों की गतिविधियों को नियमित करते हैं नियमित योग अभ्यास से सिर दर्द पीठ दर्द गर्दन के दर्द जैसी समस्याओं से राहत मिलती है योग न केवल शारीरिक रूप से लाभकारी है बल्कि यह मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत फायदे मानते हैंमानसिक तनाव को कम करने में मदद करता है ध्यान और विश्वास की साधना से मस्तिष्क को शांति मिलती जिससे मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है योग खास करके ध्यान और प्राणायाम जनता और अफसर से जूझ रहे व्यक्तियों के लिए फायदेमंद साबित होता है यह मानसिक स्थिति को नियंत्रित करने में मदद करता है योग मानसिक शांति और संतुलन प्रदान करता है जिसे व्यक्ति अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर सकता है और सोचते मानसिक स्थितियों से बच सकता है व्यक्तियों के लिए फायदेमंद साबित होता है और यह मानसिक स्थिति को नियंत्रित करने में मदद करता है योग का सबसे महत्वपूर्ण लाभ आत्मिक शांति ज्ञान प्राप्ति है जब शरीर और मन शांत होते हैं जब आत्मा के साथ एकता का अनुभव होता है योग के माध्यम से व्यक्ति को अपने भीतर की शांति और वास्तविकता का अनुभव होता है इसके माध्यम से आत्मा का विकास होता है और जीवन के उद्देश्यों को समझने में मदद मिलती है योग का उद्देश्य आत्मा के साथ एकता स्थापित करना है जिस व्यक्ति की आध्यात्मिक कुंती होती है और यह जीवन को अधिक से अधिक सार्थक और उद्देश्य पूर्ण बनाता है

नाम लक्की

कक्षा BA- 4th Sem

रोल नंबर 8240

गुरु नानक देवजी

गुरु नानक देवजी सिखों के पहले गुरु थे। अंधविश्वास और आडंबरों के कट्टर विरोधी गुरु नानक का प्रकाश उत्सव (जन्मदिन) कार्तिक पूर्णिमा को मनाया जाता है हालांकि उनका जन्म 15 अप्रैल 1469 को हुआ था। पंजाब के तलवंडी नामक स्थान में एक किसान के घर जन्मे नानक के मस्तक पर शुरू से ही तेज आभा थी। तलवंडी जोकि पाकिस्तान के लाहौर से 30 मील पश्चिम में स्थित है, गुरु नानक का नाम साथ जुड़ने के बाद आगे चलकर ननकाना कहलाया। गुरु नानक के प्रकाश उत्सव पर प्रति वर्ष भारत से सिख श्रद्धालुओं का जत्था ननकाना साहिब जाकर वहां अरदास करता है।

गुरुनानक बचपन से ही गंभीर प्रवृत्ति के थे। बाल्यकाल में जब उनके अन्य साथी खेल कूद में व्यस्त होते थे तो वह अपने नेत्र बंद कर चिंतन मनन में खो जाते थे। यह देख उनके पिता कालू

एवं माता तृप्ता चिंतित रहते थे। उनके पिता ने पंडित हरदयाल के पास उन्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा लेकिन पंडितजी बालक नानक के प्रश्नों पर निरुत्तर हो जाते थे और उनके ज्ञान को देखकर समझ गए कि नानक को स्वयं ईश्वर ने पढ़ाकर संसार में भेजा है। नानक को मौलवी कुतुबुद्दीन के पास पढ़ने के लिए भेजा गया लेकिन वह भी नानक के प्रश्नों से निरुत्तर हो गए। नानक ने घर बार छोड़ बहुत दूर दूर के देशों में भ्रमण किया जिससे उपासना का सामान्य स्वरूप स्थिर करने में उन्हें बड़ी सहायता मिली। अंत में कबीरदास की 'निर्गुण उपासना' का प्रचार उन्होंने पंजाब में आरंभ किया और वे सिख संप्रदाय के आदिगुरु हुए।

सन् 1485 में नानक का विवाह बटाला निवासी कन्या सुलक्खनी से हुआ। उनके दो पुत्र श्रीचन्द और लक्ष्मीचन्द थे। गुरु नानक के पिता ने उन्हें कृषि, व्यापार आदि में लगाना चाहा किन्तु यह सारे प्रयास नाकाम साबित हुए। उनके पिता ने उन्हें घोड़ों का व्यापार करने के लिए जो राशि दी, नानक ने उसे साधु सेवा में लगा दिया। कुछ समय बाद नानक अपने बहनोई के पास सुल्तानपुर चले गये। वहां वे सुल्तानपुर के गवर्नर दौलत खां के यहां मादी रख लिये गये। नानक अपना काम पूरी ईमानदारी के साथ करते थे और जो भी आय होती थी उसका ज्यादातर हिस्सा साधुओं और गरीबों को दे देते थे।

सिख ग्रंथों के अनुसार, गुरु नानक नित्य प्रातः बेई नदी में स्नान करने जाया करते थे। एक दिन वे स्नान करने के पश्चात वन में अन्तर्ध्यान हो गये। उस समय उन्हें परमात्मा का साक्षात्कार हुआ। परमात्मा ने उन्हें अमृत पिलाया और कहा– मैं सदैव तुम्हारे साथ हूं, जो तुम्हारे सम्पर्क में आयेंगे वे भी आनन्दित होंगे। जाओ दान दो, उपासना करो, स्वयं नाम लो और दूसरों से भी नाम स्मरण कराओ। इस घटना के पश्चात वे अपने परिवार का भार अपने श्वसुर को सौंपकर विचरण करने निकल पड़े और धर्म का प्रचार करने लगे। उन्हें देश के विभिन्न हिस्सों के साथ ही विदेशों की भी यात्राएं कीं और जन सेवा का उपदेश दिया। बाद में वे करतारपुर में बस गये और 1521 ई. से 1539 ई. तक वहीं रहे। उन्होंने अपने अनुयायियों को जीवन की दस शिक्षाएं दीं जो इस प्रकार हैं–

1. ईश्वर एक है।
2. सदैव एक ही ईश्वर की उपासना करो।
3. ईश्वर सब जगह और प्राणी मात्र में मौजूद है।
4. ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं रहता।
5. ईमानदारी से और मेहनत कर के उदरपूर्ति करनी चाहिए।
6. बुरा कार्य करने के बारे में न सोचें और न किसी को सताएं।
7. सदैव प्रसन्न रहना चाहिए। ईश्वर से सदा अपने लिए क्षमा मांगनी चाहिए।
8. मेहनत और ईमानदारी की कमाई में से ज़रूरतमंद को भी कुछ देना चाहिए।
9. सभी स्त्री और पुरुष बराबर हैं।
10. भोजन शरीर को ज़िंदा रखने के लिए ज़रूरी है पर लोभ–लालच व संग्रहवृत्ति बुरी है।

गुरु नानक देवजी ने जात–पांत को समाप्त करने और सभी को समान दृष्टि से देखने की दिशा में कदम उठाते हुए 'लंगर' की प्रथा शुरू की थी। लंगर में सब छोटे–बड़े, अमीर–गरीब एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं। आज भी गुरुद्वारों में उसी लंगर की व्यवस्था चल रही है, जहां हर समय हर किसी को भोजन उपलब्ध होता है। इस में सेवा और भक्ति का भाव मुख्य होता है। नानक देवजी का जन्मदिन गुरु पूर्व के रूप में मनाया जाता है। तीन दिन पहले से ही प्रभात फेरियां निकाली जाती हैं। जगह–जगह भक्त लोग पानी और शरबत आदि की व्यवस्था करते हैं। गुरु नानक जी का निधन सन 1539 ई. में हुआ। इन्होंने गुरुगद्दी का भार गुरु अंगददेव (बाबा लहना) को सौंप दिया और स्वयं करतारपुर में 'ज्योति' में लीन हो गए।

राजविंदर कौर
एम ए हिन्दी
समस्तर-2।
रोल नंबर. 12203

स्वास्तिक का महत्व

स्वास्तिक का महत्व : स्वास्तिक एक पवित्र और प्राचीन प्रतीक है जिसे विशेष रूप से हिंदू धर्म बौद्ध धर्म जैन धर्म और कई अन्य संस्कृतियों में शुभ बताओ और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। यह चिन्ह सर्दियों से धार्मिक अनुष्ठानों वास्तु शास्त्र, कला और संस्कृत में उपयोग होता आ रहा है स्वास्तिक का अर्थ और महत्व इसके आकार और इसके द्वारा व्यक्त किए गए विचारों में निहित है।

(1) स्वास्तिक का अर्थ और उत्पत्ति : स्वास्तिक शब्द संस्कृत के "सु"और अस्तित्व से बना है जिसका अर्थ होता है अच्छा हो या कल्याण हो। इसका प्रतीकात्मक जाकर चार भुजाओं वाला होता है जो चार दिशाओं उत्तर, दक्षिण ,पूरब और परिश्रम का प्रतिनिधित्व करता है। इसके साथ ही यह जीवन के चार पहलुओं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का भी प्रतीक है।

(2) धार्मिक महत्व :

(i) हिंदू धर्म: हिंदू धर्म में स्वास्तिक का अत्यधिक महत्व है। इसे भगवान गणेश का प्रतीक माना जाता है जो सभी कार्यों की शुरुआत में विघ्नहर्ता और शुभता प्रदान करने वाले देवता हैं। पूजा ,यज्ञ और हवन जैसे धार्मिक अनुष्ठानों में स्वास्तिक को अनिवार्य रूप से प्रयोग किया जाता है। यह शुभ और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है जो समृद्धि और कल्याण की कामना करता है।

(ii) बौद्ध धर्म: बौद्ध धर्म में स्वास्तिक को बुद्ध के पैरों के निशान और उनकी शिक्षाओं का प्रतीक माना जाता है यह तरीका धर्म चक्र के घूमने और जीवन के सतत चक्र का संकेत करता है कई एशियाई देशों में मंदिरों और धार्मिक स्थलों पर इसे देखा जा सकता है।

(iii) ** जैन धर्म: जैन धर्म में स्वास्तिक को सातवें तीर्थंकर सुपाश्रनाथ का प्रतीक माना जाता है यह मोक्ष और शुद्ध आत्मा की ओर अग्रसर होने का संकेत देता है। जैन मंदिरों और धार्मिक अनुष्ठानों में इसका विशेष महत्व है।

(3) सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व : स्वास्तिक केवल धार्मिक ही नहीं बल्कि संस्कृति और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। वास्तु शास्त्र और ज्योतिष में इन्हें शुभता उन्नति और स्मृति के लिए प्रयोग किया जाता है। दिवाली होली और अन्य प्रमुख के अवसर पर इस घर के मुख्य द्वार पर बनाना शुभ माना जाता है यह नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर कर सकारात्मक और शांति का संचार करता है।

(4) आध्यात्मिक दृष्टिकोण : स्वास्तिक जीवन के चक्र जन्म ,जीवन ,मृत्यु और पूर्ण जन्म का प्रतीक है। इसके चार भुजाएं है जीवन के चार पहलुओं का प्रतिनिधित्व करती है। यह दर्शाता है और यह चक्र सदैव चलता रहता है।

(5) समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक : स्वास्तिक का उपयोग व्यापारिक प्रतिष्ठानों कार्यालय और घरों में शुभता और स्मृति की कामना के लिए किया जाता है। इसका अंकल नई वस्तुओं, खातों की पुस्तकों और महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर किया जाता है ताकि सफलता और सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो

शमिता
एम ए हिन्दी
समस्तर-2
रोल नंबर. 12206

ओ३म्

ओ३म् (ॐ) या ओंकार परमात्मा, ईश्वर, उस एक के मुख से निकलने वाला पहला शब्द है जिसने इस संसार की रचना में प्राण डाले। ॐ, ओम की तीन मात्राएं है। अकार, उकार, और मकार जो प्रकृति के तीन गुणों को बताती है। अकार सतोगुण को, उकार रजोगुण को तथा मकार तमोगुण की प्रतीक है। ॐ के ऊपर बिंदी तीनों गुणों से परे या तीनों में समानता की निर्गुणता की प्रतीक है। ॐ के उच्चारण का साधक जब ये जानकर जाप करता है तो वो सांसारिक गुणों में दोष देखता हुआ निर्गुणता को शीघ्र ही प्राप्त होता हैं। ओम ॐ के जाप, सही उच्चारण से शारीरिक ऊर्जा को

आध्यात्मिक ऊर्जा से, और उस आध्यात्मिक ऊर्जा को ब्रह्मांड ऊर्जा से जोड़ जीव अस्तित्व के परम आनंद को प्राप्त कर सकता है। वैदिक शास्त्रों में ओम की बहुत महिमा कही गई है। मारकंडे पुराण में , योग ऋषि दत्तात्र्य जी ने बताया है कि मानव को ओम रूपी धनुष पर अपनी आत्मा रूपी बाण को अपने लक्ष्य, उस एक ईश्वर की ओर साध देना चाहिए। ओम ब्रह्मांड में सदैव गजायमान रहता है। और जीव भी सही अभ्यास से उसके उच्चारण द्वारा इस ब्रह्मांड की गूंज से जुड़ असीम आनंद की प्राप्ति कर सकता है।

ईश्वर के साथ ओंकार का वाच्य-वाचक-भाव सम्बन्ध नित्य है, सांकेतिक नहीं। संकेत नित्य या स्वाभाविक सम्बन्ध को प्रकट करता है। सृष्टि के आदि में सर्वप्रथम ओंकाररूपी प्रणव का ही स्फुरण होता है। तदनन्तर सात करोड़ मन्त्रों का आविर्भाव होता है। इन मन्त्रों के वाच्य आत्मा के देवता रूप में प्रसिद्ध हैं। ये देवता माया के ऊपर विद्यमान रह कर मायिक सृष्टि का नियन्त्रण करते हैं। इन में से आधे शुद्ध मायाजगत् में कार्य करते हैं और शेष आधे अशुद्ध या मलिन मायिक जगत् में। इस एक शब्द को ब्रह्माण्ड का सार माना जाता है, 16 श्लोकों में इसकी महिमा वर्णित है।[1]

गुरु नानक जी का शब्द एक ओंकार सतनाम बहुत प्रचलित तथा शत्प्रतिशत सत्य है। एक ओंकार ही सत्य नाम है। राम, कृष्ण सब फलदायी नाम ओंकार पर निहित हैं तथा ओंकार के कारण ही इनका महत्व है। बाँकी नामों को तो हमने बनाया है परंतु ओंकार ही है जो स्वयंभू है तथा हर शब्द इससे ही बना है। हर ध्वनि में ओउ्म शब्द होता है।[2]

कविता

एम ए हिन्दी समस्तर-2

रोल नंबर. 12205

* दान स्नान का महत्व*

स्नान का महत्व स्वच्छता स्वास्थ्य और धार्मिकता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह न केवल शरीर को साफ करता है ,बल्कि मन को भी शांत और तनाव मुक्त करता है। स्नान से पवित्रता आती है इससे तनाव ,थकान और दर्द मिटता है ।पांचों इंद्रिय पुष्ट होती हैं ।यह आयुर्वेद तक बाल बढ़ाने वाला और तेज प्रदान करने वाला है।

स्वच्छता और स्वास्थ्य

शरीर की सफाई: स्नान करने से शरीर पर जमीन धूल ,गंदगी, तेल और पसीने को साफ करने में मदद मिलती है ,जिससे त्वचा संबंधी समस्याएं कम होती है।

तनाव कम करना: गरम पानी से नहाने से शरीर के मांसपेशियों को आराम मिलता है और तनाव कम होता है।

ऊर्जावान महसूस करना: स्नान करने से शरीर को ऊर्जा मिलती है और आप दिन भर के लिए तैयार महसूस करते हैं।

धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व:

पापों से मुक्ति: कहीं धार्मिक मान्यताओं में ,पवित्र नदियों में स्नान करने से पाप से मुक्ति मिलती है।

आत्मा की शुद्धि: स्नान को आत्मा को पवित्र करने और ईश्वर से जुड़ने का एक माध्यम माना जाता है।

शुभ मुहूर्त: कुछ खास तिथियां और अवसर पर स्नान का विशेष महत्व बताया गया है ,जैसे कि महाकुंभ में स्नान।

पवित्र नदियों का महत्व: गंगा, यमुना ,सिंधु , नर्मदा ,गोदावरी, कृष्ण और कावेरी जैसी नदियों को पवित्र माना जाता है और नदियों में स्नान करने से पुण्य मिलता है।

स्नान के नियम:

प्रांत:स्नान: शास्त्रों में प्रातः काल स्नान करने को विशेष महत्व दिया गया है।

नदी स्नान: नदी में स्नान करते समय पहले तट पर शरीर को साफ करें फिर नदी में उतरे।

स्नान का तरीका: स्नान करते समय पहले सर पर पानी डालें, फिर पूरे शरीर पर।

रात्रि स्नान: कुछ धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ,सूर्यास्त के बाद स्नान करना शुभ नहीं माना जाता।

महाकुंभ में स्नान: महाकुंभ में स्नान करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है।

दान: स्नान के बाद दान करना शुभ माना जाता है।

डाली

बी ए हिन्दी समस्तर-2, रोल नंबर. 5237

महर्षि दयानंद सरस्वती

महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 को गुजरात के टंकारा गांव में हुआ था। उनका मूल नाम मूलशंकर था। वे एक महान समाज सुधारक, देशभक्त और आर्य समाज के संस्थापक थे।

महर्षि दयानंद ने बाल्यावस्था में ही वैदिक ज्ञान की ओर रुचि दिखाई। उन्होंने मूर्तिपूजा, अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। उनका मानना था कि वेदों में ही सच्चा ज्ञान निहित है और समाज को वेदों के सिद्धांतों के आधार पर चलना चाहिए। उन्होंने "वेदों की ओर लौटो" (Go Back to the Vedas) का नारा दिया, जो उनके सुधारवादी दृष्टिकोण को दर्शाता है।

सन् 1875 में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करना और शिक्षा, समानता तथा नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा देना था। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रंथ लिखा, जिसमें उनके विचारों और सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन है।

महर्षि दयानंद ने जातिवाद, सती प्रथा, बाल विवाह और अन्य कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज उठाई। वे महिला शिक्षा और स्वराज्य के समर्थक थे। उनके विचारों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

30 अक्टूबर 1883 को उनकी मृत्यु हो गई, लेकिन उनके विचार और सिद्धांत आज भी समाज में प्रासंगिक हैं। वे भारतीय समाज में एक नई जागृति लाने वाले युगपुरुष थे।

मुस्कान
बी ए हिन्दी समस्तर-4
रोल नंबर. 8284

महात्मा हंसराज:- एक महान शिक्षाविद् और समाजसेवी

महात्मा हंसराज भारतीय शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व थे। उनका जन्म 19 अप्रैल 1864 को पंजाब के होशियारपुर जिले में हुआ था। उन्होंने अपना पूरा जीवन शिक्षा और समाज सुधार के लिए समर्पित कर दिया।

महात्मा हंसराज ने 1886 में लाहौर में पहला दयानंद एंग्लो वैदिक (डीएवी) स्कूल स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई। वे स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरित थे और उन्होंने आर्य समाज के सिद्धांतों को अपनाया। उन्होंने आधुनिक शिक्षा को वेदों और भारतीय संस्कृति के साथ जोड़ने पर बल दिया।

सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि उन्होंने डीएवी संस्थानों के विकास के लिए बिना किसी वेतन के 25 वर्षों तक सेवाएं दीं। उनकी इसी निःस्वार्थ सेवा भावना के कारण उन्हें "महात्मा" की उपाधि दी गई। उनकी शिक्षा पद्धति ने लाखों विद्यार्थियों को प्रेरित किया और डीएवी स्कूलों एवं कॉलेजों की एक विस्तृत श्रृंखला पूरे भारत में फैली।

महात्मा हंसराज भारतीय समाज में शिक्षा का प्रकाश फैलाने वाले एक महान व्यक्तित्व थे। 14 नवंबर 1938 को उनका निधन हो गया, लेकिन उनके द्वारा स्थापित संस्थान और उनके विचार आज भी भारतीय शिक्षा जगत में जीवित हैं।

अर्श प्रीत सिंह
बी ए हिन्दी समस्तर-4
रोल नंबर. 8222

Editorial Board

Row 1: Dr. Gurdas Singh Sekhon Prof. Richa Mehra Dr. Seema Sharma Principal Dr. Amardeep Gupta (Chief Editor) Dr. Kiran Khanna Dr. Rajni Khanna Prof. Surinder Kumar

Row 2: Prof. Sandeep Sharma Dr. Kamal Kishore Prof. Sudhir Passi Dr. Kuldeep Singh Arya Prof. Vikram Sharma

DAV COLLEGE AMRITSAR

Phone: +91-183-2553377, 2534971
E-mail: davasr@yahoo.com
Website: davacollegeasr.org

Excel #9855567459